घर-संसार

अन्नाराम 'सुदामा'

धरती प्रकाशन

प्रकाशक . धरती प्रकाशन, गंगाशहर, बीकानेर (राजस्थान) / मुद्रक : एस० एन० प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032/ संस्करण : पैलो, अक्टुबर, 1985 / मूल्य : साठ रिपिया मात्र /

GHAR-SANSAR (RAJASTHANI NOVEL) : PART II
ANNARAM 'SUDAMA' PRICE : 60/-

श्री अन्नाराम 'सुदामा' रै उपन्यास 'घर-संसार' रो दूजो भाग सुधी पाठकां रै हाथां सूंपता मनै घणो हरख है। हिसाब सूं उपन्यास आप लोगां रै हाथां मे पैलै भाग रै लगोलग ही आवणो चाहीजै हो पण छोटी-मोटी कई अबखायां आडी आवती रैयी जिण सूं टैम पर काम पूरो नी हुसक्यो। इण सारू आप सूं माफी चावूं अर खासकर वां पाठकां सूं जिकां पैलो भाग पढ'र पूरो करतां ही चिट्ठी-पत्री सूं तगादो करणो सरु कर दियो अर आज ताईं करता रैया है।

—प्रकाशक

घर-संसार

(भाग : दूजो)

1

मिगसर रो पैलो हफ्तो बीतण मतै है। गाव रा घणखरा खेत संभग्या। बाकी खाली वै ही है जिका रा खळा है सावळा, अर सिर है माथै-चोटी सू साव निरवाळा। छाती है ज्याई अर सांमणआळा मे है संख्या अर सम्पत मोवळी। नी-नी करता दर्जण-नैडा घर तो गांव मे इसा है ही, जिका होळी रै पगां, मूढा घरां कांनी करसी। बठै ही धीणो, बठै ही धान अर बठै ही सगळो परवार। बिलोवणांरी वाज, मू-अधेरै ही सुरू हुवै अर सूरज री उगाळी फेर, टाबरां री किलोळ, उजास ही वधै अर उल्लास ही। टाबरां री लैण रेत मे रमती राजी अर धन री लैण खेत में चरती।

आदमी मोठ-गवार खलैरै का गावटो करै। लुगायां माद ऊपणै। तिस सतावै जद वै घड़ा-गिलास नहीं, मतीरा संभाळै। पाणी हुवै गैरो गुलाबी अर मिश्री-सो मीठो तो होठा रै लगावै नी तो; दूजो, तीजो—जी मे आवै जिता फोडै, आछो हुवै वो आपरो फोरो हुवै वो गाया रो। खायां पछै पेट ठडो, पेड़ू नीरोग अर आखी चेतना तर। मतीरो तो मतीरो ही है—जोडी-वाळ नही वीरो।

छाछ-राबड़ी घपाऊ, अर घपाऊ ही कातिसरो। रात नै घूई रै च्यारूं-मेर हथाई का 'कह चकवा एक बात, कटै की रात', यान, वाणी रै मिटान पर बधै तो रात री नीरसता सरसता मे बदळै। न चोरी ही रावगी अर न चोरी ही देवगी; मैंनत सागै मितराई रार्खै, रोही री मौज वै ही माणै। एक-दो नै छोड़, घर इसा, घणखरा जाटां रा ही समझो। अै घर खेती मे तो, औरा नू सिरै हुवै ही, हुवै कमाई में और। घास-फूस बेचसी वै बैनाउ-जेठ रै पगा, अर धान-चून ऊपरलो रत आयां। कीं मे ही डोढा

अर की मे ही दूणा। को पोतै-वाकी ही राखै, कैरसाळी मे ही एकर तो, न काळजो हालै अर न चैरै री हवा ही उडै।

नायक, रेगर अर मेघवाळां मे एक दर्जण सू को ऊपर घर इसा भी है जिका नैं महीनै-बीस दिना रै धान नैं छोड, घरे और की लावण रो मोको ही नी मिल्यो। लावण री एक लम्बी लालसा वारै मना मे ही जल्मी अर मना मे ही पाछी बुझगी। बुझै आपेही, लैणायत खळा निकळनै सू हफ्ता पैला हीं घेरा घालण लागग्या हा खेतां मे। आसाम्यां नैं खेती वा, सारलै साल ही आपरै घर मू करवाई अर इं साल भळै। बीज-हळ ही नहीं, तेल-तमाखू अर गाभै-चीरडै ताईं री वसी ही, वा पर ही वाजी। सारलो साल सूको ही गयो तो लेंवता वे काईं ' मत लो भला ही, वांरी फसल तो फरमी बिना पाणी ही। अंस की हुयो है तो सगळी कांण धड़ै मे काढली वां। माल उठालियो, आसाम्या देखती रही। केयां री-री ही की कियो। दो-च्यार डोकरी-डोकरा की आमू ही पटक्या, बोल्या, "बावूसा, औरां कानी नी, म्हा कानी देखो की ? म्हे कठै ही आवा-न-जावा, च्यार महीना अठै ही झूपड़ा रुखाळस्या, टुकडो खा'र आसीस थानै देस्यां पण आसीसां रै ओग सू पिघळै बै मैण और। वानै खाली एक ही बात सुणीजै कै, "न तो रोवण री दरकार अर न हाथा-जोड़ी री, पैला सीक साफ करो पैलडी। दूसर दरकार पड़ै तो बै बी बेळा ही नुई खीचण नैं त्यार, घर खुलो है थारै वास्तै आधी रात नै ही।" आसामी किता खोटा भुगतै, अर एक टैम खा'र रात किन्ती दोरी काढै, आ चिंता बीरो नी ओढै मासै-भर ही। मोटी चिंता बीनै एक ही है कै आसामी, समूचो नी मरै पण समूचो सावळ जियै ही नहीं। मरया बीरै मूळ री हाणि तो है ही, बीरी सुख-सुविधा नै आंग और लागै। ईं खातर ही वो, बीनैं कर्ज पर कर्ज दे'र ही किया ही जीवतो राखणो चावै। सास खत्म ही नी हुवै अर वो सावळ ही नी आवै।

'घर खुलो है थारै खातर—आधी रात नै ही', बीरे रै मूढै इसो मुण्यो पछैं, आसामी कीरै सारै ? वो मा-बाप री जीवत-राखें काळ मे ही करदै अर चावै तो जीवती लुगाई री छाती पर एक और ला खडी करै। बीरै नैं बो राज सू मोटो समझै। न्याणैं री जरूरत रात नै ही पडगी तो कद आयो राज अर कद हुयो 'लोन-पास' ? इसी तो गोगो केई बिरिया गाईजै। राज

रो 'लोन' अर सोगन तो खावण नै ही हुवै है, खावण रो खाली अटकळ आणी चाईजै। आ सगळां घरा पर, घणों-थोड़ो राज रो 'लोन' जरूर है पण देणो सोरै सास कोई ही नी चावै।

अवै केई आं में सू ठाठा-मजूरी पर, केई भट्टा री दिस अर केई हाड़ी-कटाई कानी सूरतगढ सू ले'र वंगलै-फाजलकै ताईं जा पूगसी। जेठ-असाढ में पाछा वावसीड तद, को चुकासी, की राखसी। राखसी वो महीनै-वीस दिन में धा-खुटोसी। ऊमरा री टैम वै ही घोड़ा, वै ही मैदान, न भूखा, न धाप्या, चू चरै-मरै, गवाडी री भैंसागाडी फेर बियां ही अव्यवस्था री ऊबड-खावड धरती पर चालसी। आपरो बेच्योडो धान, दूणै में लेसी, पेट ढक्यो है तो पीठ उघाडी। दुरवस्था री ढोली मंचली में पडी ईं रोगली पंगत नै पसवाडो कुण फोरावै? भग्या रो हाल तो और ही माडो है। न बा कनै जमी रो बेलीपो, अर न गाव रो। कमी अर कोप बिचाळै, आयोडा पीचीजै बै।

अै सगळा मोचै है कै म्हारी दसा फुरणी हुसी तो कदेई मतै ही फुरसी—रातो-रात, म्हारै किया की नी हुवै। आंरी उदासी जद-कद ही सुधा री चेतना आग्सी पर पडै तो वो री पीड बधै, बा कोई दिसा देखण री चेष्टा करै। सांवठै जाटां दाईं तो कियां हुवै, जद सावटा खेत ही आरै पगा नीचै नीं। न बौपार, न पढाई अर न मेळ री ठोस धरती ही आं कनै तो छडी-बीछडी मजूरी सू तो पेट भराई भलां ही हुवो, फेर ही आंरी बिखरती मैनत, अर टूटती एकता नै एक दिन मिलणी चाईजै—जीवती-जागती, बा घणी बिरिया सांचै।

हरिजना रै आखै बास माथै बीगै जाण रो बौपार अवै, तरक्की पर है। छोटा-मोटा बीमू टाबर पढण नै आवै है बीं कनै। या बांनै स्नेह अर सत्कार दोनू देवै। छोरमा केई 'हाथ रो हुनर,' ही सीखै है। पढण-लिखण में लुगाया ही रुचि लेवै है। सगळां मू मोटी बात आ है कै बामे आत्म-विश्वास अर आत्म-गौरव जिसी लौ भी एक गैज ऊचाई पकड़न नै उंतावळी है। बीनै सन्तोप ही है अर आसा हो। थोड़ी-घणी ढोकरघा ही ढूकै बी कनै, केई एकली, केई लुगायां साथै। गिणनी री कोई दो-च्यार छोड़, घरां में सगळा मू घणी, देकदरी अर बे-पूछ में वै है बेचारी। या सालै सुधा री सैंध

सहानुभूति तो है ही, आपरै बूतै सारू बा पूरी सायता ही करै ही बांरी।

कोई न कोई गिड़गिड़ावै बी आगै, "बाईसा, दो दिन हुय्या, मायो फूटै है, आंख्यां अधघडी ही नी लागै, समक रात ओय-हाय कर'र काढणी पड़ै, हाड दूखणियो कुळै ज्यू कुळै है, कुण संभाळै, जूत्या चालणी हुया महीना हुय्या धिगाणै घीसणी पड़ै, पगा में ब्याउ, बै पूरा नी मेलीजै, मू खारो आक पड़ग्यो है, रोटी कानी झाकण रो जी ही नीकरै, तीन दिन हुय्या हाथ ऊजळा किया, सका ही नी हुवै, पचिया हुय्या, मवरा-माटी लगा राखी है, पण काई हुवै बी सू, उल्टी हुवै, ताव अर खासी आवै, काटो गडग्यो, सळी चुभगी", पण डोकरी रै कैया खीर कुण राधै? कुण तो वानै दिखावै अर कुण देखण रो फोडो, जाण'र गळै मे लेवै? कदे-कणास वारै होठा पर मतै ही फूट उठै "बाईसा, कठ मोसीज'र तो मरीजै नही, अर मौत रामजी देवै नही।"

सुधा पछलै डोढ महीनै सू, की घरेलू दवाई-पाणी ही राखै। काष्टादिक ओखदा रो खासो-भलो ग्यान है बीनै—वंस-परम्परा री मैर सू। बाप ही बैद अर नानो ही। टिंचर, डिटोल, गाज, चाती, बोरिक, रूई अर पाटी राख मेल्या है बण। बाडी री एक मोटी क्यारी मे खारो गवार पाठो, दो-च्यार इरड, अर दो गिलोय री बेला ही, लगा राख्या है। पाटी-पोळी ही करै, काढो-उकाळी ही देवै। डोकरया राजी हुवै, सुखीजतै सास सागै आसीस बिखेरै, पण धणखरी बूढक्या रै मोटो रोग हुवै कासै अर कमकदरी रो। घर मे गिणती वारी जू जिती ही नी। ठंडो-बासी खीचड़ो का सुरचण थीरी, बा ही बिना लगावण, करडी हुयोड़ी रात री रोटी, अै ही राजी हु'र नही, लिलाड मे तीन सळ घाल'र, अनादर अर उपेक्षा सू। पेट मे नाखणो तो पड़ै ही को न की पण न वै पूरा उगळै, न रचै अर न सावळ पचै। मळ ही कुपित अर मन ही, रोग तो हुवण रा ही है। वै जिये तो है पण अणचाई-जती उदासी पी-पी दिन आपरा किया ही ओछा करै। सुधा वानै कोरी दवाई ही नी दै, ठेठ बारै मन ताई पूगै—सैंज अपणायत सागै। बै आपरो भेळो कियोड़ो भार, बी आगै ढाळ'र हळकी हुवै, थोड़ी नही खासी। केई-केई तो चला'र आवै ही ई खातर है। आरी इयां गुणनी, सुधा आरै उपचार मे ही सामिल कर राखी है।

डोकरया इंया तो केई आवै पण परस् एक आई बा सगळा सू उदवुदी, रीर सू नी आपरी गळगळी गाथा सू । रोग थोड़ो पीड़ घणी । आ'र बैठगी, म्बो साम छोडती । सुधा बोली, "बोलो मा-सा पधारणों किंयां हुयो ?" ा उदास-उदास देखती रही सामनै । सुधा भळे बोली, "वोलो मा-सा, ोई दोराई है तो—सको क्यो ?"

"मुणी है आप पढयोड़ा हो", वा धीमें-सै बोली ।

"पढयोडी तो हू थोड़ी, पण आप तो काम बोलो, कांई करणों है ?"

"म्हारी ऊमर देखोनी कितीक कांई है, काळो कद काईं कटसी ीरो ?" कह'र बण आपरो डावो हाथ, कीं धूजतो-धूजतो सुधा सामो कर दियो ।

सुधा वीरै हाथ कांनी नी, चैरै कानी देख्यो—गडती निजर सू । बा समझगी ईंरै अहम् नै अपमान री कोई लूठी ठेस लागी है, घाव बारै कम, माय जादा है । बा बोली, "मा-सा, हूं ऊमर नी देखू, रोग है तो बतावो कोई ?"

"मोटो रोग तो ऊमर रो ही है, नाक-नाक धापगी बीसू ।"

"बताया बीसू काई फर्क पड़ै है, आणी है जिती तो आसी—थारै बिना पूछ्या ही । सरीर सू तो नीरोग हो नी ?"

बण आपरी पीडी उघाडी—डावै गोडै री ढकणी सू, आगळ दो-एक नीचै, रिंपियै री कोर मावै जितो घाव; घाव मे पीप, अर पीप पचपचै काना ताईं । मुधा आगळी सूं मामूली-सो दबायो का पीप बह निकळी अर बा सिसकाए ऊपर खींचती बोली, "ओय, इंयां कांई करो हो बाईसा, जी निकळै है नी ?"

"जी निकळै है तो आछो'क, थारी मनचीती हुवै है नी ?"

"तो जद पीचो, थोडो क्यो जोर लगा'र मागीडो ।"

"अर पीच्या ये किंया ही, फेर चमकस्यो जद ?"

"पीड हुयां तो बाईसा चमकस्यू ही ।"

"इत्तै मे ही चमको हो, तो मरणो तो ईं सूं लाख गुणों दोरो है, छोजो ईंनै, मरण री आपा बात ही क्यो करां ? कठै ही कोई वाट कूडै-कडालियै पर पड़्या हा कांई ?"

डोकरी सुधा कानी देख्यो देखती रही।

सुधा बोली, "सको क्यों मा-सा ? हू थारोदार नी, बेटी हू थारी।"

'बेटी' कैवतां ही, वा फोस पडी—बिना पीच्या ही, अर आंख्या भर ली। सुधा बोली, "ई सूं थानै दुःख हुवै है मा-सा तो टाळ सही, काई करणो है—मनै पूछ'र ?"

आंख्या पूछती वा बोली, "बाईसा खुद री सायळ उघाडूं सो लाज हूं खुद ही मरू, जीणै मे मदरक तो की नी, पण कठ थोड़ा ही मोसलू ?"

"बात काई है, अमूजणी नै बाळो बारै काढोनी ?"

"अमूजणी है जद तो घणी ही है, नी जद की नी पण हुवो-हुवावो दोस सगळो म्हारो ही है।

"किया ?"

अबै खुलगी वा, बोली, "पडपोतो है म्हारै, परणायै नै ओजू दो साल ही पूरा नी हुया। डील रो कवळाटियो, थाकल ही है की, सोळै बरसा रो अबै हुसी दो महीना बाद। बीमू डोढ-बिलाल लम्बी, दोलड़ै हाड, सोळै-सतरै री बीनणी हुवैली बीरी, बीनणी काई, बीनण ही समझो थे। पडपोतो सेरै'क रो हो जद ही हू घरआळा रा कान खावण लागगी ही कै अरे कितीक रात, कितोक झाझरको, हू अबै कितैक दिना री ? सिर दूखै, गोडा उत्तर देवै अर सोझी ही मौळी पडै दिन-दिन। पडपोतै री बहू रो मूं तो मनै ही दिखावो—जाऊं जिकै सू पैला-पैला'। घरआळा पी ध्यान नी दियो। दो-एक महीना छेडै खामी-बीमार पडी, बेटै पूछ्यो, "क्यो मा, काई जी मे है ?" म्हारै तो बा ही रट, पडपोतै री बहू देखू जद ही जी मे जी आवै। बेटो बोल्यो, 'ठीक है मा, मोको लाग्यो तो ऐस करस्या तजवीज कोई।' हूं भाग री सावळ हुगी केई दिना नै, म्हारै तो भळे वा ही लागण रट। पडपोतै नै छेकड आटा दिरवा दिया, बीनणी नै पगा लगा'र, जुसी म्हारी आर्भ पूगगी जाणू। अधकीलो चादी रा गैणा हा म्हारा, आज ताई छाती नीचै राख्या, रिपिया हा चादी रा तीस, दो पोता परणा दिया तो ही हवा नी लागण दी वानै, वै सगळा दे दिया ई बीनणी नै, की चोड़ै की छानै। 'धिनगी काई एक चीज है बुड़ापो सफळ हुग्यो म्हारो तो। जणै-जणै आगै बडाई करती नी धपती, मूंढै रो कवो दीनै देवती।"

अधमिट वा चुप हुगी जाणू की विसाई सी हुवै वण। फेर बोली, "बाईसा, परसू धरआळा तो घणपरा खेत गयोड़ा हा। हू पडवै मे जीमै ही, वा चूल्हे कनै बैठी ही। मैं कैयो, 'साग मे इत्ती-इत्ती मिर्चां ही कोई घालीजै है", अबै टावर थोडी ही है तू, की सऊर राख्या कर।' पाछी बोली, मिर्चां सू ही तेजअर तूबै मू ही खारी, "तू क्योंं जिमी नी, करमां री कोट ही तू है, वैरण! कह'र थोडी करी न घणी, भुवा'र चोपियै री पुरसदी आ मोडै कनै, फोर बैठगी, लोड़ी मुण हुग्यो! टुकड़ो अधविचाळै ही छोड़, हू बारै निकळगी, थोडी राख दावली, अबै कीनै हो हू काई कहू? काल ताई तो मडाई कर-कर पूरी हुवै ही। कैया वास अर घर, सै मनै ही भाडसी, 'आ रडार ही छोडीली मरै है, कोई नी सुहावै घर मे ईनै, डरती हू तो होठ ही नी खोलू", कह'र वा चुप हुगी।

सुधा बोली, "सराहो खीचड़ी दांता चढगी?"

"हा बाईसा, इसो ठा हुंतो तो, काळजो खाली नी करती।"

"छोरो कंवळाटियो अर कमजोर, वीनणी दौलड़ै-हाड अर कद री पूरी, भैस सागै गरीब टोघडियै री गळजूट क्यो कराई थे? काई धान बाड़ो लागै हो थानै वी बिना?"

"बाडो न धाडो, म्हारो जीभ रै बळी चूंची लागी।"

"गाजी तो हुवैली छोरै पर अर पड़ी थारै पगां आवती, जे आव-नाक थाटै मे ले लेवती तो?"

"तो किमो सारो हो, पण बकरै री मा किता थावर टाळसी बाईसा, अबकै टळगी तो आगै लेलेसी कदेई, अबै जीभ ही निकळगी अर हाथ ही उठग्यो, लीक टूट्या पछै काई है?"

"आ अधी ममता विष है मा-सा, एक थे ही नी, थां जिसा काई ठा कित्ता दादा-दादी, अर मा-बाप वीनण्या रो मू देखण आपरै कार्ज टाबरा नै रोग मागै वाधै है आए साल, अर पछै?"

"पछै म्हारै दाई घड़ै मे मूडो घाल'र कूकै।"

सुधा धाव नै वोरिक सू धो, गाज दाव पाटी वांधदी।

डोकरी बोली, "बाईसा, वासतै नै डर्यों ही राख्या, हवा नी

"थारी थे जाणो, म्हारै वानी सू तो निधड़क रैया

टुग करती निकळगी वा। वीरो दुःख-दर्द सुण'र दुखी हुई सुधा, पण सरीर खातर वीरी अणूती ममता नै चेतै कर परा भर वा सैंज-सैंज मे मुळक उठी। वात तो बा करै मरण ताईं री अर सास ऊंचो चढै, आगळी लाग्यां ही—मरणो ही चावै अर डरै ही। वीरी चेतना मे एक छोटी-सी घटना उभर आई, वीरै नानै री कैयोड़ी—कदेई री।

'छोरो हो दस-बारै बरसा रो कोई। रमतै री कठै ही, एक आगळी थोडी-सी भरीजगी—कुत्तै री पीठ सू। छोरो, हो कोई ऊंची जात रो। बडी सूग आई वीनै, इसी तो कदेई नी हुई। कनै ही खाती रो घर हो। भाग्यो-भाग्यो वठै गयो। खाती लकड़ी छोलै हो। छोरो बोल्यो, 'दादा, आ आगळी काटदो म्हारी, कुत्तै रै मैल मे भरीजगी।'

"पाणी सू धो'र साफ करलै", खाती बोल्यो।

"हू ईनै पल भर ही नी राखणी चाऊ।"

"काटया पीड वेजा हुमी।"

"पडी हुवो, नी धारू।"

खाती स्याणों अर ऊमर लियोडो हो, बोल्यो, "तो लै, आगळी ई बोटै पर राख।" राखदी बण, खाती अकरी-सी दी, ऊंधै बसोलै री आंगळी रै पोरवै पर। लागता ही छोरै रै मू सू निकळ्यो, 'ओय मा', अर आगळी बण एकदम सू मू मे घालली।

"अरे इया काईं, तू तो कटावै हो नी ईनै?" खाती बोल्यो। छोरो तो लागता ही हवाई-जहाज हुग्यो, जावतै री पीठ ही दीखी खाली।

घटना रै सन्दर्भ मे अणचीती ही मुळकती वा, ध्यान धीरो पाछो ही गयो हरिजना री दुरवस्था कानी। वीनै पांच-सात बवाड़ी इसी दीखी बा मे, जिका मे डैण-डोकरी एक-एक, बेटा च्यार-च्यार, पांच-पांच। पळसो एक, आगणों एक, पण वी सागी ही आगणै पर, छोटो-मोटो एक-एक आसराम, एक-एक वेटै ढक राख्यो है। वीमे ही चूल्हो, वी मे ही चाकी, सवाद-पाणी ही वी मे अर उठा-बैठो ही। आगणों नीपै तो कळह, अर बुहारै तो ही वा। गिलास, बाटको, अर छुरियो-चौपियो कोई कोरो ही नी लाग्यो, टीगर कण ही करदियो ईनै-वीनै तो लुगाया रै आपस मे धीरा उछळन लागग्या, आपै मू वारै हुई रो, जोर, ओर को पर ही नी चाल्यो तो रीस,

आपरै टीगर पर उतारण लागगी, कोई सासु नैं बोघण लागगी—जीभ सूं, घणी तीखी पडै वा, हाथा-पाई रो सामनो हो करलै, इत्तै कोरी ही दाळ उफणगी का कडूढी निकळगी, चूल्हो बुझग्यो पण महाभारात नी बुझ्यो। इसी कळह, जादातर सिझ्या री ही हुवै, थक्या-मादा आदमी केई गुटको ले'र आयोडा हुवै, लुगाया लारै आदमी ही मूढै रा माईक जोर मे करदै। पडतो अधारो अर हुती कळह तर-सर बधै। एक बारणै रै एक-एक आधै आसराम मे, सैं दु:ख पावै पण जाग्या छोड'र अळगो, दो पांवड़ा ही कोई नी जाणो चावै। इतियासिक महाभारत अट्ठारै दिना में बुझग्यो, ओ बरसा सू चलै, कुण जाणै कितोक लम्बो चालसी ? वा सोचै, ओ, ईं एक गाव मे ही नी, छोटो-मोडो आखै देस मे है। वा दो-च्यार इसी टोकरया नै ही जाणै, जिका पर वारा बेटा, हाथ उठावता नी मंकै। बहुवां उठावै, ईमे इचरज ही काई ?

केई घर इसा भी है जिका रै आगणा मे दो-दो, तीन-तीन भीतां खड़ी हुयोडी है। यै घर काई, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान रा साकडीजता सस्करण है। राड, रोजीनै नी तो इकातरै चूकै हो नी। सैं एक-दूजै री पीठ तकता दीसै, एक-दूसरै नै नीचो दिखावण नै सैं कूडी किलाबन्दी रचै, लडनो बीरो काई नाव, ईसकै रा अनेक रस्ता है। इसै घरा री आ कतार, गाय मे आए साल नी, आए दिन लम्बी हुवै की न की। कित्ती ही आधी परम्परावा रो पनीजतो पजो आ पर टिक्यो है। दारू, जुवो अर जारी तो गाड्डी-रोटी है आ रै। झाडा, डोरा, कड़ाही, अर जात-जम्मा री सुरुवात तो दीखै पण अंत नी। बीमारी, गरीबी, अर गन्दगी पणखरै घरा नै पइसा सामा दिया ही छोडणां नी चावै। रेगरा रा तीन-च्यार घर है, आळो चामडो रगै है बै। साजो-मोरो आदमी, बा घरा कनकर निकळनो अमूजै। कूडां कोशी तरै सू सिडै, लपट दस पावडा परिया सू हो नाक पर आ बैठे, बारी नास्या तो आदी हुगी अर बिसी ही बारी मानसिक अवस्था। दुर्गंध है अर खूब है पण वै समझै है कै म्है जड काटदो बीरो। 'चमड़ा रगाई समिति' रै नांव 'लोन' ले-ने जेठ मे ही धनतेरस धोखली वां। रोया बिना मा-ही बोबो नी दै, थोडी कोसीस किया, बाडा गोरवै मिल सकै है बांनै, बठै निरवाळी रंगाई करो आगरी पण बै सोचै है कै "वोट रो राज चाल्यां पछै, म्हारी चिंता अबै

राज में ही है, म्हारो इतजाम मौड़ो-वैगो बो मतै ही करसी ।"

केई गवाडी इसी है आंमे, डौढ दमक पैला, सौ-सौ बीघा रा खेतड़ा जिका क्नै, आज वै दस-दस, बार-बारै, बीघा रै टुकडा पर आ बैठा। जोडी जोर मे रही तो ओजू और ही टूटसी वै। आंगळी पाक'र किसी हाल हुवै, साख किती ही सागीड़ी नीपजो, पाच-दस बीघा मे खळो घल'र किसा किडा लागै, दूणी दो बोरी कांट तो टीगर महीनै मे चाट पूरी करसी; अकाळ पड्यो तो कर्ज मे काळीजो, हेलो दिया ही कान कोई नी मांडै।

सुधा री बडी मैरी इच्छा है कै इसा घर चूल्हा अर पळीडा न्यारा-न्यारा भला ही सेवै पण 'अविभक्तं विभक्तेषु' खेती एकल हुवै टुकडा मे नी। सरीर न्यारा-न्यारा पण मन एकल हुवै, एकल ही मैंनत हुवै, 'समानी-आकूति', एकल ही हुवै उद्देश्य; जद जा'र—जाग्यासर पूगीजै। भग्या नै सामिल मे खेती करा'र, एक उदाहरण तो वण खडो कर दियो, पण हाल ताईं बो चर्चा री हवा पर ही की उभरयो है, मैंनत री एकल माटी मे गैरो नीचै नी बैठो, दूसरा ही केई, आ पगडटी पकडै जद हुवै। बा आपरी साधना रो मैदान की लम्बो करणो चावै है, पण काणकी रै ब्याव मे, फेरा पूरा नी हुवै जितै सौ टंटा ?

2

मैंतरा खेती री श्रीगणेस अंस ही कियो, कियो काई करवायो हो बा कर्ज सू लारै पड'र सुधा। दातियै अर कसियै रै हाथ लगावण री सौगन न आरै बाप-दादा तोडी अर न आ। अ राज आ बसाया ही अंम है। सिट्टी काटता, एक-दो जणा हाथ रै ही बा बैठा, निनाण साव छोडो हो तो ही, वी मागै आ, धान रा बूटा ही केई जाण्या सूत लिया। गाव रै कण ही देख्यां-सुण्यो वो हंस्यो, पण सगळा सू मोटी हसड तो एक दिन और हुई, वण पछनी मे ढकदी।

मघो अर बीरो बहू, सूरज निवळता ही खेड़ी पूगग्या। पैलै दिन रात

नै, सिरदारी आनै खासा लवडधक्कं लिया। वोली, "पाच तत्त रो इसो ही पूतळो थारो अर इसोही औरा रो, तो थे अमीर की घणा हो ? थारै मतै ही थे काम करण नै क्यों नी सिरको ? रोज किच-किच करणी पडै, अणसमझ हो थे का धान नी खावो ? विना कैंया करै इसा देवता वणन-आळा नी, तो कैंया तो पण आगीनै मेलो की ?"

माद ऊपणीजै ही, आज एक ही दिन हुयो है। पैलै दिन रो वोरा दो-एक नीरो ऊपण्यो पडयो हो। मोठ आधीक वोरी हा, बै साभ लिया। मघो आपरी बहू नै वोल्यो, "लै कोई नी आवै जितै आपा ही दस-बीस छाला ऊपणा ?"

"हा लो," अर वा तिपाई पर चढगी, मघो छाला भर-भर झलावण लागग्यो। माद नै छोडदी, नीरै नै ऊपणनो मुरू कर दियो। आधो'क वोरो ऊपण्यो हुसी, मघै री बहू बोली, "है ओ मोठतो कोई कदेई सै पडतो दीसै है ?"

"लारै जावता आसी, तू ऊपण खाथी-खाथी," मघो बोल्यो। इत्तै सुधा अर सिरदारी आ पूगी। आनै देख'र, सुधा अर सिरदारी दोनू ही हसी। सुधा योली, "भाग्या ओ कांई करो हो थे, नीरै मे सू भळै काई काढू हो थे ?"

सिरदारी बोली, "मैं देख्यो, अै आज इत्ता वैगा आ पूग्या तो सूरज कीनै ऊगसी ? वैगा, पधार' र, काम कियो ओ, आज नीरो ऊपणो हो काल ऊपणस्यो चाचडा ? बरस लें' र धूड मे ही नाख्या रे।"

मघै री बहू वोली, "मैं तो भुवामा कैंयो हो आनै, ऊपणन री ढिगनी आ नी, वा हुवैगी, अै वोल्या ऊपणे राख तू।"

'धोखा ऊपण्या, पण सावळ हुई, दो घर डूवता टूब्यो एक ही।"

आ वात जद गाव मे पूगी तो लोग हसण रा ही हा। सुधा नै सीध मे राख'र कैंयो केयां, "मुख सू टुकडो खावना रै आ मिदरआळी क्यो लारै लागी है ?"

सो हाणि अर हसड करा'र ही, सुधा नै ई मे हाणि कांकरै जिनी अर लाभ पहाड-सो लाग्यो। माद, गुणों, चारो अर त्याळियो थै तो समझण लागग्या। दातियो अर कसियो ही की चलावणो सीख्या। ई साल तो खैर ट्रैक्टर चढायोडो हो अगलै साल हळ पर ही हाथ राखसी तो अगला पाठ आरो चेतना मे और गैरा उतरसी।

अैस प्रकृति री मैर इसी हुई कै जमानो भाग री नाचतो आयो सामनै। आछो हुयो, दूध अर दुहारी दोनू ही बसता रै'लिया। अैम ही टाट कढाई अर अैस ही भाग रा गडा पड ज्यांवता तो आं नैं दूसर एकजुट करणा टेढी खीर हुती। खेती हुई तो खैर पगा नीचै जमीन सारू ही, पण हुई जिती हुई गैरी, युथकारो नांवै जिसो। सगळां सू मोटो बात हुई, सामिल-खेती री; पण ई मे न गांव नैं आस्था पैला ही अर न अबै है, भाया नै खुद नैं हो नी। आदर्स री देवळी तो सुधा रै दिमाग मे ही पण आ कमाउवां नै देख'र आस्था बीरी ठिठकगी। या सोचै ही, "अै है भंगी-भाई, नव वजी ताई तो अै सेज सू खेडा हुवै, फेर आरा पग पाछा खीचण नैं किती ही आ मे आधी आदता, मतीरा री भारो कीकर बंधसी? केई दफै अै, पण सुजा'र खडा ही हुग्या, भाई बीरा हो किया आंनैं, पण ई कान सुण'र बी कान काढदै, थारो काई करै कोई? "मथा, मूळा चालो भाई," "हां चालो थे, म्हे आया, पग मे जूती ही नी घाला," पण आवै कुण? सुधा नै झुंझळ ही आवती अर मन ही बीरो पाछो पड़तो, पण लारै सिरदारी री जोर पूरो हो। जीभ सू ही मचकावती बा अर जूत ही दियांवती, मोट मे बण बानै विद्यरण नी दिया—अंकुस राख्यो।

ई खेती रै मिस केयां नैं की लगन ही लागी, की लोभ ही पडग्यो, आपरी परिस्थिति नै ही की समझी, अर जीवण री ईली लकडी मे कठै ही, आत्म-गौरव री चिणख रो आभास ही हुयो। बिरत छोडदी अर अबै ओ ही नी हुयो तो घर री रामलीला चालसी किया? ओ बीज थारी माटी मे कठै न कठै रूपग्यो हो, वो ऊगसी एक दिन ओ सन्तोप सुधा नै मोटो हो पण नियति, अवार की उदास ही बी मागै।

मिश्रजी आ'र ज्यू ही पाछा गया, सुधा नै लपेटै मे ले, गांव री हुवा एकर तो इसी फुरी कै बा विचारी मर्म, चिंता, दुविधा अर उदासी मे तर-तर गैरीजती गई, एक दो दिन नी, केई दिना ताई। अणचीती निरासा री बाढ बीरै कंठा ताई आपूगी। बीरी योजना अर उद्देश्य तो पड़ग्या खटाई में, पण ही आपरा बीनै छूटता लाग्या बठै सू। ई मे मिश्रजी रो दोस बिल्कुल ही नी, दोस है फूड़ री बुगली धरती पर चढ़ोजतै एक विसलै वातावरण रो। वातावरण नैं गाभा पैरावणिया, हा सरपच अर बीरा आप-मीच भग?।

कूड़ रो कांई चाको, सूई रो मूसळ कर दियो। सुधा जे ठठारा री बिल्ली हुती तो सपनै मे ही नी संकती। अफवाहा रै कडवै धुवै मे डूब'र बा घबरा उठी, संसार रै इसै हीर्ण सभाव नै समझण रो, वीनै काम ही नी पड्यो हो पैला।

मिश्रजी रै पाछा मुड़तां ही, आ बात जगळ री लाय-सी आखै गाव मे फैलगी कै आ सुजानगढ री बामणी है कोई, अर अठै भाग'र आई है।

भाग'र आई नै ले'र सात-आठ दिन ताईं गाव रै घर-घर मे चर्चा रो एक इसो देव-दानवी सागर मथीज्यो जिकै मे साच रो बुलबुलो तो कोई, कदे-कणास ही उठतो पण विस आपरी पूरी ऊचाई पर हुवतो। गाव री कुत्ती-वृत्ति हाउ-हाउकर, वीरी निर्दोस चेतना में एक इसो विस भरदियो जिको वीनै न तो सैंज मे पचै अर न उल्टी हु'र पाछो ही निकळै। दुविधा रै आकास मे अधर लटकगी बा त्रिसकु-सी।

'भाग'र आई' रै भाखर सू लोगा मन-घडन्त चर्चावा रा लम्बा-ओछा इत्ता नाळा काढलिया जिका री गिणती सैंज नी, पैलडा सूकै नी बीमू पैलाँ, दूजा त्यार। 'लफगी है,' 'धणी कूट' र काढदी,' 'खावण-खडी है, घर रो गैणो ही दसिया नै दे बैठी', 'दरियो ही हुंतो की तो बाप नी लेजावतो?' 'एक मोडै सागै भागी ही, ठा लाग्या मोडो तो डरतो पार हुयो, आ पडी भुंवाळी खावती फिरै है, घर में बडनो तो चावै पण बडै किसै नाक? मौडो-वैगो, गाव नै उजाळसी आ, सिरदारी रै बेटै मागै लगड़-पेच बतावै है ईंरो,' ईं ढग सू मूढा जिती ही वाता। कठै-कठै आ भणक ही पडै कै, 'भई, इसी लागी तो नी, फेर कांई ठा खाल योडी ही बामै हैं की री ही, खिडकी खोल'र माय कुण झाक्यो है कोरै ही?'

सुसरो नो आयो जितै, वीरो व्यक्तित्व एक इसो करामाती मावळ सू ढक्यो हो कै पासा-लोग वीरै बारै मे मैंज-सुखद कल्पना करता नी धकता कै, 'देखो मळ मे वास करतै भंग्या रा भाग, जठै देवान्या-सी मानखादेह बामो लियो है, ईंरा पग टिकता ही थारो कुम्भीपाक तो खिडणों सुरु अर वैकूट बणनो। अठवाडै पर झगड़ता नै, रोटी मिलण लागगी।" कोई वीनै कंवारी, कोई परणी, अर कोई जाणै काई-काई बतावतो? रहस्य ही वा।

अवार चर्चा रै फुटकर बजार रा भाव जठै धाप' र नीचा है बठै गावरै एक सभ्रांत दायरै में चर्चा है कै सुसरो ईंरो चैरै-मैरै ठाकरियो, वेसभूसा सू खासा सरतरियो अर ठसकैआळो लाग्यो। ईं कुमीपाक सू ईंनै काडण नै समझो, चावै आपरो पाणी राखण नै, नस नीची कर' र किया ही आयो विचारो। दोरी-सोरी आ मान ही गी, पण पछै काईं ठा काईं चमको उठ्यो ईंरै, जीप पर चढ्योड़ी पाछी कूदगी अर भाग'र भंगीवाड़ैं में जा बड़ी; जद सोचो हा ईंरो कसूर नी, माथै रा पेच ही ढीला है ईंरा, ईं बदनसीब बामणी रो कुण करावै बिजळी रो सिकताव?

हरधनजी बोल्या, "पेच ही जे ढीला हुता तो आ स्याणी-सखरी बातां नी करती।"

गोपाळ म्हाराज हा में हा मिलांवता कैयो, "बात तो साची है, ईंरो तर्क-ग्यान एकर तो पढेसरी रा पग पाछा सिरकावै।"

"तो फेर बात काईं है, समझ में नी आई," केया पूछ्यो।

हरधनजी बोल्या, "जठै ताईं मैं पढी है ईंनै, ईं में हुणी चाईजै चिडाळ-कुळ री पोपता प्रेतात्मा कोई। वा किणी पठित नी हुसकै?

"हु क्यूंनी सकै," मगळा ही बोल्या।

"अधूरी लालसावां-बस, वा किसी भटकती नी फिर सकै की में ही?"

"क्यो नी फिर सकै," सागी ही सुर भळै बोल्या।

"वा आपरै मैंज सम्कारा-बस, मू आपरो अधभोगी दिस कानी ही परसी का और कीनै ही?"

"अधभोगी दिस कानी ही," सगळां ही कैयो।

"गाव री चिडी तो गांव कानी ही उडसी, बो आत्मा नै तो चिडाळ कुळ ही स्वसी; बामणी हुवै चावै डिणियाणी; ईं मू किसो फर्क पडै है, पलमी तो प्रेतात्मा री, सूक्ष्म में स्यूळ मू संसगुणो बळवेसो हुवै है।"

"मानी," करीब-करीब सागी ही सुरा भळै समर्थन दियो।

"प्रत्यक्ष नैं प्रमाण री काईं जरूरत, रामधनजी राठी री बहू तो बाग में जीवती-जागती बैठी है ओजू, टायर ट्टी हुवैंता आधी दर्जण अबै तो दीरै?"

'हा है।"

"सांव अंगूठा छाप है वा ?" !

"है।"

"एक बीमी नेंडो बीतगी हुसी, ब्यांव मैं कलकत्तै गई हुई थी। आई जद आवती एक बंगालण चूड़ावण सागै ले'र आई। म्हे सगळा अचंभो करता वा सेठाणी जद बंगला बोलती अर सम्कृत रा श्लोक उच्चारती।"

"हा उच्चारती, म्हे हो सुणी ही बोलता बीनैं," पकती ऊमर रा दो-एक बोल्या।

"उच्चारती ही वा, तो अबै करवावो उच्चारण बी कनै सू, भूयो नैं भूरियो हंसी अर पकड़ना नैं कपड़ना।"

"साची है चेडो आदमी नैं दावै ज्यूं नचा सकै है।"

"आ ही ठा हुसी थानैं, मैं बीनैं भागवत सुणाई अर गयाजी घलवाई जद जा'र, पिंड छूटयो सेठ-सेठाणी रो।"

"हा," पण सै हां मे हा मिलावाणिया हा, आ कोई नी बोल्यो कै गुरुजी ये बीमें सइकड़ रिपिया रो चूरमो तो बिना जाड हिलाया ही कर-लियो। चूडावण रै नाव री सीट रिजार्व करावण रा पइसा, सीधा ही जेब मे घाल लिया, रस्तै मे बीरै रासन-पाणी रो खर्चो और, सेठ नैं ठा पड़ग्यो सगळो, तो ही बो होठ नी खोल सक्यो—डरतो।

एक जणों बोल्यो, "बामणी है बिचारी, नूर-भूर अर खानदानआळी, बस्ती मे बैठी है जुगाड की आपानैं करणो चाईजे।

गोपाल म्हाराज कार्ईताळ सू आंवसोजै हा, होठ मतै ही खुलग्या – थूव रै चेपै-सा, बोल्या, "मैंदीपुर तो बीनैं हूं ले जा सकू, महीनो-बीस दिन रह ही सकू हूं बी कनै, और तो हूं काई करू ?"

"हां और तो थे कांई करो, थारो तो पूतळो ही परमार्थ नैं बण्यो है," एक जणों बोल्यो। लगतो ही एक जर्ण और चरदी, "गुरु, ठाकुरजी री आरती करता बेळा, हाथ टोकरी पर आड्या दियै जानो अर मन मैंदीपुर घमतो हुसी ? पण ओ काम, पैलां थानैं मिनण नैं कठै ? पासूं पैला तो उम्मीदवारां रो 'क्यू' घणो लम्बो है।" गोपाल म्हाराज रा होठ तो बन्द हुग्या पण बात को नीचाण में उतरणो सुरू हुगी।

रावतमल बैद बैठो हो—बरस पैंताळीसेक रो। रंडवो हुयां पांच

साल हुग्या । बीस-तीस हजार रा टक्का ही है कनै । छोरी है एक बीरा हाथ पीळा कर दिया—तीन साल पैला । सवा घटा रोज समाई करै, पण बीनणी विना हियो ही ऊधो अर तकियो ही। अज्ञान रो ऊंट, छैंडो री फिराक में है। बोल्यो, "बामणी, बिणियाणी कोई ही हुवो भला ही, भली बोल'र कैणो पड़े है कै वा जे आपणो घर बसावै तो इलाज रो खर्चो हू ओटू ।"

एक बोल्यो, "पण ठीक हुया पछै, थारै कनै बाळन नै रैसी वा, आपरै घरै नी जासी ?"

दूसरै कैयो, "रैया तो सेठा ठीक ही है, थारै काकै हस्तीमलजी रै ही एक बगालण है घर में, थारै बामणी ही सही, गाडी तो लैण पर ही चालसी ।"

"अरे भग्या सू तो जद कद ही आछो हू ? रावतमल उपक'र कैयो।

सोहन मुलकियो बोल्यो, "बामणी, बामण रै ही ओपै है, इलाज जाणै अर हू, करावो बात आपानै ?"

एक जणों उपक्योड़ो ही बैठो हो, बोल्यो, "दादा मू पैला काच में देख्यो है' क नी ? दाड़ी में काळो तो सोध्यो ही नी लाधै अर बीनणी भावै है पच्चीस साल री ?"

"क्यो काई माड़ो है मूढो ?"

पुरखो बोल्यो, ' मू तो सगळा रा ही फूठरा है अर बत्तोसी ही ऊजळी, पण, सिरदारी सू मिरया हो' क नी पता, बा मूडावण सू ही प्यारचंदा बेसी है, रेस चोईसू घटा हाथ मे ही राखै है।"

बात फेर, आगै नी चाली।

एकान्त में बैठ'र इया बात करै तो थूक मीठो भला ही करो, हुवै अमूमन बेकार ही है, पण ससार रो सभाव हे। आ लोगा बात नै आगै सू आगै, मैतरा रै गळै में ई ढग सू उतारी कै एकर तो बानै पूरो वैम हुग्यो कै रै मे ओपरी छाया कोई जरूर है। कैया रै मन मे आ और बैठगी कै बा ओपरी छाया जे कदेई विचर बैठे तो आपणो खासो-भलो नुकसाण ही कर सकै

भाग-2

है। ईं सूं बेटैम बात करण मे घाटो ।

मायो सिरदारी रो ही एकर तो चक्कर खा उठग्यो । "मैं मुसरै सागै जावण खातर, ईंनै पेट मे वड़'र ममझाई ही कै बेटी आपरै घरे ही फूठरी लागै, अगला न्योरा काढ'र लेजावै है तनै तो क्यो नी जावै ? आ ऊमर, ओ उणियारो पण ईं चीकणै घड़ै रै तो छाट ही नी लागी । चढ'र पाछी कूदगी, जद सोचूं हूं, चेड़ो है ईं मे कोई न कोई, नी जद इसी लुगाई, ताळै मे बन्द कियोड़ी ही नी रुकै, धणी नै अधारै मे ही जा सोधै ।"

बीरो मन नी मान्यो, पण पूछ ही लियो, "थाई रात नैं कदेई की डरै तो नी ? की दीखतो हुवै कदे-कणास, तो बता—सक मत ।"

"तनैं किया वैम हुयो मा ?" वा उदास-उदास बोली ।

"केई दिनां सूं तनैं उदास देखूं हूं अबार, जद पूछूं हूं ।"

"मा री सेवा-पूजा करता थकां, ओपरी छाया रो प्रवेस म्हारै मे काई, म्हारै पाडोस्यां मे ही नी हुसकै, थारै आ किया जची ?"

"जची तो नी, पण माईत हमेसा ऊंधी तेवडै—आप-आळै री ।"

प्रचार री पांख्यां चढयोडो कूड, एकर तो सूधै बैठै साच नैं ही पस्त करदै; सुधा री उदासी ईं मिथ्या प्रचार सूं वधी ही, घटी नी ।

रूपै अर मथै री बहुया सुधा सूं कीं टेढी है अबार । एक नैं तो करदी सिरदारी नाराज अर दूजी नैं सुधा ।

सुधा मुसरै सागै सासरै जावण नै फळसै सूं बारै निकळी तो रूपै री छोरी सांमी आ'र छींक करदी । सिरदारी रो मायो ठिठक्यो बी बेळा ही । बीनैं झाळ थाई, पण गिटगी बी बेळा तो वा । सुधा रै लारोलार बा छोरी जद पाछी फळसै मे वड़ी, तद बा बीरो बूकियो झाल'र बोली, "नास्या मे थारै कोई कीड़ो जुळबुळै है का तमाखूरी डबडी कोई ? पाच मिट ही थारै सूं टापरै नो टिकीजै, क्या वास्तै मरी ही वडै ? न कीनै ही सुख सूं विदा हुवण देणो, न कीनै ही सुख सूं बात करण देणी, हरदम ईंरै लारै बळसी, सगळा रळ' र खायलो ईंनै," कह'र बण एक चेपी गुद्दी मे, छोरी गोच खायगी । हाथ टावर रो हुंतो तो कोई बात नी, पाच कोलै रो हाथ, पाच कोलै रो बेग समझो; दस कीलै री मार कद झलै ही आठ बरसां री छोरी सूं । बीरी मा खड़ी ही कनै ही, वण सिरदारी नैं मूढा-

मूढ ही कहदियो, "देखो थारी बाईसा नैं, काठीराखो, म्हांनैं ख्याल नी करैं, बिना मुतळब छोरी नैं कूटली, धान ढोरो घालू हू।"

काळैं नै धूळिया ही देदिया हुवै, अबै सिरदारी नैं कुण रोकै, बोली, "देखो थे रपलैआळी गूघली नैं, धाप'र धान मिलता ही फण करण लागगी है। तू तो बळै ई लाड रैं लचकैं नैं, दिन में दस दफै गधै नै जरकावै ज्यू, जरकावैं; 'राड सेकली मनैं तो, मरैं न माचो छोडैं', मो काढती हुसी गाळ अर मैं एक ठोकदी तो पूर फाडन लागगी, बाळू डौळ थारो", अर ईंरैं सागैं ही वण रुपै री बहू रो धूकियो झाललियो, आख्या जगण लागगी बीरी, फडकतै होठा तिलाड री त्यौरी चढगी। बोली, "तू म्हारैं सिर पर हगैं तो ही कबूल है, पण काठी राखो थारी बाईसा, आ किया कही तैं, बाईसा इसी थारी किया लागी तनैं, दौड-दौड थारा घणां करैं जिकैं सू, इसा काई टट्टा परखावैं है तू बाईसा नैं? म्हारैं सामनैं 'बाईसा' रो नाव धाज लियो है, आगन्दै बाको बस में राखे, नी तो चद्दमर मोचलिए थारो।" धूकियो झाल्या-झाल्या पांच-सात दफै वण बींनैं घटी रो गेंडूळम करदी, पतळी छाछ तो आगैं ही पीस पड़ी धुरी तरैं, "ओय, मैं गरीवणी नैं मारैं रे।"

सिरदारी भळे दड़ूकी, "जळडा कग्ती मानै है का सावेळी जिमाऊं? फरदिए पछै मुकदमो म्हारैं माथै, चढवादिए फांसी मनै? नुगरी, हराम-जादी रडार रैं गुण तो कठै ही गया, बोलण नै मरैं है भळे? मैं ही थारा थोडा किया, कित्तो-कित्तो दफै रिपिया माज्या—मैंत री जात, ब्याज तो हो ही पडै, रोवती जद, भूठ में ही टाचा हूँ पालती। मोड्या रो माडो ही पोपो थारैं सू तो, आप में पडर्यं बीज नैं वो ही पोसैं।" बीरा मैंतरी-गम्मार भेळा हुग्या, वा बोलती गई, आठो-भडो, निवळै वो धणी रैं भाग रो। भगणा धणकरी भेळी हुगी, भाग रो रूपो ही आ नियो। मधै री बहू नैं छोड, लुगाया मैं, सिरदारी री भीड बोनी। मधै री बहू ही वधारो मो थाडू तो ही, पण सिरदारी रैं सामो देख, काळजो बीरो साथ नी दे हो, जीभ नैं दातां सारैं कर, हिलण नी दो बीनैं।

केई भगणा बोली, "भाभीसा, थे माईत हो, पेट मोटो राखो, म्हारैं तो दो-दो, चार-चार टावर है, थारा तो बैं मगत्या ही है, म्हारैं सूं घणा वाल्हा है वैं थानैं—गम पिटो आज-आज तो म्हारैं कैया हो।"

आंरो रोळो सुणर सुधा ही कोटडी स् निकळ'र बारै आयगी। सोचै ही, 'अतिपरिचयात् अवज्ञा भवति,' चौईसू घंटा वसू हू आंमें, पूछ को घसीज-सी ही," बीच बचाव करती वा बोली, "मा, लाडू री कोर में किसो खारो, सगळा ही म्हे थारा ही तो हां।"

केई बोली, "नी बाईसा, थांनै म्हे काई कैवां हा, म्हारै तो थे जी री जडी हो, थानै देख-देख जियां म्हे।"

"जियो हो थे धूड," सिरदारी बोली।

"मा तूं भळे बोलण लागगी ?" सुधा बोली।

'हियै फूट बात करै जद झाळ नी आवै आदमी नै ?"

"फेर बा ही बात ? उथळ, कितीक ताळ उथळसी, छेकड तो बंद हुणों ही पडसी।"

सुधा, एक मिंट सगळयां कांनी सरसरी निजर सूं देख्यो, फेर बोली, "हूं तो कांईठा कीनै ही खारी ही लागती हुस्यूं, पण, मनै तो थे सगळी बिरखा-सी वाल्ही लागो हो।"

सिरदारी बोली, "तूं तो खारी ही लागसी आंनै, रात दिन एक कर-राख्यो है आ खातर, टैमसर न नींद, न रोटी, देखी अै तनै जस रो पीडियो —ठोकलिए नावळ।"

"मा, जस अै राखो, कुजस मनै सभळावो पण मूंडा तो मुळकता राखो।"

"तूं आप कठै आई है, तपस्या में कांई कोई भंज पडयो है थारी, ठाकुरजी नै ठा।"

"तैं जिसी मा मिलगी जद सोचूं हूं, तपस्या सावळ ही म्हारी।"

सिरदारी पांच-सात रुपै नै ही सुणाई। वो आपरी बहू रो बूकियो पकड'र, घर कांनी ले टुरयो बोलै। बोल्यो, "कानी, ईरो तो है मायो खराब, थारै खातर म्हारी चामडी री जे जूतो बणै तो ही थारो बदळो नी उतार सकूं, आ ईनै कांई ठा ?"

लुगायां रो खिडतो झूमको आप-आपरै घरां कांनी टुरग्यो पण सुधा आरै पगा मे अकारण ठोकर रो ठियां बणयोड़ी सोचै ही, "इसो कांई स्वार्थ है आं सूं म्हारो ?" वा उदास हुगी।

मघै री बहू रो मूं चढण रो न कारण, न कारण रो माव । एक दिन दोपारै पावेक दूध मांगण आई बा । घरे महमान आयोड़ो हो कोई । सुधा बोली, "की पैलां आवती तो बात बणती, अबै तो बरता दियो ।" सुण'र विदा हुई बा, पण मू चढग्यो । रस्तै मे कोई मिलगी, पूछ लियो बण, "कीनै गई ही ?" वफारो काढती बा बोली, "गई ही उत्तर लेवण नै ।"

"क्यों काईं हुयो ?"

"म्हे घर रा हां, बांरो तो चुळू दूध में ही सीर नी अर थोरी, मेघवाळा नै बुला-बुला'र ऊधावै, इसै लूखैं लाड नै चाटा कांईं ?"

बात सिरदारी ताईं आपूगी, की सुधा रै काना मे ही पडगी । सिरदारी बीनै की ऊंची-नीची ली, बा नटगी । बोली, "कैयो बीरो मू बळै ।"

सिरदारी बोली, "फेर कोई बात नी," पण सुधा नै बण कैयो,"मैं तनैं काईं कैयो हो बाई, कै धीणो घारै तो है पण बी सागै धीजो मूघो पड़ैलो कदेई, बा पगा आईंक नी ?"

"आसी मा, संसार रो समाव है कै बीरा निनाणवै करो अर एक नी तो समूचा पर ही पाणी फेर दै बो ।"

गांव मे चर्चा री वधती लाय मे आ दोना सुगाया गुप्पा-चुप्पी मे पूळा खूब नाख्या । सुधा नै ठा लागग्यो तो ही बण, होठ ही नी खोल्या बी सामा ही । दुख इत्तो ही हुयो कै अंग रा कपडा ही वैरी हुवै हा । आई नै ओजू साल ही नी हुयो, बळती अवार सियाळै मे ही सुरू हुगी तो अगला दिन तो झलणा ही ओखा है । बीरै पाणी पर उदासी री एक गैरी काई, काईताळ तांईं तिरती रही । चर्चा रै, ईं घटतै-बधतै तूफान सूं, बा इसी नी घबराई जिती चर्चा रै अगलै चरण सू ।

3

तोत रा घोड़ा दौड़ावंण नै, जिसो खुलो मैदान अबार सरपंच अर बींरै चौटीकट चेलां नै मिल्यो बिसो औरं कौनं ही नी । सुधा जिकै दिन, तीस-

चाळीस लुगायां नै भेळी कर पंचायत पूगी, सरपंच री चेतना एकर चुक-ळीजगी, की भावी अंदेसै सू । सहरां मे तो लुगायां, आपरी मागां नै ले'र, नारा, भासण, पिकेटिंग अर पूतळा बाळन तांई सगळा कर सकै है । आंसू-गैस अर लाठी-चार्ज सू ले'र हवालात तांई री जोखिम ही वै उठा सकै है। सडक सू ले'र, ससद तांई बारो एक अलग स्तर है , पण, गांव री साकडी इकाई में, बोल-बतळ जठै, काकाई-बाबाई री सीधी पगडांडी सू जुडै, बहुवा आदम्यां रै जाड मे जठै जीभ खोलणी तो दूर, टिचकारी सू सैन करती ही सकै अर गूबटा राखै छाती सू एक बिलान नीचै-तांई ; वठै बै घर रा आंगण छोड-छोड, पचायत-घर आगै हमलावर-सी जा ऊभै, बिल्कुल नुईं बात है ।

सरपंच सोच्यो, "ईं अगुवा लुगाई री आगली सीध मार्थ, बै जे म्हारी पाघडी उछाळ दै, की आवळ-कावळ बकदै तो हूं बा पर किसो लाठी-चार्ज करवा सकू हू, का आसू-गैस रा गोळा छुडवा सकू हूं । वैं जे, धूड-फूस की फैंकदै म्हारै पर, जूती री देवै नी, खाली उबका ही दै, तो बा मारी सूं माडी अर आपो मूल्योडी अधबावळी कोई मेलदै अणचीती ही तो न अैफ० आई० आर० ही दर्ज करावणजोगो अर न की आगै ही होठ खोलण जिसो, बिना पइसै लोग देखै तमासो ।"

बानै जत्थै में देख'र, पंचायत-घर बारकर जिया-जियां मगरियो मडणो सुरु हुयो, सरपच रै चैरै री हवा खिसकणी सुरु हुगी । वास्तव में डर बीनै न लुगाया रो हो अर न गाव री भीड़ रो ही । बात ही, बीरी खाउपीर चेतना रा मायला पग साव भ्रष्टाचार री घिसकती धूड़ पर हा । बीरै सरपंच रा पग, जाम्यां मतै ही छोडै हा । दारू, जुवो, अर जारी रो जनक जद वो खुद है तो वो वंद बानै बाप रो सिर करै ? बण सोच्यो, "आज तो हरजी रै विरोध में पंचायत आगै मेळो, काल म्हारै विरोध मे माडता बानै कुण रोकै ?" बीरै ही, दो-एक काधिया कहदियो, "सरपंचां बाडै कुर्त रो तो साथ मे वळसी काई, हरजी कांई तो घोवै अर कांई निचोवै, टैम सू पैलां, गिद्दो थारी खुसती लागी । पग जमाया राख्या चावो, तो ईं लुगावड़ी रा पग छुडावो गाव सूं ।" बीरै हाडो-हाड ढूकगी, यो बीनै गांव सू बिदा करण रा नुस्खा भेळा करण लागग्यो, साधारण

नी—रामबाण।

बो आछीतरै सू जाणै है कै दारू, जुवो, जारी अर घूसखोरी अवार कठै नी ? चपरासी सू ले'र मिनिस्टर ताईं सगळै आंरो ही बोलवालो। न सरकार री मीच्योडी अर न जनता री ? यथा राजा तथा प्रजा, जनता किसी न्यारी है। काई हुय्यो हजार कागला री कांव-कांव मे, एक-दो कमेड़या न्यारी कू-कू करलै तो ? अै चीजा तो अवार सरकारी सोटा सागै इसी चिपी है कै आंनै सिरकाया सोटा सिरकै अर बांनै सिरकावण री हिम्मत बातां री बस्ती मे थोड़ी ही वसै है ? बो खुद दारू तणो जोरयो है। बीनै ठा है, अैम० अैल० ए०, अैम० पी० बीरी मार्फत ही बोतला बटवाई ही गाव मे। बीरो विश्वास है कै अै चीजा आज वद हुवै न काल, बद हुसी बाग देवणिया।

बण दो-एक चलता-पुर्जा नाई, अर दो-एक डूम-डाकोता नै एक-एक बोतल सूप'र कैयो कै जजमाना मे ये जठै ही जावो, एक ही बात कैया करो कै, "आ लुगावड़ी तो बडी माड़ी आई गाव में, मौको लाग्या गाव री बहू-बेटयां नै उजाळसी। गाव रा जादा सू जादा मिल'र, पचायत नै दरखास्त देवो कै इनै गाव सू वेगी विदा करो, दरखास्त री नकलो मंत्री, मुख्यमत्री ताईं और देवो।"

गोडा पर घड़'र आगै सिरकावणआळी, दो-एक लुगाया नै बण और चढादिया दस-बीस। बण सोच्यो जनमत जोर पकड्या, आ काई टैंरै बाप नै ही छोड़णो पडसी गाव। निदा रै दाणा रो दळियो; दळियै सू आटो, अर आटै नै थपड-छाण कर-कर, सुधा रो आभो आधो करण मे सरपच अर बीरै लोगां पाछ नी राखी। बद सू बदनाम बुरो, उदासी तो बिचारी रो गाढीजै ही।

टाबरा नै दोपारै री छुट्टी कर, दूध जमावण नै सुधा, पग रसोई मे दियो ही हो, लार री लार एक छोरी आई बोली, "बैनजी आपरो कागद है।" लिफाफो हो, ठिकाणै रा आखर बण गौर सू देख्या, पण अदाज नी बध्यो। कागद जेब में घालती बा बोली, "कण दियो तनै ?"

"डाकियै।"

"ठीक, थास तू", अर बा आपरै काम में लागगी। दूध मे जावण

दे, ढक बीनै चोखीतरै, फेर कागद नै वण खोल्यो । पढ्यो, उदास तो ही, एक पूळो और पड़्यो, एक अणचीती आसका सू चेतना वीरी हाल उठी । धरती पगा नीचै सू निकळती लागी वीनै । होठ वीरा मतै ही फूट पड्या, "हे प्रभु अबै ?" अर होठ फेर मतै ही बद । मिटभर बठै ही खडी रही—अवाक अर थिर । कागद पाछो ही जेब मे घाल, टाबरां कानी टुरपडी ।

दूजै दिन दीतवार हो । टाबरा नै छुट्टी ही । दिनूगै-दिनूगै पूजा-पाठ सू नचीती हू, बा अर सिरदारी गाय रै जाबतै मे लाग्योडी ही—दस-पाच दिना मे सी-सुरू हुसी ई खातर । नुई खीपा, अर डोरिया दे-दे, वै बूढै अर जरजर छप्परियै नै काया-कल्प करावै ही । बालियै गारो गिलो राख्यो हो, मुधा ठांण नीपै ही । सिरदारी बीनै बरजती बोली, "बाई, बास मे छोरया री तो एवड उछरै है रामजी रो, गोवर रो लसरको लगाणों तो सै ही जाणै है, तू क्यो घसै, अबार बुलाऊ कोनै ही ।"

"म्हारै हाथां री किसी मैंदी घसीजै है, मा ?"

"थारै तो और काम ही घणां ही है ।"

"गोबर मे लिछमी हुवै है, गीला हाथ मनै ही करणदे ।"

"तो कर, पोती की मनै ही दिए ।"

"की क्यों सगळी ही तनै ।"

सूटर वणावण रो काम मिगसर लागते ही सुरू करादियो बण । भँवरी अर साम्लडी ही सूटर वणै । टावर पढावंण मे ही वै मदद करै बीरी, पण बा कोई खास बात नी । पोट-भर खुमी तो वीनै ई बात री है कै सुरू रै सीखतड़ टावरां री मास्टरणी समझो चावै वैनजो सिरदारी हैं, एक नुंई आस्या जलम लेलियो वीमे । सुधा पैली सू तीजी तांई हाजरी रजिन्टर घाल दिया, हाजरी रोज हुवै । पैली री हाजरी सिरदारी खुद लेवै, एक-दर्जण टावर बो आगै बैठै । महीने आखर पढण में की असुविधा हुवै वीनै । महीनै पैला, सुधा मंडी जा'रर बीनै चश्मो दिरालाई—बडी राजी हुई बा ।

भँवरी नै पढण-पढावंण रो बडो कोड है पण फुरसत कम मिलै विचारी नै । पोतै-पोवै, पाणी लावै अर आवै घर रो फूस ही काढै । दो घडी फेर

सासु सागै छाणा-वळीतै नै ही जावै।

सिरदारी खा-पी'र, इग्यारै-सवा इग्यारै वरामदै में आ बैठी। पोथी अर पाटी-वरतो सागै हा। धीमै-सुस्तै किताब री सीधी सब्दावळी वा आपरै मतै ही उघाडै। पढ, लिख अर बोल'र वा कित्ती राजी हुवै वा ही जाणै। सोचै, "देखो, म्हारी आख्यां रै जीभ लागगी, जीभ रै हाथ अर हाथ में बड़ग्यो जादू। ईं सू ही आदा अचंभो बीनै आपरी चेतना में आस्था अर आनन्द री बधती चौडाई सू हुवै। एक दिन वण आपरै ऊबड-खावड आखरा में पेमू नै एक पोस्टकार्ड लिखदियो, धीरै-धीरै अर हाथ नै ठैरा-ठैरा। ठिकाणो तो सुधा ही कियो अर कोमा, पाई री की मदद ही। लिख्यो, 'पेमू सू सिरदारी रा आसीस! बेटा, समचार सब भला समझ, पण थारी मा अबै सागण नी रही, सरीर तो सागो है बीरो। आ मैर तू सुधा री समझ। कागद दीजे। टाबरा नै सोरा राखे। थारी मा—सिरदारी।

कागद पूगग्यो, बेटै जिया ही बाच्यो, बीरै अचभै रो ठिकाणो नी रैयो। वो आपरै सैंधा-मैंधा नै दिखावतो फिरयो, "देखो म्हारी मा, साठ रै बाद सीखी है, दुनिया कैव, 'साठी बुध नाठी', पण आ फालतू है, साधना सू सिद्धि जरूर मिलै।"

अबार वा 'प्यासा कौआ', कहाणी देख-देख लिखै ही—सागै बोलै और ही। सुधा पाटी देखी, पाठ ही बचायो। बिना अटकै, सटाक-सटाक बाचदियो वण। एक कागद अर पैमसल लिया सुधा! कागद पर फूठरै-फूठरै आखरा में तीन सैंणा लिख'र बोली, "लै मा, आंनै उघाड़ देखा?"

वा मन में की गोखती बोली, "म्हारै", सुधा बीचमेंस मे ही टोकदी, "आगै कोनै बधै है, 'म' आधो है नी?"

"हा है, फेर?"

मुधा 'तुम्हारे' लिख'र बोली, "बाच ईंनै?" बांचदियो वण।

"तु नै ही छोड अर 'रे' नै ही, बिचलै नै बांच अबै?"

"म्हा", वा बोली।

"तो अबै पाटी सुरू कर बा सागण सैंण।"

वा बोली, "म्हारै।"

"हा ईंयां, अबै चाल आगै।"

वा बोली, "म्हारै सतगुरु दीनी रे बताय, दलाली हीरा-लालन की।" आ लैण बोलता ही बीरै चैरै पर एक राग फूट पड्यो अर वाणी सू एक मैंज सुर-लहरी निकळ पड़ी। अगली दो लैणा नै वा बिना सावळ गौर किया ही आलाप उठी—

"लाल लाल सब कोई कहै, सबके पल्ले लाल,
गाठ खोल देखी नहीं, इण विध भयो रे कगाल
दलाली हीरा लालन की।"

ओ बीरो प्यारो भजन है, जद-कद ही बा वेल्ही हुवै अर हुवै आपरी मैंज मस्ती में, तो आलाप उठै। चेतना में तो वो जीवत हो ही, अबार आधरा सू उठतो वो बीरी जीभ पर आ बैठो, चेतना सरस हुगी बीरी, मन आस्थावान अर प्राण थिरकता। सोचै ही, "अरे अबै हू काई-काई बाचस्यू, कबीर, सूर, मीरा, तुळछी अर रैदास सगळा, दादू-नानक सै, खजानों खुलग्यो, चाबी लाधगी।" बा सुधा रै पगा कानी हाथ करण लागी।

"मा, पटकू है काई?"

"थाई, तनै कठै राखू? साठ साल सू आंधै अर उजाड़ धोरै पर कोई बीज नी फूट्यो, तै बी पर फुलवाड़ री आस खड़ी करदी। धोरै रो हर कण हरियाली में खुलणो चावै।"

"मैंनत अर लगन पळै, करामात ई मे थारी खुद री ही है।"

"म्हारी करामात हूं जाणू हूं बाई, तू दाय आवै तो ही बता, जरूर तनै मा रो परचो है, बीरो हुकम है तनै, हुयां बिना कुण है इसो जिको कोचरीच्यै ठांव में पाणी ठैरा सकै। म्हारो सरीर एक अधखळ ढूंढो है, बीमे सतांसी-माता कह भलां ई सुरसती-माता, पगलिया मांड दिया, तै कही वा कर दिखाई, लखदाद सन्तोसी-माता नै पछै, पैलां तनै।"

"कीनै ही नीचो पटकणो हुवै तो बीरी बडाई करो, तूं म्हारा गोडा फोडावण सू राजी है तो कह?"

"थारै दोराई है तो जांवण दै बाई, मैं तो म्हारै मन री कही है। माई, हूं कोनै ही जद, कथा-भागवत बांचतां देखती तो सोचतीकै देखो

छोटै-छोटै आका सागै अै किसोक जैन जोड़ जाणै है, म्हारै माथै मे ही इंयालको तातण कोई जे, आपरा सागै जुड बैठै तो हू ही बाचलू, सगला सानी नी तो कोई खूणै मे बैठ'र ही सही, घणो नी, खाली बीजक री याण्या ही पण आ अटकळ तो टावर थका ही आवती हुसी, 'पाकी लकडी रामदाम, कोकर निकळै काण', पाका डाळा लुळै थोडा ही, टूटो भला ही. तो ही मैं एक वूढे कथावाचक नैं पूछ ही लियो कै 'है ओ, माईता, थे आ थाथी-खाथी कथा किया बाचो हो, इसी मनै ही कोई अटकळ बतावो नी ?' वै बोल्या, 'आ अटकळ सिरदारी करणी आछी हुवै तो अगलै भौ मे ही सोधै कठै ही', पण न वी कथक्कड नैं ही अर न मनै ही ओ टा ही कै म्हारै मे वी अटकळ रो तातण ओजू जीवतो है—सुरसती सागै जुड़न नैं।"

"दिनूगै रो भूल्यो, सिंझ्या घरे आवै जितै भूल्यो नी, चलो छेकड़ जावता लाध्यो बो ही आछो।"

"पण एक सरै और है बाई ?"

"काईं ?"

"थारै चैरै री कासी पर हसी ढुल-ढुल चमकती, पण अबार इसो काईं चौमासो चढ्यो वी पर, काटोजती देखू हू बीनै ?"

"इयां ही लागू हूं तनैं", उदास-उदास या बोली।

"म्हारी सौगन है तनैं, वात नैं लुकोई तो।"

सुधा सामनैं देखती रही पण बोली नी।

सिरदारी फेर बोली, "केई दिना सू गाव मे अबार थारो चकचक मोकळी सुणीजै, दुख तो हुवै ही पण दुनिया रो मूढो थोडो ही पकडीजै, बिलोवण दै थूक, थारो काईं लेवै ?"

"पण ईं रो दत्तो डर नी।"

"तो ?"

"एक कागद आयो है डाक सू।"

"कद ?"

"काल।"

"कीरो ?"

"काईं टा ?"

"काई ठा किया ?" वा अचभै सू बोली ।

"नाव ही नी दियो लिखणियै ।"

"तो फेर क्यारो कागद अर काई फायदो देवणियै नै। काई लिख्यो हे बी मे ?"

कागद सुधा निकाळ्यो अर पढण लागी—'देवी, थारो चैरो तै इत्ता दिन ढके राख्यो, ठीक रही, नी दीख्यो जितै निभग्यो पण अबै वो मतै ही चौडै हुयो—एकदम रोल्ड-गोल्ड है, गाव पर थारा ठग-पजा फैलावण री मैर राख । दो-तीन दिनां मे थारा बोरिया-बिस्तर बाध'र विदा हुवण मे ही भलाई है थारी, नी जद इज्जत रा टक्का करा'र जासी बी मे काई काढसी, बाडा कुत्ता रो लाय मे की नी बळै लो, दिन थारो, रात म्हारी, घर थारो जेळ म्हारी, इत्तै मे ही समझ लिए ।'

सिरदारी बीरै मू सामो देखती, बडै ध्यान मू सुण्यो कागद नै, फेर बोली, "ला मनै दै तो ?"

सुधा देदियो सिरदारी रै हाथ मे । आखर साफ हा । वण ही उथाड लियो—खासो-भलो । उदासी मे एकर बा ही डूबगी । पलभर रुक'र, बा बोली, जाणू आपरो निरणै वण करलियो हुवै, "बाई, ऊंदरां रै टीका मिन्नी मरयां पछै ही निकळसी, समझगी नी तू ?"

सुधा बीरै मू सामों देखण लागगी ।

"थारो काम कर, धाप'र तो जीम अर धाप'र ही सो । इसो करण-जोगो अर करामाती हुतो कोई तो आपरो नाव नी लिखतो ? जेळ हुयोडा दूजा नै ही सुण्या है, पुद नी भोगी है । दिन मू डरै या चमचेडा खातर बंदूक बसाणी नी पड़ै, काकरा ही घणा, म्हारै हाथा मे चूडी नी ठुळी है, जचा'र दिया पछै एकर तो ऊट रा पग ऊपरलै करदू, डर ही मत तू ।"

वण ठीक कही, पण सुधा रै मन मे तो ही निष्फिकरी नी बापरी । बा बोली, "मा, नाव दे'र, यानै चौडै लडाई थोडी ही मांडणी है ? ई ढग रा दो-च्यार ध्यान मे है काई ?"

"हां है दो-च्यार कळमूढा —जाट अर रजपूता मे ।"

"काई कियो बा ?"

"रात-बिरात खेत-खळै, रोही-राही मे दो-च्यार दफै, घूड्याणी

आपरी करली बा।"

"काईं हुयो फेर ?'

वाका हुया थै म्हारी नाढ जात मे ही समझ—हरिजनां मे । ईं जातडी नै तूं जाणै ही है, हुवणनै कांईं हो, एकर तो पग-पीटो खासो ही कियो, थाणै-कचेड़ी सम्या, पग ढक्या, पागी ही लाया। केई बूझ-बुझाकडा विचाळै पड़'र कैयो, धिगाणै, घर री सायळ क्यो उघाडो रे ? सौ-दोयसं दे-दिरा'र मूं बद करदिया वारा।"

"जेळ ही हुई कीनै ही ?"

"एक एवाडियै नै हुई ही एकर छव महीनां री पण जेळ काट'र आया पछै दमिया री तो वो दादो हुग्यो अर मूधा रो बाप। अबै वो नी रैयो, रोही मे पैणै पी लियो बीनै।"

"ईं हिसाब तो जेळ भोग'र आणों वरदान हुयो बीनै—हीरो वणग्यो बो तो ?"

"अबार तो घणखरो इंया ही देखा हा बाई।"

"पण इसी गोळमाळ घणी था नाडा में ही क्यों हुवै ?"

"एक तो आगै ताई म्हां लोगा री पूग कम अर सारै समाज में पूछ ही। गवाह-साबूत त्यार करणा दोरा, न जेब रो जोर अर न जूत रो, सूधै पर तेलास दुनिया रो नेम है।"

सुधा सिरदारी मामो देखती उदासी मे ऊंडी बैठै ही।

सिरदारी भळे बोली, "बाई नाडा नै की तो नागो परख लियो—थाकै मे आगळो फेर'र अर की थै है ही ईं जोगा।"

"ईं जोगा किया ?"

"मिनख घणखरा दारूखोरिया अर जुवारी, मायं-बार कठै ही घूड खावता फिरै तो बारी लुगाई ही कोई की घूड़ खावणी जे करलै तो अचम्भे बयारो ?"

"हालत खराब है मा।"

"बाई, न एक घर अर न एक गाव, मुलक सगळै मे हीं ढूबी पर नव वाम दीसै है मनै तो। मियाजी उदास क्यो, कै सहर रै अदेसे मूं, आपां तो आपणी जाबतो राखो बाई, पराया नै समझा तो सका हां पण त्यार करतां

ताळ लागसी।"

"ताळ लागै तो छोडदां बानै ?"

"तो पीचोजा वां सागै ?"

"टुरणों तो सागै ही पडसी, सगळा नै सागै राख्यां बिना हार है आपणी।"

"हार नी, जीत राख पण निरभै तो रह, हू बैठी हू जितै।"

"पछै ?"

"पछै थारो निभाय अठै मुश्किल है।"

"काईं ठा ?"

"मनै दीसै जिसी कही है मैं तो।"

"हुसकै है पण अणआई-चिंता में पैलां ही क्यों घुळू ?"

"मत घुळ पण एक गळती तैं करदी।"

"काईं ?"

"म्हारो कैयो नी मान्यो तैं।"

सुधा समझगी, वा उदास-उदास नीचै देखण लागगी।

सिरदारी भळे बोली, "घरे आयै नाग नैं काढ, लीक नैं पकड़यां बाई कुण जाणै कितो लम्बो भटकणों पड़ै ?"

"पड़ै तो पड़ै, पण थारी छांयां है जितै तो मत बोल।"

सिरदारी रै चैरै पर एक उदासी फैलगी वा कैणो चावै ही कै म्हारी छायां नैं तैं ढाल मानराखी है पण मनै अबै बी मांकर तावडो छणतो दीखै है। बात नै होठां ताईं ला'र, वा पाछी ही गिटगी। आपरी पाटी-पोथी जाग्मा-सर राख बोली, "बाई घर में एकर पग घाल'र, पाछी ही आऊ हूं—सागी पगां।" बा टुरगी, चालती सोचै ही, "रूप अर जवानी ईंरै खोळै बंध्या खोरा है, बाळसी ईंनै ही नी, सागै मनै और। टसक-टसक'र कियां रात काढू हूं, म्हारो जी जाणै है, जे कोई कांई-किसी ही हुगी तो मरी न जीवी।" वा चालै ही खुलै आकास नीचै पण ओ सांसो बीरै अन्तस नैं ढकै हो।

च्यार बजी ही, गाय रोही सू आई खड़ी ही, बीनैं खूटै बाध, कुतर आगै मेलदी बीरैं। बीनैं याद आयो, अरे आटो भिगो'र, एक थाळै बटकै

नीचै राख्यो पड्यो है—दिनूगै रो। भूख दिनूगै ही नी ही, थाळी पर बैठण रो जी अबार ही नी करै। आटो दिनूगै नै बू-दे उठसी और नी तो, पीडो कर'र, गाय रै मूढै मे तो द्। वा बरामदै कनै सै आई तो सामनै सानड़ी आवै ही पग घींसती।

"सान्ति ?" मुघा बोली।

"हा बैनजी।"

"चूल्है कनै बैठी-बैठी दो फलकिया तो उतारलै, आटो तो पड्यो है दिनूगै रो—बटकै सू ढक्यो, जीम लिए दूघ सागै।"

"थे नी जीमो ?"

"जी ही नी करै।"

"दिनूगै ही तो नी जीम्या ?"

"हा।"

'भावै जिसो ही को तो जीमलेया।"

"देखी लागसी, हाथ-पग धो'र आटो मठार सू, हू छांणा रो कूडो लाऊ।"

वा मुकाण (छाणा, थेपडी मुकोवण री जाग्या) पर आ'र, सूका-सूखा छाणा कूडै मे नाखण लागगी। सामनै बाड रै चिप्यै एक अखबारी पानै पर बीरी निजर गई। उठा लियो बण बीनै। काई दूर मे चीकणों हो बो, चिकणास पर ही छीदी-माडी लाल कीड्या, बडी पतळी, बडी महीन। पानों हालता ही, मैं कीड्या हाल उठी—हडबड़ा'र। पानै नै बण सावळ झटका'र, पढण जिसो करलियो—मीठै रा महीन-महीन भोरा हा बो पर, विचार आयो, "भूखी कीड्या बिचारी, की चेपो करै ही आपरो, क्यो छेडै करी वानै, काई काढमी ई अठे मे तू ? थाड़ काली फैंकदू पाछो ही।" देख्यो पानै कानी—उड़ती निजर सू, 'दैनिक नवभारत' रो हो—कोई हफ्तै भर पैला रो। पानों अंठो, खबरा बासी पण बीनै तो बो बेळा बो, तवै उतरती रोटी-सो ताजो अर सतावरी पाक-सो पुष्टिकर लाग्यो। आज नव महीना नैडा हुसी बण कोई दैनिक पढणों तो दूर, बीरो मू ही नी देख्यो। बाप रै तो बा कदे-कणास ही पढती पण, सासरै दो घडी रोज ही, हिन्दुस्तान टूबो चावै नवभारत, वै खुराक हा बीरो।

मौकै-बेमौकै बासी रोटी सू वीनै न उदासी ही अर न आपत्ति ही, पण अखबार री बासी खुराक न वीरी आख्या नै रुचती अर न माथै नै ही। देस अर आखी धरती रै धरातळ सू मन बीरो की न की जुड़घा ही राजी रैवतो पण अबार थी सामो सन्तोसी-माता रो ओ मिंदर अर आ उदास हरिजन-बस्ती, बस, इत्तो सो धरातळ ही बीरो ससार हो। ईं धरातळ री खदबदीजती हाडी मे रोज री घटनावा रा उठता-बैठता गुठला बा देखै, का गाव रै छौलरै सागै मथीजती, रागद्वेष री आंधी छप-छप बा सुणै। केई बिरिया तो वा इसी उदास-अमूजती वेळावा रै धक्कै बाजी है कै काबू बार हुती मनन्या बीरो कह उठी, "मू माथो ले'र, कूच क्यो करैंनी अठै सू—मुगपासी", पण, वीरै विवेक बीनै थामलो जावती नै। अबार केई दिना सू बिसी ही मनहूम वेळा भळे आ घेरी वीनै; घेरो बीरो नापणै मे ही नी आवै। इसी वेळा मे इसो बासी अर अंठो पानो ही बीनै बारहो लागसी कदेई, इसी बण सपनै मे ही नी सोची।

कूडो लेजा'र बण रसोई मे राखदियो। हारै सू पाच-सात थीरा काढ'र, चूल्हो वण धुखतो करदियो। फलका सातडी करै इत्तै, पानै नै आख्यां मा'कर काढण नै वा बारै आ बैठी।

सिधथी मे ही, वीरी आंख्यां, "सामूहिक बलात्कार सै एक मोटै मिरै नाव पर, जा अटकी। लिख्यो हो—आगरा, खबर मिली है कि यहा से बीस कीलोमीटर दूर, एक खेत मे किमी हरिजन युवती के साथ कुछ बदमाश, बलात्कार कर फरार हो गए; युवती अचेत अवस्था मे अस्पताल पहुचाई गई। पुलिस बडी सरगर्मी से बदमाशो को तलाश रही है।"

वीरै सिर पर उदासी री कावळ पैला ही भारी ही, भीज'र अबै वा और भारी हुगी, काळजै सो बडग्यो। अगलै कालम मे—"गाजियाबाद, बदूक की नोंक पर लूट और बलात्कार···" 'कुवै मे पड़नदे' बुदबुदाई बा—खबर अधूरी छोड आगै बधगी।

बी आगै, "दिल्ली के एक नामी होटल पर छापा मार· संभ्रात परिवारो की कुछ युवा लड़कियो को बरामद किया अनैतिक व्यापार से सम्बद्ध है। होटल के मालिक को भी [लिया गया है।"

लगती ही, "समस्तीपुर के एक जनपद में हरिजनों के दस घर आग को भेंट, लूट और बलात्कार। पुलिस चार घंटे बाद घटनास्थल पर पहुची। जाच सतर्कता से जारी है।"

बी कनै आयै गुमनाव कागद नै याद कर पीड़ बीरी अदार गैरीजै ही अर चिंता बधै ही। आख्या वण दो मिट बंद करली। टीस घुटती गई, उदासी ढकली बीनै। सोचै हो, "व्यवस्था, पदलोलुपता री भाग पी राखी है का समाज री समझ नैं गुण रो घुण लागग्यो कोई? रोगी सत्ता, रोगी ही समाज। दुविधा रै दळ-दळ में न दिस, न द्वार।" आख्या खोलली, चावै ही आगे अबै एक आक ही नी देखू पण भूखी निजर भळै भागपड़ी आगै।

लिख्यो हो, "जैसलमेर, पाक घुसपैठिए रात के साये में ऊट और गाए बडी सख्या में हाक लेगए।" बडबड़ाई बा, "भूखं हा घुसपैठिया, आधं राज में, लुगाया थका ऊट बाळन नै हाक्या।"

निजर और आगे बधी, "बम्बई, एक बड़े व्यापारी के यहा तस्करी का सामान और नकली नोट छापने की मशीन मिले।"

चिपती ही—"उज्जैन, विषाक्त आटा खाने से बीसों बीमार, दो की हालत चिंताजनक।"

पानो दूजै कानी फोरलियो वण, दवाई, विज्ञापन, निविदा, लाटरी परिणाम, गुमशुदा की तलाश जिसा थळ छोडदिया वण। पानो फोरतं ही दरसण हुया।

"कलकत्ता, स्टेट बैंक की शाखा बंदूक की नोक पर लूटी गई, उग्र-वादी कार मे सवार थे।"

"दिल्ली, एक रिटायर्ड फौजी अधिकारी, कुछ गोपनीय फाइलें, एक पाक एजेंट को सौपते हुए रंगे हाथो पकडा गया—इससे एक वडे गिरोह का भडाफोड़ होने का अनुमान है।"

पाच-सात लैणा छोड, "कानपुर, दो राजनीतिक गुटो मे सघर्ष, तीन मरे बीसो घायल, कर्फ्यू, अर फेर वो ही राडोरोणो जिकै सू असूजै ही वा।"

"नागपुर, एक रंगीन सास्कृतिक कार्यक्रम मे रोशनी गुल, लूट और

भाग-2

बलात्कार। चीख और क्रन्दन से सभागार का आकाश कांप उठा। प्रतीत होता है, कुछ शरारती तत्त्वों ने योजना-जाल पहले से ही रच रखा था, पुलिस तत्परता से जांच कर रही है।"

उत्तेजना मे होठ बीरा धिगाणै ही धूज पड्या, "जाच, धूड़ कर रही है जाच। पुलिस सभागार रा बारी बारणा गिणसी, का मच री लम्बाई-चौडाई नापसी अर फेर आसै-पासैआळा नै चैरा देख-देख लवड-धक्कै लेसी, घरार्ती इत्त पुलिस री शिकायत करण नै कोई शिष्टमडळ मे जा मिलसी, सागै हुसी वारै अैम० अैल० ए०, अैम० पी० कोई, अर छाण-बीण रा पग सिफारिस रै धोरां मे लापता।"

अबै सिर री रगा बीरो तणै ही, झूझळ अर बेचैनी मतै ही उफणै ही धीमे। सोचै ही बा, "पानै नै फाड फैंकू पण फेर विचार आयो कै गधै रा कान खीच्या, खबरा री कुमारी रो काई बिगडै ? पानै पर रीस काढया किसी बीमारी मिटगी का यथार्थ अदीठ हुग्यो ?" निजर भळे टुरपडी सागण ही पगडांडी पर—भाग खायोडी-सी, लिख्यो हो।

"राजधानी मे दो छविगृहो का भव्य उद्घाटन", बीरा होठ फेर हाल उठ्या मतै ही, "बस पडतां की गरीब री जेब मे मूळी रै पाना सागै ही टुकडो लगावण नै पूण-पावलो मत रैणदेया।" कीं आगै, "अगली योजना मे साठ प्रतिशत लोगों को दूरदर्शन लाभ।" प्रतिक्रिया अबकै बीरै होठा पर तो नी फूटी, पण मन मे मोकळी उफणी, "रोटी, कपड़ै अर आवास रो सुख तो मत दिखाया गरीबा नैं, दूर-दरसण दिखावण मे पाछ मत राखदा, ईं नू थारा डील ही ढकीजसी, आता ही बांरी अ.सीस देसी अर आल्या ही कमर लम्बी लेसी।" अन्तिम लैण ही, "गुरदासपुर, एक निरपराध को गोली से उडाया गया—रोडवेज रोककर, शेष पृष्ठ सात कॉलम पाच पर।" पानों एक हाथ मे थामती अर्धमिट वा विचार-मूढ सी खोई रही।

आ बात नी कै ई पानै मे घणखरी खबरा एक ही माजनै री हुवै, कारवार अर विकास री भी ही—छोटी-माडी, पण वां पर बा री निजर नाख्तां आगै बधगी, बिना हलचल, विन. मयीज्या। मन ही बीमे, आ खबरा बीरै समानधर्मा पुद्गला नै और उत्तेजित . ऊहापोह मे खोई, अचानक बण सुण्यो, "बैनजी?" बा चौंकी, तार

बोली, "हा, आई बाई।" वा चावती तो दो-च्यार अणछूई लैणां भळे सोध लेंवती, पण अबै ऊवगी ही वा, गरीब पानै नै लीर-लीर करती भेळो कर, दाब दियो हारै रै सिलगतै मू मे, बो धुखण लागग्यो, धुवै वा ही कम नी ही। रसोई मे गई, सान्ति बोली, "फलका त्यार है वेनजी।"

"त्यार है तो लगा भोग, उडीकै कीनै है ?"

"आप, नी जीमो ?"

"मनै तो भूख ही नी।"

"आप, नी जीमो तो हूं ही नीं जीमू।"

"म्हारो कोई ईमको है काई ?"

"आप दिनूगै ही नी जीम्या ?"

"भूख नी ही, तो नी जीमी।"

"फेर हू ही नी जीमू, भूख मनै हो नी।"

मुधा वीरै चैरै सामो देख्यो, "भूखती है इंनै, पण हूं नी जीमू तो आ ही नी जीमै, आ ही कोई बात हुई ? वा आपरी बात पर जोर देंवती भळे बोली, "नीं जीमै तू ?"

"नीं", छोरी धीमै पण साफ बोली।

"भूख है तो ही ?"

अपग छोरी, चुपचाप मुधा रै मू सामों देखती रही। मुधा बोली, "म्हारो अबार जीमोरो नी बाई, थाळी पर बैठण नै जी ही नी करै, कह-दियो तू जीमलै।"

छोरी होळै-सै बोली, "भावै जितो ही लो—आधो-चौथाई ही।"

मुधा मुझळांवती बोली, "कहदियो हूँ नी जीमू, तनै भावै तो जीमलै, नी तो उठा'र वानै आळै मे राखदै।"

कँवण री ही देर ही, छोरी फलका एक टोपियै मे जचा'र, आळै मे मिरका दिया। मुधा वीरै चैरै मामों एकर और देख्यो, बी पर कोई प्रति-क्रिया नी दीखी वीनै, सिवा सैज सरलता अर आज्ञाकारिता री सीधी लीका रै। दिना री उदासी सू गाढीजतो-पत्थरीजतो वीरो अन्तस पिघळ'र पाणी वणग्यो। विचार आयो वीनै, "भंग्या री छोरी, चालती अंठ चावती, लूखै-सूकै टुकडै पर टूट'र पडती, अबार भूखी है, मामनै रेसम-सा कवळा फलका

है, घी-सक्कर कनै है, सामनै ही नी देखै वांरै, सिरकादिया बानै अण-चाईजता-सा—जाणू अजीर्ण है ईनै । वोनै लाग्यो कै इसो हेत का तो की मा में ही हुसकै है अर का फेर, 'पानी परात को हाथ छुयो नही, नैनन के जलसों पग धोए' जिसै दीनबधु दीनानाथ मे हो आपरै की अनन्य प्रेमी खातर । पग धोंवण नै न फुरसत अर न सुध, मतै ही तो आसू पडै हा अर मतै ही पग धुपै हा । अपंग-अडोळ छोरी रैं काळजे मे इसो अभंग अर अटूट प्रेम जिकै नै न भूख हिला सकै अर न कोई करड़ो आदेस । ई पावन प्रेम री मालकण नै कुण बतावै अपावन ? मैं भूखी अर उदास खातर, आपरै छोटै सै काळजे मे आ करुणा रो सागर छिपाए बैठी है । हूं नी जीमी तो रात भर आ गूदड़ी नोचै पड़ी-पडी तारा गिणसी, न ईनै नीद आसी अर न सान्ति । गदगदीजती वा होळै सैं-बोली, "लै बाई, थारो कैयो नी करस्यू तो रैस्यू कठै ? निकाळ फलका, हूं दूध काढ'र लाऊं अबार, दूध सागै जीमस्या आपां । चरको मू करण नै, थावै तो एक पापड सेकलै, आळै में पड्यो हुसी ।"

"हां चूल्हो तो ओजू सजळ ही है बैनजी, सेकलेस्यू पापड़ ।"

मुधा बारै आई, गाय नै वाटो दे'र दूध काढ लाई । पतळा-पतळा फलकिया चूर-चूर दूध मे, दोनां ही अरोगलिया । फलका इसा ही तो छोरी सेक्या हा, छागा रैं खीरा पर अर इसा ही इकसार बट्या हा । पापड रो चौथो टुकड़ो बण लियो, मजाल है कोर ही कठै ही बी री काची रही हुवै का पेट पर बीरै खीरो लाग्यो हुवै ।

मुधा बोली, "रसोई तो तू, देवता राजी हुवै इसी करण लागगी ए सान्ति ।"

वा कीं नी बोली । सिरदारी खातर दूध की, खीरां पर राखदियो ।

सिख्या पडते-पडते सिरदारी ही लाठी लियां आ पूगी । वास रो दस-पांच लुगायां ही धीरै-धीरै आ जमी । दस बजी ताई ग्यान-गुरबत अर घर बिध री चलती रही । सिरदारी नै दूध पा दियो । काळजो न्यायो हुग्यो बीरो, मी-नी करता नीद फिरगी वीनै । सान्ति ही जा रळी नीद भेळी । बारो, मुधा हो क्यो बचै ही, रजाई नीचै जा बड़ी, पण नीद लेणो किसी मारै हो । काई ताळ पैला रो स्यूळ पानां वीरै सामनै ही राख हुग्यो हो

पण वीरा घणखरा आखर ओजू जीवता हा वीरी जागती चेतना में। अबार वै निकळ-निकळ वी आगै साक.र हुवण लागग्या। मन उधेड़बुण में लागग्यो, "प्रभु, काई जमानो आयो है, जाणू इत्तै बडै देस रो कोई धणी-धोरी ही नी हुवै। आजादी मिल्या आज दसक बीतग्या केई, ज्यू-ज्यू वा वधै वो सागै वधणा तो लोगा मे चाईजै सगठण, सहयोग, श्रमनिष्ठा, साच, सरळता अर सुख समृद्धि पण अठै प्रवाह ही उल्टो है, वधै है बलात्कार, लूट-खसोट, बेईमानी अर आपसी सिरफोड़। लुगाई रो तो, एकली रो निकळनो, रात री छोडो, दिन मे ही धर्म नी, बीसू तो तास री पत्ती ही आछी, बा ही बड़ी अदब सू परोटीजै। वा तो बीडी, सिगरेट दाई हुगी, जी चायो जद सिलग.ई, होठा रै लगाई अर वूट नीचै दे'र पूरी करी का फंकदी आधी रेत मे—मन मे आई जीनै ही। लुगाई जद न खेत-खळै निरभै, न घर मे अर न सहर-बजार मे तो कठै जावै वा? मैंण री माखी हुई अंधकार मे कोई भींत रै तो चिपण सू रही बा? ओपरी हवा लागण रो राई भर बैम हुया ही, कळमूही नै ढोई कठै? बिना पाख्या इसी उडावै समाज बीनै कै बेगी-सी वा, की रुख पर बैठी ही है फेर? अकूरडी रै कूस नै, हेत री आस कठै?" पसवाडो वण फोर लियो, पण प्रवाह नी फुरयो।

"राजधानी रै काळजै लूट-खसोट, हत्या अर बलात्कार, हरमोड पर जठै पुलिस रो जवान, हर चौरावै पर चोकी जठै, फोन वायरलैस सब। बात ही खूटगी, ई हिसाब का तो पुलिस री आस्था अर आत्मा बीमार है का फेर व्यवस्था री। बुध अर असोक जिसै पच सितारा होटला मे अनैतिक वौपार, भलै घरा री भटकी छोरया रो झूमको जठै, का तो माईत सूना है वारा अर का समाज रा माथा। सून में तो खतरो ही पनपसी। अणपढ अर एकल एयाडियो ही आपरी सइकड भेडां रो ध्यान राखै, भटकण नी दै बानै, तो समझदार माईत जवानी री थळी पर पग राखती आपरी एकल-दोकल वेटया कानी जे आंख्या मीची राखै तो जणन रो फोडो वै क्यो देखै अर क्यों धरती पर अणचायो भार बधावै? जूत पड़ै तो ही नी समझै, नित नुवै सिनेमाघरा रा उदघाटण और करवावै। 'लोन' ही सरकार देवै अर लाइसेंस ही वा, फेर छोरा-छोरी आपणा बिगडै तो कोई परवा नी, सौदो घाटै रो नी—लोग सोचै। कुमाणस बुद्धि रै, आ कोढ़ा देस री रीढ

चाटणी सुरू करदी तो बीरै चैंरे री ताली किता दिन ठैरसी ?"

टीवी है, कैसरो-कीट-सो वीडीयो घटै हो, विलायती वासना रो सागर लायतो वो ही आ पूग्यो। सुहागण लागी दुहागण रै पाय; मैं जिसी करै मोरी माय, पिच्छमी संसार चावै ही आ है कै भारत नी रैवै, खुद टूटै तो ठीक है, नी तो तोडो बीनै । ठगी करण नै इत्तो वडो वजार और कठै लाधै अर कठै लाधै इत्तो लम्बो-चौडो अर सूनो धरातळ। मिनिस्टर अर अफसरा रा लाडला अर फिटोळ सावजादा विलायती ब्ल्यू फिल्मां, नागी, उत्तेजक अर वासना सू लथपथ काळै बजार वेचै, सहर री हर गळी तांई पूगण में सचेष्ट। की फुटपाथी अवारागर्द रो अर्क तो पुलिस कांई ठा काढसकै है पण वां सावजादी छतां कांनी पग राखती वा ही संकै ।

नेतावा नै फुरसत नी डाण फैंकण सू ही। राजनीति री चौपड, कूट-नीति रा दाव, कुर्स्या री गोटयां, जोड-तोड़ रो ओ खेलो खतम ही नी हुवै । 'दो दलों में सघर्ष,' सघर्ष हुवै थोड़ो ही है, कराईजै है वो तो ।"

महसा बीनै याद आई, वण पढी ही कठै ही, कै "जैन साध्वी के माथ छेड़-छाड करने पर स्थानीय जैनमंडल ने, मुख्यमत्री को एक ज्ञापन दिया।' अबार सोचै ही वा कै जैनमंडल ही क्यों ? और मंडळा रै तुळी लागगी ? इसै मौकै ही सवाळी सजगता नी बापरै तो फेर कद बापरसी ? कठै नेता कठै साध-सन्त, सांग बणाया फिरै है घणखरा ज्ञापन ? ज्ञापन मिल्ट्री अर मिजाजदस्त थोड़ा ही है ? सील री भोळी अर जवान पूतळचा, ताव नै तेड़ो देवण ई आंधै जुग में घर छोड़'र निकळै ही क्यो? निर्वाण बारै ही है, घर में नी ? विचार आयो, म्हारै पुरखावांरी धरती सू गूज्यो हो कदेई, न स्वैरी, स्वैरिणी कुत. ? बलात्कार सै आंधै पथ पर पग राखणआळो आदमी ही जद कोई नी, तो लुगाई हुवण रो सवाल ही कठै ? तो अबार आ रोगली मानसिकता, वधती नदी-सी क्यों है इत्ती ? हुणी तो आ कोई प्रतिक्रिया ही चाईजै, तो वाप ईरो ?" सोचती रही वा काईताळ, सहसा विचार आयो बाप ईरो, आधै परिग्रह रो भोगी दरसण ही तो हुयो, जडा वीरो ऊपर है अर रोग नीचै । आधी पूजो रा ऊंचा उभार वाँ जड़ा नै सीचै, निचलो सबवो हो; वो डाळ में गुच्छ सोधै—ईसकै रै ओग नै साथै लियां । ऊपर सोचोजती वै जड़ा मूद रै विवेक सूं समझै तो बलिहारी है बारी, f

सू एक आस्था निकळी प्राणवान बणती, 'मा ते व्यथा, मा च विमूट भावो,' हू कठै नी ? की मैं नी ? जरूरत पडता ही आत्मानं सृजाम्यहम्, काईं हा कद की मै जाग पडू, मनैं कठै सू ही सम्भ'र नी आणो पड़ै पण तू अणआयें भय री चिंता मे गळै, अणदेख्यै अर आकासी घेरै सू डरै अर अणरोई आख्यां रा आंसू गिणै—आ कठै ताईं ठीक है ? विकार नैं मत सोच । हर-जीत नैं आळै मे राख, हर हार नैं गळै लगा, अफलाकाक्षी अर गतमर्म हुर जूझ, बस ईं सू आगै की मत सोच, सिद्धि अर शान्ति ईं में ही है।" भार छटग्यो, आश्वस्त हुगी वा। वस्तो पाछो ही राखदियो बांध'र वण। बद करदी बत्ती अर कोटडी। रजाई आपरी आ सभाळी। ऊजळी आसा मे, बीरी याद पर एक कोई लैण नाच उठी, 'सुमिरेहु मोहि, डरपहु जनि काहू', अर बीरी आंख्यां लागगी—एकदम निधडक।

4

थोरी अर मेघवाळां रै आठ टावरा री एक उदास कतार आज तुईं आई है पढण नैं। तीन बा मे छोरयां अर बाकी छोरा। दो छोरयां अर एक छोरो भाई—बैन है, नानी रै अठै आया है। अै सै सिरदारी बैनजी कनै जा खड़ा हुया, मैला, कुचैला अर सूगला। वण ईं अणचीती कतार नैं आपरै चश्मै सू सरसरी निजर दे'र देखी। ठंड मे बैठी नैं ही बीनै, पसीनों आवतो लाग्यो। वण सोच्यो, "अठै तो अगली अधी ही पोचीजै है अर अै फेर आ ऊभा, कुण जाणै कठै लुक्योडा हा इत्ता दिन ? पढै तो, राज री स्कूल नी है ? पण सगळां नैं गुरसती रो वासो कवळै कनै ही दीसै है।" टावरा नैं वडा ही छोड़, वा सुधा कनै आई, असली अमूजणी तो ढकै राखी, सहज में बोली, "वाई, मोडा घणा अर मढी साकड़ी, एक नुईं पळटण ओर आई है टावरा री।"

"आवण दै मा, आपांनै छोड़'र ओर कठै जासी बिचारा ?"

"पण बैठण नैं को ठौड ही तो चाईजै ?"

"नी ठौड़ हुवै जित्तै म्हारै कनै भेजदै ।"

"कोई नुवों छप्परियो खड़ो नी करला इत्तै कतार नै बिदा करदा एकर तो किसो मैणो है ?"

"कित्ता दिन लागसी छप्परो बणतां ?"

"दो दिन तो समझ ही लै ।"

"तो दो दिनां खातर काढण रो नांव क्यों करै, मिंदर री ओट मे वैठा रैसी म्हारै कनै ।

"तो राख, पण टाबरा नैं एकर देख तो सरी तू, पूर तो कुवै मे पड्या आपरो सेडो ही नी संभै बासू । कनै बैठाया हो सिर ऊंचो चढै है ।"

"सीग-पूछआळो तो कोई नी है बामे ?"

"है तो लुगाया रा जायोडा ही," बा की झेंपती-सी बोली ।

टाबरा नै बण आपरै कनै बुलालिया अर बैठा लिया लैणसर खुलै तावडै मे। सिरदारी गई अर आपरै काम में लागगी । सुधा वां टाबरा कानी देखण लागगी । बारै कपडा री हालत आ ही कै मैल हुग्यो बांमे कपड़ा सूं भारी । केई कपडां तो मतीरा रो पाणी अर गिर चूस-चूस, सेडै अर थैठ री आल खा-खा आपरो असली रंग ही गमा बैठा । रेत चिपा-चिपा बै और ही करडा हुग्या, गरभई रा रीगा पेट अर गोडां सू गिट्टा ताई बेतरतीब बण्योडा हा । रज बां पर चैठ-चैठ बारी आकृति थिर करदी । केयां री आख्यां दूखणी आयोड़ी ही, केयां री आवण मतै ही । गीड अर चूचरा रो कब्जो हो वां पर। वा समझगी आ मैर अणमेधा बीज अर बोरिया री है, टीगर आखो दिन जाड चालू राखता हुसी । दो छोरया रा बिलान-बिलान रा केस भैस सू करड़ा हु'र चिप्योडा हा । लीख अर जुवा रो फाई चांको हुवैलो बा में, रह-रह बै अबार ही माथा कुचरै ही, पग सगळां रा ही उबांणा । नख बध्योडा ही नी, आज तांई कटयोडा ही नी । दात पीळा, डील थथयोड़ा । बासी मू तो, बै कुरळो थूकण रै ढव ही नी । मिनखा रो जाव, इसो हिया-हेठ बण अबार ताई नी देख्यो । एक-एक नै बण पूछ्यो, "कपडा कद पैरया हा रे ?"

"दियाळी नैं ।"

"बी पछै धोया ही हा कदेई ?"

"नी।"

"खोल्या ही नी हुसी कदेई ?"

"नी।"

"काख, पीठ अर गलै सारै खाज आंवती हुसी ?"

"हां।"

"निमटण जावै जद पाणी ले जावै है ?"

"नी।"

"तो बीठ करी अर काछियो बाघ लियो ?"

छोरो नी बोल्यो, नीचै देखण लागग्यो। आठ टाबरा मे सू सब रा उत्तर मिलता-जुलता ही हा। आधा में काणों राव, दो बामे की ठीक हा। केया रा अधघडी पैला ही बीज खायोडा हा, मूंडा री बास दो हाथ परिया सू ही आवै ही। केई छोरा री जेबा मे बीज अर बोरिया ओजू हा। वण बारै कढवा दिया बानै। केई छोरां रा हाथ सूध्या वण। दो नै छोड'र, सगळा रै तमाखू री बास आई। पूछयो वण बानै, "चिलम पियो रे थे ?"

थै नी बोल्या, उदास-उदास नीचै देखता रैया।

"डरोमत मारूं नी थांनै, नुवा गाभा पैरास्यू अबार।"

रुक-रुक हा भरसी बा। कोई दादै नै चिलम भर'र देवै अर कोई बाप नै। पैला दो सुट मैं खीचलै। आदत बामे पड़ी सो नी, खडी हुवै ही। बा रसोई मे गई। एक कूडो पाणी चढादियो अर मायं नाखदियो दो-मुट्ठी सोडो। पाछी ही आ बैठी बा कनै, आप कनै पढणआळै दूजै टाबरा नै ही बठै ही बुलालिया वण। इत्तै एक डोकरी आ खड़ी हुई। हाथ जोड़'र, सुधा नै बोली, "बाईसा राम-राम।"

"राम-राम, पधारो ?"

"पधारणों तो आप जिसै मोटै मिनखा रो है, म्हारै तो गोता लिख्योडा है।"

"बोलो ?"

"एक छोरो अर दो छोरयां, दोईतो-दोईत्या है म्हारा, पाच-सात महीना खातर आया है आप कनै, दो आंक अर की हुनर सीखण नै।" टाबरां नै वण कनै बुला'र बताया।

"अठै थे पढण खातर बुलाया है ?" सुधा पूछ्यो।

"बुलाया कण वाप है ? वावलियो घालग्यो।"

"धिगाणै ही ?"

"और रोणो ही क्यारो है ?"

"क्यूं ?"

"मावडी तो आरी गई अगलै घर, वाप करलियो नातो, नातैआळी आप जाणो ही हो परायै जावनै सूधै ही कद ? आप बतावो हू कठै काढ़ू आ आयोड़ा नै ? पण म्हारै कनै किसी थेली है बतावो ? म्हे तो आप ही राबडी सू कान चेप'र दिन काढा हा।"

टावरा री बाबत सुधा बीनै की ऊंची-नीची लेऊ ही पण बीरी कथा सुण'र बण जीभ ही नी खोली। डोकरी, होळै-होळै पग राखती, सिरदारी रै छप्परियै मे जा बडी।

भंवरी आयगी। सुधा बोली, "आज तो बाई, बेलीपो दे की ?"

"फरमावो ?"

"तू देख, पाणी गरम हुग्यो हुसी, बाल्टी भरला, अर कूंडो भर'र पाछो ही चाढदै चूल्है।"

"अबार काई करस्यो इत्तै पाणी रो ?"

आगळी सीध करती बोली, "अै छोटा-छोटा मानवी उणियारा दीखै है तनै ?"

"हा।"

"टावरा री गत में है का जूण ही भोगै है खाली ?"

"मैला ही नी, बीमार ही लागै है मनै।"

"लागै है तो उपाव करा की ?"

"जरूर।"

"साल मे दो दफै तो एवाड़िया ही पाणी मा'कर काढै है—लरडिया नै।"

"हा।"

"तो तू धर हूं, आ पर पाणी नाखा होळै-होळै अर अै म्हावै रगड-रगड़।"

"आपा तो नांख देस्यां पाणी, पण आंरी मावां नै ही तो बुलावो एकर ।"

बुलावा, पण आनै की ढगसर कियां पछै ।"

नख काटदिया वारा, तेल, लूण अर तातै पाणी सू दांत ही की दीखण-जोगा हुग्या अर बाका री वास ही विदा हुई । न्हा लिया सगळा, नुंवा फाछिया अर कुडतिया सगळा नैं पैरा दिया । माथा में दो-दो आगळो तेल दे-दे, चैरा चमकता कर दिया । नुई पाटी अर नुंवां बरता दे-दे, सगळां नै लैणसर बैठा दिया ।

डोकरी सिरदारी रै छपरै सू निकळ, सुधा कनकर हुती इंनै-बीनै देखण लागगी—डोळा तिडकांवती ।

"काई देखो हो माजी ?" सुधा पूछ्यो ।

"म्हारला टाबर नी दीसै, घरे भागग्या दीसै है रोवणजोगा ।"

"कठै भाग्या कुण जाणै ?"

"कुण काई हू जाणू हूं बाईसा, वारा लक्खण म्हारै सू छाना नी ।"

"अर वारा चैरा ?"

"चैरा ही छाना नी, जाम्या जद सू देखण लागी ही ।"

"भागग्या तो हेला मारो वानै नाव ले-ले'र ।"

"हुया बिना ही हेला मारूं, इंया कांई ये कनै ही लुको राख्या है थडै ही, का आज छोळा पर आयोडा हो बाईसा ?"

"हेलो करण में हर्ज काई है माजी ?"

"आपणै काई है थे राजी बाईजो, परतिया, पेमली अर पानकी ?" पण हेलो दियो ।

"हा नानी," टाबर तीनूं ही ग्वडा हुग्या ।

डोकरी वारै नैडी पूगगी, चैरा पर आख्या गडो'र बोली, "गोदी-छोरो गाव ढिंढोरो, ना-खाधा, ये तो कनै ही बैठा हा । ओळखणी में ही नी आया फूटरा हुग्या रे थे तो ?" सुधा कानी देखती, अचभै सू भळै बोली, "बाईसा, सेठा रा मा कर दिया थे तो आंनै । लखदाद थानैं, अर थारै माउ-पिता नै, हाथा में जादू है थारै । मीट में लिछमी अर बोली में थारी मिसरी वाह रामजी, काई घडी है ।"

"माजी, सेठा अर बामणा रा, टावर सं एकसा ही हुवै, पण थे काई कियो ?"

"किया बाईसा ?"

"न आनै स्नान, न आंरा कपडा ही साफ, न गोड पूछ्यो अर न सेडो, उठतां ही गोरवै नी टोरया, इंनै टोर दिया ।"

बा की नी बोली, सिरदारी आ पुगी अर बाकी टावरा री मावा ही । सिरदारी बोली, "बाई, आ पल्टण ठीक बैठाई ।"

'अर बा पैलडी ?' सुधा बोली ।

"बा तो बाई, सामों जोया ही सिर ऊचो चढ़ै हो ।"

"तू किसा ओळखे है बानै ?"

"वै तो हजार टावरां मे ही छाना नी मावै ।"

"वाह मा, अै वै ही तो है ।"

"ईं हिसाब तो बाई, आछ्या अर बेतै दोना ही उत्तर दे दियो दीमै है ।"

"उत्तर नी, वी वेळा थारै मन पर घृणा अर ऊब ऊबा आयोडा हा, तनै वै ही दीस्या, चैरा पूरा नी ।"

"अवार तो आंनै गोदी लेवण री जी मे आवै है, युचकारो तनै नाखू का आनै ?"

"पुचकारो आरी मावा नै नांव, अै खड़ी ।"

लुगायां की भेळी-भेळी-सी हुती सुधा कानी देखण लागगी । सुधा बोली, "है ए, थानै मावां री जूण दी है रामजी, बेटां री मावा तो और ही भागण ।"

"हुक्म करो बाईसा ?" वै बोली ।

"हुकम कांई, आंनै जणतां ही, डाई थारी उतरगी कांई ?"

सामनै, बरामदै में दो जणी कोई और खड़ी ही आयोडी, वै ही दो-च्यार मिट सूं आंरी वातां सुणै ही, अर हरकतां देखै ही चुपचाप । सुधा रो ध्यान बीनै नी गयो—बिल्कुल ।

"किया, म्हे नी समझी बाईसा ?" लुगायां हौळै-सैं पूछ्यो ।

"ऊमर री आधी नैड़ी घाटी थे पार करदी हुमी, ओजूं ही नी समझी

तो कद समझस्यो ? थे थारै टाबर सू की आस राखो हो का नी ?"

"राखा तो घणी ही हा—पार घालसो तो।"

"की वै ही तो राखता हुसी थारै सू ?"

"राखै क्यो नी ?"

"थे आरी आस रत्ती ही नी पूरम्यो तो अै थारी क्यों पूरसी ? नुहाणों-धोणो तो कुवै मे पडयो, थे आनै मिनखां दांई निमटणो ही नी सिखावो ? अबै ही थानै अै दीखै है अर आया जद ही दीखै हा, की फर्क नी लागै थानै ?"

"लागै है बाईसा, फूला थोड़ा ही है म्हारी आंख्यां मे ? पण पसु हां म्हे तो रास्तो थे पकडावो म्हानै।"

"रस्तो यो ही है कै पैला तो आप-आपरै टाबरां रा कपड़ा धोवो, मिंदर रै लारै पडया है, बठै ही सोडै रो पाणी है। कपडा मुळकसी तो टाबर ही मुळकसी।"

"किया ?"

"आ पछै, पैला कपडा निचो'र लावो।"

वै गई, आपरी दिस कानी। बरामदै मे खड़ी दोनू लुगाया नीचै उतर आई। पैला वै सिरदारी सागै चौनिजर हुई, बोली, "सिरदारी बडिया, राम-राम।"

"राम-राम बाया, सुख विलसो अर सुहाग हुवो मोकळो, ओळखी नी ?"

"नी ओलखी जद ही तो आसीम सेळ-मेळ री दी है ?"

"क्यो की कावळ कह दियो है तो माफ किया बाया, आधो अर अजाण बरावर हुवै है।"

"नी वडिया, भाव ऊजळा है तो सब ठीक है, आ तो आसीस है, हित मे निकळी थारी गाळ नै ही म्हे तो घी री नाळ मानां हां। आ म्हारै सागली तो है रूपजी वोयरै री बेटी।"

"कचन बाई ?"

"हां।"

"अरे !" कह'र अधमिट चुप, फेर वीरी आंख्या एकाएक छळछळा

उठी । ओढणं रै पल्लै सू आख्या पूछती वोली, "बाई काळ नै थारै भाग मार्गं ईसको हुग्यो, साल ही पूरो नी टिपण दियो, चोरियो खोस लियो कुमाणस । थारी मा-सी खट'र खावणआळी तपसण सोधी ही नी लाधै । गयै नैं हाय रो उत्तर देवै, मूढ़ै रो—नी । वामण वाणियै रो जमारो है बाई, दिन तो दोरा-सोरा तोड़णा ही पडसी जोर थोडो ही है की आगै ही ?" वा आपरी गळती समझगी कै 'सुहाग मोकळो हुवो', ईंनै मनै नो कैणो चाईजै हो ।

मागण ही वा भळै बोली, "अर हू वडिया जोधंजो जाट री बेटी हू ।"

"करमां ?"

"हा !"

"तू तो वाई सात भायां री सोनल है, थारो ब्याव तो घणै गाजा-बाजां हुयो हो, म्हारै तो थे दोनू ही हायां मे छोटी-मोटी हुयोडी हो । थारो मासरो तो वाई, घणों ही अळगो है—हे जोधपुर कनै जावतो अर ईं रो हूगरगढ़, म्हारै सू काईं छांनो ? पण आ बतावो थे आज, ईं वाड़ोटियै मे किया आई ?"

"थारै अठै एक वैनजी है नी ?" करमां बोली ।

"हां है ।"

"वा सू मिलणों चावां हा ।"

"मिलो, नी क्यों ?"

सुधा कनै पूग'र जिया ही वा प्रणाम कियो, सुधा बोली, "आओ वाया बैठो ।" जियां ही वै बैठी, लुगायां ही आ खड़ी हुई कपड़ा निचो'र ।

सुधा बोली—"धो लिया कपड़ा ?"

"हा वाईसा ।"

"मैल हो वी ?"

"पूछो ही मत ।"

"तो बैठो दो मिट, थारी 'किया', पूरी करू ।"

"आई ही म्हे ईं खातर ही हा ।"

"टायर रो पैसो गुरु मा ही हुवै है का और ?"

"मा हो ।"

"वा मा ही है अर गुरु ही पण टावर, बेटो-बेटी हुवै असल मे धरती रो ही है।"

"किया ?" वै अचभै सू बोली ।

"था मावा सू ही बड़ी, एक मा और है ।

"वा भळे किसी ?"

"जन्मभूमि, आपा सगळा जिकै रा बेटा-बेटी हा ।"

"चूध की थोर खोलो, सावळ नी समझी म्हे ।"

"वा बदरी-द्वारका सू ले'र पुरी, रामेसर ताईं फैली है । टावर सै ईं मा री सेवा खातर आवै है, फेर आगै वधै सगळै संसार कानी, पण बधण री ओ पैलो पाठ, वै आपरी मा सू ही सीखै—वोवै सागै । मावा, बोलो चावै मत बोलो, मन-मन ही, वै आपरै दूध री हर घूट मे बारी चेतना पर ओ उतारै । दूध सागै उतारयो पाठ मरै जितै नी मिटै । लोरी सागै उतारयो पाठ वैगो जमै बाळक री चेतना पर । बाळक नै धरती सागै जोडै वो मा री कूख सफळ, वा निरवाळी, ऊजळी । धरती वींसू राजी ।"

"बाईसा, म्हे अै बाता काई समझा ?"

"अरे आ तो समझो हो कै थारा रामदेजी, पाबूजी, जाम्भोजी सगळा था जिसी मावा रै ही हुया का और कीरै ही ?"

"मावा रै ही ।"

"पण वै दोड्या आप खातर का धरती खातर ?"

"धरती खातर ही ।"

"आप खातर दौड़े बारा मेळा मडै है कदेई ?

"नी ।"

"तो थारै आ टावरा मे कोई गाधी, नेरू, पटेल अर लाल बहादुर निरुळ पडै तो, थारो अर थारी धरती रो रतवो वधै ही ।"

"न, ओ इसा भाग कठै ।"

"फेर था ही वावळी वात, चोर, डाकू अर लफंगा करण सू राजी हो ?"

वै नी बोली ? सुधा फेर खोल्या होठ, "साच री वानै कमाई घालो, वाणी वारी माजो, सस्कार देवो आछा, फेर फळसी किया नी ? भलां ही वै

भाग-2

घटता मजूर, खसता किसान, चौरावै रा सिपाही अर सीमा रा जवान की हुवै, हुवै ईमानदार। धरती फेर राजी है। चोर किरोडपति सू ईमानदार मजूर लाख दरजै आछो। धरती री मनस्या नै समझो थे।"

वांरो जी सोरो हुयो, अर जाण ही वधी वारी। वै वोली, "वाईसा, म्हे ही अवै निरवाळी हां—खेती-पाती सू, सुणी है पढ़ावो हो, मैर हुवै तो आवा दो घडी ?"

"फेर चाईजै ही काईं ?"

खुसी नाच उठी वांरै चैरा पर, वै टुरगी चुपचाप।

5

करमा अर कंचन ही सुधा री वाणी पियै ही काना सू। वै सोचै ही आ कोई सडक-छाप लुगाई नी। वीरै प्रति एक सैंज राग जागग्यो वांमें—जिकै मे श्रद्धा ही। सुधा वोली, "हां वोलो वायां, किया हुयो आणों ?"

करमां वोली—"आई तो की मुतळव गांठण नै ही हां।"

"सो संको क्यों ?"

"आप सू अधघड़ी की वात करणी चावां हां—निरवाळी ठौड।"

"आओ", टावरा नै वण आधो छुट्टी करदी। वै दोनू सुधा रै लारै-लारै टुरपड़ी। सुधा वांनै टावरा री सीडाई, वुणाई अर कताई दिखावनी वापरी कोटड़ी कानी जावै ही। रस्तै मे सिरदारी वैठो ही, आसण विछा, पोथी पढै ही रस ले-लेर। वै दोनू वी कानी अचंभै सू देखती रवगी। करमां वोली, "वडिया, तू तो सागण नी रही ?"

"किया वाई, अवै सी ग निकळग्या म्हारै ?"

"सींग तो वडिया, थारै पैलां हा, अवै कठै ? आस्या पैला थारै दो हुया करती अवै हुगी च्यार, सागण कठै रही तू, वदळगी अर वदळती ही जावै।"

"ये जाणों वाया, मनै तो कीं ठा-नी ?"

"ओजू ही ठा नी लाग्यो तो फेर लागण रो ही नी।"

"थारी ईं बैनजी री माया है बाई, आ पाख्या लगा'र कदेई उडा-नाखसी तो उडणो किसो नी पडसी ?"

'सरस कथाए' भाग दो कनै पडी ही वीरैं, कंचन बीनैं उठा'र बोली, "लै, अठै सू बाच देखां बडिया।" सिरदारी बिना अटके, बिना चबाए, बाचणों सुरू कर दियो। कंचन बोली, "बडिया, रेकाड तोड दियो तैं तो।"

करमा बोली, "ईं ऊमर मे, ईं ढंग सू सीख्योडी मैं तो तनैं ही देखी—बडिया।" वै सुध. री कोटडी में जा बैठी।

सुधा दोनां रै चैरा नैं आपरी निजर सू नाप्या। करमा हळकी-सावळी नाक री पुळकी फीडो, लिलाड चोडाई मू सुरु हुंतो आदा ऊपर जांवतो पठार री चोटी-नुमा हुग्यो, आंख्यां रैं पाणी में उजास अर बो सू ही रोब अर रीस लाग्या। बोली मे सरळता अर मैंज समझ लागी, बीमें उठतो स्वाभिमान वीरैं चैरैं पर तिरै हो, पूरी छव फुटी, दोलडै हाड अर इक्कीस-बाईस सू कम नी।

कंचन रा होठ पतळा, सरळता, अर सत्विक वृत्ति री त्रिवेणी मे डूबतो-सो सावो वीरो।

वेस-भूसा विधवा री बीरी। ऊमर मे दोनू साईनीं-सी। बा आरै आणै रो कोई सैंज अन्दाज नी लगा सकी। बा बोली, "हा अबै सुणावो, मुतळब री कोई वात ?"

करमा बोली, "वात आ है कै म्हारी मदद करो की ?"

"काईं ?"

"म्हे दोनू अगलै साल दसवी रो इम्तियान देणो चावां, पढाई तो म्हारी फळसैताईं ही है।"

"फेर ही, कीं तो है ही ?"

"चौथी-पाचवी ताईं।"

"घणी इत्ती तो, म्हारी तरफ सू हूं कोई कसर नी राखू, थारै खातर म्हारी कोठडी चौईस घण्टा खुली है पण एक बात पूछूं हू, आ भाग थारै अबार किया उपडी ?"

"कांईं बताऊ ?" को असमजम में पडगी बा।

"बता है जिकी ?"

"आपनै दस-बीस मिट रो समै हुवै तो होठ खोलू की, नी जद और कदेई बात ।"

"अपणायत री धरती पर आपणै तो अवार ही, फेर कोनै ?"

"परणी नै मनै पाच साल नैड़ा हुग्या, मा-बाप रै लाडेसर, सात भायां बिचाळै बैन हूं एक । सासरो ही खावतो-पीवतो पण म्हारै खातर वठै दोराई अर दुविधा मू उबाया खड़ी है ।"

"क्यो ?"

एक सैंज-सकोच बीरै चैरै पर भळे उभर आयो । सुधा समझगी, बोली, "भारनै रोकयो काम रो नी, बीनै सुण'र हुसकै है हू कोई ठीक राय दे सकू तनै, थारो मानस बी सू नीरोग हुसी, बीमार नी । काई ठा आपा एक ही रोग री मरीज हुवा ? ऊमर एक-सी है हो, फेर सको क्यांरो ?"

"आपरो जद इत्तो ही स्नेह है तो बता देमू, ऊमर थारी-म्हारी एक जरूर है पण रोग मिलतो-जुलतो नी हुसकै ।"

"ईंरो तनै पैलां ही काई ठा ?"

"म्हारै रोग रो मूळ तो ओ है बैनजी कै परमातमा मैने रूप देवण में की कंजूसी करदी ।"

"किया ?"

"म्हारो चैरो नो दीखै आपनै ?"

"दीसै क्यो नी, आंख री जाग्या आंख, अर नाक री जाग्या नाक, काई फरक दीखै ? कई तीखै नाक मे मेडो नी आवै ? अर घणी मोटी आख्या मे गीड नी बारै ? फुटरापो तो की और ही हुवै है आदमी अर लुगाई मे, जिकै नै बरना तप'र उपजाणो पडै है, चैरै पर नी, चेतना मे । तै जिकै नै फुटरापो समझ राख्यो है वो भ्रम ही नी भटकाव है—डाळ कानी उतरतो । हीण भावना है आ, रोग मू बेसी ।"

"आप बात करो हो, घणी ऊंची, बीनै छोडो एकर, मैं म्हारै रोग रो कारण बतायो है आपनै ।"

"अच्छा फेर आगै ?"

"जिकै रै लारै मनै सगाई ही, बो जोधपुर मे बाबू है एक दफ्तर मे ।

घरवासो बण एक मास्टरणी सागै जचा राख्यो है, हूं न बिसी पढी-लिखी अर न बिसी फूठरी अर अपटूडेट ही। मनै वो किया अगंजै ?"

"सासु-सुसरै कोई रस्तो नी निकाळचो ?"

"सुसरो विचारो अगलै घर गयो, हुतो ही तो काई करतो, सूधो आदमी हो अपढ अर एवड़ चरावणआळो। सासु साफ कह दियो, 'बहू, बेटो म्हारो कान ही नी माडै तो हूं किसी भीत नै समझाऊं ? न हू सोरी अर न बीरा कान झालणजोगी, थारै सू कोई उपाव सागै तो लगा--बात लुकोई कितार दिन रैसी ?"

"छुट्टी-छपाटी नै देवता कदेई घरे ही नी आंवतो ?"

"उडतै मन दिनूगै आयो, अर सिंझ्या पाछो, सागण दिस काली।"

"पास-पडोस कण ही नी समझायो ?"

"समझावण री बात दो-च्यार विचारां, मू मे घाली पण बां सागै बण, रुख ही पूरी नी मिलाई। बो कनै तो मूको-पाको एक उत्तर हो कै, ई बाबत म्हारै आगै कोई होठ ही मत खोलो, हूं ई अणघड़ भाठै नै ऊमर गळै मे घालै नी फिरूं—एक दिन रो काम थोडो ही है ?"

"तै ही तो कदेई बतळायो हुसी बीनै ?"

"बतळायो क्यो नी ? कैयो, 'हूं थारै सागै की हालत ही नी रह सकू।' हूं बोली 'तो हूं ?' जवाब मिल्यो, 'तनै आछी सागै ज्यू।' सासु की भलेरी है बोली, 'एकर तू जोधपुर जा' र, एक-दो दिन और देखलै, रमायण की ताव आवै तो ठीक है, नी तो 'ना' तो दीसै ही है—देवर नै सागै लेजा।' हू गई, घर मे ही हो, मनै देखता ही पारो चडग्यो बीरां तो, पैलां तो भाई पर बरस्यो, 'कण कैयो हो तनै अठै लै' र आंवण रो ?' बोल्यो, 'मा कैयो, हो।' 'अवार रो अबार लेजा ईनै,' हूं विचाळै ही बोल पडी, 'मारो कूटो हूं नी जाऊं।'

'घड़ी नै हो, हूं बाळ नी दू तनै ?' लाल-पीळै हुंतै, एक धरदी म्हारै, पण मैं बाफ ही नी काढी पाछी। 'मत जा, पडी मर आपे ही जामी धूड खावती।' देवण नै तो एक-दो बो और धर लेवतो पण बास-मुहल्लै सू बो संकग्यो लाग्यो मनै। देवर तो पैलां ही निकळग्यो, बो ही घर मूं निरळग्यो, हूं एकली बैठी रही। घंटा-सवा घंटै बाद, बा मास्टरणी आई—बीं सू मिल-

मिला' र। हू बैठी ही अणैसे मे आठ-आठ आसू नाखती उदास, कद बो आवै। वा आवती ही, डोळा चढायां बोली, 'कुण है तू, नी ओळखी मैं?'' मैं कैयो, 'हू गोपाळराम रै घर सू हू?' 'तो म्हारै घरे कांई मागै है। कुण है गोपाळराम हूं नी जाणू।' हू बोली, 'हू नी जाऊ, बो आयां ही जासू।' वा आनै सू बारै हुगी, बोली, 'बो म्हारै घरे तनै रोवण नै आसी? काई मांगै है अठै बो? म्हारै घर मे घिगाणै बड़नआळी कुण है तू, चुडैल-चोरटी, निकळै तो निकळ नी तो पुलिस नै इतला करूं हू अबार।' पाडोस री दो-च्यार और आ खडी हुई—बीरै माजने री ही, घेरली मनै। वै मास्टरणी रो भीड ही बोली। मनै तो बोलण ही नी दै। हूं बांसू अजाण सो न्यारी अर असमजस मे भळे। एक डोकरी आई, मनै परिया लेजा' र समझाई, 'बेटी, हू समझगी तनै अर थारी बात नै पण आ है चलती गाडी रो धक्को काडै जिसी, सोनारी है जात री; पाणीआळी हुती तो आपरो घर ही नी बसावती। ओ मकान है किरायै—ईरै नाव अर, मूळ बात आ है बेटी कै खास खोट तो आपणै घर मे ही है, की कैणो न सुणनो, डूबी पर नव बास है, इतै में ही समझलै तूं, घर्म री बेटी है तू म्हारै, थारी हु' र, कहूं तनै कै म्हारो कैणो मानै जद तो अठै सू बिदा हुणै मे ही फायदो है। हूं, बीरी गुणती रही, देखती रही बी कानी। वा बोली, 'समझलै यो अठै, दस दिन ही नी बापरै अर आ तनै रैण नी दै दो-घडी ही तो तू कीरै लवै लागै? एकलपी नै पड़ी रात निकळनी ही ओखी।'

मैं बीरो गुण मान्यो, सीख बीरी सिर पर मेली अर सावळ सोच लियो कै इसै कजोतियै सुहाग सू तो रंडापो ही भलो, भट्ठी मे पड़ो अै दोनू अर ऊरर पडो भाठा आरै, टुरगी हूं तो आई जिया ही पाछी।

गुधा बीरी व्यथा-कथा सुणै ही कान दे' र। बीरो साच बीरी चेतना पर मंडै हो वा बोली, "फेर सासु काईं आखा सुणाया?"

"सासु बोली, देख, छोरसो करनी अर रोटी खावती नै तो हूं पालू नी पर है थारो, बेटो म्हारो, म्हारै हाथा-बाया है नी, समझावण मे पाछ राखी मैं नी।' इयां हूं किमी अणसमझ ही, घरू सागो देख' र, दूजै दिन ही पीरै आ पूगी।"

"टुरती बेळा सासु की उदास हो हुदे हुसो, कैयो

"बात तो बण उदासी री ही करी पण हो बीमें लोकाचार ही जादा।"

कचन हो चितराम मठी-सो मुगं ही, अवार बीरा ही होठ खुलग्या मतै हीं। बोली, "कांई धूड ही कैवण नै बी क्नै, लीपा-पोती ही करी हुसी की ?"

करमा बोली, "सासु कैयो, धणो सागै सरकार तो खैर नी पण म्हारै सागै तो है ही, बुलाऊ कदेई तो आए।" घर-छूट हुयां पछै, अबै मनै सको हो क्यारो हो, मैं साफ ही कह दियो, आऊं, माईता थारै लारै थोडी ही करी मतै ? तेली सू खळ ऊतरी, हुई बळीतै जोग, बुलावण रो अबै फोडो ही मत देख्या, हू नी आऊं।"

सुधा बोली, "ठीक सुणाई, धणो पडघोडो कितोक है ?"

"बी० ए० बतावै है।"

"पीड़ थारी मा-बाप नै ही कदेई प्रकासी तै ?"

"बारै महीना-दो बरस तो सकै-सरम मे ही रही हूं, फेर हूं कांई प्रकासै ही, मतै ही प्रकासीजगी पीड—तमां-हमा सू। बिरियां दो-एक भाई ही गया, घड़ की चार्कोर बैठे तो, पण हाथ-पल्लै की नी पडघो बांरै।

"अबै तो निवेडो हुग्यो सगळो ?"

"हा हुग्यो, हर मिटी, लार छूटी।"

"माईता रो विचार अबै काई है, ठा लाग्यो की ?"

"कोई नुवै घरवासै री ही सोचता हुसी पण मैं बानै आगूच ही कह दियो कै मनै दो-च्यार बरस अबार ई पचड़ै मे पटक्या ही मत, एकर पढस्यू जी भर' र।"

"पढ्या पछै ?"

"काई ठा पचड़ै मे पडू' क नी पडू, पैला की नी कह सकू।"

"बाद मे जे बो धणी कदेई, भूल्यो-भटक्यो आ बतळावै तो ?"

"तो रायां रा भाव राते गया, उबाणी थोडी हूं, जूत्या राखू हू थागळ पन्दरै-पन्दरै री। दया जिनावर थोड़ी ही हूं, जो मे आई जद ही बाधलो जची जद ही काढदी कूट' र।" आख्या मे बीरै एक अ.कोश उभरयो। सुधा सोचै ही कै ई साव बेकसूर कपिला रै, धणो एक दिन, एक औढाय री धरी ही खीच' र, बा सायत ओजू ईरै अहं पर मडी है। भळै बोली "बैन-

जी अबै कोई नातो है न रिश्तो, थारो हाथ ऊपर रैसी तो नातो, एक पढाई सागै ही राखस्यू ।"

"हूं तो म्हारी तरफ सू मदद करसू ही, अर एक मौके नी भी करू तो काई, थारी लगन रो वेग नी रुक सकै—आ म्हारी भविष्यवाणी है। पण एक वात मनै ओर वता कै थानै अठै आवण रो संकेत कण दियो ?"

"पुरखै वावै, रिश्तै मे वै म्हारै एक ही पीढी आतरै है ।"

करमा री व्यथा-कथा सुण' र, सुधा रो खाली जीसोरो ही नी हुयो, वीरी टूटती-तिड़कती आस पाछी सधणी । ई नुवै मिलाप मे वीनै आपरो आवास अठै जादा सुरक्षित अर सवळो लाग्यो । वण सोच्यो—

"च्यार लाठी चौधरी, अर पाच लाठी पच ।'
छव लाठी हुया पछै, पंच गिणै न धच ।'

ई रै तो भाई है सात, ईंरी उठ-बैठ म्हारै सागै हुया, कीरै माथै में खाज चलै है जिको म्हारै कानी गैर आख सू देखसी ।"

अबै वण कंचन कानी देख्यो, वा मतै ही बोल पड़ी, "वस, पढण री इच्छा ही म्हारी है, वैनजी ।"

"फेर चाईजै ही काई ? परिवार मे अठै ।"

"खाली मा है ।"

"और कोई ही नी ?"

"नी ।"

"ऊमर थांरी ?"

"वयांळीस मैडी हुवैली ।"

"गुजारै रो साधन थारै ?"

"वड़ी-पापड़, दाळ-दळियो करै, एक-दो गाय ही राखै ।"

"बापूजी रो हाथ कित्ताक दिन रैयो सिर पर ?"

"म्हारै व्याव सू दो वरस पैला ताई ।"

"सासरो ?"

"डूगरगढ ।"

"वींरियै रो सुख कित्ताक दिन रैयो ?"

कचन अर्धामिट मौन हुगी, हळकी-सी, एक अणचाई उदासी वीरै चैरै पर बिखरगी वा होठ की खोलू ही, पण करमां वी सू पैलां ही वोली पडी, "वो मुख तो बैनजी, सालभर मे विलाईजग्यो ।"

"बाई कीरो सारो ?" उदासी पल भर वीनैं ही रुधली ।

बा फेर बोली "सासु-सुसरो है ।"

"हा है ।"

"और ?"

"दो नणदा, जेठ है च्यार, परिवार पूरो है ।"

"सागै ही है सगळा ?"

"अबार री घडी तो सैं सागैं ही है, अबै मायं-मायं केई कूदणमतैं है ।"

"सासरो पइसैआळो हुवैलो ?"

"पैला तो लाई-खाईआळो ही हो, अबार दो बरसां सू सजोरो है ।"

"थारो तो लाड ही राखता हुसी ?"

"राखै है पण आपरी एक आस पर ।"

"वा क्यारी ?"

"वैं सोचै है कै साल-छव महीनां मे आ साधपणों लै'र, घरबार सू पूठ फोर लेसी, हमेसा-हमेसा खातर तो थोडै दिनां खातर, लाड मे कमी आपा ही मत राखो ।"

"ठीक, पण साधपणो वै खुद नी लै ? का थारै साधपणो लेवनां ही वारै कल्याण री सीट मतैं ही सुरक्षित हुगी जागै ?"

"ईं ऊमर में वैं, साधपणों कियां लेवैं ?"

"क्यों, ईं ऊमर में कांई है वारै, लाचार है हाथ-पगा सूं ?"

"पकती ऊमर अर बेटा-पोता ।"

"आछो'क, सोनैं मे सुगंध है फेर तो ! साधपणो लेवण मे अै ही बातां चाईजै ।"

"कारवार नैं कियां छोडै ?"

"कारवार तो कांई चीज है, छोटणो तो सरीर नैं हीं पडै ।"

"पण बैनजी, साधपणै मे पकती ऊमर ही आप कियां बताई !"

"ऊमर सागै अनुभव भी तो पकै है आदमी रो? कच्चो अर अधूरो अनुभव कांई काम रो—तपमार्ग में?"

"हां।"

"पक्को अनुभव कठै ही आखड़ै नी, धापी लालसा वठै ही ढूकै नी, अर सुळझ्या विचार कठै ही उळझै नी। वै खेल-कूद ही तो लिया, खा-पी अर पैर-ओढ'र ही, रळो काढली वां, अबै चूकै कोई तो निर्माग। बाळक अर जवान नै तो, साधपणो लेवण रो महातम ही नी, ईं जुग में तो बिल्कुल ही नी।"

कंचन सुधा रै सामी देखती को सोचण लागगी। सुधा बोली, "बैनड़ी, दियो कर'र, दिस वै दूजां नै ही दिखावै जठै बात की और है? ईं विसै में वा थारै आगै की चर्चा ही तो करी हुसी कदेई?"

"हां करी ही एक-दो विरिया।"

"कांई?"

"बीनणी, म्हे दो-पांच बरस, आंख्यां नी मीचा जितै तो खैर कोई बात नी, थारो आव-आदर ही है, पण पछै मुश्किल हुज्यासी, जेठ-जेठाण्यां आगै चकरी हुई फिरो तो बोल-बतळ सीधै मूडै, दिन-भर वांरै टाबरां रा मैडा, गीड अर अैंठ-चूंठ पूंछो, माथै री जुवां चुगो तो बात करसी हमसुखी, अर सौ काम किया अर एक कोई, कारणबस तावै नी आयो तो निनाणमैं पर धूड़, पाव-पाव रा मूंडा बांरा पसेरी में। मांदी-ताती हुगी कदेई तो, मैया अवार आपरा जायोड़ा ही कर'र नी ठारै, तो पराया पूत कीनै ख्याल करै? साधपणै में सगळो ही सुख, धर्म-ध्यान खुद करो, औरां नै करावो। आपरो ही कल्याण अर दूजां रो ही, म्हे ही ऊजळा अर थारा माईत ही। पण आं सगळां सूं ही, मोटी लगन म्हारै आ है कै, जीवतै जी हूं पांच रिपिया गाजै-बाजै सूं लगा मन री काढलूं तो लाख रो, आज तो रामजी राजी है हाथ ब्यारांकानी फुरै है, काल री कीनै ठा?"

"साधपणै में रिपिया लगाणा क्यांरा, हूं नी समझी?"

"साधपणो लेणै सूं कीं पैला, म्हारै खातर वै एक रिपियो तो बीमें सागै ही, नी-नी करता हजारू।"

"अरे हां, अबै हूं समझी, पण वैराग रो उच्छव

सम्बन्ध ? वो न उच्छब सू बूझें, न कीरें ही उकसायां उपजें, न बेस लिया वधें अर न केस लोच्या। विवेक है वो तो आपरी ऊंचाई पर उटतो, पण थारें होठा पर उच्छव नाव उछळता ही, म्हारी एक सारली याद ताजी हुगी।"

"काई याद है इसी कह सुणावो ?"

"म्हारे अठै, पन्दरै-पन्दरै, सोळै-सोळै बरसा रै दो छोरा री, दीक्षा हुवण सू पैलां, बनोरी निकळी, की रईस बनडै री बनोरी नै ही मात करै इसी। बडी भीड, बडा गाजा-बाजा, घोळ-उछाळ, गीत-भजन सै। दीक्षा री त्यारी, ठिकाणै मे मानखो मावैनी। भीड़ गावै जोर-सोर सू," म्हारै मन बसियो वैराग, लेस्यू हू तो साधपणो। मजो देखो थे, वैराग लेवै, बै-तो मौन, चैरा पर बारै न आत्मविश्वास रो विस्तार अर न कठै ही फकीरी-आनन्द जिसी फूटती किरणा। उदास-उदास देखै बै, कदेई भीड़ कानी, अर कदेई आपरी दुविधा कानी, अर वैराग नी लेवणिया री भीड कठ फाडै ही म्हारै मन बसियो वैराग, लेस्यू हूं तो साधपणों। भीड रै मन मे वैराग कदेई हुवै ही नी अर न साधपणो लेवण रो जिद् ही। टैम पूरी हुई, अर भीड आपरै पापे-पुने लागी। वीनै कांई मुतलब वैराग कीनै ही उपज्यो नी उपज्यो। वा तो ढाळ गावण री आइन है का पैल-पैल देखण री। बधतै वैराग रा पग पाछा भवां ही खीचो वा तो।

ढाळ फुरगी, भजन दूसरो सुर हुग्यो, "अरिहत सरण मे आज्या, मुनि चरणा मे सीस झुकाज्या, तू साधुसरण मे आज्या।" हूं सोचै ही, साधु बण्या बिना, अरिहत सरण मे नी आईजै ? वा सरण तो सगळां नै खुली है, सब जाज्या—सब समै। हू दीक्षा लेवणियां रै चैरा पर उठतो अन्तर्द्वन्द्व भळे पढण लागगी। म्हारै मनै-ग्यानै अै सोचता हुसी, "अबै कियां तो कटसी येगो सो दिन, अर कियां आमी घर जिसी सोरी अर निरभै-निरवाळी नीद ? गोचरी नै किया फिरणो पड़सी घर-घर ? म्हारै ऊपरला कांई-कांई हुकम भुळासी म्हानै ? मुक्ति रो महीन मार्ग कुण जाणै कद जावतो हाथ लागसी म्हारै ?" फेर वानै आपरा माईत, माई-बंधु अर साथी-सगळिया ही दीसै हा रह-रह। उदासी वधै ही वांरी, अैतो अबार रवाना हुसी अर फेर वां सागै मिलणो कुण जाणै कद हुसी ? मा री रोटी-रो-सो स्वाद

गोचरी री रोटी मे कठै ? दादी अर मारी-सी बोल-चताळ, वा-सी आत्मीयता अणसैंधे सत-श्रावका मे हुवण रो सवाल ही काईं ? असुविधा अर उदासी बधती लखाई मनैं, वां बाल मता रै कोरै-काचै चैरा पर।

केस लोचीज्या वांरा, सफेदझक वेस, मूढा पर मूमत्या, वात सता री जै-जै कार सूं आभो रह-रह गूजै हो। मिश्री अर दमेदै रा बाटिया बटता गया अर भीड खिंडती गई। माईत धन्य हुय्या, हुया'क नी, आ तो बै ही जाणै पण लोग बांनै सरावै खूब हा। एक सैंज उदासी बारै चैरां पर ही काठी चिपी ही पण म्हारी चेतना पर वा विसेस हावी ही। हू सोचै ही, आ उदासी सैंज है, पसु नै हो, खूटै सू कोई छेडै करै तो, बो ही एकर उदास हुवै, अै तो मिनख रा बेटा है, पसु सू कित्ता जादा सवेदनसील पण मोटी बात आ कै, वारै चैरां पर कोरीज्यै भोळापण नैं न बारी उदासी ढक सकी अर न बांरो अन्तर्द्वन्द्व।

हूं मन-ही-मन सोचै ही, "प्रभु, जे आरै खुद रो वैराग-बार्छाडयो, विवेकानद दाईं, ग्यान री ठाण सोधण नैं खूटो तोड निकळतो तो कित्तो आछो अर अनुकूल हुतो आ खातर ही अर आखे मिनख समाज खातर ही। पण चोखो, है जिया ही ठीक, अबार सू ही अै जे ई रस्तै पडै है तो आरै तप-छितिज पर कदेई, विवेक री इसी किरणा तो फूटै जिकी पाप-परिग्रह अर विषै-विकार रै अधकार मे डूबती दुनिया नैं, उजास कांनी ले जावैं, धरती गर्व करै आ पर, चिरजीवी हुवै अै, बरसां सू नही, विवेक सू।" वा नै देख-देख, म्हारी उदासी गैरीजै ही, म्हारै मोह री आ, सैंज कमजोरी समझो, चावै म्हारी गूगी भावुकता ढा नी लाग्यो मनै। पण हरिमाया विचित्र, गळत गई म्हारी सोची, गळत गई भीड री सोची अर साव गळत गई साधु-संता री सोची, माईता री तेवडी।

"आ किया वैनजी ?" बै वडे अचंभै सू बोली।

"बाया, हरदम बाध्या तो बळध ही नी खटै। दो-सवादो बरस मुस्किल सू निकळधा हुसी बा नैं, वै एकदिन पाछा वठै ही जा पुग्या जठै, मा रो दूध चूंपता-चूंघता बडा हूया हा, जठै घर अर गाव रो स्नेह मिल्यो हो बानै, पढतां-लिखता अर खेलता-कूदतां जीवण जठै सचित अर समझ मर्चं करणो सीख्या करतो, मन अर मामपेश्यां जठै फूलण री उनावळ किया

करता, सँज मस्ती री बेताज बादसाई वारै चैरा पर बैठ, जठै मुळकती नो-थकती, वीं आपरी धरती री जलमजात ममता बामें मर थोडी ही गई ही ? बारी अल्हड़ता अर आजादी वानै, घर-घर सू गोचरी लांवती वेला टोक्या ही नी हुसी, विद्रोही वण'र बै मच खड़ी हुई हुसी वारै सामनै—वां टाळीं बैठा मे, ऊब अर अरुचि घर करती गई हुसी। घर रो स्नेह, गाव री हर, अर ओळू वांरै माणम में उफण पडचा हुसी—ईं आंधी कँद सू निकळण खातर। आपरी आखी सक्ति, अर आखो निश्चय बटोर, ओघा अर मूमत्या नै हाथ जोड अकूण्याताई रा. रात रो अंधकार चीरता बै टुरपडचा हुसी—एकदम एकला। कित्तो वडो साहस सजोयो हुसी वा आपमे ?

भीतरी विद्रोह जाग्या, वधण री बोदी वाड कुण सेवै ? हू सोचू हू, घरे पूगण सू की पैला, वारी आत्मीयता गाव सू मील-अधमील उरिया ही वठली धरती अर वीरै वाठ-वोझा सागै जुडती-जागती हरी हुती गई हुसी। ओ खेत, वो नीम, अर वा जाळ, सै वारी रागात्मकता सागै जुडता एकमेक हुग्या हुसी। हर पगडाडी वठली, वारा पग ओळखै, हर नजारो बठलो बारी आख्यां नै रूचै, बारी चेतना में रमै। घरे पूगतां ही तो वानै, साथ्यां घेरलिया हुसी अरे ओ कांई ? थे आयग्या ? साच अर अचंभे रो मेळ गळै मिलग्यो। खबर गांव भर मे फैलतां घड़ी भर ही नी लागी हुसी। मा-बाप अर बैन-भायां एकर वांनै की-काई, वडे अचंभे सू देख्या हुसी—अणचीत्या अर आसा रै विपरीत पण फेर वारी रुकी रागात्मक ग्रंथ्यां सू सैंज स्नेह री सत-सत धारावां, एकँसागै फूट निकळी हुसी। मारी सीपटया में तरळना रो कित्तो वडो भंडार हुवै है, काई चांको है बीरो अर कांई बैना रै प्यार रो ? याद आवता ही, सौ कोस परियां वैठी ही उफण पडै बै, मैंदे मिल्या तो, न वारा कठ काम करै अर न जीभ। बौपार ही सगळो आमू बण बैठै। दादो-दादी जे हा वारै, तो, डोकरा रै कांपतै हाथां में आसरै री गैडी आ थमी हुसी, होठ अर हियो मुळक उठ्या हुसी। ओ अणचीत्यो वरदान पा'र।

मनै ठा है कै आज वै, आपरो कारबार करता, 'गृहस्थ-धर्म मजै मू पाळै है'। बांरै जीवण मे नुवो अर स्फूर्तिदायक अध्याय सुरू हुयो। देस री

छवि संवारण में थारै श्रम री तूळिका, थारी लगन री भूमिका जरूर की न को सहयोग देवै है। साहस ही खाली नी कियो था, एक बडै भारी पाप सूं और बचाया वै।"

"पाप सूं कियां बैनजी ?"

"नी आंवता वै, तो कुण जाणै थारी अणभोगी कमजोरी, थारी कंवारी लालसावां अर अंकुरी अनुभव थारा, वा पर थोप्यै अधकार सूं निकळ-निकळ वा मे कित्ती ही कुटेवां नैं जलम देवता अर फेर वै वी छोलरैं जोगा ही रह, आपमें तरैं-तरैं रो कोढ कुचरता—एकदिन पूरा हुता—पश्चाताप री मौत।".वा मौन हुगी एकर, अर वै बी सामी देखैं ही तिसाई-सी।

वा फेर बोली, "लिस्यू हू साधपणो, भीड़ रो चढायो रंग थोड़ो ही चढै है की पर? जे चढै वो, तो कितीक ताल रो? तावड़ो अकरो लाग्यो अर रंग बदरंग हुयो। बैराग रो रंग री रगारा नाद मे त्यार नी हुवै। बैराग साग थोड़ो ही है बायां? चोर अर साह, नेक अर बद, जार अर जुवारी, जलमभूमि आं सगळा री गृहस्थ ही है का और की?"

"गृहस्थ ही।"

"वो बिगड़्यां साधुवां रा टोळा भला ही कित्ता ही कूको, कित्ता ही लम्बा हुवो, धरती नैं भार अर खुद नै अभिसाप है वै। घर है आदमी री सैंज क्रिया-स्थळी, खट'र खाणों है बीरो तप, अर धरती री सेवा है बीरो मोक्ष समझो थायै केवळ-पद।"

बीरी बाणी रा बीज, थारी धरती पर जमैं हा, वै जुड़ै ही बी सागैं, एकसी मानसिकता, अर सभाव री एकसी प्रकृति मे। वा कंचन कानी निजर करती बोली, "थारी दीठ साधपणैं कानी मोडन नैं, सासरैआळा और ही को कियो हुसी ?"

"हा कियो, महीना दो-एक, सत्या रै ठिकाणै भेजी मनैं, धर्म-ध्यान री पाटी सीखण नैं।"

"कांई पाटी सिखाई वां ?"

"बडी-सती कैंवती, "कंचन बाई, संसार मिथ्या अर दुख रो घर है। काया रैं कल्याण खातर आपानैं ईं साध्वी-जीवण छोड़,, कोई सैंज उपाव नी। जलम-जलमान्तर सूं भीगी चादर रा अण धोंवण

खातर, ओ औसर वडै पुन सू मिल्यो है आपांनै । 'बाई रा वंधण कटया, भली करी रघुनाथ', था पर तो पूर्वली पुन्याई री मेर और ही घणी है, अबै जे चूकग्या तो आवागमन रै चक्कर रो फेर कोई अदाज नी । मन में ये कोई तरै रो संको किया ही मत, खूब तो करस्या विचरण, खूब विचार अर खूब ही धर्म-ध्यान । हजारू लोग करसी मथे वंदण, जास्या जठै ही जै-जै-कार करती भीड़ त्यार लाधसी । न ठैरण री चिंता, न पैरण री, अर न अहार-पाणी री, आ तो थारै सूं ही छानी नी । उठाया पातरा, लियो बस्तो, चाल म्हारा भाई । कठै ही मनै ही तो देखो, ब्याव, संसारी राग-रग अर महल-माळिया नै, बारै बरसा री ही ठोकर मार, ओ बानो धारलियो, सैज काम है काई ओ ? थारी-म्हारी अवस्था में तो दिन-रात रो फर्क है, थे इत्ता झिझको ही क्यों ? बारै मागली ही, सै जोर देवती, "कंचन बाई, अबै तो पग पाछो सिरकाया ही मत, होठा कनै आयो ग्रास है ।"

"तनै ई फैणगत मे कठै ही की सक री बू ही आवती का धौळो-धौळो सगळो दूध ही लागतो ?"

"मनै मायं मिलावण खातर, अै इत्ता वेस्वार लगावै जठै, दाळ मे की काळो जरूर है, म्हारै अन्तःकरण पर की सक तिरणो सुरू हुंतो, पण हूं रैवती चुप ही ।"

"तू ही की कैवती सो हुसी वांनै ।"

"सासु-सुसरो तो राजी है ही मा, अर मनै ही आप राजी ही समझो, पण मा ही तो है, बात नै की बारै काना मे ही तो घालणी पडसी । बै कैवती, 'हा जरूर घालो बात, एकर नी सौ बार, मा-मा ई देव-दुर्लभ जीवण मे पग देवतै जीव नै पाल'र पाप री भारो थोडो ही बांधसी ? बारी तो हा ही समझो थे । 'तो फेर हुणो ही है मनै,' हू कह तो देवती मंनै-मंनै मे पण सकळप-विकळप म्हानै अस्तम नी छोडता ।"

"ओ नी छोडणो, अस्वाभाविक नी, नीरोग मन आपरी सैज धारा मू निकळ, अणदेखी-अणपरखी धार नै कियां अगेजै ? सैज धर्म सू विपरीत है नी या ?"

"है तो विपरीत ।"

"मन्त हुवै चावै नेता, आंधा हुवै चावै नक्टा, पंथ बधावन री बीमारी

सगळां मे है। सवाल औरा सू पछैं, पैलां खुद सू करणा चाईजे कै हू घर छोड'र ईं टोळै मे रळू तो रळू क्यो ? अै टोळा कांई सगळा ही केवळ-पद नैं पूगैं, अर गृहस्थ सगळा ही भव-व्रधण मे झूलै ? राजनीति रै दळा दाईं आरा दळ हो तो बणता-बिगड़ता चालै। आपरी संकडीजती भीता मे कांई अै, थारी-म्हारी मैंज कमजोरी सू ऊंचा उठ्योडा अर वीतराग हुवै ? आपस मे बैठ'र, कोरी ही निंदा-स्तुति जीभ पर नो राखै ? मान-अपमान री ऊंचाई लाधग्या अै ? जिकै घरां मू निकळ-निकळ आया है, वारै सागैं आरो कोई रागात्मक लगाव नी हुवै ? श्रावक मात्र सागैं एक-सो ही लगाव, रावै का अगली पात रा केई मूछ रा वाळ ही हुवै वा मे ? थारो अन्त करण देवै जिसी मतै ही भायदेसी। विवेक री ताकडी पर तोल'र निरणै तू खुद ही करलै। इत्ती तो तू जाणै ही है कै आज री जागती मानवी चेतना, नी चावै कै स्वस्थ-सजोरा, टोळा रा टोळा गोचरी पर जियैं, करैं की नी। न वै उपयोगी, न आवश्यक। मोठ-बाजरी, अर दूध-दही की हुवै चावै, वै न तो उपदेसी थूक उछाळचा उपजे, न उपवासां सू अर न एकान्त मे आत्या मीच्या मू; पसीनों चाईजै वानै, थूक नी। इां टोळा सू राष्ट्र नी चलै, उल्टो विघटन हुवै बीरो। राष्ट्र री दुरवस्था नै देख, कितै सन्ता देस नै दिस दे राखी है, दीमता हुमी तनैं ही तो केई ?"

"मनैं तो आहार-पाणीआळा ही लाग्या घणखरा।"

"भोळी, राष्ट्र नैं पैलां चाईजे सम्र अर श्रम, सास्त्र अर केवळ-पद पछै। आदमी हुवै चावैं राष्ट्र, भयमुक्त हुए विना, न उत्पादन हुसकै न उपासना। राष्ट्र रै एकल छीरसागर नैं छोड, सम्प्रदाया रा छीलरा सेवैं, बा कनै परम्पराई तोता रटन्त रै सिवा, द्मरत-वरमी अर भीता तोड सूझ-बूझ कठै ? सवम् वडी जैन अर सब सू वडो धर्मात्मा हू थारी मा नै समझूं हूं, एकलपी लुगाई हु'र खट'र खावै वा अर कांई ठा साधपणैं री ऊंचाई पर बैठा किता अणकमाउवा नै पोखै वा ? गोचरी केई दफै किती मूंघी पड़ै अर किती चुभती, एक घटना म्हारी याद पर अवार ही नाचै।"

"तो कह नाखो, लारैं क्यों राखो ?"

"म्हारै नानाजी, गोचरी नैं एकर दो सत्या आई। चूल्है आगैं नानी बैठी ही। वा बोली, "रोटी-राबड़ी, कड़ी-खीचड़ी अर दूध दही सैं ही है.

हुकम करो कांई-कांई चाईजैं, खीचडी देऊं ?" सत्या में सू एक बोली, "चाईजती तो नी ?" नानी की चमकी, बोली, "चाईजती अणचाईजती थे मत पूछो, थांनै चाईजैं वा बोलो ?" वण सोच्यो, खीचड़ी सायत ही लै, बोली तो, "फलका देऊ ?"

सती फेर बिया ही बोली, "सूझता तो नी !" नानी सभाव री की अकरी ही अर मू-फट न्यारी, बोली, "म्हारै तो सै ही चाईजता अर सै ही सूझता है, धोवण ही चाईजतो है, टोघड़िया पीसी वीनै, अर डगळियां ही सूझतो हैं, गारै मे काम आसी वै, थानै भी चाईजै अर भी सूझै तो मत लो पण इसी नान्ही-योयी ठोको तो मोटयार-जवान हो, हाथे सेक'र खावोनी ?" गई विचारी बै आई ज्यू ही। नानै नै ठा पडी, वा नानी नै समझाई कै तू थारो सभाव नी वदळै ? पण वदळनो हसी खेल थोड़ो ही है, मरी जितै वा तो मू-फट ही रही।"

करमा बोली, "वैनजी, नानी थारी ठीक कही, मनै तो दाय आई।"

कंचन ही कैयो, "आपरी नानी इमो खोटी तो नी कही ?"

"नी कही, पण घरे आये खातर तो जीभ पर लगाम खासतौर मू राखणी चाईजैं, बोलणो इसो मीठो अर अभिमानहीणो चाईजै कै एकर तो पत्थर ही पाणी वण उठै, रू-रू मीठो करदै अगलै रो। बोलणो तप है नी, हसी-खेल थोड़ो ही है ? एक छिण रक'र वा मळै बोली, "मा मू ही की यात हुई हुसी, ई विसै मे ?"

"हा।"

"कांई कैयो वां ?"

"थारी तू सोच याई, टावर थोडो ही है अबै तू, हू तो म्हारै मू सावै आसी इत्तै रोटी हाय हिला'र ही खासू।"

"मुतळब, माग'र खांणै मे थारी आस्था नी, समझदार नै ई मू वेसी और साफ काई हुवै है ? तै काई कैयो फेर ?"

"को नी ?"

"थारी जाग्या हूं हुंती तो हू कांई कैवती ?"

"काई कैवता वतावो ?"

"मा, तू तो जीसो जितै रोटी खासी हाय-पग हिला'र, अर हूं मोटयार-

जवान पेट पाळ सू गळी-गळी री गोचरी पर, इत्ती सस्ती इत्ती भूली-भटकी हू ? थारै उदर मे लोट, थारै जीवण सू पांती नी वटाई मैं ? थारी ही दूध ग्रथ्या सू जीवण रस चूस-चूस ओ जीवण खडो नी कियो मैं ? थारो खून, थारा प्राण, म्हारी हर धडकण मे नी मचरै—जीऊ जित्तै ? थारो श्रम अर थारी समझ म्हारी आखी चेतना मे एकाकार नी ? है, अर है तो थारी समझ रो तिरस्कार कर कृतघणता रो कोढ हू क्यो पाळू ? वी सू मुक्त हुवण रो मौको भळे कद मिलसी मनै ? 'मा पण' रो बिंदु है तू, धरती पर सगळा सू मोटो अर श्रेष्ठ विकास थारो ही हुयो है—देवत्व अर अमरत्व तै रूपायित किया है, थारै सू मिली समझ नै, म्हारै बूतै सारु जादा सू जादा धरती माता री सेवा मे खर्च करणू, थारी समझ रो असली विस्तार ओ ही है, अर म्हारी मुक्ति रो साधन ही है ओ।"

बै दोनू कोल्योडी-सी सुणै ही, कचन बोली, "बैनजी, मनै ही परमात्मा थारै-सी समझ देवै—निर्मळ अर एकरस।"

"अरे जिकै री मा, सेवा अर श्रम री सजीव मूर्ति बीरो बेटी री समझ किसी हुवण मे काई गोळ ? देर खाली, वा आख्या नी खोलै जिती ही है।" एक पल रुक, बात री दिस बदळती वा भळे बोली, "सासरै रो गैणो-गाठो ही की है सो कनै ?"

"हा है की।"

"घर-बाडा अर जमी-जायदाद ही है सासरै ?"

"है क्योनी।"

"धधतो कारबार है जठै, दुकाना ही है ?"

"है।"

"तो पाछे वरसो तू थारी पातो-पोटी ही माग सकै है वा कनै सू ?"

"आ तो हू सपनै मे ही नी सोचू बैनजी।"

"मत सोच, अर सोचणों ही नी चाईजै पण कानून थारै पख मे है, अर थारै सासरैआळा ईनै सोचै भी है।"

"बारी बै जाणै।"

"जाणै काई, बात है ही इसी, साप खायोडो, डोरियै सू ही डरै, समाज मे आए दिन घटै है इसी घटनावा। बै सोचै, आपणै ही जे बोनणी बदळ

बैठे कदेई तो, कांई पूछ बाढा आपा बीरो ? ई खातर मौसम सू पैलां ही पाणी आडो पाळ बाध लेणी चाईजै । आ, जे ठंडै-ठंडै ही साधपणै रो मार्ग पकडलै तो धर्म री मेवा, समाज मे नांव, साध-संत राजी अर सागै आपणी मनचीती ।"

"सोच सकै है वै ।"

"सोच सकै नी, सोचै है वै, पण तू थारी तरफ सू तसियो ही सगळो मेटै नी ?"

"किया ?"

"सीधी अर साफ राखदै वो आगै कै मनै न तो थारो गैणो चाईजै, न कोई रकम री पाती, अर न साधपणो ही, थारै अठै आसू-जामू तो थारी सेवा चाईजै मनै तो ।"

"कह देसू टैम आया ।"

बात अबै तोरै आयोडी ही समझो, पण यां दोना रै एक जिज्ञासा होठा ताई आ-आ पाछी जावै ही । वै रह-रह बा कांनी देखै ही । वै पूछू ही कै थे वैनजी, इसा स्याणा समझणा अर दीपता हु'र, ई भगीबाडै मे कीकर आ फस्या ? सुधा आपणी बारी जिज्ञासा नै, बोली, "थे तो निरवाळी हुई अबै, सुणा-सुणा थारी रामकथा, अबै रही म्हारी बारी ?"

"हा, की ठा लागै तो ठीक ही है ।"

वण ही आपरी व्यथा-कथा सार-रूप मे राखदी बा आगै । वै तृप्त हो नी हुई, बारै अन्तस री भिन्नता भागगी अर आपसी एकता बारी थिर हुगी । बा बोली, "देखो, परिस्थिति री धरती आपणी न्यारी-न्यारी हुमकै है पण हा आपा ससारी लू मे मूवती एक ही डाळी री अलग-अलग पत्ती । ऊमर आपणी एकसी, पीड री मोटाई एकसी, आगै बधण री ललक एकसी तो हू सोच हू, लगन ही आपणी एकसी ही रैणी चाईजै ।"

"लगन ही खाली नी, हेत-प्यार मे एकसा ।"

"एकसा, तो ई एकता मे सगळां सू पैलां, मनै थारी सायण समझो ।"

"थे वैनजी हो नी, पूजनीक ?"

"बोली मे वैनजी, मन मे बराबर री अर आत्मा मे थारै-म्हारै मे की भेद नी । उपासना आपणी आंगण सू ले'र आयो धरती पण राष्ट्र सगळां सू

पैली, चाल आपणी राष्ट्र री मूळ धारा सागै, दिस-दीठ बी सागै । बो जियै तो कुण मरै ? बो मरै तो कुण जियै ?"

"मुनळव ई रो वेनजी ?"

"मगळो ससार ही बीरो कुटुम्ब है, 'एकै साधै सब सधै', बीरी साधना में सै सुखी—सै सोरा, बीरो उद्देश्य ही ओ है ।"

"मन, वचन, कर्म सू म्हे आपरै सागै हां ।"

"पडण नै आवो आज सू ही ।"

"ई में गोळ ही काई है ?" दुरगी यै मन में उत्साह अर मूडां पर मुस्कान लिया ।

आज सुधा री चाल में ही फर्क हो अर चैरै में ही । दिना रो डेरो दियोडो दुविधा बोरी-बिस्तर बाध'र टुरै ही, अभयता बी जाग्या जमै ही । बीरो मारगो बीरै सामनै आ ऊभो—इत्तो चैगो ही । बीरी चेतना में व्याप्त, रूप-विग्रह एकर चमक उठ्यो मतै ही, या गदगद हुगी । सोवण लागी जद, नानै री याद करायोडी, मानस री दो सैणां मानस में नाच उठी मतै ही—

"देस-काल दिसि-विदिस हु मांही,
कहहु सो कहां जहा प्रभु नाही ।"

आज बीनै जिसी सोरी नींद आई, अठै आया पछै विसी कदेई नी ।।

6

दस-बारै लुगाया आवै रात नै पडण नै । घडी दो घडी यै बोल-बतळ करै, पण, थारो-म्हारो अर घर गी हूंगी-मूंगी नी, जोवण री बां लीक में बध'र —समाज सागै जुडण गी । सुधा वा सागै बराबर जुतै, पण भार बां सू जादा घोचै । बा चावै है कै "थारी गंख्या ही बधै अर साक्षरता ही । लगन थारी लागै अर चाव बामे जागै ।" कांई ताळ वा, स्त्रियां-म्हाण्यां री दुनिया में घुमावै बानै, अर थोडो पडण रो बळाप ही करावै । माईन्यां सोरी-सोरी चालै, पण बूढ-अधबूढ, पण आंखीनै रायली चमकै, आखड़न

रो डर लागै बानै । सुधा सोचै, हिचकिचाट री बांरी आ भूतणी, अठै आयां तो निकळसी ही, आज नी तो काल, इत्तै ईं मिस, वै जे, की बरतो पकडनो ही सीखै तो सुभ है—मूढो दिस सामो तो हुयो ।

आं में घूड़ी अर धाई पचास सू दो-दो बरस ऊंची है । दोनू ही मेघ-वाळी है । घूडी रै ईं साल जीमणआळो धान हुयोडो है । की खट्टो देवै अर की धोणों । धणी ही बेटा रै बराबर खटै ओजू । बहुवां अर आप कातै, बेटा कार-मजूरी पर जावै, पोता-पोती ही की हाथ हिलावै, सै सागै ही है, गवाडी रो चैरो चिलकै, पण बीरा दौड़ता चालै ।

पोता-पोती तो घाई रै ही है । मोटघार जवान तीन बेटा पण गवाडी लाई-खाई करणआली ही है । बेटा सै न्यारा है पण है एक फळसै मे ही, आप-आपरी लावै-खावै, सुख इत्तो ही है कै सीग ओजू आपस में कीरा ही नी उळझै । घाई बेवा है, धणो नै खूटयां डोड ही बरस हुयो है ।

घाई रै तो लगन इसी लागी है वा आपरै बेटां री बहुवां नै ही सागै लावै । वा सोचै, 'रग नी आवै तो कोई बात नी, की बुद्धि बापरै तो ही सूठो लाभ ।' पैलै दिन सिरदारी जद ले'र आई आं दोनां नै, तो सुधा बोली, "हैं ए, थे तो करड़ी गरज करावो, ईनै पण रावती ही दोरी हुवो, कोई पकडै है काई थानै अठै ?"

"म्हे तो केई दिन पैला ही आऊ ही बाईसा", दोनू ही बोली ।

"आऊ ही तो कुण आडो फिरग्यो थारै ?"

"सिरदारी भुवाजी म्हानै पढण रो कहदियो बाईसा, तो म्हारो मन की पाछो पडग्यो ।"

"पढण रो कहदियो तो काईं, बण भोभर मे हाथ देवण रो कहदियो थानै ?"

"पण बाईसा, थे स्याणा हो, ओ काम अवार म्हारै बस रो है काईं ? ईं ऊमर में आकां कानी न म्हारा हाथ ही फुरै अर न माथा ही ।"

"झूठ बोलो हो थे, खावै-कमावै बारा हाथ ही फुरै अर माथा ही, नान्हा-नान्हां आधर थांनै डूगर-सा डीघा किया लागै ?"

"डीघा तो नी पण मन मे दोरा लागै ।"

"हां आ म्हारै ही जची, पण आपांनै मन रै मतै नी चालणो, मन

चालसी आपणै मतै ।"

"पण वाईसा, पढणो तो टावरा रो काम है ?"

"टावरा नै सिखाणो तो और ही दोरो, पण थारै जे इसी ही जच्योड़ी है तो पडण रै मारो गोळी, घडी दो घडी ज्ञान-गुरवत रै मिस तो आस्यो का नी ?"

"हा वी खातर तो जरूर आम्या ।"

ईं ढंग री वातां करणआळी वै ही लुगाया अवार वर्णमळा रा मै आखर माडै । किरडै नै देख'र, किरडो रग पलटै, सिरदारी नै देख'र वारो मन ही पावसग्यो । 'सडक पर मरपट मत चल ।' 'आ कमल, वरगद पर चढ', जिसी विना लगमात री लैणा धीरै-धीरै माडती वै कित्ती राजी हुवै, वै ही जाणै । सोचै है, "म्हे काई ठा कित्ती ही पढगी अर कठै जांवती पूगम्या ?" अरणै-आपमे वै एक नुई जाग अनुभव करै ही ।

धाई एक दिन सुधा नै पूछ्यो, "है ओ वाईसा, हू ही कदेई रामदे-धणी रो पोथियो बाच लेस्यू ?"

"जरूर, गोळ ही नी ईं में, जादा सू जादा दो महीनां और समझ लूं ।"

खुसी री एक लैर बीरै चैरै पर दौडगी । बीरी आसा रो छितिज ऊंचो आवतो देख, सुधा रो उत्साह ही कम ऊचो नी आयो । वी दिन पछै, वा औरा बिचै, सुधा सागै की जादा हिल-मिलगी । प्रसंगवस, सुधा एक दिन पूछलियो बीनै, "धणी चूटयां किताक दिन हुग्या धाई-माई ?"

धा नाक मे कीं सळपालती-सी बोली, "बरस ढोडे'क हुग्यो हुसी, पण बी कुमाणस रो क्यों नांव लो म्हारै आगै ?"

धा बो कानी अचमै सू देखती बोली, "बीरै लारै ही तो आई ही तूं ?"

"आई कुण ही, करदी मनै तो ।"

"करदी तो हो हो तो धणी ही ?"

"हुयो बरस पतळा हा जद, पण अबै सबै-सवार्थ नै पाछो क्यां खातर माडो ?"

"पन बीरै नांव सू तू इत्ती दोरी क्यिा, नो समझी हूं ?"

"दोरी इया कै बीरै ओसर सू ही जादा, बीरी धिमाई में टूटपों पड़यो म्हानै, गवाड़ी म्हारो ओजूं सूई नी हुई ।"

"धाई-माई, बताया दुख तनैं हुसी, अर नी बताया मनै, देखलै तू।"

मैर करदी बण, बोली, "पछलै दो-तीन बरसा सू दारू पीवतो, आ किरपा एक ठाकर करी वी पर। पैला तो बुला-बुला सिपाई वीनै, हिलग्यो जद आपरै घरे राखलियो वीनै। ओल्है-छांनै, ठाकर रै भट्टी निकळती। मैं घणो ही पाल्यो, पाल्यो जितो दर्फ हो बण मनै कूटी, मैं तो फेर तिय ही छोडदी, कुवै मे पडो, हाड कोसू भगाईजै? छोरा ही एकर कूटण नै सम्या वीनै, पण ठाकरडै सू डरग्या, नागो बळै हो, याणं सागै राम-रमी पूरी ही, दारू पूगतो बठै।"

"काई काम करतो ठाकर रै वो?"

"बीरै धन नै नीरवाळी, बाखळ मे दंताळी सू ले'र मांय-बारै दारू री बोतलां पुगावण ताई।"

"कांई देवतो ठाकर वीनै?"

"रोळ कमावै रावळै क. पाड़ोसी रै खेत, दे'र बीनै कुण टारै हो? दो टैम रोटड़ी, सरीर ढकण नै बोदो-पुराणो कोई कपड़ियो अर पग ऊधा टिकै जितो गुटको, बस।"

"फेर?"

"ठाकर छूटग्यो फेर बीनै कुण राखै हो? अबै घरे ही पोदो ओर घरे ही पियो। पीवण नै मंडी गयो एक दिन, आवतो रस्तै मे ही पूरो हुग्यो, दिनूगै म्हानै ठा लागी, लास कनै एक खाली बोतल पडी ही। लास लांवण मे सगळो तो दिन लागग्यो अर हजार नेड़ै रिपियां रो कूटळो हुग्यो। दो टैम आटै रो ही जुगाड नी हो बाईसा, पण कांई करता कुमाणस मू पानो पडग्यो जद?"

सुधा आपरै बवहार, अर हेत-प्यार सू आपरी चेल्यां रै, घुर्डा-अन्तर किसी ही हुयां, अन्तस में उतर, आत्मीयता री एक संज आग्या रय सॅवती, ओ ही कारण है लुगायां सगळी चावै बीनै, अर आवै बी मनै।

लुगायां री लैण आए दिन, तोटो-मासो की न की बधै ही। सनिवार नै पढाई नी हुवै। सभा हुवै अर सभा मे ज्ञान-गुग्वत ही नी, मन बहलाव री सरल-सीधी गल्लां भी। सग पढतां हरेक नै की न की बोलणो पडै, मानी

न भिरदारी नै अर न धूडी-धाई नै ।

मुधा गै नै बोली, "आपानै तो आपणी बोली में ही बोलणो है, आंटा-टूटा गांवा रा रोटा, सैं ठीक है फेर क्यों संको अर क्यो हिचकिचावो ? की आगै बध्या पछै, हिन्दी में बोलस्या, की ताण आसी तो आगै सोचस्या ।"

दो सनिवार टिपग्या, वां में केई बोली, केई नी, पण, अबै, अ. सीध सगळां नैं वधगी कै बोलणो हरेक नै है अर बो इसो दोरो नी, जिसो आपां सोचां हा ।

कंचन-करमा ही रूकमी एकदिन—सभा री कारवाई देखण नै । पैलां बिणती हुई ठाकुरजी री । धूडो, धाई इत्तादिन टाळती रही, आज मुधा बोली, "अबै, होठां आडो ताळो राख्यां पार नी पडै । बाई है आ तो, आप-आपरी काडणी सगळा नैं हीं पडसी ।"

"म्हांनै तो बाईसा, भळे ही माफी बगसो केई दिन ।"

"क्यों ?"

"म्हानै तो मुणन री आदत ही है का लडन री समझो ।"

"लडन री है तो लडो दोनू, हाथा-पाई तो नी जीभ सू, कुण जीतै थां मे देखा, पण मूंडै री लडाई में, गाळ जीभ पर नी आणी चाईजै ।"

"लडाई मे तो गाळ ही निकळै ।"

"हां निकाळो, पण कोझी नी ?

"गाळ ही फुटरी हुवै है कदेई ?"

"थारे वैरी रो घर तायडै बरूं, चोर मरै थारा, मायो काना बिचाळै करूं, नी मानै मारी गोगी, अर याळद् कांटा थारा, अै गाळ कोझी है काई ?"

सुण'र सगळी राजी हुई । धूडो, धाई बोली, "पण इयां, कैयां थोडो ही सहीजै ?"

"नी सहीजै तो बोलो क्यों ? चिडी-कागलै री ही बात, थैन गे नामसमझो अर का बात म्हारा घणां चमत्कार चू । बोलणो तो पड़सी की न की ?"

धूडी बोली, "हुकम करो तो कोई आडी तो हूं आट दू ?"

"आधै नै दो आड्या, फेर चाईजै ही काई, आडो ।"

"एक कहाणी हू कहूं सुणल्यो म्हारा पूत ।
जिन पाड्या ऊंचो उडै, पाल करै वे मूत ॥"

सुधा सगळा नै बोली, सोचो थे सगळी, पण बोलो हू पूछू वा ही।"

सिरदारी नै पूछ्यो, "बोलो बडा-वैनजी ?"

"पांख्या बिना किया उडीजै बाई, म्हारी तो समझ मे नी वैठी", सिरदारी बोली।

"कोई बात नी, नी उडीजै तो।"

केया नै और पूछ्यो, पण नी बोली कोइ ही, पूछता-पूछता, दस-बारै वरसा री एक छोरी बोली, "वैनजी, किन्नो हुयो ओ तो।"

सगळी ही बोली, "हां बिलकुल ठीक सोची अण।"

सिरदारी बोली, "देखो, ईं काल री छोरी रो मायो कितोक घूम्यो है ? साठी बुध नाठी, म्हारै तो माथै रै कांई चूची लागी है ठौड सू ही नी मिरकै ?"

करमा बोली, "वडिया, मायो ठौड सू मिरक्यां पछै जो सी किता घड़ी ?"

सगळी हस पडी।

अबै धाई री बारी आई, बा ही बोली—

"आगै चालै बीनणी, लारै चालै बीन,
बतावो कांई हुयो, रिपिया देऊं तीन।"

एक जणी बिना पूछ्यां ही बोली, "हैं ओ आ ऊंधी रीत किया, आपणै तो आगै बीन चाल्या करै है नी ?" सगळी ही हंसी। सिरदारी नै पूछ्यो, वा बोली, "इत्तो तो हू ही समझू हू, सूई-डोरो हुयो ओ तो।"

साड्यां छोरया ही आडती। वडो आनन्द आंवतो वानै। घूडी रै बेटै री बहू कवीर रो भजन सुणायो, "घूघट का पट खोल रे तोहे पिया मिलेंगे।"

—धन जोवन को गरव न कीजे, कटुक वचन मत बोल—मतबोल···"

"लुगाई टावरां रो झूमको, पूणी रै साप-सो लैरीजग्यो। सुधा सोचै ही. "कांई लोच ? अर कांई मिठास दियो है रामजी इनै ? इसै जलम-जात कठ नै जे कोई की मूंडो मोड देवै तो, आ लता मंगेसकर नै ही हवदै।" वा सगळां नै बोली, 'कटुक बचन मत बोल', ओ तप जिको मवाटो, अर जिरै गाव मे पूगग्यो बांरो एकता रो दूध जुगा हो नी फाटै।"

ईं ढग सूं वामे मनोरंजन, उन्मुक्तता अर आत्म-विश्वास मे एकै सागै

ही दौड़ें हा, एक ही लक्ष कानी। साकड़ै खूणा में टैम तोड़ती लुगाया आपरी वाणी नै खुनै समूह में काढती कित्ती राजी हुवै ही, वै ही जाणै। सुधा वांनै हिलती करै ही अर वारै हेज नै पक्को।

केई जणी बोली, 'बाईसा, म्हानै ही म्हानै कैवो बोलण खातर, ठीक है यो तो, पण की तो होठ आप ही खोलो आज ?"

"क्यों नी ? हूं किमे न्यारै टसकै री हूं, थारी टोळी री ही तो हू। छोटी-सी एक कहाणी सुणाऊ थांनै, घटथोडी अर एकदम साची, कहाणी रो नाव है।—'अकलआळी बीनणी।'

"हा-हा सुणावो" सगळी ही बोली। कहाणी रो कोड छोरयां नै जादा हो।"

"दिन हा मीठी ठारी रा। माल हो काळ-कुसमै रो। गांव में चोरी हुणी सुरु हुगी। एक धरमे सासु-बहू दो ही जणी ही। आदमी दो हा अर दोनूं ही भाग रा परदेस गयोड़ा। डोकरी दिन-दिन चिंता में सूकै। बहू नै बोली, "रात नै कोई दूकै में बड़ बैठो कदेई तो किसीक हुसी ? सोच्यां ही, सी-स्यागै मनै तो, पाड़ोसी तो इसा है, कूकयां ही नी बोलै।" बीनणी बोली, "तो मा-सा चिंता कियां काई हुसी, आमी वो आपणी चिंता सूं थोड़ो ही रुकसी ?"

"हकै तो नी हू ही जाणू हू, पण डर तो लागैनी ? अर डर माया रो हुसो नी, जिनो काया रो है।"

"ठीक है पण आपणो जाबतो दूजा तो करण सू रैया, करणो तो आपां नै ही पड़सी।"

"आपां काई नय चूल्हा री राख कम्म्यां बळती बाटी ही नी उथळीजै म्हारै सू तो, बुवेळा रो खड़को सुणनां ही ताव चडै है मनै तो। पट्टै री रमार उमी तू ही नी लागी मनै, धिकै जितै मावळ है, बा बेळा कोरै ही आवै ही नी, आयां पछै जावतो है न थावतो फेर।"

बीनणी उदास हुंती बोली, "तो ?"

"तो आ ही है बीनणी, कै, सिझ्या पड़नां-पड़ता, रोटी-टुकड़ो खा, ताळा-कूटा ठक, ओरियै में जा बड़्यां अर थोमस्यां बोनै दिन ऊग्या ही।"

"ठीक है मा-सा आप हुकम करम्यो बिया ही हुसी।"

धूड़ी बिचाळै ही बोली, "बीनणी बापड़ी और कांई कैवती, कांई सारू हो बीरै ?"

"अगलै दिन बीनणी पीडारो खोल्यो थेपड़्या रो। बा एक-एक थेपडो दोना कानी देख-देख, आप कानी सिरकावै ही। पीडारो पुराणो हो। वण थेपड़्या बीसेक जियां ही सिरकाई, दो लिगतर पूण-पूण बिलान रा अुळ-बुळता दीस्या बीनै—कळायण-सा काळा। सासु ही आ पूगी। लिगतरां नै देखतां ही सास ऊंचो चढ़े हो बीरो। बोली, "बीनणी मार आनै बैगासा, धूजणी सुरू हुवै है मनै, वामडी रै जे आ बीनों ही पूछ लगा दियो तो, हमास्त सू तो फेर पाणी ही नी मागीजै लो, याको खोल'र गगाजळ ही मलो ही दिए, हे भभूतासिध तू लाज राखै।"

बीनणी बोली, "राख'र आनै किसा बेचणा है मनै कठै ही ? मारस्यू नी कांई करस्यू आरो आप घर मे पधारो भला ही।" गई सासु तो।

"बा जियां ही मारण मतै हुई यानै, एक इसो ही विचार कोई बीरै मन मे आयो, मारती-मारती बा, एकदम सू रुकगी, छोड दियो मारण रो विचार वण।"

दो-एक छोरयां बोली, "क्यों बैनजी, आ कांई अची बीरै ?"

"बैनजी नै कांई ठा अगली जाणै।"

लुगाया केई बोली, "हा आगै फरमावो बाईसा, दूसरै रै जी री बीनै ठा पड़ै ?"

"बिछुवां नै वण दोरा-मोरा पकड चीपियै सू एक पुराणै पारियै में घाल दिया अर पारियो लेजा'र राखदियो रसोई रै एक खूणै मे। ऊपर घर दी बीरै थाळी। दो दिन निकळग्या पारियो बिया ही पड्यो, वण छेड्यो नी अर सासु माथै घड़ी नी, फेर ही दिन मे बा ताळीमारी राखती रसोई रै। पण सासु नैं न ई बात रो ठा अर न वण कैयो। कह'र बिगाणै कुणर मोर थोडी ही लेणो हो ?

तीजै दिन उथप्यां भागा रो एक चोर आयो आधी'क रात नै। चोर यारलो थोडो ही हो, गांव रो ही हो कोई। अंधेरै में सै ही ओळखग। बीनै ठा हो कै ई घर में आदमी तो कोई है नहीं, लुगावड्यां है दो ! घर तो ही केई दिना सू ही, सुगन-मरोधै रो बढ़िया मोको आज हो मिल्यो बीनै;

टुरग्यो जद पीठवाणी छींक सुणीजी बीनैं । बण सोच लियो, 'आज तो सीधी आगळो घी खूब निकळणो चाईजै । ओ आ पूग्यो ।

बीनणी बडी जागरूक ही । की खड़कै रै वैम सू बा झट जागगी । सासु नै बोली बा, "हैं ओ की पग सुणीज्या, कोई बड़ग्यो दीसै है मनै तो ?"

डोकरी बोली, "कुवै मे पडन दे, बड़ग्यो तो, कूटो जरू है'क नी सावळ देखलै, लेजावण दे की लेजावै सो, सूती रह बोली-बोली ।" पण आ, सोचै ही कै "सो दिन सुनार रा तो एक दिन लोहार रो ही, कदास सुणलै मायरियो की म्हारी ही ।"

चोरडो आरी बाता कानी कान करतो किंवाडा रै सारै आ लाग्यो ।

बीनणी बोली, "और तो कांई है, रसोई मे म्हारा टड्डो अर तेवटो पड्या है, रसोई कर'र बै हा जठै ही भूलगी, बानै कोई पूगग्यो तो मुश्किल करसी ।"

टड्डा अर तेवटै रो सुण'र चोरडै सोच्यो जोगमाया कदास, दिना रो नहीं महीना रो वेटियो अठै ही पूरो करदै, फेर छींक याद आई बीनै, 'अरे पीठ पाछी छींक सुभ ही नहीं तुरन्त फळदाई हुवै ई हिसाब सो ।' बण कान की और नैडा कर दिया किंवाडा रै ।

डोकरी बोली, "रसोई मे कठै धूलै लारै है काई ?"

"धरपोड़ा तो पारियै मे है, ऊपर थाळी दियोडी है ।"

"थाळी कोई सौ-पचास मण री मिला है ? इंयां काईं चेतो धरै नी हो ?"

"जवै जद्र समझो चूक्या चौरासी है ।"

डोकरडी गी झुसळा'र बोली, "थारै मे महूर किसै दिन हो ? नाळती सो पळनी है सो रसोवडी रे ?"

"सोच ओ ही तो खावै है. करनाळो ही दे राख्यो है खाली ।"

"तो, रो सासु नैं लागगी गुर्व विचाळै, ओ भाव मोनै री आगळ तात धमाणी ही आंगी कुवार, गैणो करा सू हुवै ? हे हड़मान बाबा, अबै तो थारी आस्यां ही चानणो है । बावलिया ! कोई काजळ नी घालदै । लेयग्यो कोई, तो वै आया मनै गिज सेसी अर टूम दूसर पडोजण रा मपना हो लेया भला ही । बाबा, मूळो तो दिनूगै ऊंट स्यूं पछै, पैमा थारो प्रसाद करस्यूं ।"

लुगाया मे सू एक मतै ही बोल पडी, "डोकरड़ी, बाईसा म्हारै दांई ही कोई मूकणी माटी री ही चिंता तो हुवै हो बापडी नै।"

चोरडै बारो पछलो राडी-रोणो बिल्कुल हो नी सुण्यो, करनाळो है खाली, बस इत्तो सुणता ही बो तो रसोई कानी सिरक्यो—वँगो-सो। बी रै तो टड्डा री उतावळ चूठिया बोढै ही। करनाळो छेड़ै कर रसोई मे बड़ग्यो चुपकै-सै। तुळी जगाई, चानणो हुता ही, थाळी दियोडो पारियो दीसग्यो बीनै, तुळी बुझगी, सोच्यो अवै पडी बुझो हाथ सीधो टड्डै तेवटै पर ही जासी।

बिच्छू अमूज्योड़ा बैठा हा तीन दिना सू। उडीकै हा, आख्यां फाड़्यां, हाथ मिला'र कोई 'जै रघनाथजी री' करै तो ? पारियै री धरती रा धणी हा बै। धण थाळती होळै-सै छेडैकर हाथ जिया ही धायो-सो आगीनै दियो, लिगतरा बीसू ही खायो एक-एक इंजकसन साथ सू भरपोड़ो ठोक दियो, एक-एक आंगळी रै, बिना फीस अर बिना टैस्ट किया। इसो दोरो तो डाडा-डाकधर ऊँठ रै ही नी दै। बामडी रै चिपतां ही रीं-अँवमन सुर हुग्यो अर झाळ अर ओळमा एडी मू चोटीताईं जा पूग्या। धायो बी हाथ रो मुठियो, मुट्ठी मे जरु पकडग्या, जाड अर होठ भीच्यां भाग्यो बो पण बायळ मे पूग्यो जितै, होठ ओग आगै, बाट फाटती रोटीसा मतै ही फीसग्या अर सागै कठ ही—'ओय मावड़ी मरग्यो ए, ओय रे,'⋯गाव पर सूतै अंधेरै री नींद नै चीरती किरळी दूर ताईं फैलगी। हाथ तरड़ावै तो इसो कै फाटगी बो। आख्या आडो अंधेरो अर सरीर मे बांईटा आवै। होठ अर कंठ अवै खुल तो गया पण बद नी हुवै। ओय मावड़ी ए⋯आभो ही अंधेरीजै अर बीरो चेतो ही।

बीनणी नै अवै बिस्वास हुग्यो कै अंधेरै मे धन बाळतो भाईजी नै टड्डा अर तेवटो मिलग्या दीसै है। वा कूटो खोस'र बारै जावण सागी जद सासू बोली, "मूगी है' क स्याणी, फर्डै निरळै है आधी रात नै, पडग्या बठनै टड्डा तेवटो है जठै ही, जी नै थिर राख, अवै तो रामजी करगो वा हुगी, घर्रो कमाई रा है तो कठै ही नी जावै।"

"थारै की किरळी-सी नो सुणीजै थांनै ?" बा की मजोरी हु'र बोली।

"सुणीजै तो है की छणनी-सो, पन बी मू आपां नै काई ?"

"काईं किया नी ? की अगलो करै है तो की आपा करस्या।" डोकरी, वात नैं ओळू ही नी समझी, पण लारैं हुगी बीरैं। बारैं आ'र, वा दोनां ही चोर-चोर कियो जोर सू। लोगा मे जाग तो की पैला ही मुरु हुगी ही, आवै तो हा ही, अयै और खाया हुग्या।

पकड लियो बीनैं। बीरी सरधा तो जवाब दिया बैठी ही, ओळभा छाती मे था लिया, केई बोल्या, 'श्रीमणेस तो ईंरो जूतां मू करो और लाड पछै।' चोरडो कूकतो-किरावतो बोल्यो, 'अरे बापजी जूता पैला नीं, अरे पैला झाडो घलवावो म्हारैं, ओय मावडी मरू ए, अरे झाड़ो घलवावो रे '' जी निवळसी।

केई बोल्या, 'नी-नी ठीक हुई साळै मे, मारो जूता।' एक जणो बीनैं कोझीतरैं कूकता देख'र बोल्यो, 'रामजी रैं घर सू हजार जूता रो हुकम हुवै जद एक बिच्छू खावै, हजार जूता तो लागग्या ईंरै, अबै लागसी बै ऊपर।" पण आ, ठा बानैं ओळू ही नीं कै बिच्छू ईंनै दो खाया है, हजार जूता रो गोळ एकै सागै ही किया ?' एक जणो बोल्यो 'अरे चानणो कर'र देखो तो सरी है कुण ओ ?"

इत्तै मैं चोरडो बोल्यो हो, 'अरे हू हाजीड़ो हूं, पैलां म्हारैं ये झाड़ो घलावो, अरे म्हारो सास निकळै रे'''। अधेरो आवै आख्या आडो।'

दो-एक समझद.र हा की, सोच्यो 'सास रो कांई विस्वास कीहुती काईं ठा की हुवै—चोर रो ठा आपा नै लागग्यो अर चोरी रो ठा ईंनै लागग्यो, यह जाणे अर डाकोत। बा तो गांव रै सरपंच नै लेजा सूप्यो अर सरपंच गांव री असपताळ मे। गांव में केई दिन ठंड इगी वापरी चोर तो, बारणों कोरो ही उघाडो देख्यां ही, रात नै भीरैं ही घर कानी पग तो दूर मू ही नी करता। बात रो पूरो ठा लाग्या, बीनणी नै लोगा घणो सपबदाद दियो, अबै ये बोनैं काईं केय्यो, थर् गुणावो ?"

मुणायो बोनी, "बाईसा, बीनणी बेटी, उस्ताद नीवड़ी, चोरडै मू तो चानणो नी हुयो, पण बण कर दिखायो, इसो तो पुलिसआळा ही नी दिखा सकै।"

छोरयां बोली, "बिच्छू चैठणो चोरडै रै अर जी सोरो हुयो म्हारो।" पूडी, धाई बोली, "सयदाद बीनणी नै कांईं, सपदाद है थानै, थे हुवो

न म्हानै सुणावो इसी-इसी बाता ।"

सिरदारी बोली, "बाई बिच्छू बापड़ै नै दोरा खाया, बीनै कोझी तरै कूकतो-बिलखतो सुण, म्हारो जी ही दुख पावण लागग्यो, पण काई हुवै रोवणजोगै नै चोरी रो कुलछ किसोक ऊधो पडग्यो, कुकावै तो कूकणो ही पड़ै, कुदरत कीनै माफ करै ?

एक बीनणी होळै-सै पूछ्यो, "ईं बात रै साच रो आपनै कियां ठा लाग्यो, बाईसा ?"

एक जणी बोली बीनै, "इत्तो काई पूछै है खोद-खोद'र, इसी काईं थाणैदार लाग्योड़ी है तू ?"

सुधा बोली, "ना बाई, कोई कीनै ही टोको मत, पूछै कोई तो पूछण दो, आ तो जिज्ञासा है, आ टोक्यां नी मिटै, सुण्यां, समझ्यां मिटै ।"

अधमिट रुक, वा भळे बोली, "म्हारै नानाणै सू अधकोस परिया एक गाव मे, दस बरसा पैला आ घटना घटी, गाव री लुगायां सागै जा, हू खुद मिली हू बी बीनणी सू ।"

"भळे साची मे काई कसर रही ?" ग्यासी जणी बोली ।

आरी आलोचना सुणली सुधा । अबै बोली वा, "देखो, ओ तो छीकै रै टूटणो हो, अर मिन्नी रो आणो, सजोग बैठणो हो, बैठग्यो, पण थे ध्यान राख्या. थां मे सू कोई बिना सोचै, बिच्छू पकड़'र की ठाव मे मन घाल लेया, ठा बिना कदेई, घरआळै कण ही भूल मे जे हाथ घाल दियो तो लिगतर टड्डो-तेवटो दिया बिना नी मानै लो ।"

"हां आ साची कही बाईसा और तो हाथ देवै नी देवै, उछाछ्ळो टीगर तो कोई, हाथ दिया बिना मरयो ही नी मानै ।"

सगळी ही हसती-मुळकती आप-आपरै घरां कानी बिदा हुई ।

कचन अर करमा बोली, "बैनजी, सभा थारी जोर री, बड़ी दाय आई म्हानै, आगैसारू म्हे ही भाग लिया करस्या थी मे ।"

"थे भाग लेवो, ईं री जरूरत थानै ही नी, आपणै गाव अर बीसू आगै ताईं, आखै देस नै है बीरो ।"

"कियां ?"

"की समूह मे बठै ही, पचयोड़ा अर मुळक्योड़ा विचार बारै काढन

रो सैज-सरल उपाय काईं है ?"

थे दोनू ही वी सामीं देखण लागगी, वा बोली, "वाणी ही तो है ?"

"हा बैनजी ।"

"जुगा सू टूटता-अमूजता अै लोग अर इसा ही कांईं ठा और किता, देस री मूळधारा सागे जुड़नो चावै का नी ?"

"नी क्यों, जरूर चावै", करमा बोली ।"

कचन ही समर्थन कियो, "नी जुड़या बैनजी, त्यारी फटती धारा निभै किता दिन ? छीजै ही वै तो ।"

सुधा बोली, "बिल्कुल ठीक पण कीनै ही दिस ही ठा नी हुवै तो यो टूटे कीनै ? थे थारी सघरी-सतोल वाणी सू मार्ग टोरो वानै, बदळो वानै अर एक नवळी धार सागै खड़ा करो वानै पण ई खातर पैला थानै थारी वाणी री साधना तो करणी पड़सी ।"

"किया अर कठै ?"

"बी खातर आ सभा ही थारी पैली पाठशाळा है—बिंदु सू सिंधु बानी लेजावणआळी । ई मे बोल्या हिचकिचाट थारी निकळ भागसी, वाणी मजली, लोच अर मिठास आसी बी मे, बोरी धाक बधसी । की त्याग अर साच जुड़्या बीमे तो, भीड री भीड थारै लारै टुरपड़सी, थारै संकेत पर नाचसी । औरा री तो हूं कहू नी पण, था दोना खातर आ ग.धना मुश्किल नी ।"

"म्हारै इसो काईं है ?" दोनू ही बोली ।

"था दोना रा मायना चैरा मै खासा-भला पढलिया ।"

करमा बोली, "म्हारै चैरे पर थे कांईं पढ्यो बैनजी ?"

"थारो मैरो फूल-सो कवळो अर फौलाद-सो परो । कवळापण, आम आदमी री हित चावै अर करड़ापण सासन ।"

"सागल ? हूं नी समझी !"

"थांर, जार, अर गुडां नै टोक करण नै करड़ापण चाईजै ।"

"ई सू मुतळब आपरो ?"

"ई गांव री बागडोर एक दिन नू सभाळ सकै है—अर ई सू आगै री सभाळै तो ही अचंभो नी ।"

कचन बोली, "म्हारै चैरै रा आखर काई बोलै है बैनजी ?"

"तू इकरंगी रैसी। सेवा, सहयोग अर चिंतन थारै मे जादा है। दळित दुखी नै थारै सू बडो भारी पोषण मिलसी। थारै स्वागत में दूर-दूर ताई पलका बिछासी लोग। हूं झूठ नी बोलू, मैं जिसी पढी विसो भाखी है।"

वै वडी तुष्ट हुई दोनू। वै टुरगी धीरै-धीरै, पण वांरा भावना आखर, वांरै वारलै चैरा पर अंकित हुवण री उतावळ करै हा।

7

देसभक्ति, धर्म अर राजनीति, आत्मविश्वास अर समाज री आधी परम्परावा सू जूझण री शक्ति रो कोई न कोई बीज, सुधा, कंचन-करमा री हुआवी धरती पर तोपणों नी भूसती—मौके रो मौसम आयो। वै डोड-दो मंदा, तिपवंधी आणो सुरू हुगी, घरे पढती बो असग। सुधा कैवती दोनां नै ही, पण कचन नै की वेसी जोर दे' र कै, "बाई, रात नै तू दो घडी वेसी पढलिया कर पण दिन मे मा-सा नै सारो पूरो सगायो कर। रात नै थारी पीड्यां अर पगथळयां पर हाथ फेर दिया कर, मा, ना करै तो ही, हाथां रो न को घसीजै अर न की बिगडै। थारै करणै सू ही नी, थारै मिठास सूं पूछ्यां ही, वारै तन-मन रो थाकेलो मिटै, खुसी बधै वांरी, अर बधै थारै स्वास्थ्य, सन्तोष री ऊंचाई। वारी हर खूणों खुसी में डूबै तो थारी चेतना पर एक उजास सतै ही उतरै जिको न हर परवासी नै सुलभ अर न की बनवासी नै। मा तो मा ही हुवै है।" कंचन रो उत्साह आसा-वान हु' र ऊपर उठतो।

बण आपरै अठै एक दैनिक अर एक साप्ताहिक अखबार मगाणा सुरू कर दिया। दस-बीस मिट केई बांनै देखतो, केई सुणतो। एक ट्रांजीस्टर ही आ लियो। करमां स्कूल नै ही अर्पण कर दियो बो। सिरफ बांसू खबर अर भोर मे पांच-सात प्रभाती, बस। न बोनै दिनभर सूचाणों अर न बांसू कोरी ही आदत रो सू ऊंधी दिस कांनी करणो।

आ दोना रै आणै सू, सुधा काम में अबार इत्तो व्यस्त हुगी के भय अर आसंका वा बिल्कुल ही विसरगी। दिन जावतां कांई जेज लागै, फागण आ लियो, वा, [illegible]ा दोनां कनै सू दस-दस मिट नैड़ो तो पाली वाचन ही करावती, श्रुत-लेख ही लिखावती। उच्चारण पर विसेस ध्यान देंवती। ह्रस्व, दीर्घ अर विसर्ग, श, ष अर स रै उच्चारण में जठै ही गडबड हुई, त्र, कृ नै जठै ही एकमेक कर दियो, आप शुद्ध बोल-बोल, फेर बा कनै सू बोलावती कई विरिया। गुन-मून, दिन-दीन जिसा दो-च्यार जोडा रोज लिखावती, समझावती अर आपरै वाक्या में प्रयोग करावती। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अर क्रिया पढावती वेळा पैरै-में ही पूछ लेंवती। कर्त्ता-कर्म अर विशेषण-विशेष्य री ज्ञान वाचन री वेळा ही वांरी चेतना रै गळै उतारती। हफ्तै में एक दफै, स्वतंत्र लिखावती वां कनै सू। भावा ओपती अर असरदार क्रिया वर्ण, अर कियां वीरो असर खरम हुवै, समझावती। आंख, नाक, होंठ-दांत अर हाथ-पग सम्बन्धी मुहावरा, अर 'काळ में अधिक मासो अर आंधां में काणों राव' जिसी रोजमर्रा री लोकउक्ति वारी जाण मांगै जोडती।

'एक ही साधे सब सधै' हिन्दी ठीक हुगी तो इतिहास, भूगोल अर नागरिक शास्त्र में मैज हुग्या, न लिखण में बाधा अर न पढण में। इयां ही और विगै चाले हा आपरी मैज चाल सू। रुचि वांरी हुवण लागगी पढ़णनी अर आस्था विकासमान। विसेस बात आ ही कै आत्मीयता री धरती वारी, ज्यूं-ज्यूं एकाकार हुवै हीं, गाव में सुधा री पूछ वधै ही, पण हुमाणसा रै आ चुभै ही।

अदीतवार है आज, सुधा रोटी-बाटी जीम र' रसोई मू निकळी जिनै गाडी-टग्यारै नेडी बजगी ही। गिरदारी दो वाड-इपारा सगा गहरा हा। अबार एक पनवाडै बैठा वै चिलम पिवै हा। गिरदारी बोलो, "थारी भूचाडी आ, बी परिया सिरक' र तो पियो, बिनद्य कोई माटा में पडगी तो मनै तो ख्याल करो ही सा, सागै औरा रा टापरा और धुराबोला ?

एक जणो बोल्यो, "इयां म्हे कांई गूगा हा मुवा ?"

"गूगां मे ही भळे कसर है ?"

"कियां ?"

"स्याणा हुंता तो घी-दूध का छाछ-राबड़ी पी' र ही मस्त भी रैवता? धुवो ही कोई पीवण री चीज हुवै है? पिटे कितीक वाळ राखुं, थाकै मा'कर नी काढो तो नास्या मा'कर काढणो पड़ै, काईं ठोको इं पीणं में? नीनो करता म्हारै की न की तो काम खोटी करस्यो, रिपियै-धंड री तमाखू रो लडीड देस्यो अर थारै कोई थूई नी निकळै, फेर कैवै म्हे गूगा घोडा ही हा—तो सोग हुवै है गूगा रै?"

वै नी बोल्या, पी चिलमडी, पाछा ही काम में लागग्या।

मुधा सोच्यो "दस-बीस मिट अन्न को पाधरो करलूं, फेर मा काती जाऊ, मोचसी, अदीतवार है तो हां दो मिट ही इं नै आ' र नी फुरकी।' एक-डीढ़ यजी कचन अर करमा आसी फेर पाच यजी ताईं उठणनै ही फुरसत नी, बा आसण पर आडी हुवण मतै ही का बीनै कोई अंवलो-सो लाग्यो। यण वैठी-वैठी ही गोडा तणी हु' र, बारै देख्यां मौ पेमा मेघवाळी आवती दीखी। अन्न पाधरो करण रो मनो वण डा दियो। वैळगी सावळ, ढंफरी सू चौनिजर हुतां ही मुधा बोली, "आओ मा-मा, मैर किया करी?"

"मैर काईं, की फोड़ो घालण आई हू।"

"बोलो?"

"छोरै पचास रिपिया भेज्या है मनियाडर सू। काल ही दिया है डाकियै अर साथै औ पुस्टाकाट", कह' र कागद वण बीरै आगै धर दियो। मुधा कागद नै सरसरी तौर सू देख्यो। न पूरी मात्रावा ही अर न पूरा आखर ही। समचार अदाज सू ही ओळख्या। लिखणियो न पढ़पोडो ही अर न भण-पड ही। बा बोली, 'माजी, पढ' र सुणाऊ का मोटा-मोटा समचार जबानी ही कहनाखू?"

"बाईसा, मनै आम खागा का पेड गिणना, समचार चाईजै मनै तो।"

राजी खुशी रो कह' र, बा बोली, "लिख्यो है रिपिया तो अबार पचास ही सावै आया है, महीनै-बीस दिना मे, तजवीज कोई वैठी तो की और भेजदेस्यू, और कोई चीज-वस्त रो फोडो मत देवो, भूरकी सासरै सू आयगी हुसी"?

डोकरी बोली, 'देखो बाईसा, गोदरै गो हियो फूटघो है, हूम रै घोड़ै रो मो, लिखावतै नै सरम नी आई बीनै कै कोई चीज-वस्त रो फोडो

मत देसे, फुलडी ता भेजी हैं मोटी-मोटी पचास, घणी-बहू नै गयां महीनां हुग्या तीन। जावतो कह' र गयो हो, छोरी नैं बुला' र, सवाढ करा दियै—पैली मवाढ है। छोरी नै आ' र, बैठां, दिन बीस हुग्या, आजकाल मे सोवणआळी है, को तो बीनै चीकणो दळियों चटाऊ का, नी ? तीन महीना मे सौ नेड़ा तो मैं माथै कर लिया, अै पचास तो जांवता ही खोस लेगी बाणियो, कड़ालियै मे पछै, काईं म्हारो करम राघस्यू ? लिख दियो कोई चीज-वस्त रो फोड़ो मत देसे, अकल तो सरावो बीरो ?"

सुधा बोली, "तीन महीना मे पचास तो रिपिया अर बामे ही भळे बेटी रै सवाड। इया काईं अन्न नै ये मूघो ही हो, खावो नी ? पचास रिपिया मे तो महीनो भर सूको आटो ही नी सरै।"

"नी सरै तो, मवका' र, कागद एक इसो लिखो थे कै, रिपिया दूजै ही दिन आ पड़ै।"

सुधा की मुळक' र बोली, "कागद नै ये कहो तो बदूक करदू ?"

"की करो बाईसा, रिपिया आणा चाईजै वैगासा।"

"सुणा, रिपिया तो अगलै रै भेज्या आसी, आपा तो समचार ही लिख सका हा।"

"तो लिखो थारै बूकै ज्यू।"

"लावो देनो कागद, लिखू जचा' र।"

"कागद तो, डाकखाने गई ही लावण नै, बंद हो वो तो।"

"तो ?"

'आप कनै नी कोई ? आगै ही ये दो लिख' र दिया हा मनै, याद है भूलू नीं, पदमा नौराणू, हाथ की फुरण दो।"

सुधा महीनैं मे दस-च्यारै कार्ड, अर दो-च्यार अन्तर्देशीय, वाम पी सुगाया रा लिखै। समचार बारा अर कागदा रो खर्चं सुधा रो। यै ही राजी अर वा ही। पदमा कोई मतै देवै तो ठीक है, नी तो हुवै पणखरी आही कै, न वा मागै अर न कोई देवै।

सुधा उठी, पोस्ट कार्ड लिख दियो बीनै। लेलियो बण उठनी बोली, "भलो हुया आपरो, न्याल करदी।" पदमा मितर बोरी जेब मे हा पण अबार तो बै, न बीरी जेब मू अळगा हुया अर न बीरै जी मू।

सुधा सोच्यो, "घणो नी तो, पाचेक मिट तो कमर की पाधरी कर ही लू, को टैम है ओजू।"

आडी हुवण मतै हुवै ही, का सिरदारी अर सागै आप सार्‌नी-सी एक और लिया, सामी आ खडी हुई। सुधा बो नुई आई लुगाई कानी देख्यो अर देखती ही गई मिट भर! वण लुगाई ही सुधा कानी देख्यो—आपरी निजर मडोर, पण बोली पैलां सुधा ही, "गंगा भुवा है काई?"

"हा बेटी, एक तो सागण ही हू।"

सुधा एकदम उठ खडी हुई, सिर बीरो एकाएक झुकग्यो अर हाथ बीरा बीरै पगा पर जा टिक्या। बा गद्‌गद् हुगी। सिर बीरो जिया ही सुवो हुयो—सैंज अवस्था मे, भुवा आपरा दोनू हाथ बी पर मेल दिया, बा ही एकर भाव-बिभलता मे डूबगी।

सुधा बोली, "धन-घडी, धन-भाग, आज, ये रस्तो कीनै भूलग्या भुवा?"

"बाई, कुवै नै कुवो नी मिलै मिनख नै मिनख तो कदै न कदै मिलै ही।" बा बैठगी आसण पर पण बीरै चैरै सू एक उदासी रह-रह झाकै ही अर बा जाणू बीनै लुकोवण मतै हुवै।

सुधा बोली, "मा, अै म्हारा भुवा है, गोदारा है। म्हारै बापूजी नै धर्मभाई बणा राख्यो है, बडा रामनेमण अर घट' र धाज, भारी गोदी री डूगरी पर हू पूब उतरी-चडी हू, भू रो क्वो काड' र, पैला मनै देवता अै, म्हारै जीवण-मिठास मे आरो हिस्सो कम नी।"

सिरदारी बोली, "बडा भाग थारा तो है ही, कम म्हारा भी नी, म्हे ही दरसण कर लिया आरा, तू अठै हुवै न, म्हे दरसण कग ओरा? आया है तो रैसी दो दिन, आपरै टाबर नै संभाळसी, सुख-दुख री पूछसी बीनै।"

सुधा बोली, "जावै कठै है, तू ही बैठ दो मिट।"

"हूं मिट दो मिट नी, दो-च्यार घंटा ही बैठस्यू सिरदारी ह' र एकर छपारा कानी जाऊं, म्हारै गयां बिना बै कांटो ही हंनै-बोनै नी करै, चिलमड़ी धुखा' र बैठग्यासी।"

"हां, तो फेर जा।"

बा भुवा कानी देखती बोली, "भुवा, सरीर तो मजै मे है।"

"खोटवो कठै जितै मजै मे ही है बाई।"

"बापूजी और ?"

बापूजी रो कैयो जद, अध मिट मौन हुगी बा, वीरै चैरै सू झांकती उदासी गैरीजगी, अर आख्यां वींरी सजळ हुगी, फेर भारी-भरभरै कंठा सू बोली, "बाई दिन जावतां कांई, जेज लागै, बीस दिन हुग्या, वांरो सरीर सान्त हुया।"

आख्यां सुधा री ही छळ-छळा आई, कित्ता ही भाव बीरै चैरै पर आया अर गया, बचपण सूं ले'र अबार तांई रो अतीत बी मे सजीव हुग्यो, आख्यां बण बंद करली, पण आसू बंद नी हुया। सिर आपरो बण गंगा री छाती रै लगा दियो, आसू धाया हुग्या, अर सारै भाव, सिसकी बंधता होठ फूट पड्या, "भुवा···बापूजी ?"

भुवा दोनू हाथ धीरै मोडां पर धर दिया, बोली, "धिराजो मत हु बेटी, औ संसार है ही इसो, अठै थिर कुण है, जावै ही जावै है सै, जिता आवै है सै जावण खातर ही तो आवै। बाप जिसो बाप हो, धणी ही मन में रैवनी बीरै पण सारै कुमाणस पानै पडगी, हूंसतै-हूंसतै दुख बांध लियो अर खुल्यो नी रोयो ही, पण, टा कीनै पडै बाई? थारै कानी सू घणो सोरो हो बो—तनै सोरी-सुखी देख'र।

सारलै महीना, थारै सुसरै सू बीनै जद, थारो अठीनै आवण रो टा लाग्यो तो, तू जाणै ही है, मन मे बीरै उमळ-घुमळ अर चैरै उदासी आवै ही। सरीर लाचार, मन अशान्त अर आकळ-बाकळ, हाथ तंग अर ऊपर सू थारी उधेड़-बुन, पण बा सगळा सू ऊपर, बा थारी मा चालती चूंटिया जीभ सू, इता दोरा बोडनी कै घरमा रो खायो-पियो थाळ नांखतो बीरो, 'बेटी, री बडाई करतो थकतो हो नी, मसो हुवै हो बी सारै, सै थवै टोमसै पीढियां, नाम बाबलियै री बठै जावनो ऊजळो कियो है बस ? बी आगै ही रोट खोसू लो, नाम पतापाई झेलणो पड़ै, मोजू ही कांई हुयो है, ऊथ-टैनी बो सारै हो—अठै हासी राखे सो? म्हारी टीमरथा झलणी और भोगो करदी बस घुमानन—मोज नै ही जासी इसी!" मनै टा है बाई, कांई-कांई गुणावलो बा बी पढ़ी नै। आनन्द-किरण री जे थोड़ी ही सरधा हुती बी मे, तो पूगो चावै मन पूगो, रात-बिरात कदेई दारै मानी जरूर

टुर पडतो वो, पण न यळ अर न वळ, वेडी मे बंध्यै बो जीव रै जो मे ही, बा जी मे ही रही। मैं सुणी, तूं एकर गई ही बठै।"

"हां।"

"पण हू नी मिल सकी यारै सू ।

"तू रात भर ही तो रुकी ही वठै ?"

"भुवा, गुड नी, गुड जिसी जीभ ही नी, तो काईं करती रुक' र ? बापूजी सू दो मिट बात करली वै ही उखडती-मुदरा में ही हा—मा छायोडी ही बा पर।"

"बांरी हालत तो तैं देखी हुसी ?"

"हां, बारै साकळ हुतै मरीर, अर परेमानी मे डूबतै-निकळतै मन, मनै ही ढकदी उदासी मे।"

"बी पछै तो हालत तर-तर बिगड़ी ही है, किसोक हो दीदार अर किसोक हेंसाळू ? रूप, रस, गध बीरा, बी खुद री सायोड़ी सू ही बाटगी, दोस कीनै देवै अर दोस दिया किसो दुख हळको हुवै है कोरो ही ? समझदार हो, पीड़ नै बारै नी उछाळी।"

"पछलै दिना मे, अड़चल घणी हुगी हुसी ?"

"सरीर तो बियां बीत्योडो हो ही, बिदा हुयां बीसू दो दिन पैला दम, उठाव घणों करलियो हो। हूं तो दो-तीन बरमा सू, परे जा'र तो होळी-दिवाळी ही मिलती। गवाड़-गळी मे चालता ही टक्कर ज्यायता मदेई तो अधपड़ी सुख-दुख री करसैयता बैन-भाई। दो-च्यार दफै गई, भाव-आदर ही नी, तो डूमर बठै जाईजै ही कियां—चावै सोनो ही बग्गे पटै। सूमईं सभाव री है, आपां न जावां, अर न रीस करां। जांवतो जद रिपियो-दो रिपिया, और नी तो दो-लप बोरिया ही, गयै-माईं टाबरां नै बी-न-बी देवती ही।" अध मिट चुप हुगी बा। फेर थेलियै मे हाथ घाल'र, एक लिफाफो निकाळयो, बीरै हाथ मे देवती बोली, "मरणै सू दिन दसे'क पैला थारी मा गई ही आपरै पीरै—च्यार दिनां वास्तै। च्याव हो भतीजै रो। तीसरै दिन बण मनै बुलाई मिलण नैं। हूं आई, बो सूतो हो माचै पर—कमरै मे गाव एकली। दो घटा नैड़ी, हूं बैठी रही बीरी ईंग बनै। धीरै-सी बोल्यो बो, "आयगी तू ?" 'हां', मैं कंयो। "बहन, सरीर अबै, दस-पांच

दिना मे जासी", कह'र वो चुप हुय्यो, आख्या भरली। हूँ बोली, "भार हुवै तो ला बटाऊँ, पीड री पाँती कियाँ करू बना? पण बिराजी क्यों हुवै? रिपिया-पइसा चाईजै तो बोल? म्हारे लायक और कोई काम-काज है तो कह।" बोल्यो, "रोणों अभाव रो नी बैन रोणों है तू आई अर हूँ अधमिट ही उठणजोगो नी?" हूँ बोली, "ओ कोरो सारो?"

बो बोल्यो, "बैन, तू पवित्र है—म्हारी मा-सो। थारी धरती पर निश्चै ही गंगा रो वासो है, थारो घडो भारी रिण है म्हारै पर पण बीनै घोल'र बतावण री अवार न म्हारी सरधा अर म मनै फुरसत ही। बी सूँ उरिण तो हूँ सायत सात जळम मे ही नीं हुसकू। ओजू ही बैन, एक तकलीफ तनै और देणी चाऊँ?" बो चुप हुय्यो, बीरो दम उठ खड़ो हुयो। मैं कैयो, "म्हारी बड़ाई नै तो तूं रैणदै, काम री बात कह। थारी धूकणी उठती-बैठती देखू अर बो साथै थारी उठण-बैठण री लाचारी तो म्हारो जी दुख पावै।"

आपरी आधी ताकत भेळी कर'र बो उठ्यो, पण मिंट भर सू जादा बो बैठो नी रह सक्यो। आडो हुय्यो पाछो ही। सास की बैठ्यो तो तकियै नीचै सू एक लिफाफो काढ्यो अण, बोल्यो, "ओ लिफाफो सुधा नै देणों है बाई, थारै हाथ सू, तनै खुद नै जा'र। मैं ईनै लिखण मे दो दिन सू की बेसी ही समै लगायो है, पण दिए ईनै म्हारो सरीर बरतीज्यां पछै ही पैला नी।"

"तो तू ठीक नी हुवै? हूँ तो तनै चालतो-फिरतो देखणों चावै ही।" मैं कैयो। बो बोल्यो, "एक दिन तैं आवै ही चायो हो ईयां ही की, आज भळै उपजै है किसी मनस्या नै।" "हूँ नी-समझी-थारो मतलब!" हूँ बोली।

"बैन, एक दिन हूँ जावै हो ओ गांव छोड'र, दवाखानों चनै ही नी जद करतो कांई? जांयनै नै नै रोकलियो मनै, याद है?" "हां है बीरा", मैं कैयो।

"तू बोली, "चैदराज, तू बामण है, ऊमर में छोटो पण पद में मोटो। संसार में म्हारै भाई नी, आज सू हो म्हारो छोटो भाई है तू, मा-जायै सू बेसी। हूँ मोटी हूँ थारै सू, तनै नी जावण दूं; छव महीनां म्हनो है यो महीनो-बसो दिन ई बैन रै कनै सू और रव। तैं म्हारै खातर रात-दिन एक कर दिया, म्हारो दवाखानो चमकग्यो, म्हारा पग जमग्या, अठै ही दन

काँई गयो, तँ बसालियो, कहाणी लम्बी है पण याद है नी तनै ?"

"हाँ है की।"

"वो दिन तै गाँव सू जावतै नै रोक्यो हो, आज संसार सू जावतै नै रोकणो चावै है ?" हूँ बोली, "तो नी चाऊँ ?" बोल्यो, "म्हारो मंगळ चावण रो थारो सभाव है, पण बैन ई सरीर मे अबै ठीक हु'र भळै चाल सकै इसा पग काँई, कोई चीज नी रही, न सास, न स्नायु अर न मन ही। भोगा री कतार ओजू बिसी हीं खडी है, पण सरीर भोगीजग्यो, काळ बियां ही दौड़ै है तरोताजा, सरीर चूर-चूर हु'र मांचो झाल लियो। जीवण री लालसा एकदम किनारै आ लागी, न वा घर काली अर न ससार कांनी।"

"वा तो गयोड़ी है पीरै" मैं कैयो।

"बोल्यो, "बा कठै ही जावो, कद ही आवो बैन, बीरै आया-गयां, म्हारै जाणै मे काँई फर्क पडै है ? जाणों हूँ ही चाऊँ, अर बा म्हारै सू जादा चावै है कै म्हारो किन्नो वैगै सू वेगो कटै,—बिया बा काल सिन्झ्या ताईं आ पूगसी।" लिफाफो मैं ले लियो, जेब सू बण दो रिपियां रो एक नोट निकाळ'र बोल्यो, "बैन, ओ धन है म्हारै कनै, काल ही मिल्यो है मनै ओ छिप्यो खजानो—थाली तनै सूपण खातर ही। ओ तनै, अर ओ कागद सुधा नै।" मैं कैयो, "मनै नी चाईजै, काई करूं हूँ रिपियां रो ?" "मनै ठा है, ई लियै थारै पर रामजी राजी है बाई, लेंवण रो न तनै लोभ अर न इसी कोई लालसा ही, पण म्हारी सोगन है तनै, अन्तपन्त तू बैन है।"

मैं लेलियो नोट, बोल्यो, "बैन रिपिया री मह्या मत देख, देंवण री भावना, इत्ती-सी उदारता म्हारै सभाव मांय जुड़न दे—चावतो रैम।" बों रुक'र भळै बोल्यो बो, "बाई, काल लिखमो बाणियो पच्चीस रिपिया दे'र गयो हो डोढ़ परम पैसा रा, हा तो घणा पण देवण री जी जी मे ही नी हुवै तो किसी बुग्नी माड़ू वीं सागै ? वै रिपिया ■ थारै अर सुधा खातर ही आया समझ्या, पण छोरी गडी ही बनै, बाणियो नी टुग्यो जितै, लियाड़ पकड़े खडो रह्यो या। हूँ चावतो तो रिपिया राख लेवतो पण बा आयां पछै म्हारो दुख दूणोजतो अर हूँ एक विचार मे उळझतो सरीर छोडतो; मैं बा याज छोरी नै सूपदी।"

मांचै नीचै एक ठीगड़ो पड्यो हो, रेत पोरी, गंवार पणो बांमे। मै

वीनै साफ कर नुई रेत भरदी वीमे । हू बोली, "तो जाऊ अबै ?"

"जा, म्हारो घणो भार तैं हळको करदियो आज ।" बण आपरा हाथ म्हारै पगा कानी कर दिया अर उठण री कोसीस करी । मैं कैयो, 'रैण दे तू, काई करै है?" बीरो सिर पळूस दियो मैं । बीरै सामनै किसनजी रो एक पुराणो किलैंडर झूलै हो । किलैंडर कानी हाथ करतो बोल्यो बो, "बैन, याद तो कर इनै, अर सेवा कर मगळां री, फर्ज है थारो" इत्ती बात हुई बी सागै बाई ।"

सुधा मुणै ही ध्यान सू, बोली, "भुवा कित्ता दुख पाया बै, म्हारा इसा भाग कठै, कै हू बांरी की सेवा करती ।"

"आ आदमी रै बस री बात नी बाई", कह'र बा इग्यारै रिपिया देवण लागी बीनै ।

"क्यांरा देवो हो, हूं नी लू ?"

"नी क्यों लै, बैन रै मिस लेणा अर भुवा रै मिस देणा, हू नी दू तो कुण दै तनै ?"

लै लिया बण ।

गगा बोली, "बाई, थागो तैं अठै किया लियो ?"

सुधा दस मिंटा मे सगळी कथा माडदी बीरै काळजै । बा बोली, "बाई, गगाजळ कमाई री सीसी मे हुवै चावै वेदपाठी री मे, बी मे न दाग न दोस । तू अठै ही रैग्य, दाग लगावण मतै हुवै बो महल मे ही लगामदै हूं अर गगा किनारै जा'र ही । तो हूं जाऊं अबै ?"

"सिध ?"

"मठै ।"

"बठै ।"

"भतीजो एक गाव मे है, दूसरै अठै दुकान कर राखी है—विरानै री, टैमसर पूग जाऊ बी कनै ।"

"रात-रात तो म्हारै कनै ही सुख-दुख री करती ।"

"तू नाराज नी हुवै तो, दो दिन बाद आऊ, एकर तो जावतो जद ही ठीक रो, उडीकतो बो ।" वाक्य पूरो हुयो हो, इतै कंचन अर करमा आ पूगो । बा मायै ही बी बात हुई बीरी । करमा बोलो थे ही गोडारा अर हूं

ही। वैनजी री भुवा हो का नी, थे जाणों, गोत रै नातै म्हारी भुवा हुवण मे तो गोळ ही नी। आज री रात तो थानै अठै रुकणो ही पडसी, दो-दो भतीजी अर पगलिया रात भर ही नी मांडो ? मानगी वा। दिनूगै-सिंझ्या, सुधा री दिनचर्या देखी। सिरदारी अर घूडी-धाई जिम्यां नै पढती-लिखती देख, न वीरै इचरज री पार हो, अर न वीरी खुसी रो। प्रार्थना सुणी सिंझ्या री, "हे भगवान, सुभ सुणूं, सुभ देखू,

सुभ सोचू, सुभ करू,

सगळा मार्ग हू,

निरभै विचरूं,

आगै सुधा, लारै सगळी।

गगा बोली, 'बाई, आज थारो बाप जे धरती पर हुवै, अर थारी आ लगन देखलै का सुणलै कीं कनै सू ही, तो वीरी खुसी रो काई ठिकाणो ? थारो काम देख'र हू राजी, थारी ऊमर देख'र हूं की सकू पण मनै विसवास हुग्यो कै तू खे-निकळसी, थारी फौज लम्बी अर मूठी है, थारी दिनचर्या रै चकव्यू मे कोई अैर-गैर नी बड सकै। जीवण रा अै पहला दिन, म्हारा ही जे थारै कनै ही बीतै तो किणाकू आछा ?"

"नेकी अर पूछ-पूछ, तू आवै तो फेर मनै चाईजै ही काई ?"

"आनै पढावंण रो काई लै तू ?"

"की नी।"

"तो खर्चो-पाणी थारो ?"

"सूटर, आसण, दरी-पट्टी अर टाको-टेमो भी करलू, मनै किताक चाईजै ? बचै वै आनै ही बाटदू, पाटी-पोथी में का पूर-पल्लै मे।"

"थारी मैनत पवित्र, थारा भाव पवित्र, थारो काम पवित्र अर थारी उठ-बैठ पवित्र। थारै सू धरनी राजी, नू वीरी पीढ़ नै ही गमसी अर बोगी मनख्या नै ही।"

अगलै दिन भोरा-भोर ही, सुधा री भोळावण देंवती सिरदारी नै, करमां रै ऊंट-गाडै पर आ बिदा हुई मंडी नै।

8

इग्यारै वजी ही दिन री। मान्तडी केई टाबरां नै जोड-बाकी रा सवाल करावै ही। छपरै मे बैठी सिरदारी केया रो साड करै ही अर केया नै आग दिखावै ही। सुधा पाच-सात टाबरां नै अर्जी रो आटो समझावै ही। बा ओजू सिरणै-काळजै ही है, दो घुटका दूध ही बीरै होठां नी चड्यो। चडै काईं, दूध दिनूगै हुयो ही थोड़ो हो। गाय रात नै खुलगी ही, टोघडियै रै खूंटै जा नडी, बो काईं छोडै हो, मूतलियो घणचरो। झांसरकै बा उठी तो गाय खूंटै सू परिया बैठी, उगाळी मारै ही। दूध अधकोलोक ही दियो पण, सुधा घुळ् दो-एक पाणी रळा बीमें, आधो गंगा नै पा दियो अर आधो सिरदारी नै। सिरदारी ना-ना करती माथो घणों ही हिलायो पण सुधा नी मानी। गंगा ही बोली, 'बाई, बिदा हुता दूध नी पिया करै है, हू नी लू।"

बा गिलास मे चिपटी'क बाजरी रो आटो नाखती बोली, "लै सुधा, थैम अबै तो नीचै बैठो? अर थया तू किसी धावण-कमावण नै जावै है कठै ही? थरों डरै इत्ती, जनन तो रामजी राखसी, मिनख रा राख्या किताक निभसी?"

"तो ला बाई," अर पीणो पड्यो बीनै।

इत्ती ताळ हुगी, पण घार री कागद पढण नै कोई निरवाळी बेळा साधै अद हुवैनी? टाबरां नै छुट्टी कर'र, लिफाफो खण खोल्यो। अधपाठिया च्यार कागद हा बी मे, दोना कानी सू ठसा-ठस'र भरयोड़ा। बारै फाळबै-लुगयो, पोस्टकार्ड साईज रो एक फोटू खण देख्यो। बीनै देखता ही, मा-बाप री बीती अर भूली-बिसरी छिब (छवि) बी गी चेतना पर एकर साकार हुगी अर सागै बीरो संबळ थबरात ही अतीत सूं निकळ'र मुस्करा उठयो बीं आगै। फोटू खण मेज री दराज मे राखदियो अर आख्या आसगी, कागद री धरती पर। लिख्यो हो—

'बेटी, तू कठै ही हुवै अर किसी ही अवस्था मे, कल्याण रा बादळ थारै पर झुक-झुक पडै, अर धरती रो स्नेह, हरियाळो बण तनै दरसै।

कागद री इत्ती लम्बी काया देख'र सायत तू अचभो करै कै, वाप रै, कागद री आ, काई जची ? कागद रै नाव, आज ताई जद बा, एक लैण लिख'र ही सौगन नी भागी तो छेकड़ जावता किसो आभो पडै हो बा पर, किया लिखदियो ओ वा ? सोचणो, अचभो करणो सै ही टीक है थारा। कागद मैं थारै परण्या पछै हो नी दियो तनै, तो अबार नी दिया हू किसो न्यात-बारै हुवै हो ? आ बरसा मे, इसो राग भी थारै कानी नी हो, हा, कदेई थारी जादूई मुस्कान नै देख-देख म्हारी ऊचाई रै सैंज-सिखर सू एक झरणो फूटया करतो—थिरकतै आनन्द रो, बीसू म्हारी धरती रै हर पूणै पर हरियाळी हसती अर एक मैक उठती, पण ज्यू ही म्हारो दूजो घर-ससार सुरू हुयो, तरत्तर कम पडतो झरणो सूकण मतै हुग्यो। म्हारी धरती पर पग जमावण लागगी एक उदास वीरानी। जीवण में ज्यू-ज्यू, तणाव, विरोध अर विपरीतता बधता गया थारी तस्वीर अणचाईजती-सी बण तळै बैठती गई अर अणमाद री परत-दर-परत चढगी गर्द बी पर, पण मनै काई टा मौत अर बीमारी गै आधी मागै जूझती म्हारी जीवण लौ बुझण मतै हुसी कदेई, तो थारी वा तस्वीर म्हारी चेतना नै अणचाई मथणी-झकझोर-सी, आ हू सपनै मे ही नी सोच सकै हो। हूं किया अटकळती थै बा सभावना पणी अळगी नी, म्हारै तकियै रै पसवाड़ै ही लुकी बैठी है घडै ही—खाली अबार री ई घडी सू भेंटण नै।

परमू री बात है, [illegible] सूतो हो कमरै मे साव-एकाकी—मौन अर मुरझायो। थारी मा आपरै पीरै गयोडी है—च्यार दिना खातर, ईरी भी सीध मायत गंगा देवै तनै। ईण रै चिपाचिप जीवणै हाथ नै सुली अल-मारी रो तनै टा ही है। बीरै रूप अर सोल पर दो महीना पैला ताई, एक गाढो अर हरो पडदो पीरो दिया करतो। आंधी सी अळगी, बीरै रूप रै हाथ लगावणो सधं हो सकती, पण नी सुहायो बो, थारी मा नै, उतार-लियो बण, अर अलमारी री काया नै, अनाथ रै टाबर-सी उघाड़ी करदी। मैं मना करो पण म्हारी दीन आवाज कमरै रै आकास मे गूज'र रुगै लागी आपरै, अर म्हारी इच्छा निराश हू. पाछी म्हारै मे ही बैठगी।

अलमारी रै ऊपरलै खाना मे छोटी-मोटी सीस्या है सैंग-चाटीग री। बेया मे दो-दो, च्यार-च्यार खुराक है अर केई साव खाली पन

थारी अवस्था म्हारै सूं लाख दर्जै आछी है। थारा सिर उघाड़ा नी, ढक्कण है हरेक रै सिर पर, आव है चैरा पर, वै झड़काईजै ही है इकांतरै-दूजै, पण म्हारो सिर पोह-माघ रो सीत-लैर में ही ढकीजण नैं उडीकै अर जेठ-वैसाख री आंधी में ही। दाटी अर कैम महीना रा वघ्योड़ा है, रह-रह झो चालै थामै। मैल नग्ना मे जम'र करड़ो हुग्यो, पण अबै करड़ापण वीं रो कितराक दिन टिकसी? कपड़ा नैं हूं छोड़णों चाऊं, पण वैं म्हारी विवसता समझ, प्रीत आपरी अन्तिम छिण ताईं निभाणी चावै।

थारी मा नैं सीम्या सूं खाली इत्तो ही मोह है कै वै की ललसर रही तो गिण्यै दिना बाद वा ब्यारा-ना-तीस पटसा हरेक रा बटलैसी। म्हारो जीवण सीसी खाली हुया फाई दे'र जासी वीनैं, वा आछीतरै सूं जाणै है। म्हारै खातर वीं में ऊब है, उदासी अर अनादर है। ठैरणो हूं ही नी चाऊं, उंतावळ म्हारै ही मोकळी है पण म्हारी उतावळ सूं काळ कद आपरा कान खोलै, अर कद आपरो चाल उतावळी करै?

निचलै ही निचलै खण में आयुर्वेद री पोथ्यां है पांच-सात। अबार खण वानै आंधी करै, काया थारी कमारयां चाटै। म्हारो तो वानैं न झड़का-वण री सरधा, अर दम रै कारण छड़काणो, न मनैं सदै। अै पोथ्यां थारी मा नैं सौत रै टाबरा-सी दुखै। वै रोज छींजै, जीभ तो वारै है नी, जिकी थारी पीड़ नैं प्रकासै। वांरी अर म्हारी अवस्था एकसी है। वानै अफूरड़ी रो फूस उडीकै अर मनै समसाण री थोड़ी सूनी धरती।

अबार पड़े-पड़े विचार आयो कै जिकै घरक सूं हैं सालीनता सागै थारी जीवण-आनरा सुरू करी—अणगिण आगावा सागै, सत-मत रोग्यां नै नुवो जीवण दियो, चिंता री रती-रत्ती अर ठियो हुनी जीवण-आनरा पाछी चालू करदो; वो थय मै तैं एक थाधी असमारी में पटक, तिप हो नो ली थोरी, दुर्गति करदी। वीनैं दस-पांच मे नी, धरती रै एक-दो मढ़्त में ही जीवन्त अर घरांपन नी कर सक्यो? इत्तै बडै गाव मे थ्हा धंधा नैं आज, मामां रिपियो दे'र ही जे देखो चाऊं वीनैं ही, गाहक तो ही, नी मिनै थारो। गाहक पटावण री चेष्टा ही तो नी करी मैं कदेई, चावतो तो कर सकै हो। वैद अर फैर बामण। बामण तो एक जूण व्याह हिसा'र हो, अर कदेई निराहार रह'र ही धरती नै बाट सकै है आपरो गंवाई-स्नान। बेटा,

मैं वास्तव में म्हारै दायित्व री हत्या करी है, पेट सूं पांवडो ही आगै नी सिरक्यो। दोसी ही नी, कृतघण हूं, अर कृतघण रो निस्तार वेंगो-सो नी, रिसि-कथन है ओ। दळियै रै ठाव सूं क्रांति नी उतर सकै। देस-समाज अर धरती नै बामण चाईजै—आम जीवण में उजास भरण नै। मनै एक बूढ़ै पुजारी पढायो बिना की लियां, पाणिनी रो प्रसार कर दियो बण—मैं एक में ही नी, म्हारै जिमै पचासां में, फेर हो कमल बीरो जावतो रै काईं सूं ऊंचो अर अछूतो रैयो। बामण हो वो। म्हारा ही अचार जे, घणा नी दो-च्यार चेला ही हुता कठै ही, तो न अबार म्हारै प्राणा री ऊंचाई ही कम पड़ती अर न म्हारी आत्मीयता री धरती सूं उठती सैंक ही। पण मैं तो ऊमर रो मट्ठो घणखरो, समै री रेत में रळा दियो बेटी—समझ थकां, जद सोचूं हूं कै *केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि*, आदमी रै बस री बात नी लागी, डोरी ओर ही की रै ही हाथ में दीसै है; बा जीनै खोंचीजै, बीनै ही टुरणो पड़ै।

हां तो बेटी, ईस रै हाथ दे'र हूं उठ्यो अर सिरक'र किताबां रै सायरै जा लाग्यो। चरक रो ग्रंथ उठायो—धन्न पूछ'र। पाना री कोरां केई जाग्यां सूं, कसारघां सिरायणां करगी। ओजूं ही इत्ती तो खैर ही, कै आखरां नै बां मूं नी घाल्यो, पण बै काईं तो समझै आखरसार अर काईं अथंसार—खाणै अर बिगाड़नै रै सिवा, आपरी प्रकृति रै अधीन जीव है बिचारी, पण थारी अर म्हारी मा री मति-प्रकृति एकगी है।

तखियै सारै आडो हुग्यो हूं, अर बीरा पानां पळटण लागग्यो—बिना उद्देश्य, खाली बैठो बाणियो ईं घड़ै रो धान बी घड़ै में घालै। एक पानै एक लॉटरी री दो टिकटां निकळी, बीत्योड़ी अर बेकार, मौन अर मरी पण फेर ही बै बिना मैंनत लखपति बणन री म्हारी लालसा नै उजागर करै ही। मुसळायं री—फाड फेंकी मैं थानै। बेटी, अं दो ही नी, जीवण में इसी बीसूं टिकटां मैं खरीदी अर देख'र फाड़-फाड़ फूंक रै हवालै कर दी। ऊंचै में दस रिपियां ताईं री एक टिकट ही ही, पण इनाम सीधै सूं नीचो पाच रिपिया रो 'सान्त्वना-पुरस्कार' ही कदेई नसीब नी हुयो। मनै पण अबार मौत री नदी किनारै बैठो, सोचूं कै, 'बदास आज, जे हूं लखपति हुतो तो म्हारी वेदना अर तड़फड़ाट नै काईं म्हारी लखपताई रोक सैंती?

लखपनाई नै अधभोगी छोडता, काईं मानसिक सताप नी नाचतो म्हारै मन री धरती पर ? कुण जाणैं कित्ती रसाकसी करती चेतना ? हुयो बो ठीक है, की न की बच्यो ही हू, सन्तोष है मनैं, लॉटरी री टिकटा नी खुली तो ? कमाई री असली लाटरी तो आगै खुलसी—भार री रकम ढोंवण खातर।

अगला पन्नां भळे पळटया मैं तो एक जाग्या पोस्ट-कार्ड साइज रो एक फोटू मिल्यो। उत्सुकता सूं लीण हुग्यो बीनैं देखण मे, बो है ही इसो ही। तू देखसी बीमे थारी मा, तू अर हू रूपायित हा। तू म्हारी छाती आगै, म्हारी माथळां पर जच्योड़ी है, दीपती-मुळकती। जाणू थारी फैलती मुस्कान, बी म्हां दोना रै चैरा पर ही उतरी है। तू मंज फूठरी, मंज मुळकती तो म्हे मंज नै जलम दे'र अमंज क्यों? फोटू नीचै लिख राख्यो है मैं—'हसमुखी अर स्नेहातुरा—आपरै मा-बाप सागै।' कुण जाणै अै शब्द मैं निरछळ राग री किसी ऊंचाई पर पूग'र लिख्या हुसी ? नेहरू अर कमला ही आपरी बेटी इन्दरा नै कदेई प्रियदर्शिनी समझ'र आनन्द विभोर हुया हुसी। म्हारी मनोदसा ही बी बेळा स्नेह री चरमावस्था सू रच ही नीची नी रही हुवैली। ईं संज राग मे रंगीजतै नै पद-पइसो अर महल-मढी बाधक नी लागै, भाव है ओ तो—एकदम निर्मळ, की पर ही उतर सकै है—हिरदै-हिमालय सू। अतीत अबार म्हारै सामनै आ'र खड़ो हुग्यो अर पूछण लाग्यो मनै कै, मा ईंरी असमै मे ही चलबगी तो, स्नेहातुरा आ, स्नेह खातर तरसती रही पण तू बाप तो जियै हो, तैं ही तो नी दियो, थोड़ो-सो ही स्नेह मागी ही स्नेहातुरा नै ? स्नेह री भूख मे सूरती रहै ही, जे भटकगी हुवै बा, तो दोस कीरो, बी प्रमाद रो भागी कुण ? बेटी हू जीवतो जरूर। पण जीवन्त नी; जीवण री एक, दिस-दारिद्र्यहीन, परिभाषा हू।

पन, फोटू देखता ही, निगामा रो सगार सेवती म्हारी लालसा, जीवण री एक दिस पकड़नो—नूंवै सिरै सू, बीरै आगै, आसा रो एक सोनलियो सिखाड खुलग्यो समझसूं। तू पंख्यां रै पाढै मे जा पूगी, ईंसू म्हारै गोळै आनो आ जची है कै न मे वासना री भूख सो बतै ही नो, हुणी बा तो तू भलीपाडो कदेई नी सेवती। तनै आछो, समझदार, दीदारू

अर पद-पइसैआळो कोई मोटयार राख'र राजी हुतो, पाणी है थारै चैरै पर. तस्वीर मे थारी कुदरत रा दियोडा सैंज सुन्दर रग है, पसीनै सू धुपणआळा नी—हसणआळा। चेतना मे थारै सद्‌बुद्धि है अर बोवार मे है थारै समझ रो वासो, पइसा थारै अगाणै-पगाणै हा, ई खातर लोभ री कोई बादळी ही थारै सूरज नै नी ढकसकी है। आ खातर, मनै कोई प्रमाण भेळा करण री जरूरत नी, म्हारो अन्त.करण ही सबसू सबळ प्रमाण है ई मे। घर मे सारो-थारो ही सगळो थारो। बेटी, लोभ, वासना अर मालकाई रै मद सू बच्योडी नै, ससार तो काई, स्वर्ग रो आकर्पण ही नी छळ सकै, तो फेर तू माडी कियां ? आ ओजूं ही म्हारी समझ मे नी आई। गोपू हू, जरूर तनै ठेस लागी है कठै ही, काई है बा, आ तू ही जाणै, पण एक बात निश्चित है कै है सू कोई बडै अभाव री पूर्ति मे जुत्योडी, अभाव थारो नी, हुणो बो दूसरा रो ही चाईजै। हा, चुभ बो थारै ही सकै है, सवेदना थारी सबळ है—ईं खातर। म्हारो सोचणो जे सही है तो थारो मगळ हुणो भी सही है—एकदम सोह-लीक। कठै ही थेस सू पण विस्वास हरेक रो मत करै अर अविस्वास ही हरेक रो नी, चरक रो आदेश है औ।

चरक पढणो अर बीनै आम आदमी री दिनचर्या मागै जोडणो, बीरै उद्देश्य पूर्ति में दोनो रो एक ही अर्थ है। चलो हूं नी पढा सक्यो बीनै ही तो नी मक्यो, मयो बगत अबै पाछो निर्यां आवई ? पण तू, जागती आतमजा जद ताईं मौजूद है, बठै ताईं, म्हारी बा खासी सालमा, चरक रै उद्देश्य सू थोडी ही नी, खासी भली भरीज सकै है, सब्दां मे नी, अर्थ मे। सपूत री कमाई मे सगळा रो सीर हुवै, मा-बाप रो हुवै ई मे तो इचरज ही काई ? थारी प्रकृति तो खामी-भली म्हारै मे पढी है अर जीवण-चेतना ही थारी म्हारै मू निकळी है बाँ न बी लो; ई खातर म्हारो विस्वास न थारै मे अनाधार हुसकै अर न साव उपेक्षित, जरूर फळसी बो।

बेटी, आपणै देस मे आदमी तो जरूरत-बेजरूरत निरोह है, पण थारो बाप सारवा नै ही बडी मुस्किल सू आवतो हुसी। पेट मे ऊधो-गुधो अर अंदाजहीण नाखणै मे अर खायेडी माल-मुजब जीमनै मे रात-दिन रो फर्क है। जिका ही तो, समझी ही आ है कै आ—देह ठाकुरजी घडी है

खावण-पीवण खातर है, ईं खातर उठै जद सूं लै'र आख नी लागै जितै खावण-पीवण पर जोर राखणो। बारो ओ समझणो-करणो, वैद, डाक्टरा खातर तो अणकमाई धाटी है अर बा अणसमझां खातर अणचाया धाचका। किता न किता, धर्म, संयोग अर नेम रो विरोध कर'र खावै अर किता न किता आपरी धरती री प्रकृति नै ताक में राख'र। धरती री प्रकृति री उपेक्षा ? तू समझणो हुसी, आपणा खोखा अर खेलरा, इंग्लैंड-अमरीका री प्रकृति रै माफिक नी, विपरीत है वारै, तो थारा मास-मछली, अठा आपणी प्रकृति कद चावै. देखा-देखी कोई धिगाणै चर'र राजी हुवै तो थोरी मरजी है। आदमी ही नी, हर प्राणी आपरै भूगोल री उपज ही तो है। न थगलो गळै अर न ऊरीजणो बन्द हुवै तो रोग अर रोग्या रो काईं धाको ? दवाया रै नाम पर सीस्या में घाल्योड़ा राख-रेत अर जहर ही नी वधै, फेर ही अभाव अर फेर ही रोग-संकरता बढ़ती पर। सस्ती दवाया रा सौदागर रोगा री रोक-थाम तो करै नी करै पण रोग्या री रात काटण में तो पाछ नी राखै। किता न किता रोगी गळत दवाया रै प्रताप न तो मरै अर न मांचो ही छोडै, तो ही लोग खाणै-पीणै री सही विध कानी आंख ही नी उघाडै, ईं में बारो दोस इत्तो नी, जित्तो वैद-डाक्टरा री बधती कतार रो है, अर बा कतार, आ चावै ही नी कै आम आदमी युक्ताहार-विहार री सम धरती पर खड़ो हुणो सीखलै। सीख्या, कार-कोठी, वीडियो, वीसी-टीवी अर हवाई-जातरा जिसै रंगीन सपनां नै या कतार आकार किया देवै ? ऊंची पढ़ाई रो अर्थ ही अधार अर्थ लागै है, असहाय री सेवा लागै घठै, अर घठै ईमानदारी लागै ?

अधार दुनियां रो ढाचो ही इसो है कै हाई कै होठ बीरा माईक पर, हाथ नमस्कार री मुद्रा में पण आंख्या है पईसै पर। ईं खातर ही आदमी रो खान-पान, रैण-सैण अर सोच-समझ में गड़बड़ाईजग्या। सम्म वैवणियों किसो वाणियो-देस आ चावै कै कोई दो पाडोसी राष्ट्र आपसी भाईचारै में बसता फूलै-फळै ? किसो नेता ना चावै कै देस रो आख्यो वर्ग एक ही आवाज में बोलै ? मार-कुमा री कुरस्यां तोड़ता किसा वकील कामना करै कै आपसी मामला सोच परस में ही सळटलै ? दुकानदारां री सम्बीख्ती बनार थाना में तेल पान राख्यो है तो धरती री भूख कुण सुणै ? पीढ़ तो भोगै

जिकै नै ठा पड़ै।

बेटी, क्रोध-कळह, ईसको अर कजूसी, स्वास्थ्य रा सगळां सूं मोटा सत्रु है। अति कजूसी, आंता री संचै-शक्ति तो जादा करदै पण बारी छोडण-शक्ति धीरै-धीरै ले बैठै बा। ई खातर इसै आदम्यां रै, कब्जी, मस्सो अर रक्तचाप नीचो, गठियो अर गोडां में सोजो जिसै कुण जाणै किसै रोगां नै पैदा करदै। आछै स्वास्थ्य खातर उदारता शक्तिवर्द्धक ओषध है। क्रोध, कळह अर ईसको खून नै विनलो करदै। अै ऊंठ, पाडा अर बकरा स्वास्थ्य री धरती पर, सैंज नींद, सैंज-भूख, सैंज चिंतन, सभाव री सैंज ममता अर बीरों धीरज, जिसै उठनै बूटां नै घर-घर ऊमर सूं पैसा री बीनै उदास अर ढंगर करदै। तू बसै बो समाज मैं कळह-ईसको, आळस अर आंधी आदता रो जाळ है, तू बानै निर्मूळ कर, नुईं दिस दिए बानै, थारी जीवण-बेल लहलहा उठसी।

बेटी, 'मानसो स्यात्' नीरोग जीवण खातर मित भोजन करणो घरक री उक्ति है धरती रै मगळ खातर। विद्यार्थी-जीवण में हित-मित भोजन नै ले'र, 'कोउ रुक? कोउ रुक?' री एक छोटी-सी कहाणी थारै होठां पर नाच्या करती, मनै भरोसो है, बा ओजू ही थारी चेतना मं जिवै है कठै ही। तू जिकै घास मं बसै है, बीनै अबार बडी जरूरत है बी कहाणी री। अैंठै, अधमीज्यै, बासी, बासतै अर अपमानित उपेक्षित भोजन पर गुजर करता जुग बीतग्या बानै, बारी भटकी आदता नै मूंघो मोड दे'र तू बै आयुर्वेद प्रणीत परम्परा सूं जोड देसी बानै तो म्हारी खाली लालसा थारै मं पसीज'र, मनै ही तृप्त हुगी समझलै। तू म्हारै बैद जीवण मं बी भगी-सैसी नै न देखी कोई, दिस हो देखणो अर न दीठ ही दमी। हां जरूरत पड्यां करदेई थानै, हाथ उठाई मन्नी मोटी का कोई म्यार गजब हुवै पुराणो सूनै रो पुडियो दे'र पिंड ही छुडायो मैं, दायित्व नी निभायो। आत्म-विस्तार री मोको हो, कितो थोरो मिल्यो हुसी, मुझ मैं समदियो, कुण जानै अबै कद मिलै?

बेटो, जीवण री सार्थकता ई बात मं नी कै कोई कितो बरस जियो. सार्थकता ई मं है कै जी'र कांई कियो कांई? जीवण बरसा सूं नी काम सूं कूंतीजै। जिकै जीवण मूं नाको-कूचो, अर मोटी-टोटी पड़ो-पोदो, बी म

की नी पोपोज्यों तो वो हजार साल जियोड़ो ही काळीदर जैडो ही है—साधु-सन्त धनी-विद्वान चावै कोई ही हुवै।

मू चिकित्सक री बेटी है, बेटी री कोरी संज्ञा ही नी, समझदारी रो विसेसण ओर है थारै सागै। चिकित्सा रा बीज—सेवा अर परिचर्या थारी चेतना में जलमजात है, बानै बा उपेक्षिता री उदास धरती पर उगा, धरती थारी, मैक थारै में फूटसी। पण बाई, 'सबतें सेवक-धर्म कठोरा,' है, ओ सगळा सू दोरो, ईं खातर सगळा सू जादा मैतव ही ईंरो है, ईंसू बडो ओर कोई भजन नीं। जिको स्नेह तनै मिलणो चाईजे हो थारै मा- बाप सूं बीनै तू ईं बिसाल धरती री आत्मीयता में थारै आसै-पासै सू ही सोधणो सुरू कर, थारै सुख-सतोस रो कोई घाटो नी रैसी।

बेटी, एक बात ओर, थारै मन में सायत एक संकोच उभर सकै है कै, हमेसा-हमेसा खातर महायातरा पर जावतै म्हारै बाप रै हाथ सू घणा नी कागद रा दो टुकड़ा ही लोकाचार री रक्षा खातर छेडै नी हुया—म्हारै खातर। ओ संकोच थारै उभरै तो बेजा नी, नी उभरै तो ओर ही आछो, निष्काम है धरती थारी, पण म्हारै डूबतै काळजै नै ईं संकोच जितो खुरच्यो है काईंनाळ, हू ही समझ सकू हू बीनै ? करूं पण, करूं कांई, सरीर रोगाधीन, हाथ जाचक री झोळी सू ही माडो, बाको फाड़्यां ही बी पर कोई पइसो नी नाखै। हा, मन ओजू ही आपरो सभाव नी छोडयो, दातारगी रो धनीन ओजू ही को आका पानै है बीमें। पण बीरी ईं झूठी दातारगी सू न म्हारो ही गी मुनाफा सरमरै अर न की अगलै रो हो। बेटो, नी-नी करतां ही, ईं गाव में म्हारा हजार रै अडैगडै बाकी है, फीसां रा नी, दवायां रा। घणा नै तो ओ विस्वास हुयो कै वैदराज रो मुवो अबै धूनै आभै खातर तरचा तोडै है, बो आपरो खोटवो ही नी काढ सकै तो आपणो काई काडसी, अबै तो बीनै दे'र धूड में ही नाखणा है। सुख-दुख री पूछणो तो दूर, बा घर कनारू निसरणो ही छोड दियो। दो-च्यार जणां नै समचार ही कर-वाया पण मरेना सैनी बद पार पडो ? एकर तो लोग थारट नै ही पाछो बगदै है, तो अवानी मदेंसा काई कीमत रागै है ?

गाव भर पैरा केई, म्हारै कनै बिना बुलाया ही आ बैठता अर कैवता 'सुणी कोई मेवा है तो सुझावो ?' केई खरट-मोडै पर बिना कैया ही आ

वैठतर। केया रा शब्द अबार ही गूजै है म्हारै अन्तस रै कानां मे कै 'वैदजी बरात चालणी है, हफतै भर पैलां ही कह दियो है थानै, और थांरो ही हैंकारो मत भर लेया,' 'मेळै चालणो है मोटर मे, घरे ही रैया, हू बुलाजो भेजू हूं।' 'सीताराम ?' 'हा बाबू', 'वैदजी के लिए एक ठू सेव सुधारो तो ?' 'सवा मणीको है, प्रसाद आज म्हारै ही लेणो है।' मनै ठा है, बा लोगां रो घणखरो समै अबार तासदेव रै चरणा पर चढ़ै है, बीगू थांरो मन-बहलाव ही हुवै है अर को जेव गर्म ही। ई साल भर रै समै मे, बा में सू केया रै केई अेडा-उत्सव हुग्या, पण म्हारै तांई वै तो दूर, थांरो फूटो-माथो सदेसो ही म्हारै कान मे नी पड्यो। भूख सू भाएला कुण माले ससार रो सभाव ही इसो ही है थाई, ईं पर न साल-पीळो हुणो चाईजै अर न उदास। भवसागर री लैरां गिणनी नही, देखणी चाली।

मैं सन्तोस कर लियो कै उधार को आवै तो ठीक अर नी आवै तो ठीक, जद सरीर सू ही सागो छूटै है तो रिपियां रो सागो अबै कितीक ताळ रो ?

'छेकड़ हू बाप हूं, को न की तो छोरी नै देणो ही चाईजै हो मनै,' आ सालसा ओजू ही जियै है म्हारै मे कठै ही मनै आ बिलकुल ही ठा नी, पण भगवान सुणली जाणू; अणचीत्यो ही एक बाणियो आयो, पर मे खावतो-पीवतो ही नी, लखपति पोजीसन रो, कळकतै में पाट री दलाली करै, स्याणो अर बातपोस इसो कै कतरनी री जरूरत ही नी रावै, बात अगलै रा बात मू ही कतरै। म्हारै कनै दवायां रा पुड़िया बंधावण आयो हो, आवतां ही पैलो तो पगां लाग्यो, फेर आत्मीयता मे इणो बांध्यो मनै जाणू ईं गांव मे म्हारी जिती चिंता ईंनै है बिती सायत कोनै हीं नी। बोल्यो, 'गुरुदेव, दो बरस पैलां काई सरीरहो आपरो गोळो री जान अर काई इण-इगात करतो थेरो ? अबार देखू सामनै तो रोणो छूटै,' अर कैंवतां-कैंवतां, थेरो थीरो उदास हुग्यो, कंठ को भारी अर आख्यां वह चाली। आ ही एक बड़ा है थाई, हरेक रै बस री नी। बो कानी देखतो हूं ही गदगदो-सो हुग्यो। जीवण री टिमटिमावती ममता म्हारी एक छिन सोच उठी, 'जे हू एकर पाछो ही को फिरत-फिरत लागजाऊं तो ईं रै घर रो खोटवा बिना को लिया ही मारूं।' फीस दे'र तो बो, पैलो ही नां टाल्यो मनै। पुड़िया

वा । दिशा में। इतै वण वैठे-वैठे आपरो जर्दो लगा लियो, म्हारै सामनै हथाळी करदी। मैं भरली एक हळकी-सी चिवटी। जर्दे रो अ-आ ईं गुरु ही सिखायो हो मनै। नी-नी करता वण च्यार किरचा और धर दिया म्हारै आगै। कितो निस्वार्थ हेत है ईंरो, सोचतो म्हारो साप, मंत्र कीलीत-सो हुग्यो बो आगै।

उठतो-उठतो वो बोल्यो, 'गुरुजी मनै की वैम है, आपरो आगै रो हिसाब हुणो चाईजै म्हारै कानी।' आ सुण'र मनै ही की याद आयग्यो, [redacted] बोल्यो, 'हां है, योगेन्द्र रस, चन्द्र प्रभा अर च्यवनप्रास गपोडा है। 'कांई अर कित्ता है ईंरो मनै ध्यान नी, पण है की न की, अै लो बीस रिपिया,' वण म्हारै आगै धर दिया। मैं कैयो, 'सेठां रिपिया तो पैंताळीस-पचास नैड़ा हुणा चाईजै?' वण पचास-पचास अर दस-दस रै लोटा मे सू, पांच रो एक मैलो-सो लोट काड'र म्हारै आगै और धर दियो, बोल्यो, 'थारो वदळो गुरुजी, म्हारो कांईं माजनो है, हू उतारूं. थांनै देऊं जिता ही थोड़ा, अबै ही की कसर रही है तो, बा आगै कदेई काड देस्यू, अै लो सांभो एकर।' हूं बीरै मू कानी ताकतो सोचै हो कै हू तो गाड़ो नै उडीकतो, बीटो बांधे त्यार बैठो हू अर ओ आ कमर आगै काडसी कदेई। एकर तो पूछू हो कै कमर काढण री तो सेठां मानी, पण आगै भिळस्या कठै, आग्यां री सीध तो मनै ही परो की? म्हारो सोच्योड़ो मन में ही रैयो, [redacted] की नी बोल्यो, बो पगां रै धोक या'र टुरग्यो चुपचाप। हूं बीरी जावती पीठ नै प्रणाम करै हो— मन ही मन। मनै ठा नी कै छोरी किंवाड़ लारै अठै ही खडी है काईताळ सू। सेठ नै बण म्हारै आगै रिपिया धरतां देख लियो। बा मांचै कनै आ आ खड़ी हुई अर बिना पूछ्यां ही मनै, रिपिया टप करता उठा लिया अर निकळगी बा ही सेठ रै लारै-लारै। मैं सोची हो पन्दरै देस्यू लनै अर दस गगा नै—ठीक भेज्या भगवान पण मनै काई ठा, म्हारै मनसूबै रो ओ उठतो बूंटो म्हारो परवसता रो लाभ उठा'र, घर री वकरी ही कोई, ईंयां चरलेसी, म्हारी आंख्यां आगै।

छोरी नै हू ना कर सकै हो काई, पण मनै ठा है कै थारी मा घर मे पग नी देसी बीमू पैसा ही आ छोरी बोनै भोर-भोर मिलसी नांग्रसी अर बा आवतां ही म्हारै सागै एक नुवो महाभारत मांडदेसी—म्हारी ईंन वनै बैठ'र,

न म्हारै सू वो सभळै अर न म्हारी मनस्या ही इणी की करण री इजाजत दै मनै। मैं होठ ही नी खोल्या। सिरफ'र अलमारी कनै गयो—जिज्ञासा बस। डायरी पड़ी ही पुराणै हिसाब-किताब री। सेठ री हिसाब देख्यो, अड़ताळीस रिपिया पचास पइसा हा, किरचा री राज थवै आयो मो-मी समझ मे। डायरी सू मैं इमा-इसा मैं पाना काड लिया अर बिना बानै देख्या लॉटरी री बेकार टिकटा-सा फाड़-फाड़ बानै फूस भेळा कर दिया। हिसाब रेस अर बीरै सागै उधार पावण री म्हारी तरफ सू म्हारी लागगा ही सेस। म्हारै गयां पछै ही, आपरै बिवेक री डायरी सू कोई देमी फोनै ही तो मनै काईं, म्हारो बीं सागै न कोई राग अर न रंज।

बेटी, देवण री ममता रो को दाग ओजू ही, मौजूद है म्हारी चेतना रै कपड़ै पर कठै ही, हूं काईं समझू पण प्रभु खुद ही जे धोवण मनै हुवै तो कुण रोकै बीनै? आज दिनूगै गीता री किताब मे, दो रो एक लोट मिलग्यो—मैलो-सो। राख्यो तो खैर मैं ही हो बीनै कदेई, पण कद अर कठै मनै काईं ठा? अबार हूं तो आ ही सोचू हू कै आ कृपा स्यामसुन्दर ही करी है म्हारै पर। लोट तो काल ही मिल्या हा पच्चीस रा पण हूं तो बारो धैरो ही सावळ नी देख सक्यो। सोच्यो एक देऊं गंगा मैं अर एक तनै पण मन पाछो ही सावचेत ग्यो, दो रो तो लोट, बीं मे ही फेर आध, गंगा नै ही दे दियो मैं समूचो।

तू सोचती हुसी, तो इयां काईं रिपियै, दो रिपिया रै बिगर बैठा हो, दो रिपिया ही नी मिलै घर मे? सारलै महीनै बिचली छोरी नै मैं कैयो, 'आ एक रिपियो सो सा थारी मा कनै सू।' मनै सुणाग्यो, 'बाबजिया मैं कद, रिपिया चाईजै तो बेचदै मनै।' बैयो बग छोरी नै पण सुणायो मनै। बी दिन पछै मैं, मांगो ही छोड दियो; गिणिदै-पढणै खातर ही नी, पाणी रै लोटै खातर ही। देखै तो सोमसू, कैवै तो सुणसू, बनटावै तो बोलसू, थारली म्हारी दो घड़ी तो ठीक है, नी तो ठा जागणो काइदू बच्या री मन्याई। दोग्य सायन है म्हारी। हो तो कदेई सोग्य ही पण बा तो गई, असदिवाळै धोग्यो देर। धोग्यो देवण नै ही आई ही बा। अबै इण घरै रै मैं आदमी टाबरां ही सोरप रै मायै सू है। दुख मे साथ दै प्रोग अगम बा है। दोग्य ई खातर ही मनै आछी लागै। निमेड़ ही करै बा अर हिम ही देवै।

केई दिनां पैलां, छोरी वळती चाय ढोळदी सायळ पर, जाण'र नी, उपेक्षा सू । फाला उपड्या । तेल री आंगळी, का कच्चै आलू री पीठी की लाग मकै ही बा पर पण, मनै सुणीज्यो 'मार्थं पर बैठै नै ही चाय, बैठै नै ही पाणी, अघालियो म्हानै तो, नीचै नी उतरीजै, इया, कांई मंदी लाग्योडी है थनां रै ?" वळघो ही हूं अर क्रोध रो सिकार ही हूं । वो भोर म्हारो बिना चाय ही गयो—एकदम सूको । मागी मैं नी, दी बण नी ।

अकूण्या अर गोडा पैला रा छूत्यांरा है को, लारै सैं आवड्यो हो एकर, एक गोई मे रसी है यो, कुळै या बदै-कदेई तो रात, सारा गिण-गिण काडणी पड़ै अर दिन बडो दोरो । मोको लाग्या माड्या ही कम बैर नी मानै, पण ई रोगं इतियास रो कांई अन्त है बेटी ? सास सागो नी छोडगी जितै, मोटाई बीरो पधती रैसी पण 'ईवन दिस विल पास अवे', फिर आ भी नी रैवै, आ सोच'र ही मतोम है ।

इत्तो तो भली ही है कै ओजू बण म्हारै पर हाथ नी उठायो । उठावण री संभावना में [redacted] पैला ही क्यां गळ ? हा गुणावण मे बा मनै पाछ नी गधै । हूं सोचू, जे हूं पाछो बोलम्यू तो न बोमू म्हारी पीड़ ही कम हुवै अर न म्हारै में कोई नुवो वळ ही बापरै । बा आपरी आदत में कैद है, बो विचारी रो बस नी, पण बीनै जे सावळ बोलणों नी आवै तो मनै कांई मायळ सुणनो ही नी आवै ? एक संभावना और है म्हारै नी बोलणै में, हूं सोचू कै म्हारी ई अबोलता रो, अबार नी, म्हारै मरयां पछै ही बी पर मायन को असर हुवै अर बा आपरै सभाव नै की बदळसी—बदळसी तो म्हारो मुणनो अैळो नी गयो । बीरै बरावर सुणायां, म्हारी सोधी संभावना अजलमी ही रैसी । बा बदळै-नी-बदळै छोड दैनै, पण म्हारी नीयत अर म्हारी क्रिया, म्हारै सभाव सागै तो जुड्नो हुयो कठै हो ? दूसरो, गाळ नै गाळ सूं बुझावण रो उपाव, पशु-उपाय ही तो है ? हूं बो मारग ही उळझ अर फेर म्हारै मन मांगै हो ? एक सू बच्या ही म्हारी तो जीत हो है ?

हूं केई दफै सुणू कै 'ई रोग अर भूग रै गाड मारै आ'र [redacted] कुवै में पटकी,' अर हूं सोच कै 'ई महामाया नै मा'र, कुवै में हूं पटक्यो' पण, बीरो सोचणो जादा सही है बा कुवै में पड़ी नी, बीं विचारी नै तो पटकदी बीरै मार्दना अर म्हारी मानसा । मूळ में दोसी हूं ही हुयो, इण है मनै कै [redacted] आरी

की मदद नी कर सकू अबार, पण म्हारै जाणै रै बाद बेटी, म्हारै ई परवार रो काईं हुसी ? आ, न मैं कदेई सोची अर न अबार ही सोचू । कोई कांई अंदाज लगा सके है कै कीरै ही मरयां पछै, बीरै परवार रो कांई हुसी ? मरयां पछै न कीरो ही परवार न कोई कीरो मालिक हो । अणूतो सोच'र, आपरै जातरा पथ पर जाण'र कोई कांटा बिछावै तो समझदारी कठै ?

हूं चुप हूं बाई, पण गूंगो नी, पीड है पण दुखनी, आंसू है पण चीख नी, समझा सकूं हूं, पण पा, नी सकूं कीनै ही । जाणूं कै हूं सरीर नी पण म्हारो देहाभिमान है ओजूं, गयो नी, पण देह सूं कीं उदास जरूर हूं। मखियो ऊर कुचीलो सारै ही पड्या है आलमारी मे—म्हारै जोगा तो, पण आत्मघात री कदेई नी तेवडू । चाऊं हूं कै पछलै सास मे ही फदास की एकता हुज्यावै बी सागै—जिकै मार्ग हुणी चाईजै तो ठीक है नी तो उदासी अर अधभोगी लालसावा रो ससार, भळै डोणों पडसी कठै ही बडो दोरो हुसी यो ।

बेटी, घाव अबै चिरमिरावै है अर गोडो चस-चस करै है की । सिर भारी हुवै है, अर बेचैनी बधै । सोचूं हूं कै जरूर की अणचाईजतो लिखी-ज्यो है अर चाईजतो छूट्यो । कागद नै दूसर पढ'र की माडूं अर की जोडूं, इत्ती म्हारै में न शक्ति अर न इत्ती फुरसत ही म्हारै कनै । इत्तो विश्वास जरूर है कै छाज-वृत्ति है थारी, सार नै राखणों जाणै है तूं । लिख्यो है यो, तनै की देखण रै उत्साह मे लिख्यो है; आंतरा मे तू न कठै ही भटकै, न छीजै अर न छूटीजै—ई खातर । बेटी, तनै सगळो घर दे'र ही हूं इत्तो हळको नी हुसकै हो, जितो ओ कागद लिख'र हुयो हूं । तनै की देखण री ममता मे, अबै म्हारी सासमा ही मिटसी अर थारै कानसी लगन ही । एक ही बात है बेटी कै, धरती री राग सागै तू गाए, बीरी पीड नै समझै, बी सागै जागै, अर सगळा सूं मोटी बात याद राखै, दक्षिणावर्तो अमृत भजन्ते, दिए, सेंवण री आस ही मन राखै—फळसी-फूलसी-मैंहसी तू ।

गुमेन्दू
हरिदत्तशर्मा !

कागद नै वण बड़ै ध्यान सूं पढ्यो। सोचै ही, "देख, कित्ता फोड़ा पड्या है म्हारै बाप नै। अभागण न बांनै पाणी रो लोटो ही पा' सकी अर न अंतिम दरसण ही करसकी बारा, नियति नै नमस्कार।" एक उदासी वीं री चेतना नै घेरती, वीं री आंख्यां में उतर आई, वह चालो वै। दो मिंट बाद, आंख्यां वण पूंछली; सोचण लागगी, 'रोवण लायक वै हा ही नी। रोवण लायक वो हुवै जिको ममता रा दाद कुचरतो, तृष्णा रै जळोदर सूं जूझतो अर लोभ-मोह सूं उलझी अणगिण पीड़ावां सूं चीखतो जावै। आ, आस मनै सपनै में ही नी ही कै, जावता-जावता वै, कदेई इत्तो दे'र जासी मनै जित्तो इं जीवण में तो कांई अगलै में ही नी खूटै मनै, अखूट है वो। इसो अर इसो देवणियो तो कोई बिरलो बाप ही लाधसी कोनै ही? पण खाली मनै ही नी, हर समझदार बेटी नै दियो है वां। आत्मीयता वां री धरती रै ओर-छोर है अर बापपणो वां रो, म्हारी-सी हर बेटी सागै जुड़्यो है। विवेक री बूंद वां री, सागर बणन में सचेष्ट रही है। सन्तोष ही नी, गौरव है कै वै हार'र नी, जीत'र गया है, रो'र नी, हंस'र गया है। कनै कांणी कौडी ही नी ही, लुटा'र गया है खजानो। कुबेर करदी मनै।

पछै पानै नै वा भळै देखण लागगी। दो-एक जाग्यां, दो-च्यार आंसू ही पड्या है वां री पर। केई आखर अर शब्द आंसुवां सागै गळ-गळ, लोप हुयोड़ा है, पढणै में नी आया वै, प्रसंग सूं ही पतो लगाणो पड्यो वां रो। आखरां री आकृति सतै ही थोमै कै वां रो हाथ केई जाग्यां काम्प्यो है, पण स्नेह अर लगन वां रा कठै ही नी काम्प्या। कागदां नै वण सिर रै लगा'र धर दिया आप्पांसर। सोचै ही निरवाळी हुय्यूं कदेई तो सिरदारी अर वचन-धरमां नै ही भुलाय्यूं वै अर दुविधा रै सम्बै पड़तै पट्टां में हू ही पड़य्यूं।

दोपारै पछै आज छुट्टी करदी टाबरां नै वण, लुगायां-पतायां सोचती ही आवण लागगी—सुधा नै धनकावंण नै। बात गी घणखरी लुगायां नै तो रात ही खबर लागगी ही कै, बाईसा रा बापूजी धमता रैया, वो घटै ही बा मिनूमें पूरी हुई। पांच-सात, सात-आठ लुगायां रा झूमका उदास-उदास आ बैठे। आवते ही सुधा को बिराझो हुवै अर लुगायां, वो धीरज बंधावै वीं नै अर फेर लोकाचारी चर्चा सुरू हुवै।

केई बोली, "म्हानै तो, दो घड़ी पैलां अबार ही ठा लागी बाईसा, सुणना ही, पर हा ज्यू ही छोड्या, थारै कानी टुरगी, परमात्मा आगै कीरो जोर चलै बाईसा ?

एक डोकरी बोली, "ज्यां काईं हुयो बाईसा ? बीमार हा काईं ?"

सुधा बोली, "दम री सिकायत ही, पांच-सात बरसां सूं।"

"ऊमर कितीक ही ?"

"पचास सूं दो-च्यार कम ही हा।"

"अरे राम-राम, जद तो काईं ऊमर ही ?"

दूसरी बोली, "मोकाण कराणनै तो जावोला ?"

"मा तो है नी, माईं-मा है, वा कम ही चावै ही मनै, तो देखो।"

डोकरी बिचाळै ही बोल उठी, "ना बाईसा, आयो नी काईं सगो, टेगड बाप है जलम रो देवाळ ?"

सिरदारी ही कठै ही बैठी ही, बोली, "तो आ किसी जलम रै देवाळ सूं मिलण आवै है, जावै तो माईं-मा मनै है अर वा जायां न होड ही बोलै, अर न आव ही, तो बतळावै कीनै भीत नै जा'र ?"

"हां भुवाजी, जद तो जाणो फालतू ही है।"

बैगई, फेर आयगी दो-च्यार। सुधा रो जियां ही थोड़ो मिजाजो हुणो, थारो बीनै जियां ही की धीरज बधाणो अर फेर वा ही लागण-सी मचा घालणी, दमा काईं हुयो बाईसा ? कद धूटा, ऊमर कितीक ही, टाबर कित्ता है ? मोटो ही मोटो छोरो है, क, छोरी ? छोरी परणावण-मांडै हुं'सी कोईं ? की मळ ही छोड्या हुसी जावता, मा री समाव किसोक है। गुजर अबै किया चालसी, बीरै पीरैआळा को संजोग हुयेला ? सवाला रो काईं छेड़ो ? पूछणआळो अनेक, जवाब देवणआळो एक। केई तो घोर-घोर'र इणी पूछे कै पाणीदार नै ही छेड़ै बंटावै। कीनै ही कीरै ही दुख-दर्द सूं इसो मुतलब नी, जितो है लोकाचार सूं। भूखी ही दिन भर गी। उठी जितै मायो हुग्यो भारी अर सूं थिगग्यो। दोफारे दो, पूछी-दो बजी बैठी ही, गुरज नी छिप्यो जितै वा रह-रह'र बी फिगाजी हुंती अर फेर पूछणआळे सवाला रा जवाब देती। सिंझ्या आठ बज्यो जावता, दूध में नाख'र, दो फलकिया देर ने नाखता ही हा, इतै मुरधरी पड़ग में आ बैठी।

9

काल बजी ग्यारेक, टाबरां नैं छुट्टी हुयां पछै, मेघवाळां रा दो छोरा, स्कूल सूं निकळतां ही लड़-भिड़ लिया आपस में। दोनूं ही पैली-दूजी रा हा। पैलो डील में की दूबळो पड़ै हो। दूजै बीरै पाटी री ठोकदी। कोर रो टाचो, माथै में बैठग्यो की। मामूली खून आवण लागग्यो। छोरो आवतै खून रै आगळी लगा-लगा घड़ी-घड़ी देखै अर रोवै। ठोकणियै, तैतीसा दिया—दिस देखो बीनै ही।

आठ-दस टाबर भाग्या-भाग्या, सुधा कनै आया, अर सिकायत करता बोल्या, 'बैनजी, मोडियै रै माथै में लोही आवै है, नथियै पाटी री ठोकदी बीरै।"

बा धापी-धापी बारै आई। मोडियो धडो-धड़ो रोवै हो, पाटी-बस्तो कनै हो, रेत में पड़्या हा। सुधा पाटी-बस्तो झटका'र उठाया अर बीरो हाथ पकड़े-पकड़े आपरी कोटड़ी में ल्याई। पूछ्यो बीनै, "काईं गैत बाटै हा रे, क्यूं बास्तै उळझ्या, बता तो?"

छोरो की रोवतो-रोवतो बोल्यो, "बैनजी, बण म्हारो बस्तो खोस-लियो।"

"तू फेर की नीं बोल्यो?"

छोरो, सुधा रै सामों देखण लागग्यो। बा बोली, "मोडू, डर बिल्कुल ही मत, तनै हूं की नीं कहूं, बात नथियै रा ही पीचस्यूं", अर बण बीरो सिर पळूसनी, बीनै आपरी कुर्सी कानी की उरियां लेलियो। छोरै पलभर खातर, आपरी निजर बैनजी री आंख्यां पर टिकाई, बीरै विवेक नै विश्वास हुयो क बा बीनै मारै निश्चै ही नीं, डर मिटग्यो बीरो, धीरज बापरग्यो बीनै। बो धीरै-सी बोल्यो, "पछै, गाळ मैं ही काढी बैनजी बीनै।"

"काईं गाळ काढी रे, म्हानै बताए?"

"मैं कैयो, भाटी रे, गाटी रे रामजी मरै, म्हारो बस्तो लियो, बीरा मां-बाप जिण्या सूं पैली-पैली मरै।"

"बस इत्ती ही बात भळे की?"

"भळे काढी, 'ढकणी मे कोयलो, म्हारो बरतो लियो बो आपरै बाप नै रोयलो।"

वा बो कानी बडी आसावान दिस्टी सू देखती बोली, "तू तो गाळ ही कविता में काढै है रे?" छोरो बी कानी देखण लागग्यो, कविता काईं हुवै है बो की नी समझ्यो।

बा बोली, "गाळ वण ही पाछी काढी हुसी तनै?"

"हां।"

"काईं?"

"थारा मा-बाप अर घर रा सगळा ही मरसी सिझ्या सूं पैली-पैली।"

"बस इती ही?"

"और ही काढी ही फीटी-फीटी।"

सुधा नै अबै काईं रा घणा छूतका उतारण मे साभ नी लाग्यो। वण सोच्यो, नथियो ईं सू डील मे ही तकडो अर गाळ काढण मे ही पण बो मोडियै री होड भी करसकै। मोडियो कविता प्रेमी है—बीनै दिस मिल्या बो कवि हुसकै है। बा बोली, "मोडिया, मा-बाप थारा ही जिवै है अर जीवता नथियै रा ही हुमी?"

"हां।"

"आ मे सिझ्या सू पैला-पैला कोई नी मरयो तो थे दोनू ही कूडा हुया'क नी?"

"हां।"

"तो गाळ थे कूडी ही काढी अर कोझी ही?"

सगळा टाबर सुधा कानी देखण लागग्या अर मोडियो ही। बा भळै बोली, "मोडिया, तू जे वीनै कंवतो, नथिया थारो बाप सिझ्या सू पैला-पैला, राष्टपति वणै अर थारी मा प्रधानमत्री, तो बो काईं कंवतो तनै?"

बो को नी बोल्यो, सगळा सुधा कानी देखै हा। वा बोली, "आ ही तो कंवतो कै, थारा मा-बाप अर थारै घर रा ही बणै राष्ट्रपति अर प्रधान-मत्री।"

सै ही टाबर बोल्या, "हां बैनजी", अर एक मुळक बांरै होठां पर फूटगी।

वा बोली, "गूगा, मरण रो कैया कोई मरै तो कोई कोंनै ही जीवण ही री दै। मिश्री रो कैयां ही मू मीठो हुवै तो लूण सू माथो कुण लगावै ? लगावै कांई ?"

'नी लगावै", सगळा ही बोल्या।

"नी लगावै तो चोखो, पण लडो थे अर गाळकाढो मा-बाप नै, वा ही भळै कोसो अर पीटो ? फायदो हुयो'क नुकसाण ?"

"नुकसाण बैनजी।"

"आगै लाड़ या में सू कोई काढसो गाळ कोंनै हो ?

"नी काढा बैनजी।"

"काल आवण दो नांथियै नै थे, कानडा नी मरोड़ू बीरा तो, पण क्लास लागता ही सू मनै याद धराविए मोडिया ?"

"भलो।"

छोरै रो बिम गाळो-भलो सुणग्यो, सुधा बी नै दो बरता थामती बोली, "इत्ता घणा का और देऊं ?"

एक ही सेंवतो बो बोल्यो, "एक ही चाईजै बैनजी मनै तो।"

"छोरा, थारै में तो कबीर है रे ? अर अबार सू ही जागतो !" टाबर ई सू की नी समझ्या, तो ही सुधा रा होंठ तो बरबस फूट ही पड़्या। बा बीरी सैज साधुता सू बड़ी प्रभावित हुई। वण सगळां नै एक-एक पतासो दियो, बीनै दो देंवती बोली, "तू साच बोल्यो है, तनै एक बेसी।" बो बडो राजी हुयो, पण मुळकान बीरै होठा पर लम्बी नी हु'र बीरी आख्या में ही घणीभूत हु'र चमक उठी। पतासा वण आपरी जेब में घाल लिया। वा बीनै आप कानी थो और उरियो ले, बीरी गुद्दी पर हाथ राखती बोली, "थरनो तनै मिलग्यो, नथियै रा कान और खींच देस्यू, राजी है अबै तो ?" गिर हिला'र वण हां कह दियो।

गुद्दी पर हाथ राखता, सुधा रै हाथ रै डोरी सी की रड़की। वा बोली, "गळै में कांई है रे ?"

"मादळियो", होठैं-सी बण कैयो।

"गळै रो गुद्दी खोल देवां, हूं ही देखू मादळियो थारा ?"

सुधा गायड़ देख्या, एक कमातूणी डोरै मैं तांबै रो एक पुराणों पदगो,

छाप अर आंक सैं घसीज्योड़ा वीरा, भैरूजी रो चादी रो एक फूल, ताबे रा दो मादळिया, पीतळमे जड्या रामदेजी रा पगलिया अर एक काळो मिणियो। वण सोच्यो, "मा-बाप, इँ खातर जाणै इसी तकड़ी मोर्चाबंदी खड़ी करदी हुवै कं अवै इँ रै नैड़ा न ताव-तप ही आमकै, न भूत-प्रेत अर न न डाकण-स्यारी ही। देवता चौईसू घटा पौरो देवै इँरै गळै री धरती पर वैठा, मजाल है फेर कोई रोग-दोख आवै इँरै नैड़ो। अज्ञान अर अति-ममता मे गळो इया ही रूघीजै।" वण पूछ्यो वीनै। "कित्ता भाई हो रे?"

"हू एक ही हू वैनजी।"

'और नी हुयो?"

"हुयो हो एक म्हारै सू पैला, वो पाछो हुग्यो।"

"वैना कित्ती है रै?"

"तीन।" वीरै गळवध्यै रोग री जड़, की समझी वा।

छोरो गयो अर वीरै सागै दूजा टावर ही। सुधा सोचती रही काई-ताळ "देखो, छोटै-छोटै टावरा रै होठा पर किसीक सूगली गाळा है? पण वै विचारा, किसा मा रै पेट सू निकळता ही काढणी चालू करदै है? आपरै घर अर आसै-पासै रै वातावरण सू ही तो वै सुणै है अर सुण-सुण वानै उछाळै है दूर-दूर। धीरै-धीरै वै, आपरै भडार नै इतो भरलै है कै वॉ जियै जितै नी छूटै वानै। गाळ वाल-सभाव सागै नी जुड़ै, आपानै इँरो ध्यान पूरो राखणो है।" वा उठ खड़ी हुई अर आपरै काम मे लागगी।

दूजै दिन अदीतवार हो। सूरज अधघंटा अदाज चढ्यो हुसी। वरस अट्ठारै'क री एक परणी-पाती छोरी आई उदास-उदास-सी। सुधा नै बोली, "वैनजी, म्हारी दादी घड़ी-पलक पड़ी है, काल पछै एका ही रट लगा राखी है, अरे! मनै एकर थाँमा रा दरसण करावो। तकलीफ तो आपनै की हुसी, पण पधारण री मैर करो तो माईतपणो हुसी आपरो।"

"काई नाव है थाई, दादी रो?" सुधा बोली।

"पेमी, आप कनै, केई विरिया कागद लिखावण आया करती नी।"

"हा-हा आया करती, जाणगी, चाल सू हू आऊ हूं।"

सुधा सिरदारी नै सागै लै'र टुरगी अर जा पूगी पेमा रै झूपड़ै। पोळी

एक बोदो-सो, बीरै बेटै री बहू पैला सू ही ढाळ राख्यो हो, डोकरी री मचली करनै। नीच बारणै रो झूपडो कुच्योडो अर एक थूणी लाग्योडो। बीमें ही चूल्हो अर बीमें ही चाकी, बीमें ही तणी, अर बी में ही माची। मुधा ही बीमें अर च्यार टाबर बी में पैला सू और—मोडा घणां अर मठी गाकड़ो, गिरधारी तो झूपडै रै बारै ही बैठगो।

गळतै-घुसतै डोका माकर जाग्या-जाग्या सू छणनो तावड़ो झूपडै रै मायलै संसार नै देखै। मुधा रै एक पमवाडै चाकी, पण बीरै न हत्यो, न मायनी अर न बेवणी। घटता पूरा करै बा। बीरी अर डोकरी री अवस्था एकसी। दोनूं ही उडीकै, एक मैनत रै ललकतै हाथ नै अर दूसरी मौत रै अमै हाथ नै—फर्क बस इत्तो ही।

चूल्है रै एक पमवाडै काठी री काना-बारी कूलहड़ती, ऊपर बीरै एक गाडो ढकणो, बो मांकर कूलहड़ती रो काळजो साफ दीखै, की कद्दी ही बीं में। एक पुराणै धामलियै में एक बासी सोगरो, अर की ठंडा टुकडा। च्यारू टाबरा री जट बध्योड़ी, मैला ही बारा हाथ-पग अर मैला ही बारा गुडता-काछिया। दोयां रै हाथां में टुकडा, खडा ही खावै, अर दो, हांडी सू बासी खीचडो हाथा सू काढ-काढ दांता नीचै गिरकावै। खावै घणों गिरावै थोडो। अंठ-भोरा, अर अंटा हाथ, हांडी रै खुलै मूंडै बडै-निगळै। टाबरा री ओ बोपार अखरै ही मुधा नै, टोकू ही बा पण रुकगी—पैं सोच'र। इत्तै एक छोरै, कूलहडती गो ढकणो छेडै करनै, एक टूंब ही हुबो-लियो कूलहडती में ही। अबै नी रहीज्यो मुधा सू, होठ बीरा मनै ही फूट पड्या। बा बोली, "टाबरिया, इया काईं करो हो रे? एक जाग्या सायळ बैठ'र बी जुगत सू तो जीमो।" टाबरां एकर देख्यो मुधा कानी मंवता-गवता। मुधा रै सार रो सार, रग मी अकरो करनी, टाबरां री मा बोली "बात बोनै ही, दो मिट ही मुग सू मत वरण देया, अधघडी तो बारै बठो एकर।"

टेगर मुधा कानी देखता, झूपडै रै बारै हुग्या। हांडी अर कूलहडती मू परै बिल ही पडी रही, बंदो सो नी बरी बानै। हांडो री ओस्यांडी गुरचण मुधा नै बू देवै ही, पण टैम देख'र अबार बा चुप ही।

चूल्है में बी घुगणो घुखै हो, राग बी में बेवणी लाई भरी ही। राग

बीरी दो-तीन दिना सू नी निकळी लागी । कनै ही छाणां रो कूडो पड्यो हो । चीपियै री एक फाक पड़ी दीसै ही आधी बारै, आधी राख में । न चकलो-बेलण अर न मिर्च-मसाला खातर कोई हटडी ही दीख्या बीनै बठै । माटी री एक परात मे कीलो डौढेक अण ओसण्यो आटो पड़्यो दीसै हो। चूल्है री नाक लारै, दो एक लस्सण रा गांठिया चिलकै हा । थळी रै मायलै पासै पाच-सात छूतका कादा रा पगा नीचै आ-आ अणचाई उदासी भोगै हा । एक खूणै मे कीलै-कोलै रा दो खाली डबलिया डालडा रा, अर किरासणी तेल री एक सीसी दीखै हा ।

किरासी री बास झूपड़ै रै पून मे मिल-मिल, बधै ही, ढक्कण नी हो बी पर ई खातर ।

झूपडै री काळजो ही मरमत मांगै हो अर बीरो मायो ही । सुधा रो बीमे दम ही घुटै हो अर मन ही । डोकरी री मचली मीचै, खवारै रो ठीगळो पड्यो हो । खवारा नै रेत अर राख ओढायोडी की नी, देख्या सूग उपजै । डोकरी रै बेटै री बहू, हाथ जोड'र खड़ी हुगी, बोली, "बडा भाग म्हारा, आप म्हारै झूपडै मे पगलिया किया । सासु दो दिना सू एक ही रट लगा राखी है, अरे, म्हारा प्राण जासी, मनै एकर बाईसा रा दरसण करावो । बै नी आसकै तो मनै पटको बठै लेजा'र, एकर किया ही मिललू बासू दो मिट ।"

"मा-सा रो हेत की जादा ही है म्हारै पर", सुधा होळै-सै बोली ।

बेटै री बहू धसियै रो सड़खो छेडै करती बोली, "माजी आख्या खोलो, बाईसा पधारया है ।"

मीट लाग्योड़ी ही, आख्यां डोकरी नी खोली । सुधा बीरै माथै अर छाती पर हाथ फेरण लागगी । बहू बोली, "बाईसा, ओ आप काई करो हो ?"

"क्यों ?"

सास बीनै खैचीजता आवै हा अर तांत बीरी की बोलतो सुणीजै हो । सुधा बीरी नाड़ झालै राखी दो मिट ताई, मरी-मरी-सी लागी या बीनै ! बिच-बिच मे बीमार मीडकी-सी की उछळनी लागी । बैरै कांनी देख्यो, नाक री डांडी की टेढापण पकड़ै हो । बण अैनाणां सू अंदाजलियो घासो-

भाग-2

भलो कै सूवटो अबै दिन-दो दिन सू जादा टिकतो नी लाग्यो पींजरै में। बा बोली, "मा-सा, आंख्यां नी खोलो ?"

'मा-सा', ऐ मीठा आखर डोकरी री चेतना में सुरक्षित हा कठै ही। बा में बीं री श्रद्धा ही अर सम्मान हो बा खातर। अबार बै एकदम सू ऊपर आयग्या। बण आंख्यां खोलदी पण धुवों बधै हो झूंपड़ै में। सुधा रो चैरो बा नी ओळख सकी पण कान जागता हा बीं रा, होठ बीं रा भलै ही फूट पड़्या, "कुण बाईसा ?"

"हा मा-सा।"

बुझती बाट में जाणै तेल रा टोपा पड़्या हुवै, एक सन्तोष बीं रै सळा पर बिखरग्यो। अधमिट स्वर'र बा बोली, "चैरो नी दीखै ?"

बारै खड़ी गिरदारी बोली, "दीखै काई सिर, मायली छाया अर धुवै री गोट, साजै-सोरै नै ही नी देखण दै। मंचली नै बारै काढोनी, आवै बै सास, सोरा तो आवै की ?"

मांची बारै काढली, डोकरी नै हिलाई ही नी। अबै थोड़ी, चौनिजर हुई बा, आंख्यां आली अर गदगद हुगी। धूजतै कंठा सू बोली, "कित्ती बिरियां दूध पायो मनै, दवाई दी।" धूजता-धूजता हाथ जोड दिया, होठ ही बद अर आंख्या ही, पण, आंख्यां नी रुकी, बह चाली। बा की और बोलू ही, पण रोग बीं रै बस रो नी हो।

सुधा बोली, "मा-सा, म मैं की पायो अर न की दियो थानै, थे थारो ही खायो-पियो. छोडो बीनै, अबै तो और की बातो ही मत छांडो, न जन्म सू जादा की सू ही बोलो, रामजी नै ही देखो, राम-राम ही बोलो, रामजी थारै सिराणै खड्या है, झूठ नी बोलू।"

बीं रा होठ भळै कांप्या, "रामजी थां में ही है बाईसा, रामजी में अबै भळै कसर रही ? 'मा-सा', बिना बतळाणो ही नी ? जावोड़ा ही नी बतळावै इंयां तो ?" फेर दो मिट नी बोली जाणै भक्ति भळै मेळो करती हुवै की मंचल नै। 'बोलो कित्तो मोवणो, कित्ती मीठी बाणी', बीं रै होठा पर भळै बिखरगी—सीपी अर धूजती।

सुधा सोचै ही, 'बेगना इंरी रोटी री इत्ती भूखो नो हो, जित्तो जीभ रै मिठास री पण भी मिल्यो इंनै बो। जीभ री सू नीचै सूखती रही आ।'

होठ भळै बुदबुदाया, "म्हारा कागद लिख्या थे, हस, मुळक'र, हू नी भूलू ।" होळै-होळै आपरी ओढणकी रै पल्लै री छोटी-सी गाठ, धूजतै हाथ, सुधा कानी करदी। गाठ खुलवाणो चावै, सुधा समझगी। पुराणी काया, पुराणी ओढणी, लालसा री पुराणी ही गाठ, अर पुराणो ही खोट धीमे। वहू ही कनै खडी ही, अर सिरदारी ही। अे देखै ही ध्यान सू। सिरदारी बोली, "बाई खजानो सूपै है तनै ?"

सुधा खोलली गाठ धीरै-धीरै। चौनहो, मैलो अर उजास छणनो रिपियो हो एक। बा बाली, "रिपियो है मा-मा, काई करणो ईरो ?"

"कागदा रो है थारै", हाथ री आगळी हिलाई, बोली, 'ना मत किया।' बोली धीमी पण साफ ही। हाथ काळजै पर राख'र जोड दिया बण प्रार्थना री मुद्रा मे। ना किया करै सुधा ? डोकरी री मुद्रा अर योजना ही, इसी ही अर इसो ही हो, मायलो मकळप बीरो।

सुधा बीरै निश्छळ अर उरिण चेरै कानी देखती सोचै ही कै ई रिपियै नै अण जी री पकड़ सू कित्ती ऊंचाई पर राख्यो हुसी। चूल्है-चौकै री नित री माग काई ठा कित्तो विरिया ई आगै नाची हुसी—उघाडी हु'र, पण अण बीसू आख ही नी मिलाई हुसी। एक-दो टैम लूखो अर अलूणो खाणो मजूर है पण गाठ रै बाधो ड् पराई रकम नै छेड़न री बीरै मन मे ही नी आई हुसी। ई रो भेद ही तो बण नी दियो हुसी घर मे, कीनै ही। भेद दियां कोई मागलै अर नी देवै बा, तो मुश्किल, देवै तो ई छेलड़ली टैम बो पाछो जुडनो मुश्किल।

बण सोच्यो हुसी, रिपियो ओ, हू खुद दे'र आस्यू, अगली रै हाथा मे, पण विवसता बीरै सारै, न पगा साथ दियो अर न डील री अवस्था ही, पण लालसा ताजी-तकड़ी रही। सोच्यो है तो, जे ईनै पोती-पोतै रै हाथ भेजू अर वै बिचाळै ही भरपाई करलै तो किमीक हुवै ? जी रो सकट तो जद ही बटै जद धिरियाणी खुद ही आवै अठै लिया ही ? गाठ घूळती गई हुसी अर चिंता ही, कै गाठ आ, अबै जीवण रै सागै ही जासी अणघुली-अणचूकी। मन रै भार रो फेर काई चारो ? अबार बा बोगै आख्या आगै ही खुलगी, एकदम सागी हाथा नू नो बीरै आत्म-सन्तोष रो काई पारो ? लेण-देण अर राग-द्वेष री अे गाठा युलणो ही तो मुक्ति है। बीरी आख्या

मद अर चैरै पर एक उपळ-पुपळहीण मान्ति । वीनै अठै बुलावण री मूळ-मकसद बा समझगी ।

छोरगी खातर कदेई वा सोच्या करती कै कागद लिखावण तो आ, जी करै जद ही आ बैठे अर पइसा एक रा ही नी परखावे, हुवै नहीं तो पैर कोई बात नी, हुवै तो ही हूँ रे जी मे नी आवै देवण री कदेई, नीयतवारी अर मोटी ठावीं है—पतो नी और काई-काई ? वीरो एक अणरगो अर उपेक्षित चितराम अण उतार राख्यो हो आपरै मन में । पण आ सगळै कागदा रा एक दिन भेळा ही पइसा देसी इया, मैं-व्याज, ससम्मान अर वीरो बो रगहीण चितराम सतरगी बण आवमी वीरी चेतना पर कदेई, इणी कल्पना पण सपनै मे ही नी करी अर नी करी कदेई कै एक मूर्ख-तिरसी डगळियां री चेतना आपरी महाजातरा पर टुरती वीरै आंधै-रोगलै अहं नै इसो नीरोग आकार देसी, जिकै रो विज्ञापन कम, ऊमर अर असर लम्बा हुसी, बा आपरै हर गर्ज नै आपरी कृतज्ञता रै मिवता मार्ग इया तोलसी ?

गिगियो बा पेमा रै बेटै री बहू नै देवती बोली, "लै टाबरा नै भी भाठो मगवा दिए हेरो ।"

"पन बाईसा, छव-सात दिन हुग्या मखसी सेवतां आनै, पण ई रिपियै री म्हानै तो आ थोडी ही सीध नी दी ।"

"किसी तो रकम ही आ, अर काई थानै ईंरी सीध देवती विचारी, आपरै सागै मू ही फुरसत नी ही टैनै तो ? सीध थानै हूं देऊं मी, तावै आवै तो ।"

"जरूर देवो बाईसा ।"

"मान-बडाऊ थवै विदा हुवण मतै नाग्यो मनै तो । दो-पाच पदा, भी हुवै जिकै गुड अर तुळछी रो गाजो पानी, गुन्यायो-सो रचि हुवै तो गुट-कियो देसिया । राम-राम था तो पेना हा थे लेलिया, पे जे प्यार नाव गुणायो तो बखिसगो है थारी । आगे ही मनो अर थारो हो ।"

गुधा अर गिरधारी दोनू शुक होरगो आगै, टुरगो आपरै थान-मुकाम मानो । आरै दो मिट बाद ही, पेमा गे पोतो ही टुरगो बो गिगियो सै'र, पाष सून अर पधाम दाम सेन सेवग नै ।

वै दोनू जिका ही एक घर आगरर निकळै हो, गुधा नै दो-तीन पुलिस-

आळा बैठा दोब्या बीगे चौकी पर। पांच-सात पावडा आगै एक सँघो मेघवाळी मिलगी, बोली वा, "आज तो घन-घडी घन भाग, म्हारै वास में बाईसा रा पगलिया ? की भली ही वापरसी।"

सुधा बोली, "वास थारो-म्हारो एक ही है; पण ई कनलै घर मे आज पुलिसआळा किया जम्योड़ा है ?"

"आपनै ठा ही नी ?" वा की अचभीजती-सी बोली।

"बिना बतायां काई ठा लागै, काई वास आवै है इंनै ?" सिरदारी बोली।

कोठवाळी बोली, "काल आपरै अठै सू पढ'र आवता, दो टीगर उळझलिया आपस मे, एक रै पाटी री लागगी, की लोही आवग्यो माथै मे।"

आ तस्वीर तो सुधा रै दिमाग मे एकदम ताजी ही, वा बिचाळै ही बोल पड़ी, "छोरा नथियो अर मोडियो ही तो हा ?"

"हा बाईसा, आपनै तो ठा है फेर।"

"ठा तो छोरा री चड-भड़ रो है, पुलिस आवण रो थोड़ो ही ?"

"घरे आ'र मोडियो आपरी मा आगै रोयो। तीन छोरयां बिचाळै आ, एक ही लट है बी रै, ऊभी सूकै है बी पर, सुणतां ही बीमे की बाकी नी बच्यो, पगा मे पगरखी ही नी घाली वण। नथियै नै बण घरे जा'र कूट नाख्यो दड़ादड़। नथियै री मा बी वेळा घर मे नी ही। वा आवता ही, त्रिकाळ सिंझ्या पैला तो दोना मे जीभ-जुद्ध चाल्यो, चाल्यो काई समझदार सूं सुणीजै नी इसो। रात नै जिया ही नथियै रो बाप आयो, मीरो बहू बीनै सिलगा'र चूवाड़ी करदियो। मोडियै री मा कनै बळ की सावळ है, रोटडी धाप'र खावै है पण मिनखा रो बळ नी। दूसरी रै घर मे है तो भूख, पण मिनख अर नागाई दोना रो जोर। घरे आ'र मारगी, आ बात कद सईजै, बै ही दो जणां मोडियै री मा नै कूटग्या बीरै घरे आ'र। थाणो ई खातर आयो है, पण दोनां ही ढक राख्या है पण बाईसा टाबर दिन मे दस दफै लड़ै अर दस दफै ही राजी हुवै, वारै बदळै माईत चढै तो बेजा ही है।"

"पण स्कूल आगै उळझ्यै टाबरां रो फैसलो, जिसो स्कूल में हुवै बिसो माईता कनै थोडो ही हुवै ? मोडियै नै तो मैं राजी कर'र घरे भेज ही दियो हो, नथियै नै स्कूल आया और सै भेवती ऊंचो-नीचो, फेर लारै काई रैयो ? वांरै माईता बिना सोच्या ही ठीक नी कियो।"

'थे काईं करै हा, थाणैआळा रा भाग जोर करै हा बाईसा।"

"जोर काईं, निचोईज ज्यासी दोनू ही। दो टैम सावळ जीमै, बो घर तो भाई-ग्राई मे, अर लाई-ग्राई करै वो कर्जदार—आ हुसी दोना मे।'"

"इसै सू ही काईं सरसी बाईसा, गवाह ही तो त्यार करणां पडसी। अबार तो थै बारै मगरा थापी दे-दे बारै पेट मे वड़ै—थारा बेटा बण-बण, पण टैम आया थै, बाप वणसी, पग-पग छेड़ै पइसो मागसी।"

सिरदारी बोली, "अणमभ्रम आधै मूं ही माड़ा, अै तो इसा पडसी दोनू कै फेर बरमा हो सुवा नी हुवै।"

थै चाल पडी आप-आपरै रस्तै।

मोडियै री मा सागै सुधा री घणेड ही पण अजाण बा नथियै री मा सागै ही नी ही। सिम्या बजी च्यारेक, बण दोना नै ही बुलवाई। कचन अर करमां पैतां सू ईं हाजिर ही। सिरदारी तो गंठजोड़ै री गाठ-सी सिरक'र जावै ही कठै ही?

अै सगळी बैठगी एक जाग्या। सुधा बा दोना नै बोली, "हैं ए थे स्याणी-मोनी ओ काईं कियो? इंरै नतीजै पर ही सोच्यो है की? मुकदमों मो आदमी नै मागण-खायणजोगो करदै। बीमे हारआळै री तो हार है ही, जीतआळै री ही हार है।"

थै दोनू चुपचाप सुणती रही, उदास-उदास।

या भळै बोली, "दोनू ही थे क्रोध अर ममता रै कब्जै मे ही। क्रोध रै आरवा नी हुवै अर ममता रै माथो। एक आंधो अर एक पागल। क्रोध रै बेग मे आदमी हत्या करतो ही नी मगै अर टूटती ममता में पागल हुतो ही। थे आधी सू घणी खा-खूटोई, पण छोरा री तो ओजू सुरुआत ही है, थारो थे हित चावो हो का अहित? मा हो थे, थां खातर अबार थारै मूं ऊंचो कोई नी।"

"थाथा तो बाईसा हित ईं हा।"

'अर काम करो वैरी रो सो? हित इया हुवै? टाबरा री बात रो जिको टा मनै हो, थानै बोरो थाव-थाखी ही नी, मनै पूछती थे, पण थारै इसो गरार कठै? हूं देखू हू था टाबरा नै, पाळै रै दिना मे बारै सरीर पर, पूरो कपड़ो नी हुवै, बंद मुट्ठी, भेड़ा गोडा अर कुड़कुडीजता कोठड़ी रै सूणै

मे उदासी ओढया, किया टैम पूरो करै है ? पेट में बारै लूखो दळियो, ठंडो-बासी खीचडो, सेक्योडा बीज का लप, आधो-लप बोरिया हुवै । लापसी अर गुड़राबडी खातर होळो-दियाळी नै उडीकै, बारो वासी दळियो अर ठंडी रावड़ी ही थानै नी सुहावै । पुलिसआळा अर राज रा हाकम-मुसद्दी तो थारै नैडा हुया अर थारा आपरा अै अबोध टाबर थारै सू अळगा ?"

दोनू ही होळै-सै बोली, "अळगा किया बाईसा ?"

"थे पाच रिपिया कमाया है का कमास्यो वै तो थाणै-कचेडीआळा खोचलेसी, थारै पइसा सू वै दारू पीसी, गुलछर्रा उडासी, सिनेमा देखसी, टैरालीन पैरसी, बाटा अर फ्लैक्स रै जूता में घूमसी—घर खातर माडो अर सांकळ खरीदसी, इया थारो आखो पसीनो तो वै बाटलेसी अर थे अर थारा टाबर दळियै नै उडीकस्यो । करो थारै मन मे आवै ज्यू पण छाती पर हाथ घर'र आ तो बतावो कै कियो थे माडो का आछो ? आछो कियो जद तो थे थारै घरे सिधावो दोनू ही, मैं बुलाई म्हारी भूल हुई, माफी देवो मनै ।"

कचन अर करमा बोली, "आछै-माडै सार नी जाणै अै काई गूगी है ?"

वै दोनू ही बोली, "आछो तो ईनै किया कहीजै बाईसा ?"

"नी कहीजै तो थे डूब'र पाछी ही निकळगी समझसो, एक बात थानै और पूछू हू थारै घर री हू'र; बा आ कै म्हारै टाबर-टीकर है कोई ?"

"नी ।"

"म्हारै एक बाळक हुयो हो, बडी-बडी आंख्या, तीखो नाक, चौडो लिलाड, अर गोरो निछोर, पण दो दिन बाद ही रम्तो लियो बण । हाथळ म्हारा भरया पण काळजो खाली, ही आबादी मे पण उजाड लागै हो मनै, बारै साव सूकी पण माय पूरी-री-पूरी डूबी ही उदासी मे । न रोटी भावै अर न नीद ही आवै । मा तो हू बणगी पण विना टाबर री । बाळक नै प्यार करण री एक लालसा फूटी ही म्हारै मे, पण बाळक नी रैयो तो बाळक नै प्यार करण री म्हारी वा लालसा ही नी रही कांई ?"

"वा तो को न को रैणी ही चाईजै", मगळो ही बोली ।

"वाँ न को ही नी, बा ही बीसू सतगुणी जादा हुयी । वा अणभोगी लालसा हूं नथियै अर मोडियै जिसै किनै ही बाळका नै प्यार कर-कर पूरो

करू नी थानैं की दोराई है ईमें ?"

"दोराई ईं में क्यों हुवै ?" वै दोनूं ही बोली।

"नी हुवै तो नथियो-मोटियो म्हारा थोड़ा घणा ही बेटा नी हुया ?"

"हुया क्यों नी ?"

"हुया तो थे म्हारै कनै च्यार घटा आवै, थांरो मनै की सोचनी ?"

"थानैं ही है।"

"है जद मोहियै नै तो मैं हुसनों-मुळकतो कर'र घरै भेज्यो हो, नथियो नी हो, स्कूल आया अगलै दिन वीनैं ही थीं पुचकारती-डरावती, हूं अर थे सगळा राजी हुंता, पण थे विचाळै ही, ओ महाभारत किया छेडदियो ?"

मोहियै री मा बोली, "गूण चडगी म्हारै मैं।"

नथियै री मा बोली "मैं थोड़ो ही नी मोच्यो वाईसा।"

मोहियै री मा कानी निजर करती बोली सुधा, "थारै एकलपो छोरो है, लाडेसर, मानी पण ओ थारो स्यापद सूं भी सास नी जीमकै, म्हारी स्यापर सूं म्हारो छोरो जियो कांई ?"

"नी।"

"जीवण-मरण री आ लीला ही न्यारी है, आपणै हाथ में नी। आपणै हाथ में तो समझ है एक, कै लडाई नी कर'र प्रेम करणो, गाळ नी काढ'र मीठो बोलणो, धक्को नी दे'र, मदद करणी। म्हां सगळां री अबै एक ही मालगा है।"

"फरमावो।"

"हर सूरत में म्हे थानै राजी देखी चावा।"

"तो अबै कांई करणो, माय तो म्हे सगा वैटो।"

"काल ही थानै-थोकी जा'र राजीनाथो पेम करदो थे, थानै कोई किनो ही गिरमावै, किनी हो पाछी पढावै, वे कान ही मत देवा।"

"त्यार हां।"

"बात पर अटल हो नी ?"

"नहै बांगे सुर छूटे।"

"सवां मन म्हे सगळी थारै सानै थानम्हा, फेर तो ठीक है नी ?"

"कांईकरणों है थानै।"

बी दिन ही, रोज दाई लुगायां पढण आई, नथियै अर मोडियै री मा ही बामें ही। पढाई री टैम जियां ही पूरी हुई, सुधा सैं नैं बोली, "पाच-सात मिंट थारा, हूं और लेणा चाऊ---देवो तो ?"

"पाच-सात ही क्यो, बेसी लेवो, थानैं कुण नटै ?" खासी बोली बामें।

"थारी मैरबानी ही नी, थारो विश्वास ही म्हारैं अन्तस में कम नी।" मिंटभर रुक'र बा बांनैं संबोधती बोली, "आखो दिन थे खटो, चूल्हे-थारी सू ही खसो, बाळक अर बूढे-बडेरा नैं ही सभाळो अर सार-सभाळ को गाय टोघडियै री ही करो। रात नैं खाणो-पीणो अर माजा-धोवो करो जितै रूह थानैं कुळती लखावती हुसी, फेर तो मन अर सरीर दोनूं ही गूदड़ां नीचै जावण नैं उतावळा हू उठता हुसी, पण थे न मन री मुणो अर न सरीर री। म्हारैं कैयै नैं ध्यान में राख'र, दो घड़ी खातर ईंनैं टुरपडो। ईंसूं थानैं तो काई ठा कित्ती असुविधा हुती हुसी, थे ही जाण सको हो, पण मनैं कित्तो बळ मिलै बी सू, थे नी समझो ईंनैं। हूं थारी पढाई-लिखाई री मात्रा सू इत्ती राजी नी, जित्ती थारी आवण री रुचि सू, थारै मेळ-मिलाप सू। अबार ताई था में सू दसां, डाकघर में खाता खोल लिया, कई और त्यार है, केई था में सू मनियाडर-फार्म ही भरणो सीखगी, आपरो काम निकळै इसो कागद लिखणो ही, अै हू, थारी कृपा ही समझू हू म्हारै पर।

"आ उल्टी बात कियां बाईसा, कृपा थारी'क म्हारी ?" कई बोली।

"देखो म्हारा घर-बार-सै छूटग्या, साव एकाकी हूं थानैं ठा है, आसारो है तो थारो, अर जाण है तो थारै सागै। एक लालसा रो भार ऊंच'र अठै आ पूगी, थानैं बाटण नैं बो। थे जे बिल्कुल ही नी लेवो बीनैं, तो [illegible] बीनैं ऊंचाए कितीक देर फिरूं ? अमूज मरूं हू तो। पण जियां-जियां थांमें थारो आत्म-विश्वास जागै, थे अर थारा टाबर नीरोग दिन कांनी देखो, थारी सुख-सुविधा मुळकै, म्हारी सैंरा मतै ही ऊंची उठै, आ थारी कृपा नी तो काई ? थे दो-दो, च्यार-च्यार टाबरा री मावां हो, अर हू म्हारै कनै आवण-आळै तीसू-चाळीसू टाबरा री मा। कमाई वैं थानैं सूपै, बांरी वहुवां पग थारा चांपै, अर दौड-दौड काम थारै आगै करै, हूं तो बानैं थारी सेवा करण लायक की करदू, मागू न थां सू अर न बासू, फेर ही थारी मा बणनी चाऊ तो थानैं काई दोराई ?"

"कण कैयो दोराई री थानै ?" वै बोली।

"अर कृपा फेर किसी हुवै ? आज थारै वास मे थाणो आयो, मनै टा लागग्यो, टा थानै ही हुसी ?"

"हां है बाईसा।"

"घणी भारी चिंता हुई मनै, थाणे नै मोच'र नी, भोळै नथियै अर मोडियै नै सोच-सोच। अरे, वांरै मूंडै रा ग्रास कोई खोस लेसी, वांरै सरीर रा गाभा कोई उतार लेसी, निरदोस है वै अर एक दात रोटी तोडै इसा भाएला। आ लूखी-लम्बी उदासी किया होमी वै, हूं कांपगी, ई खातर कै हूं थारै घी नैडी हू। हू ही नी, सुण'र, सिरदारी मा ही उदास हुगी अर उदास हुगी कचन अर करमा ही। कोरै ही अबोध बाळका पर तकलीफा री आंधी ऊमटै, अणसमझी रै दरियाव मे बीरो ही परवार डूबै तो थानै किसो की दुख नी हुवै ?"

"हुवै बणोनो बाईसा, म्है मिनख नी ?"

"तो तकलीफ अर उदासी हर्क ही मनै, मै नथियै अर मोडियै री माया नै बुलाई। राजीपै री अर्ज करी, वै मानगी, बोली, मै तकलीफ पांवती पर, आ थारी कृपा हुई क'नी ? हू मूकली बेल, थारी कृपा री बिरखा पा, एक-दम गू पांगरगी। अबै मनै नींद ही सोरी आसी अर भूख ही मीठी लागसी। थारो रिण हूं किया उतारूं, जल्दी ही समझ नीं आवै। थारी ई कृपा-सुगन्ध नै हू, आखै गाव मे बिखेरणी चाऊं—घर-घर मे। बां दोना रांई ही, पण भूरत्या रो बिस्वास है मनै। हां अबै थे जावो भला ही।"

दूरगी वै, एक सूवै बिस्वास सागै। कचन, करमा रै सामनै ही एक दिन सूतगी, सूवै बिस्वास री।

राजीनामो तो थारो हुग्यो, पण हुयो बडो दोरो। बाधियो पोचा पानग मे पाट नीं रायो। 'पुरु'र अबै थाटीजै है कांई ? ई मूंडै रै घम्मा मुकन्मो गीबन नै दियो हो ? मोत टक्का नी दिप लेमी भारनै रा दारा ? बात यारार तो मोल पर होवदै है ? आगै मारू थारो ब्याह बनै वो घुट जावै ? अरे पहमा पे मत मगाला, म्हे मगाम्या पण पणां तो पूगी गयो ?'

काई ठा कित्ती-कित्ती सुणनी पडी नथियै अर मोडियै रै बापा नै ? पण थारी माता अड'र बैठी तो इमी बैठी कै घोस्या ही नी सिरकै। थाणैआळा ही थानै कम नी डराया, पण करमा ई मे अगुवा रही अर लारै बीरै लुगाया रो एक लम्बो दळ, एकदम बजा-बजा'र परख्योडो। करमा थाणेदार नै बोली, "फाटया जद सीडीजै, रुस्या मनै तो लडया मयाँ नी मेळीजै पण थानै बै की अचैरा लागै, धरती सागै जुडो, थारी साख जमै, राजीपै गी लीका खीचता थारा हाथ जे की धूजता हुवै तो म्हे और ऊपर जावां ?"

राजीनाम्रो हुयो, हुयो ही बडो चर्चित अर बाजतै ढोला।

सुधा कचन-करमा नै बोली, "अबै एक काम और करो।"

"बोलो ?"

"आ दोना रो राजीनावो गाव रै हेठा पर बौडो हु'र नाचणो चाईजै।"

करमा बोली, "जरूर नाचणो चाईजै बैनजी, पण रूपरेखा ही तो की बतास्यो जद हुसी नी ?"

"रूपरेखा काई, सुझाव है, ध्यान मे ढूकै तो ?"

"ढूक्योडो ही है थे कहो।"

"लुगाया री एक आममभा हुवै, जादा सू जादा लुगाया पूगै बठै। इक्कीस-इक्कीस रिपिया, का की जाता-कम थे देख लेया, एक-एक डग रो ओढणो अर एक-एक फूला री माळा सू सम्मान हुवै थारो। सागै जे माईक रो प्रबन्ध हुसकै तो सोनै मे सुगन्ध।"

कचन बोली, "बडो बढिया सोच्यो बैनजी, ई मे आरो ही नी, आपै गाव रो हित है। गाव मे कळह कम पाघरसी, खास कर हरिजना मे तो, सागै गाव मे गरीबी रा पग ही ओछा हुसी।"

करमा बोली, "पण बैनजी, ई मे असली दौड-धूप तो थारी है, सागै थारो ही तो की हुणो चाईजै ?"

"ई स्वागत-समारोह नै देख म्हारो हुणो चाईजै जीमोरो।"

"पण की हुवै तो ईंग हुजे काई है बैनजी ?"

"भोळी बैना, ओ हुसी बो कीरो हुमी ? 'म्हारै' रै न्यारै घूटै सू बाध'र, म्हारी रोटी अर नीद विदा करदी काई ?"

"तो सिरदारी वडिया रो तो की करा ?"

"क्यो या कोई अन्तरिक्ष मे जा'र आई है ?"

"अन्तरिक्ष सू ही वेसी ?"

"किया ?"

"ऊमर, आम्था, अर माथो तीनू ही तीजै स्टेज मे है बीरा, अबै बण पार्टी-वरनो से'र पचवरगो टावरा सागै आपरी एक नुई जातरा सुरु करी है, थारो काळजो काढै, नी बधाणो चाईजै आपानै ?"

"निस्चै ही आ समझ थारी टाळवीं है, गाव रै हित सागै जुडती ।"

कचन बोली, "ओ स्वागत-सम्मान वैनजो, कोई समझै तो आगो नी, गाव रो है ओ तो, गौरव थारो कम, गाव रो जादा बधसी ईसू ।"

सुधा बी रै मू कानी देखती गदगद हुगी एकर । सोचै ही आ प्रतिभा जरूर चमकती वैगी ही, दीन-दुनिया रै आधै खूणा मे । या बोली, "पण ईं सागै थानै ही तो दौड-धूप मोकळी करणी पडसी ।"

"फरमावो, मी क्यो करस्या ?"

"ऐसी दौड-धूप तो आ करो कै सभापति पद खातर मोधो, दीपतो अर अनुभव रै आंग पकी कोई सपगण—आम चेतना सागै जुडती, दूसरी एक विसेस-सम्मान री जग्या, च्यार आंटा री धिरियाणी कोई, दे अर देख'र राजी हुवै इसी ।"

"बै म्हे टाळ करलेस्या ।"

"नी-नी करतां बाईगै-नीनमै रो थळ गो चाईजसी ईंमे ?"

सरमा बोली, "ओ भार म्हारै पर नाखो थे ।"

"गांव-हित मे देवण री कोड आवै जीनै ही तो सिर पर, नी आवै नो माग'र सू दीलो बगण री कोड आसानै नी—बिल्कुल ही नी ।"

"ठीक है, समझगी म्हे ।"

"पण ईं मोर्चै ठठ भी थानै खोलणा पडसी, एक नै सम्ह्ळो सू पैला, अर एक नै गाळा सू पछै ।"

"काईं ?"

"आ सभा बुलावण रो उद्देश्य काईं, या दोनां सुपातां री सगत री सागेर, सिरदारी री काल अर थांरी आज अर माथ नै आ सू दिस ? देकर

जावता, सगळा नै धनवाद।"

"पण म्हे तो आज ताई कदेई, इया अर इत्ती बड़ी भीड मे बोली ही नी, अडंगो ओ तावँ नी आयो जद हसड की री हुसी ?"

"हुंसड हुसी म्हारी पण थे तो इमी बोलस्यो कै सभा सगळी देवळी हुई थारै कानो देखसी अर लीन हुई सुणसी।"

"आ किया, बैनजी ?"

"बद कोटडी आपणी सभा-मडप, हू सभा अर थे वक्ता, फेर ताकडी मे काण क्यो ?"

"की थे ही तो बोलोला ?"

"हू की नी बोलू, म्हारी जीभ थे हो, हू तो सभा री लारली लैण मे बैठी सुणस्यू, जीवती रीन चालती देखस्यू।"

दो दिना बाद सभा हुगी, बा तीना रो सम्मान हुयो—बाजती ताळया मे। रूपा गोदारी सभापति अर जैंवाला वैद विसेस-मैंमान—ऊमर मे बण आधी सदी ओढ राखी है। खाली पढी-लिखी ही नी, सबै रै साग दुरण-आळी ही, बा बोली, "गाव रै लम्बै-जूनै इतियास मे आ पैली सभा हुई है—आपरै जात री। ई देखता हू सोचू हू, कै आपणै आज रै गाव रो बारैमासी पतझड अबै घणा दिन नी ठैरै, बी जाग्या बसन्त बापरसी वैगो ही।"

पत्र-पुष्प रो भार अण उठायो, अर ऊपर-सापर रो सगळो करमा।

आ दोना लुगायां नै इसी मूई सीख कण दी है, जिकै सू लाय रा पतगा बणता बारा घर बचग्या, लयदाद वानै अर बारै मात-पिता नै। "मुकदमा-बाजी बाया टीबी है, बा धीरै-धीरै परवार री चामडी चाट'र, बीनै खोखलो करदै।"

नथियै अर भोडियै री मावा सुमी में ही नी मावै ही। इसै माण री कल्पना वै ही नी, बारै माय री कोई ही नी करसकै ही कदेई। सूमतै बर्ग री पगरख्या री ठौड खडो हुवणआळो वै गरीबण्या, माव री अणमावती भीड मे ट्यां फूलमाळावा पैरमी, ट्यां हसता अर मुरगा ओढणा ओढसी, इतै लम्बै मोद नै वैगो-सो वै किया सावटे ? बारै माय री एक लम्बी लैण बानै देखै ही अर मूझती भीड सोचै ही, "देखो, मेघवाळपां रा भाग ?"

सिरदारी रा तो पग ही पूरा नी टिकै हा। सोचै ही देख काई धुडापो

सुधारचो है अण ? वीरी आंख्या ही भरी ही अर चेतना ही । भगणा सगळी सोचै ही, 'देखो दादी-सा रो दिन घिरचो है ?"

घरे आ'र, सुधा नै बा भर्राई आवाज में बोली, "बाई ।' सो बिरिया माग्या ही कोई बोदो पूर गेण में देवतो दोरो हुंतो मनै, बीनै लडा-लडा'र, कावळो, इक्कीस रिपिया, गळ में मैकतो माळा, रामायण री आ मोटी पोथी, बीरै धरण खातर बा रैळ अर म्हारै बैठण नै ओ ऊनो आसण । सन्तोसी-माता घर में काईं तै सों काळजै ही ला बैठाई म्हारै ।" थाख्यां मजळ ही बीरी—ईं सम्मान नै चेतै कर-कर ।

सुधा बोली, 'मा, ओ माण थारो नी ?"

वा बोली नी, पण सोच्यो 'तो' ? अर सुधा सामी देखती रही अण-समझ-सी ।

सुधा भळे बोली, "ओ माण है थारी लगन रो ।"

"हा बाई ।"

"बा थारै में सूती पड़ी ही जुगा सू, बेअर्थी हुयोड़ी, तू बीनै जगावण में सचेष्ट हुगी ।"

"तू जाणै बाई ।"

"पण ईं माण नै तू उगावै जद स्वाद है ईंरो ।"

"कियां उगाऊं, बता तू ?"

"इसी ही लगन तूं थारै आगै बैठतै बाळका में जगावै जद हुवै, थारै मी अघेड़ां में ही की ऊपर आवै लगन बा—चेष्टा कर इसी तू ।"

"म्हारी तरफ सू की कमी नी राखू ।"

"पण मा तू मान-अपमान अर हरख-सोघ रै पचड़े में मत पड, बानै राखण अर रूखाळन नै आपां कनै कठै टैम अर कठै जाग्यां, वै तो तू दीन-बधु नै सूप अर तू रह अछूती वा सू ।"

"भूल्योड़ा ही है बाई, पण जीवड़ो इसो ही बळै है नान्हों अर अध-पाव रो ठाव" अर फेर बा सोचै है कै जे—म्हारो रुं-रुं भोळै अर भूखै टाबरां खातर खर्च हुंतो सेस हुवै, जीवण री मौज अर बीरो माण जद ही है ।"

कचन-करमा केई वूढी-वडेरी सेठाण्या कनै गई, विसेस-मैमान रै आसण पर बैठावण खातर । एक बोली, "भंगणा अर ढैढण्या नै फूला री माळावा, क्यो और लुगायां खूटगी गाव मे ? क्यों माथं सूं चालो ए ?"

दूसरो बोली, "कळजुग रा चाळा देखो थे, हूं चालू बठै, हियो गाव गयोडो है म्हारो ।"

तीजी आंसू हो ऊपर कर बोली, "बार्या, थानै दोस नी, खंडै री पुन्याई खूटगी । '

कचन बोली, "दादी-मा, भंगी कोई, तळाव मे डूवतै वामण-वाणियै रै टावर नै जे काढले तो वीरो माण करणो चाईजै का नी ? माण तो काम रो हुवै है, मिनख रो नी ।"

"वाई, माथो खर्च करण री फुरसत म्हारै कनै नी, थानै आछी लागै ज्यू करो, हू वीनै मू करू, घर मे मनै रैणो नी ?"

कचन-करमा सम्मानित तो नी हुई, पण ई भागा-दौड़ मे वांरी जाण अर अपणायत रो दायरो झूपड़ी सू हेली ताई हुय्यो ।

" सभा री आ विसेसता रही कै अै तीनू लुगाया, कागद मे कोरी-सी देखती ही न रही, दो-दो मिट की बोली । माण ले 'र, कृतज्ञता नै ही पाछी प्रकासी ।

लारलै महीना जिकै होटां पर मुधा खातर विस उफण्या करतो बा ही होठां पर आज इमी उछळै ही, पण सरपच अर वीरा साथी भादवै रै आक-सा, वरसतै मे ही पीळीजै हा ।

10

दिन री वारै नेडी हुई हुसी, मुधा कोटडी मे बैठी को लिखै ही । जोर-जोर सू बोलती सिरदारी रो आवाज वीरै काना सूं अचाणचकी टकराई । वा वारै आई तो देखै है कै एक हाथ सू वण, एक बकरी रो कान झाल राख्यो है अर दूजै हाथ सू एक छोरी रो । बकरी रह-रह बोबाट करै अर

सागै कान छुडावण री चेप्टा ही । छोरी ही ऊं-ऊं करती वसवसीजै पण कान छुडावण री कोई चेप्टा नी करै । आठ-नव वरसा री है बा । एक डोकरी खड़ी है—सिरदारी आगै हाथ जोड्या । वण देख्यो, 'ओ काई तमासो है ? ठा तो करू,' बा ही आ पूगी अठै । डोकरी नानूडी नायकण ही अर छोरी बीरी पोती ।

नानू बोली, "सिरदारी बाई, बकरी किसी समझै है कै ओ नान्हो पीपळ चरणो चाईजै का नही, जिनावर ही तो ठैरी, मारलियो मूढो, कसूर माफ करो, आगै सारू ध्यान राखम्यू ।"

"पण बकरी नै कूटी कठै, झाली ही तो है, बा ई खातर कै धणी रै की आख हुवै अर छोरी रो ही कान ही तो झाल्यो है, खैच्यो कठै ?"

"बकरी तो बेसमझ है ही, इसी ही छोरी नै समझो ।"

"गळत बात है आ, छोरी नै बिसी ही किया समझू ? बिसी ही हुवै जद बकरी सागै आक अर बोरटी तो, नी चरै बा ?"

नानू सिरदारी सामो निरुत्तर-सी देखण लागगी ।

सिरदारी भळे बोली, "हियो थारो ऊधो हुग्यो, छोरी री भीड बोलता विचार ही नी आवै तनै, वरस ले'र धूड मे ही नाख्या ? बकरी ऊभी उजाड करै अर छोरी बैठी गट्टा खेलै—टीगरघा सागै, फेर ही बीनै की मत कहो; इसी दोरी लागै तो बकरी लारै तनै खुद आणो हो । बकरी जिसी ही टीगरी है तो, बीनै क्यो करी बकरी लारै ?"

मुधा ही बोली, "पीपळ अर काई दूजा पेड, बाता सू थोडा ही लागै है मा-सा ? ठा है थानै कित्ता दिन हुया है आ, बाळ-बिरवां री खेवट करता मा नै ? इसी चिंता अर लगन, अबार आम लुगाई आपरै टाबरां री ही नी राखै ।"

नानू सहमगी, बोली, "खेवट तो करै ही है बाईसा—टाबरा सू ही बेसी, धन है आनै ।"

सिरदारी बोली,' "इसी रीस आवै है तो सुणलै कान खोल'र, बकरी नै हूं घालम्यू फाटक, दो-च्यार रिपिया रो जूत लाग्या बिना तनै चेतो नी हुवै ।"

डोकरी बड़ी नरमाई सू बोली, "माईता, म्हारै कैणं रो मुतळब हो,

छोरी है बेसमझ ही, पण है थारी, कूटो-मारो हूं की नी बोलू। आज-आज गई करो तो, माईतपणो है थारो, आगै सारू हू चेतो राखस्यू।"

"चेतो तू धूड़ राखसी, आ बकरी परसू आई, नीमां रो नुकसाण करगी, बी दिन छोरी नै समझा 'र बात नै आई-गई करदी मैं, पण अण देख्यो बडो पोल है अठै तो, आज सागण सेरी मळे आ ढूकी आ तो। अबै ईनै डराऊं का डरूं ईं सू?"

"डरावो नी काईं करो? पण, आज-आज ईं नै एकर भळै बख्सो म्हारै कैणै सू, आइन्दै चूक हुवै तो म्हारो मायो अर थारी जूती।"

छाटी नाख्या पछै जगात चयारी, सिरदारी रो पारो एकदम ढळग्यो। छोरी अर बकरी दोनू ही छोड़दी बण। गई बै।

सिरदारी सुधा नै पीपळ दिखावती बोली, "देखी बाई, दोडी-दोडी जितै, दो पत्ता रो नास तो कर ही दियो बकरडी। काणी डाळी किसीक कोझी लागै? जी तो घणो ही बळै पण, किसो भास बाढीजै कीरो ही?"

"आगै सारू बा तो नी आवै, पण दूजै रो कांई भरोसो? फळसै रो ध्यान तो अत-पत आपानै ही राखणो पड़सी।"

"राखस्या नी काईं ओर करस्या बाई?" अर बा दूजै पेड़ां री देखभाळ मे लागगी। आ पेड़ा खातर बण केया सारी मायो लगालियो अर ओजू ही त्यार बैठी है लगावण नै। छोटै छोरां नै तो बा पालती ही दीसै, "छोरां, पीपळा रै कण ही हाथ लगायो तो [illegible] कूटै बिना नी छोडूली।" तो ही एक दिन दो छोरा दो पत्ता तोड़ लिया पीपाड़ी बणावण खातर। सगळै छोरा सामा बांरा कान खैंच्या बण।

सर्दी मे टाट अर खाइया ओढाए राखै बानै। छोटा-छोटा जाळीदार गट्टा है बारै तो ही कांटा भळे लगादिया बांरै बारकर। एकर कण ही कह दियो, 'भुवासा ऊंचा आवता पीपळ, हवा सागै नाचता-झूमता बडा सुहावणा लागै।" चिड़गी बा, बोली, "क्यारा लागै है, थुथकारो नाख, ऊगता नै ही नारंली निजर सू।" थुथकारो घलालियो। अबार थारमी री ताळ नैडा ऊंचा है बै।

सुधा बोली, "मा, केई पेड़ अंसकै और घरा आगै ही लगवावा?"

"लगवा भला ही थाई सेवट हुणी मुश्किल है।"

"लगाया पछै करसी ही कोई तो ?"

"तो लगवा ।"

"दो-एक पेड़ आपणै ही और लगावा ?"

"पेड ही लगावा अर लोगा सार्थं माथो ही ? म्हारी तो इत्ती सरधानी माई ।"

"इया मा, जुवा रै डर सू, गाभा थोड़ा ही नाखीजै है ?"

"तो जरूर लगा । पग-पीटो करस्या लावै आसी जिसो ।"

टाबरा री छुट्टी हुता ही, सिरदारी कोटड़ी में आ'र एक मंचली पर आडी हुगी । लार री लार, सुधा ही आ पूगी । बा बोली "मा, आज आ, बेटैमी सेज किया पकडी ?"

"काई बताऊं बाई, कमर मे जी निकळै है ।"

"आज ही निकळै है का दिन हुग्या निकळता ?"

"थोड़ी-घणी तो केई विरिया दूखै है, पण हूं धारूं नही, सोचलू पड़ी दूखै है, आपैही मिटसी । आज दोपारै पछै, बैठी तो रही, पण रही छाती रै जोर सू ही ।"

"छुट्टी रै दिन, इत्ती सायत ही दूखती हुसी ?"

"नी दूखै ।"

"ईंरो मोटो कारण एक समझ मे आयो म्हारै, बताऊ ?"

"माईत्राळी करसी ।"

"काठ, पत्थर अर लोह जिसै ठोस आसण पर लगातार बैठणो जवान रै हक मे ही नी पड़ै तो तू तो की बूढ़ी है । बियां बैठ्या पेट री वायु रूक'र गैस अर पेट री गड़बड सुरू करदै । लम्बी ताळ ताई सीधो बैठण रो अभ्यास आपानै नही, आ तू जाणै है ?"

"हा ।"

"अर झुक 'र बैठणै मे बड़ो घाटो ।"

"घाटो किया, बाई ?"

"छाती, रीढ अर कमर धीरै-धीरै सै रोगला हुवै ईं सू ।"

"तो एक जग्यां टिक'र बैठ्या विना, टाबरा नै पढ़ाईजै किया ?"

"नही बैठ्या, पढ़ाईजै तो और ही आछा ।"

"किया ?"

"छोरा कनै सू वचावै की तो एक-एक नै वंचावती आगै वध। लिखावै की तो बोलती चाल अर देखती चाल टाबरा कानी। छोरा मतै लिखता हुवै बतायोड़ो की तो ही क्लास मे फिरती-घिरती रह, पाटी खाली है की री ही तो घाळदै दो आक बी पर। ई सू पग, पेट अर कमर सै नीरोग रैमी थारा, हो, दो-च्यार दिन पैला-पैला अळकत तो की लखासी, फेर आदत पडी 'र पडी। बिया पाच-दस मिट बैठै तो सौगन थोड़ी ही टूटै है थारी, बैठ भला ही जीसोरै सू।"

"आ तरकीब तो ठीक बताई तै, इया ही करस्यू अवै।"

"सागै टाबरा नै हो सिखा सीधो बैठणो।"

"जरूर बाई, वां खातर तो खेल ही है सगळो।"

अर इत्तै कण ही आवाज दी "सिरदारी भुवाजी मांय है काई ?"

सुधा बोली "मा कोई हलकारो आयो दीसै है, सुणीज्यो' क नीं ?"

"नी तो।"

सान्तड़ी थळी रै बारलै पामै बैठी, अखबार काढै ही आड्यां मांकर, आवाज सुणतां ही पून चीसती, आवाज री दिस में बघगी। ईनै देखतां ही आदमी बोल्यो, "बाई, भुवाजी माय है ?"

"हा", सान्तड़ी बोली।

"बारै भेजोनी एकर, कहदेया गोकळियो अर बीरी बहू आया है।"

सान्तड़ी जिया ही केयो सिरदारी नै, बा कमर पर हाथ दे'र उठती बरामदै कानी टुरपडी, बोली, "पेमी रो बेटो है बाई।"

दो दिना पैला, सुधा अर सिरदारी ईरै घरे गई ही बतळावण करण नै। केई लुगाया बी वेळा आई ही पेमा नै 'हर रो हिंडोळो' अर हरजस गावती। अबार आरो आणो सुण्यो तो बीरी जिज्ञासा ही की जागगी बा ही मा रै लारोलार बरामदै कानी टुरपडी।

सिरदारी नै देखता ही, धणी-बहू दोनूं खडा हुग्या एकर। बा बोली, "बैठ भाई बैठ", बारै बैठना ही सिरदारी भळे बोली, "गोकळ, ई लेखै तो भाई, पेमी बडो भागण हो। एक ही तो तू बेटो बीरै, बहू-बेटै रै हाथां मे गई याता करती-करती, न भोगो न दुख पाई, इसी सौरी मौत पुन बिना

थोडी ही मिलै है ? खेती आपरी जिसी खड़ी करी, बिसी री बिसी छोडगी हरी भरी, पान ही भळे खांडो नी हुयो। हीड़ो आछो करदियो थे, बीरै आसीस सू फूलस्यो-फळस्यो भाई।"

"एक फर्ज तो म्हारै सू ताबै आयो जिसो बजादियो भुवासा, पण पहाड़-सो मोटो एक ओज्यू ही बाकी पड़्यो है। गाव में की आस लागी, बडै-बडै सगळै फिर लियो, पण सगळा हाथ झडका दिया। आज अबै आपरै हाथ मे है। फासी सू कढावो कियां ही, गुण जीऊ जितै नी भूलू—पइसा देस्यू दूध में धो-धो।"

बीरी बहू ही बोली, "भुवासा, पराए माडे में बैठी हू, झूठ बोलू तो खोटा भुगतू। सगळै, कोरो उत्तर मिल्यां पछै, तीन दिन हुग्या, न रात नै नींद आवै, अर न स्वादसर टुकडो ही कठा उतरै। खाली एक ही चिंता है कै, फासी आ किया निकळै, अर नाक गवाडी रो किया राखीजै ?"

सिरदारी बोली, "दाय तो ही कह, हूं समझगी थारी बात पण देख, न तो म्हारै कनै अगाणै-पगाणै अणूती रकम कोई, न अबै कीरै ही लारै फिरण री पौच अर न पैला दाई कीरो ही गळो पकडन रो पुरसार्थ।"

"महीनै रा महीनै, ब्याज रा पइसा धरे आ'र पुगाऊ तो असल री कैया, नी तो कैया फिरती नाई है मावड़ती मनै।"

"देख, जाद लम्बी-चौडी हूं नी जाणू, कनै की अडाणगत है तो बोल ?"

"अडाणगत में तो म्हारी काया है भुवाजी, बा राखलो भला ही ?"

"काया तो म्हारली ही नी सभै म्हारै सू; कदेई कमर जरू तो कदेई गोडा, थारली भळै राखलू, नेतो गाव गयोड़ो है म्हारो ?"

"भुवासा—" बीनै पूरी बोलण ही नी दी, सिरदारी बोली, "भुवासा ही भुवासा है, आपणै तो साची कैणों अर सुखी रैणों, बिना अडाणै हू तो राती पाई ही नो दू", कह'र वा टुरगी, आपरी कोटड़ी कानी।

नुधा आरी बात बडै ध्यान सू सुणी ही, पण इत्ती ताळ बण थारी बात बिचाळै होठ आसरा नी खोल्या। अबै बोली वा, "गोकळ री बहू, थारी बात नै की हूं ही समझो चाऊं।"

"बाईसा, माजी रामसरण हुग्या, आपनै ठा ही है ?"

"हां।"

"मरी तो माजी मरी है, लारै म्हे सगळा तो जीवता हा ?"

"हां ।"

"भाई-बिरादरी मे सिर ऊचो कर'र बसणो चावां का नी ?"

"हा ।"

"तो थारै लारै लप गूघरी खिडावा का नही ?"

"सावळ समझा ?"

"की औसर करणो चावा, बारै लारै ।"

"औसर मे काई करू चावो ?"

"सीरो-चिणा का बूदी-पकौड़ी ।"

"आमे किताक रिपिया लागै अंदाजै ?"

"डोढ हजार नैड़ा तो सझझो ही ।"

"ढाई-तीन रिपिया सैकडै सू, डोढ हजार रो चाळीस-पैताळीस तो ब्याज ही हुयो महीनै रो महीनै ।"

"हुवै बो तो देणों ही पड़ै ।"

"अर औसर नी करो तो ?

"तो नाक जावै ।"

"नाक जावै इसो काईं थे महाखोटो काम करदियो ?"

"माईतां लारै धूड़ उडै जद, नाक नै आग्या कठै ?"

"को करै ही जे साव ही सरतर नीं हुवै तो ?"

"और नही तो घर तो हुवै ही ।"

"औसर खातर, बेचदो बोनै हो ?"

"और कोई उपाव नही तो बेचणों ही पड़ै ।"

"थारै पर ही लै, थे पछै वसो कठै ?"

"गोरवै की सरकी नीचै ।"

"सैंसी-सांटियां दांई ?"

"टैम तो कियां ही काटणो ही पड़ै ।"

"कसूर तो थे करो जाण-बूझ'र अर भोगै अबोध टाबर ? क्यां दादी इसो काईं श्राप दे'र गई है बांनै का मा-बाप पागल है थारा ? हू, इसै औसर रै पख में नही, छोड ओ विचार ।"

"बाईसा, आपनै तो इसै मौकै की मदद करणी चाईजै म्हारी ।"

"मदद आ ही है कै, हूं थारी इं भुवासा नै हाथ जोड'र अर्ज करस्यूं कै थानै बा इं लेखै नुवो पइसो ही नी दे ।"

"बाईसा, आप सन्तोसी-माता रा अवतार, आपरै मूढै आ बात ओपै ?"

"तो आ ओपै म्हारै मूढै कै थे टापरो बेच'र, टँम काटो काजरा दाई की सरकी नीचै ? आ ओपै है म्हारै मूढै कै थे थारै अबोध टाबरा रै पेटा पर लाता मारो आधा हु'र ? काई ई खातर ही जण्या हा बानै ? काई इं खातर ही थाळी बजाई ही वा खातर ?"

"तो आप फरमावो काई करां ? करणो तो तावै नी आवै अर नी किया नाक जावै ?" वा बडी उदासी सू बोली ।

"कित्ता दिन घटै है ओसर आडा ?"

"च्यार दिन ।"

"काल सिंझ्या हूं आऊ हूं थारै घर कानी, फेर कैस्यू थानै की ।"

"ठीक ।" अर गया वै धणी-बहू दोनू ।

सुधा, मा कनै आई, बोली, "मा, ओजू ही समझी नही तू, औसर खातर रिपिया देवै अडाणै पर ? मूळ काटै अर पत्ता सीचै ?"

"आज ताई तो दिया बाई—तावै आया ज्यू, अबै नी दू थारै जचगी तो ।"

"मा, दिन ऊगता ही जिकै रा भूखा टाबर, हाडी खुरच-खुरच'र खावै, पाळै मे ही जिका रा डील अध उघाड़ा, ओढण नै पूरा गूदड नही, चूल्है आगै जिकै रै चकळो-चीपियो नही, न चाकी-चौको, एक आधै झूपडै मे काई ठा किया रात काटै, बानै खाली टंक, दो टंकरै खटपटै खातर डोढ हजार रिपिया ? वानै अंधविश्वास रै अजगर सू बचाणा । कुअै मे नहीं नाखणा, समझो ।"

लुगाया सिंझ्या, रोज आवै ज्यू ही आई, धाई-धूडी अर नथियै-मोडियै री मा समेत । छोटी-मोटी सै, चाळीस नैडी हुवैली, औसत सू पाच-सात जादा ही । प्रार्थना हुगी, सै बैठगी । सुधा बोली, "तो करा काम सुरू ?"

"हा करो बाईसा", मोकळी ही आवाजां एकै सागै निकळी ।

"आज तो एक सवाल पूछण री जी मे है ?"

"जरूर पूछो।"

"ठा करू थारो, सूती हो'क जागती ?"

"करो नही क्यो ?"

"तो सुणो ध्यान सू फेर। समझलो आपणै मे ही एक परवार है। जीव धीमे आठ-नव पण झूपडो एक ही। वो ही बूढो अर बेमार। धणी-बहू दो कमाऊ। दिनभर खटै फेर ही न पूरो पेट भराई पार पडै, अर न पूरो पूर-पल्लो ही सरै। कोई-कोई टैम तो चूल्हो दिनभर मे एकर ही जगै। परवार री बूढी मालकण मरगी। बेटो-बहू औसर करणो चावै, डौढ हजार रैदा खर्च कर'र। पण गाव मे वानै की हालै हो, न रकम ही उधार मिलै अर न चीज-वस्त ही। झूपडै रा वानै डौढ हजार कोई दै नही, अर वाया वारी अडाणै कोई लै नही। फेर ही औसर करण री चिता में, धणी-बहू नै न पूरी नीद आवै अर न सावळ रोटी भावै, दिन सूकै, रात नै वो सू जादा। सुणली बात ?"

"हा।" सगळी आवाजा भेळी हुई फूटी।

"तो बताओ ओ परवार सुख रा सास किया लेवै ? है उपाव कोई ?"

एक जणी बोली, "औसर करै ही नही तो ?"

सुधा बोली, "नही किया न भाईपो ही राजी हुयो अर न वै धणी-बहू ही, सोरा-सास कठै आया वानै ?" सगळी ही मोन हुगी।

मळै बोली सुधा, "और सोचो, साप ही मरै अर लाठी ही नी टूटै, मनै भरोसो है, जागती हो थे।"

फेर बोली एक जणी, "औसर बारै दिना में ही हुणों जरूरी थोडो ही है ? आगै हाथ फुरै कदेई, जद ही सही।"

"कद हाथ फुरै अर कद औसर हुवै ? इंसू न भाईपै री चक-चक ही रुकै अर न धणी वहू रो असतोस ही।" मौन और गैरो हुग्यो, पण जादा देर नही।

धाई काईताळ सू सोचै ही, वा बोली, "जबाव इंरो हू बताऊ बाईसा ?"

"बता, आधै नै तो दो आख्यां ही चाईजै।"

"औसर करै तो भाईपै नै जिमावण खातर ही है नी ?"

"हा।"

"भाईपै नै रसोई कित्ती कराणी, आ तै भी पांच भाई मिल'र ही करै—अगलै रै घरे बैठ'र ?"

"हा।"

"वै सगळा जे दिना पैला हो, हाथ जोड़'र, अगलै रै काना मे घालदै कै वीरा म्हारा, थारै हर दुख-दर्द मे म्हे सगळा थारै सागै पण औसर मे बिल्कुल ही नही। अगलो अर्ज करै कै औसर आजताईं तो थे सगळा रै जीम्या, खाली म्हारी वेळा ही इनकार, किया ? उत्तर मिलै कै ईंरो आज ताईं रो सगळो नफो-नुकसाण म्हे फळावट कर'र आना-पाई समेत देख लियो, अबै सूझती आव्या, न तो म्हे कुवै मे पडा, अर बस-पडता न म्हारै की भाई नैं ही पडन दा।"

सुधा रै उडीकतै चैरै पर, उल्लास वैरीजग्यो एकर, वा बोली, "क्यों माया-बाया, ओ जवाब थानै, जचतो अर जागतो लाग्यो'क नी ?"

"एकदम फिटोफिट", रळता-मिलता सुर ऊपर उठ्या।

"पण भाईपै नै सूझ-बूझ री इसी एकट मे बांधण नै मोरचाबंदी रो की तप तो तपणो ही पडै ?"

"साचा बाईसा, साचा थे, साव सीधी आगळी घी निकळन री रीत ही काई ?"

सुधा फेर, पेमी रै परवार रो पूरो पाठ बारै आगै बांच्यो। केई बोली, "दाय तो ही बाचो, म्हे तो आपरी बात सुणतां ही समझगी ही कै ओ इसारो कठै है ?"

"और जागतो कीनै कहीजै है ?"

धूडी-धाई बोली, "संको ही मत बाईसा, चाळीसेक तो म्हे जीवती-जागती बैठी हां थारै आगै हो, घटै है एकाधी कोई तो और सोध लेस्या, काल दिनूगै ही लो थे, एक जुट अर एक नैचै मे बंध, पैलां जावा गोकळ रै परे, पछै भेजा पचा नै।"

"पचा कान नी दिया तो ?"

"नी दै, म्हे कांई संग्रियो देवा हां वानै ? जीमण रै नातै न म्हे जावा अर न म्हारै जाव नै जावण दा, मोटघार म्हारै ऊपर कर जीमण जावै,

क्यों चेतो थारो परणनैं गयोड़ो है ?"

केई और बोली, "बाईसा, आ तो ठाई है, आज सुमां तो काल हमां, मगळा नैं काढणी है, मोड़ी-वैगी, फायदो मगळा रो है ईं में तो? कूट छावता कदेई तो बद हुवा'क नी ?"

आं रै आत्मविश्वास रा अै बोल सुण, सुधा रो उत्साह दूणीजग्यो अर आमा बीरी चौगुणीजगी । वा बोली, "टूटतै नैं सांधणो समाज रो पैलो फर्ज है पण मूतै समाज रो नहीं, जागतै रो । सुणनो में आवै है कै आगै आपणै अठै केई गाव-ढैंढ़ा इसा भी हुया करता कै वैं आपरै मुवैं बसतै भाई नैं, पांच-पांच, दस-दस ईंटा अर एक-एक रिपियो घर दीठ देंवता । ईंटां सू तो घड़ो करलेंतो आपरो घर अर रिपियां सू चलांवतो आपरी एकर री आजीविका । आवतै नैं ही, आपरै बराबर रो करलेंवता भाई सै !"

सिरदारी बोली, "साची है बाई, इसैं गाव-ढैंढ़ा रा डगळिया ओजू जियैं है, मैं देख्या है केई जाग्या ।"

खाला सुर मतैं ही ऊपर उठग्या, "लखदाद तो बाईसा, बां भायां नैं है, अबार तो भाई मरै है आपसी ईसकै सू, धाया ही नी धापै एक-दूसरै नैं ।"

सुधा बोली, "ठीक है, पण आपानै तो सुधारणो 'आज' नैं है ।" पछै'र गई वै ।

अगलै दिन सिरूया, सुधा गई गोकळ री बहू कनैं । बोली, "बोल, रिपियां रो इंतजाम कराऊ दोरो-सोरो कठै ही ?"

"करावो बाईसा, पण रिपिया लै'र जिमास्यू काय नैं ? भायां तो औसर रो किरनां हो काट दियो ।"

"तो थारो ईंमें काई दोस ? ईं सू थारी सोभा नैं तो आच नी आई कठै ही ?"

"नही बाईसा, थारै धर्मं सू म्हारी सोभा नैं क्यो आवती ? म्है तो हाथ जोड़-जोड़ जीमण रा न्यौरा काढलिया, पण सगळा रै मूंडै एक ही सुरसती आ बैठी कै न तो म्है औसर करां अर न जीमां । न्यात ही छुग्या म्है तो. साची पूछो तो—औसर रा खड़का ही कठै हा म्हां कनैं ?"

"दूध अर दुहारी दोनू ही बचग्या, मगळां नैं ही लाभ है ईंमें", कह'र

सुधा वीरै सामो देख्यो। आत्मगौरव अर निश्चितता बीरै चेरै रै पाणी पर तिरता छाना ही नी मावै हा।

11

होळी आई अर गई; अर जावती-जांवती हरिजन बस्ती पर की भय अर विषाद बिखेरगी। पण सागै, हिम्मत अर आसा रो एक अध्याव ही जोडगी—वीरै बणतै-बधतै इतियास मे। होळी सू एकदिन पैला, दो सडकछाप टीगरा, भंवरी सू छेडखानी करली। सूरज आथूणी क्षितिज ढळतो, आपरै घर मे बड अदीठ हुग्यो। बीनै वै टीगर ही पडतै अधेरै रो, नाजायज फायदो उठावता, अदीठ हुग्या, कीनै ही। भवरी बिचारी रा पग भारी हा पाच महीनां सू। न भागै जिसी फुर्ती अर न सामनों करै जिसी शक्ति। सागै एक छोरी ही सात-आठ बरसा री। गाव मे सू, घर कानी आवै ही। चूठियो बोढग्यो कोई टींगर। गाळ काढण मे पाछ वण ही नी राखी, पाच-सात लुगायां अर टाबर भेळा तो हुया पण 'कुण हा', 'कुण हा' कर'र बिखरग्या। एक-दो लुगाया पूछ्यो, "है ए बीनणी, साप-खाधा, कठै बोढयो चूठियो, दोरो तो नी बोढयो? बुग्गी नी झाली बारी?" आ सवाला री अणचाही सहानुभूति ओढती, वा आपरै घरे आ पूगी।

चर्चा दो-च्यार घड़ी तो गर्मी पकडै राखी, फेर कजळाईजतै खीरै-सी धीरै-धीरै बुझगी पण भंवरी सुलगती रही—बरसती रही। बा सुधा कनै आई, रो-रो गळै ही, चीणी री भीगती पुतळी-सी। बोली, "बैनजी, चोलतै गाव अर चालतै रस्तै इया हरकत करै कोई तो बठै बसेपो किया हुवै? तुळी नी लागै इसै गाव रै?"

सुधा समझाई, "स्याणी है तू, जीवण लम्बो है, गुरू ही हुयो है ओजू तो, अर तू अबार ही फीसै है, तो वो कद सधसी, कियां निभसी? न रोया निभै अर न गाव रै तुळी लगायां। समस्या रोया नी, हळ हुसी वा, पग रोप्यां। मिंट-दो मिंट ही सही, वणै तो बाघण बण, गादडी कांई, अर

मूकी ही नी, बीमू पैला ही, विसो ही दूजो खत लिखीजणों और सुरु हुयो।

जेठ-असाढ मूका गया, पण किसाना नै चिगा-चिगा'र । बारा बाळजा सूकणै पड्या । बाजरी री साख तो गई ही समझो । सावण लागतां, पाच-पाच, सात-सात, आगळ ही धरती भीगी, तो ही लोगा ऊपरलै री आस पर मोठ अर गवार बीज दिया । नागोरण चाली तीन दिन, रात-दिन एकसी, ऊमरा घणखरा बराबर हुग्या । भादवो लागग्यो, आभै मू टोपो ही नी पड्यो । गरीब सोचै हा मण-दाणा घर मे पड्या सुहाया नी, रामजी नै, रेत मे रळा'र अळगा हुया । आधै भादवै दस-बारै आगळ छंटवारो भळै हुयो, उठनी फळायणा दीवै च्यारा कानी । एक दाणै रा सैस दाणा हुवै, किसान मू रहीजै फेर, की मोठ-गवार भळै नाख्या लोगा कदास ही पण नी छूटै सो । कनै नी हा वा माथै-चोटी कर'र ही तरळो कियो ।

भग्या ही, आपणै वाडी एकर नी, दूसर बीजी । वाड-नराई ही किया । पैराडा मावा याद आवै हा । धान अध-अध खिलान नैडो ऊचो उठग्यो, पण तिम मरतो किताक दिन काढै ? घणखरा रं बैठग्यो, केया रै जमीन ठढी ही, बठै ओजू ही खडो हो ग्रासो-मळो । सराध लागग्या । सोला दो ही दिन बाज्या, लोग आप-आपरै घरे आ बैठा ।

मुश्किल मिनखा नै ही हुई, पण घणी मुश्किल हुई धन नै । सावण मे धरती फूट'र घास-फूस री जडा आगळ-आगळ ऊपर आई हुसी, एवड तो होट भळै हिलाया पाच-सात दिन पण गाय-भैंस्या रै पल्लै, तिणा पाव भर रैन अध कीलो । मोटी बीमारी बारै आ, कै लीलै री बास करता बां, सूकै रै मू लगाणो और छोड दियो । पेट मे भूखा, अग लीलै री हर जादा । अठै-नी, की और आगै, बठै पूगै पण बठै टण-टण गोपाळ, भळै सोचै की और आगै, इयां करता ढागरा दो कोस जा पूगै पण, चरै काई, जडा मू मे ही नी आवै, भूखा अर पत्योड़ा, रो-रो घर लेवै । आंध्या री वाडा सारै; आगुवा गी आल मे चिप-चिप रेत चैठै । रेन मू ढेरा और सुरु हुग्या बानै, पेट चिपग्या, पांसळ्या निकळगी, गाव मरधा टूट हुग्या थै । किता ही बैसकै पडग्या, अर जिना ही गया आमीनै । गाव रै मैसी रै मजगार घोगो चाल पड्यो ।

सुधा री गाव ही बीमार पडगी । गोडी इपनो भर ही गई, ढेरा सुरु हुग्या, वं ही भळै सोरीटाण । घरे राळ्गी बीनै । कूटवी बाजरी अर की

छाछ, दिया बीनै। दो-एक बिरिया फोगलो ही दियो छाछ मे, पण छाछ कठै ? अध कीलो दूध ला'र जमावती, खुद नैं तो, दूध होठा रै लगाया दिन हुग्या खासा। पाच-छव दिन, सेवा करण मे, पाछ नी राखी वण। करमा आपरै अठै सू एक लाद कुत्तर नखवाई। बोली, "पइसा नी लू बैनजी कुत्तर म्हारै घर री है।"

सुधा बोली, "पइसा, म्हारै कनै है जद क्यो नी लैं थाई ? एक टैम इसी ही आसकै है, जद पइसो ही नी हुवै म्हारी जेब मे, अबार मुफत लियोड़ी नैं, बी वेळा, कैवता ही सरम आवै मनैं, का नी ?"

"ई मे सरम क्यारी है बैनजी ?"

"देवणियै नै नी लेवणियै नै।"

"तो थे म्हारै सू पढाई रा किसा पइसा लेवो हो ?"

"कुत्तर ठोम चीज है, तोल है बीरो, भार है बी मे, विद्या मे इसी कोई बात नी। बा तो खरचै जिती ही बधै। कुत्तर थारी खर्च हुवै ज्यू-ज्यू बधती हुवै तो एक क्यो, दो लाद नांखदै ?" करमां सुधा कानी निरुत्तर-सी देखण लागगी।

सुधा बीरै दुविधायै चैरै कानी देखती भळे बोली, "बहनडी, थारै कनैं सू लेवण रै मौकै नैं मैं गमा थोडो ही दियो, सकडीजै क्यों इत्ती, आपां कायम हा जितै, लेणो-देणों ही कायम है आपणों।" पइसा बण चुकादिया।

गाय रै तो जी सू झगडी लाग्योडो हो औटाळ पडी, सास खैंचीजता लेवै। कुत्तर कीलो-डौढ कीलो, एक छाबडकी मे घाल'र धरी मू कनै, बीनै सूघणो तो दूर, देखै ही कुण ? बेघती अर बेवस निजर सू वा धिरियाणी कानी देखै कदेई, अर कदेई आख्या मीचलै अर्धमिट। मूढै मे ही पाणी अर आख्यां मे ही। एक पाणी बीमारी रो पडै, दूमरो हेत रो, पण बस बीरो दोना पर ही नही। गाय दुखी अर सुधा उदास। जीवण अर मरण विचाळै जूझती छेकट वण पीजरो छोड दियो। बचग्यो खाली मा-वारो टोघडियो। सुधा री उदासी और गैरीजगी।

सिरदारी बोली, "टोघडियै नै बाई, बरामदै मे ले चाला एकर ?"

"क्यो ?" बा बोली।

"आपरी मा नै, उठाईजती देखनी ओ, तो ममता ईरी बडी तड़भड़सी

एकर।" बांधदियो टोघड़ियैं नैं बरामदैं मे—गाय नी उठी जितै ताईं।

टोघडियो दो दिन ताईं न पूरो चरचो अर न पूरो पियो। मा नैं चितारतो ईनैं-बीनैं आख्या तीखी-निजर फाडतो, खाली खूटै कानी विमेस। सुधा, दिन-रात में पाच-सात विरिया बीनैं सभाळती, हाथ फेरती वीं पर, दिनूगैं-सिझ्या रोटचा रा टुकडा ही देंवती बीनैं। हफ्तै भर बाद, बीरो ढाक ही कम पडगी अर झाक ही। सुधा कानी चितारतो कदे-कणास, बीरो बूकियो चाट लेंतो, जाणू आत्मीयता अर आसरैं री दिस सूझगी हुवैं बीनैं। सुधा री धिसकती आस नैं विश्वास री एक टग मिलगी।

मिन्नी रो आणो अर छोके रो टूटणो, सुधा रै आवतै ही भंग्या रैं जमानो हाथ लाग्यो तो इसो कै बीरैं जस री डुगडुगी जोरा सू बाज उठी पण चानणी राता रोज कठै, आ ठा सुधा नै अबै लागी। तृण-काळ, डागरा, दो दिन ही दात-रूगड़ सावळ क्यो करलै? सुधा उदास हुगी, आप खातर नी, वीन वणाया बा खातर। सोचै ही वा, कै टाबरां नैं तो उठता ही पैला चाईजै रोटी, बूढै-बडेरा नैं सेवा अर सेवा री सामग्री अर जवाना नैं मजूरी। मजूरी मूळ है, बाकी सै बीरैं सारै। पढाई-लिखाई ही पछै, पेट भराई पैला। समस्या सौ, समाधान एक रो ही नही। बार-तिवार गांव सू छीदो-माड़ो की मिलतो, बीरो रैयो-सैयो किन्नों सिरदारी काटदियो होळी पर। गाव मे नगद खरचतो आदमी, भग्या नै तो गारै-गोबर ही नी लगाणो चावै, अबै? रमायै रो नांव तो गयो, रोवायै रो तो सामो पड़यो है। भग्यां मे ही मायं-बिचाळै केई होठ हिलावै कै घर रा रैया न घाट रा, ईं भली आदमण रै कैंया-कैया पावडा दिया जद गाव सू और गया, कोई भाभी कह'र ही, नी बतळावै? अबै का तो गांव छोडो, अर का पग सूज'र मरो। दो-एक ढंग-डोकरचां मे कमजोरी अठै तांई कै आगै सू पीछो भनो, आपणो सागो धंधो करता नैं तो कोई नी रोकै? गाव अर आपणै बिचाळै खाई इत्ती ही तो है? गाव नैं आपणी जरूरत अर आपानैं गाव रीं, रोटी तो सेकी-सेकाई मिलसी।

भींत रैं ही कान हुवै है, सुधा तो समझदार ही, लिफाफो देख'र समचार पिछाणती, लखली बात नैं। वण मिंदर मे एक दिन सगळां नैं भेळा किया, बोली, "काळ पड़ चुक्यो का कसर है की?"

"कसर है अबै मरण री वैनजी," वैं निरास हुता बोल्या ।

"हाथ-पग नी साभस्यो तो वा ही पूरी हुज्यासी ।" एक पल रुक'र वा भळै बोली, "विरखा रामजी खीचली ?"

'खीचली जद ही तो रोणों है ।"

"पण हाथ-पग तो आपणा नी खीच्या वण, आ वीरी कम मैंर है कांई आपणैं पर ?"

"मैंर कम तो नी, पण हाथ हिलांवण नैं हीलो ही तो चाईजै की ?"

"हीलो न कदेई बन्द हुवै अर न बिरखा सागैं वरमैं वो ।

"काळ में म्हांनै तो की नीं दीखैं वैंनजी ?"

"अकाळ, बाढ, भूकंप, अर महामारी आदम्या नै रोवता-मरता देखण नीं आवै ?"

"तो ?"

"यै आवैं है बांरैं धीरज री परीक्षा लेंवण नैं, वैं आवैं है बारी लैंण अर लगन देखण, वैं जे बामे खरा उतरग्या तो बांरैं जीत रो सेवरो मतैं ही बंधैं। वैं ही थे, बा ही जमीन, अर वा ही अणअळसाई लालसा, भळे ही नीं मुळकसी आपणो संसार ।"

"किया मुळकसी, थे ही जाणो ?"

"लारैं दिन देख्या है, अैसकै बामू सवाया देखो थे, पण बैठा रै बाकै में, ठाकुरजी ही नी दार्वै ।"

"आप सीध करो, म्हारा मूढा बीनैं ही त्यार है ।"

"पैंला तो वाड़ी त्यार करो। मूळी, गाजर, मूदळी तोपस्यां, बीज मगा-मोडा है। एक-एक, दो-दो क्यारी आप-आपरैं घरां मे और लगावो, कीं बेचस्यां, की खास्यां, मौको पड़्यो तो आपां बडला, एक टैम जीम-जीम ही मुळकस्यां पण अळमावां नही ।"

"राजी हा ।"

"राज ही तो खोलै लो की काम ?"

"खोलैं ही लो ।"

"खोलसी तो आपां किसा टळस्यां, लारलै साल सोरा रैया'क दोरा ?"

"बडा सोरा ।"

"तो अबकै दोरा क्यो ? माता सामा बैठ'र सकळप करो कै मा, फळ तो थारै हाथ है अर मैनत म्हारै हाथ, वीमे सळ राखा कठै ही तो चोरा मे करै या म्हारै मे करै, हा, वो ध्यान जरूर राखै कै थारै बेटी-बेटा मऊ-मूत सिर पर ढोणो अब छोड दियो है, अर छोड दियो वो छोड ही दियो, थूक्योडो अबै नी चाटै बै।"

"थूकदियो वीनै थाईसा, हगिज नी चाटा।"

"क्यो चाटा ? समस्त री जमीन औरा जिसी ही तो आपणी है, ईं खातर औरा अर आपणै विचाळै न कोई भीत अर न कोई खाई। आपा सगळा एक ही मा रा बेटा-बेटी, एक मसालै सू, एक ही कारीगर रा घड़ा कियोड़ा। न कीरै ही दो मूढा अर न कीरै ही च्यार हाथ। मागै न कोई लावै अर न लेवै, सास सै आप-आपरा लेवै। फेर क्यो की सागै ही ईसको अर क्यो की सागै ही लडाई। आपा न कोई जुबै सू रोटी खावा अर न की जाळ-फरेब सू। नीरोग धधो करण रो अधिकार सगळा नै एकसो है। आ ही धरती री मनस्या है अर आ ही आपणी।"

सगळा मे नुई आसा अर नुवो बळ ऊपर आवै हा।

12

सुधा पूजा-पाठ कर'र, बस्तो सावटणो ही हो का कचन आवती दीखी। बस्तो एकै कानी धर'र, वा कचन नै बोली, "काल तो मजी रो दौरो कियां सुण्यो ?"

"आपनै कुण कैयो ?"

"थारी साथण करमो ही, और कुण कैवतो मनै ?"

"गई ही बैनजी, एकलो गो मा-बेटो दोनू, पण जाणो बडो मूघो पड्यो।"

"कियां ?"

"गई तो म्हे सात न्यौरा गुं अैम्बैसेडर मे ही, अर आई पग पोलतौ

उपाळी । हूं तो खैर की धारी नी, से-निकळी, पण, मा री सोच ओजू आवै हैं यक'र चूर-चूर हुगी बा तो ।"

"चढाई रो कोई साधन नी ढूकयो ?"

"उपाळो-सागो तो हो ही, एक छोरै रो वळध-गाडियो ही हो सागै, पण विचारै म्हा दोना नै कैयो ही हो, "बाई, थका गाडै मा-सा अर थे उपाळा क्यो ?" मा नै मैं घणो ही कैयो, "हू नी सही, पण तू तो बैठज्या गाडै पर, दो रिपिया लेमी वै दे-देम्या छोरै नै," पण वळध कानी देखती बा बोली, "बाई, वळध विचारै सू, खाली गाडो ही दोरो खीचीजै, देखैनी हाडा रै पीजरै काली, पग किया गिण-गिण आगीनै राखै है, हू भळे टगू ई पर, म्हारो किसो वैर है इं मागै ? चालू हूं, सगळा सागै धीरै-धीरै, दो-च्यार घडी मे इया किसो सास निकळै है म्हारो ?" छोरो बोल्यो, "थे चढलो मा-सा हू उपाळो चाल लेस्यू" मा, बोली "उपाळो चालसी तो तनै आसीस मिलसी लाडेसर, हू तो ईं पर आज चढू न काल ।" दरअसल बात आ ही वैनजी कै, वळध री जीवती-जागती उदास तस्वीर मारै काळजै मे उतरगी ही, बा नी चढी गाडै पर। दोरो-सोरो, घर नैडो तो पण लेलियो पण अबै सागी चाकै बा, तीन दिन ही नी आवै ।"

"गई मोटर मे अर आई उपाळी, मोटर खोटी हुगी ही काई ?"

"मोटर खोटी नी, खोटी तो म्हा मे हुई ।"

"तो इसी काई बात हुई ?"

"बात काई हुंवण नै ही संमार रो धारो ही, इसो ही है वैनजी, दोस देणो फालतू है कीनै ही ।"

"तो ही, साच तो की है ही ?"

"म्हारा सासु-सुसरो काल भोराभोर ही आया हा कार ले'र । पूजजी म्हाराज रो चोमासो मंडी मे है अैसकै । परवार रा च्यार जणा ओर ही आयोडा है म्हाराज-सा री सेवा मे । पाच-सात दिनां बाद केई दीक्षावां हुवणआळी है अठै । दीक्षा री पात मे मनै ही खडी कर, म्हारा सासु-सुसरो ही पुन अर प्रसिद्धि लूटणी चावै हा, अबार मू ही नी, म्हारै लिलाड री हींगळू पूछीजो वो दिन सू ही समझो आप । बात तो वा म्हारी मा रै कानां मे मू ही काढी एक-दो विरिया। मा न कोई हां ही भरी अर न कोई

विरोध ही कियो, कही था सुणली सैंज-भाव सू। अबार वां आवता ही मा, री प्रससा रा बडा पुळ बाध्या, इं खातर कै वीरैं लिलाड़ पर विरोध रो कोई सळ नी उभरैं। सम्बन्धा मे और घणेड दिखावण खातर बै बोल्या, "सगीजी-सा, आप अर बीनणी, आज दो-च्यार घड़ी तो पधारो गुरदेव रैं दरसण-लाभ मे। लोग तो हजारूं कोसा सू चला-चला'र आवै है, अर आप, घर आयो नाग न पूजिये, बमी पूजण जाय, हाथ पूगै जितै आतरै पर ही बैठ्या हो, फेर ही नीं जावो। मोटर आपनैं सूरज छिप्यां सू पैला ही पाछा अठै छोड देसी।" मा त्यार हुगी अर हू ही वीरैं सागै। म्हे दोनू बैठगी मोटर मे। बडै म्हाराज-सा रा दरसण किया, म्हारैं मुसरैं वारै सामनै म्हारी बडी सोभा बखाणी, घर रैं काम री नी, म्हारी वैराग-वृत्ति री।"

"बडा म्हाराज-सा ही तो फरमायो हुसी की ?"

"हा फरमायो नी कै, काईं ठा कित्तै-कित्तै भौवा रा पुन मिल'र एड़ै मारग उदै हुवै जद इं मारग कानी मू करै है कोई, मैंज काम थोडो ही है औ, खाडै री धार दौडणो है नी ?"

"फेर ?"

"पछी तीनेक घुलो अधिवेसन सुरु हुयो—बडै म्हाराज-सा री अध्यक्षता मे। केई जिग्यासु सवाल पूछै हा, अभ्यासी अर जाणकर संत केई, आप-आपरै ढग सू उत्तर देवै हा, गांठ कठै ही पूरी नी सुळझती दीसती, बठै होठ थोडा बडा-म्हाराज-सा ही खोल देवता।"

"एकाध संका-समाधान तो अबार ही ध्यान मे हुवैला थारै ?"

"जादा संका-समाधान तो बैनजी, तप-उपवास, का अगलै भौ सम्बन्धी ही हुवै हा। एक जणै पूछ्यो, "गुरुदेव ! मूळी-पालक अर गोभी-मूदळी जिसी सीलोती आपणै तो विसेस वर्जनीक बताईजै पण विग्यान तो वानै जीवणी सक्ति बता'र, वानै अरोगण पर जोर देवै, आप इंनैं को खुलासा करो तो बडी मैर हुवै ?" एक सन्त बोल्या, "सवाल सक्ति रो नी, सवाल है विवेक रो। सक्ति राबडी-रोटी मे किसी नी हुवै ? लम्बाई मे नी जा'र हूं इत्तो ही पूछू हूं कै मूळी-मूदळी की हुवै, सीलोती माय है तो चेतन ही ?"

"हा गुरुदेव, मोकळी आवाजां पडाळ मे गूजी।"

"चेतन है, जद, वानै सुख-दुख ही तो की हुतो हुसी ?"

"जरूर हुवै विज्ञान-सिद्ध है आ बात तो ।"

"जीवतै नै जाड नीचै दिया का ओग पर चढाया बो रोवै'क राजी हुवै ?"

"रोवै ही वो तो ।"

"तो अवै आप लोग ही पाप-पुन रो निरणै करलो । बच सकै बित्तो बचणो चाईजै । मूळी-गाजर, कीनै ही थे थारै कानी सू अभय कर सको तो करो, धर्म री आज्ञा तो आ है, विज्ञान री थे जाणो ।" आवाजां पंडाळ में बिखर उठी घणी हु'र, 'बहुत सुन्दर, बहुत बढिया, धन हो प्रभु,' इं ढग सू ही और-और संका-समाधान ही चलै हा ।

"फेर ?"

"मैं सोच्यो हू ही पूछू की पण की भीड रो सको अर की बोलण रो, टोकदी कणही तो जीभ फेर उथळीजणी ही ओखी, हंसड हुसी, सोचती रही पण, उठी नी ।"

"तो नी पूछ्यो फेर ?"

"फेर सोच्यो बैनजी, साधपणो जद लेवण नै ही सभगी सू तो होठ बद राख्या किया निभसी ? भीड बाघ तो नी जिकी बोलतां ही तनै मू मे घाल लेसी बा तो आत्मीयता री बिरादरी है अर मन्त सगळा रा हितू, अर हू किसी कीनै ही गाळ काढू हू, म्हारी सका अर दुविधा ही तो राखू गुरुदेव आगै—थोडो गणगौरां नै नही तो फेर कद ?"

सका सुण'र सन्त राजी अर समाधान सुण'र म्हारै सै विचारा री भीड सगळी । हिम्मत कर'र खडी हुगी हूं अर माईक कनै जा पूगी ।

सुधा रा होठ मतै ही खुलग्या, "बडो बढिया कियो, इसै मौकै तो पूछणो ही चाईजै ।"

"एकै कानी सन्त अर एकै कानी सत्यां बिचाळै, गुरुम्हाराज रो बिराजणो । सामनै आप-आपरी व्यवस्था मे श्रावक-श्राविकावां री भीड़ । सगळो विश्वास भेळो कर हाथ जोड़ती हूं बोली, '''हे महापुरुष गुरुदेव, पूजनीक सन्त-सत्यां अर माईत समान भीड़ सगळी । पढाई म्हारी फळमें तांई री ही है अर अनुभव एकदम आंगण तांई रो, कसूर हुवै माफ अर आप सगळा हुवो राजी तो होठ दो मिट हू ही खोलू ?"

"जरूर खोलो. आज नी तो फेर कद ?" मंडप में आवाजा गूंजी।

हू बोली, "म्हारी, साधपणों लेवण री इच्छा है पण बो मू पैला म्हारै माणस में केई सवाल उफण-उफण ऊचा आवै, उथळ-पुथळ सू स्यौ मानस नै दिस सावळ नी दीसै। ई भार सू पैला मुक्त हुज्याऊं तो म्हारो मानस नीरोग हू उठै, रस्तो म्हारो सोरो कटै अर आप सगळा नै जन मिलै।"

केई सन्त ऊची आवाज में, बोल्या, "साधु जीवण में असंतोस रो भार उतार'र ही प्रवेस करणो चाईजै, जरूर पूछो ?"

ई सू बडी मदद मिली मनै बोलण में।

"मन्त हिम्मत बधावै जद मदद तो मिलै ही।"

"हू बोली, गुरुदेव, साधपणों लियोड़ी नै मनै कोई भाई-बैन पूछलै कै माध्वीजी आपरै साधपणै सू देस अर समाज नै काई फायदो ? तो हू बानै उत्तर दू कै हू लोगानै उपदेस दू, तप-संयम री दिस बताऊं बानै, ई सू समाज सदाचारी बणै अर सदाचारी समाज सू देस बलवान, क्यों इया ही कहू का और की ?"

सन्त केई बोल्या, "बिल्कुल ठीक, इंया ही कैणों चाईजै। 'ठीक' कह'र गुरुदेव ही पुष्टि करदी. पाटी सू ढकयै होठां पर परसती मुस्कान तो मनै नी दीसी, पण बांरै चैरै रै पाणी में ऊंची उठती बा छांनी नी राई। सिर हिला-हिला कित्तै ही सन्ता समर्थन कियो, भीड़ रै घणकरै होठा पर ही नाच उठ्यो, "उत्तर सूझतो है।" म्हारो उत्साह और बधग्यो। हू फेर बोली, "अगलो फेर कैसो, जिकै समाज में इत्ता-इत्ता सन्त साध्वी, चोर, तस्कर, ब्लैकिया, अर मिलावटिया रो जाळ दिन-दिन बधै, मनघड़ नहीं, हकीकत है आ। सत्य, अस्तेय, अहिंसा, अपरिग्रह अर ब्रह्मचर्य सै बिलग्या अर उदास है। ईरो मुतळब है थारा उपदेस थोथा अर असरहीण है, हे पूजनीक सन्ता, अबै हू काई कह बांनै, दिस दो मनै; गुरुदेव ! सुधार बिद आप योतो तो और ही बढ़िया।" मिंट भर सभा में सन्नाटो पसरग्यो।

सुधा बीरै सू मार्थो देखै ही अवाक-सी।

बा फेर बोली, "हां-तो बैनजी, फेर महीन-महीन, आपसी चर्चा सुरू

हुवण लागगी, केई ऊंची पाघा मे सुळबुळाट हो कै, बैठावो क्योनी, ई अधै नैं, किसी मका पूछ'र न्याल करै है आ ? केई करै हा, नी-नी, पूछण दो विचारी नैं, पूछणो अधिकार है ईरो। आपमे की समळता-सा एक सन्त बोल्या कै, 'आ कहो बीनैं कै उपदेस दिया ही कोई कल्याण रो पथ नी पकड़ै तो अगलै री ममझ, पण म्हारै कल्याण मे तो मोळ नी, हू भी तो समाज रो ही एक अग हू, हू बोली मन्ना, अगलो कै'सी मनैं कै "साध्वीजी-मा, हाडे-गोडे आप नीरोग, ऊमर जवान, समझ सूझती फेर खुद रै कल्याण खातर आहार-पाणी नै घर-घर डोलता फिरो, काई ठा किसैं-किसैं तरीका सू कमायोडो अन्न हुवै बो, कुण जाणै किसैं-किसैं जागतै बुझतै भावा सू पोईजै-पुरसीजै बो ? ई लेणै मे न आपरी मैमा न आपरी मैनत री मैंक अर न ईमैं जागतै जुग री सहमति। अन्न अर मन, पाणी अर वाणी रो बडो गैरो सम्बन्ध हुवै, आप लोग ही तो फरमाया करो हो। दूजी आज री ई बावळी-उतावळी सदी मे, गाव-गाव विचरण मे काळमिस कोई पूछीज जावै कठै ही तो सिवा रोणै अर सरकार नैं ज्ञापन भैंजण रै ओर काई चारो है की कर्नै ही ? इसी केई अप्रिय घटनावा ईं सदी री आधी छात नीचै घटी है, तो फेर क्यों नी घट सकै ? आ हाला, आत्मकल्याण घरे रह'र कोई करै तो नी हुवै ? थारै सभव, बो घरमे क्यो नी ? सण्णाटो एकर भळे फैलग्यो।

घुस-फुस मे सुणीज्यो मनैं कै हुगी सकावा, बैठावो-बैठावो, पण जवान अर जागती चेतना किसी ही, ओर ऊची आई, "पूछणों गुनाह नी, बोलण दो, मन्ता रो दरबार है ओ।"

एक सन्त बोल्या, "पण कुतर्क रो कोई अन्त नी ?"

हू फेर बोली, "सन्ता, पूछणियै नैं हू तो, आपरै फरमाए मुजब, कुतर्क रो ही कह देमू, पण म्हारै कैया वो मन्तोम करलेसी कांईं ?"

फेर म्हारी बात सुणी-अणसुणी हुवण लागगी, भीड़ रो तर्क-वितर्क की ऊंचाई पकडन लागग्यो। ताळवो म्हारो की सूकै हो बैनजी, पण मैं टूटतै उत्साह नैं एकर ओर सांध्यो, बोली, "आप मनैं इत्तो समै दियो, म्हारी सकावा सुणी अर समझाई मनैं, हूं ईं मैर नैं वाणी मे नी बांध सकू, इतज्ञ हूं आप सगळां री। म्हारो इत्तो लाड राख्यो आप तो, सिर्फ दो मिट

री ओर मैर करो, हू भीड री ही माछली हूं, बीसूं बारै रह'र कोई जीवण री कल्पना नी करू ।"

युवा आवाजां एकर और जोर चढ़गी, "हां-हां कहो, दो मिट में अठै किसो ऐटम-बम पड़ै है ।"

उत्साह को थिर हुंतो लाग्यो मनैं हूं बोली, "गुरुदेव ! हूं चाऊं कै आप सगळा एक ही टोळै री सम्पत्ति नी बण'र, आखै राष्ट्र री बणो तो कित्तो राजी हुवै राष्ट्र आप पर, अर कित्तो ऊंचो पूगै म्हा सगळां रो उल्लास ? पण जिकै ही धर्म में, शस्त्र अर शास्त्रां में समन्वै नी, बीनै न प्रकृति स्वीकारै अर न पृथ्वी । हूं सोचू, ईं खातर आपरै मुखारविंद सूं धरती रै ओर-छोर 'राम' प्रसारित हुणो चाईजै, संको अर संकड़ाई छूट'र ।"

"अर महावीर ?" कित्ती ही गरमीजती आवाजां फूट पड़ी मंडप में ।

हू बोली, "महावीर सूं विरोध कीनै ? वै राम रो ही एक हाथ है अभै-बांटतो पण धरती नै चाईजै पूरो राम, दो हाथां रो, एक में अभै, दूसरै में धनुष, पूरो कृष्ण बंसी अर सुदर्शन लेतो । सूको ज्ञान सेवा न राष्ट्र री रक्षा हु सकै अर न बीरी समृद्धि री । पंजाब में खतरो तो भाग'र हरियाणै बड़ग्या, हरियाणै हुय्यो तो राजस्थान में पण राजस्थान में हुया कठै जावै कोई ? भागणो अभै नहीं, अभै आदमी नै करो, मूळी-मूदळी सूं दुनिया नै कोई खतरो नहीं, पा सूं आपेटी मळट लेसी बा ।"

"बैठो-बैठो, सीख उन्नाभणी बेजा है, बस…"बस, रैणदो आगै, लगाम राखो जीभ पर", घटी टण्णा उठी कैई बिरियां, फेर ही उगढ़ती-उगढ़ती, मैं कह दियो, "अै सवाल म्हारा निजू है, पण है सगळां रै हित में, अहित में बीरैं ही नहीं ।" पण ओ अधूरो निवेदन म्हारो, कण ही नी गुण्यो, बधनै रोळै रो अजगर गिटग्यो बीनै । म्हारो ताळवो सूकण लागग्यो, जीभ पड़न लागगी आडी अर एक अणचीती उदासी बधती लागी, म्हारै मंरै पर मनैं ।"

"उदासी बधनी क्यों ? थारै कैंवण रो मुतळब ओ ही तो हो नी कै, फूमतै-फळतै राष्ट्र नै चाईजै बारैमासी नैरां, ऊंचा बांध, विमान कळ-कारखाना, यातायात रो जाळ, सोनो उगळती धरती अर सतिगाड़ी

राज-व्यवस्था, अँ सँ एक हाथ है, विवेक अर आचरण री पूरी ऊंचाई ओ दूसरो, आ दोना रो समन्वँ भूगोल रो आदर्स—बीरी मनस्या ?"

"हां।"

"तो ईमें काई बेजा कही तँ कोनँ ही ? साच नँ नी सुणँ कोई तो, बो मरँ थोडो ही, बोलणो बंद थोड़ो ही हुवँ ? अनतमुखी है बो, काई ठा कित्तँ-कित्तँ होठा पर भळे नाच उठसी बो,-एकँ सागँ ? हा फेर आगँ ?"

"भीड फेर बिखरण लागगी। चर्चा आप-आपरँ ढग सू उछाळँ हा लोग।"

"एकाध तो थारँ काना रँ लवँ ही लागी हुसी ?"

"केई तो म्हारँ कनै ही, बखिया म्हारा ही उधेडँ हा कै, इसा जे दो-च्यार पुर्जा ही सब री मसीन मे आ लागँ तो बीरा चक्का जाम करदँ मिटा मे।

दो पावडा आगँ, कोई पडिताऊ प्रकृति रँ आदमी री आवाज सुणीजी, "उसने कोई, बेजा बात नही कही, धरती पर यदि जीवन की पूर्णता प्रसिष्ठित करनी है तो, मनुष्य का उपासना केन्द्र राम का आदर्श ही हो सकता है।"

इत्तँ सुसरो दीखग्या, मा, बोली, "मालका, पुगवावो तो दिन थकी याळी पर बैठलू थोडी।"

पारो की ऊंचाई पर हो बांरो, बै बोल्या, "हा, पुगवास्यू, सावळ जाया म्हारँ भरोसँ।"

मा होळै-सी बोली, "क्यों मालका ?"

'ओजूं ही भळे क्यों ?" सगै-परसंग्या री भीड मे माजनो तो म्हारो माटी करदियो अर सागँ आपरो ही। गुरुदेव कनँ जावण नैं, म्हारा तो पग ही नी उठँ, बैठें-सूतें ओ काई कर बैठो हूं ?"

"कर'र काई हत्या करदी आप ?"

"बात नैं अबै जादा मत बधावो थे, टुरो अठै सूं, म्हारी मोटर भरोसँ मन रैया।"

"तो इमँ माजनँ रा धणी म्हानँ लाया क्यो ?" मा की गरम हुंतो बोली।

"लायो म्हारै वडेरा रो नाव निकाळन नै ।"

' म्हानै काई ठा हो कै, हाथी रा खावण रा दात किसा ही अर दिखावण रा किसा ही ?" कह'र मा. टुरपडी ।

"तू को नी बोली ?" सुधा पूछ्यो ।

' बोलण री जी मे तो नी ही बैनजी पण फेर चुप रैणै मे ही बो लाभ-नी लाग्यो । टुरती टुरती मैं ही काना मे निचो नाखो कै इसो कूडो नाटक रचण रो कयों तो फोडो देख्यो आप अर क्यो म्हानै घाल्यो ? मनै न तो आप कनै सू कोई घाली लेणी अर न आपरै इं कुडकै मे पग राखणो । जिज्ञासा बस म्हाराजा नै मैं दो वात पूछली हाथ जोड़'र, तो किसो तो प्रलै हुगी अर काई आप सरमा मरग्या ? दिन-रात तस्करी करो बीसू आपरी सरम नै पून ही नी लागै ?" बडबडावता बा ही पूठ फोरली अर मैं ही ।

सुधा रो रू-रू मोटो हुग्यो, बीरी वात सुण'र नी, बीरी हिम्मत, सूझ-बूझ, बीरी कथनी री थापना अर बीरै पारदरसी विवेक नै निचार-विचार । गगाजळो विचार सेवतो, विना गिद्दी बैठो, एक अनूठो आचार्य बीमे जिदै । जद विसाल राष्ट्र री मुक्त धरती बीरी चेतना मे बसै तो बा टोळै री मायड़ी धरती क्यो सेवै ? बीरा दोनू हाथ कथन रै सिर पर अनायास ही, जा पूग्या. बा बोली, "बाई, समझ थारी निश्चै ही ऊंची अर धरती सागै जुडली. बीरी चौमुखी आसीस बरगसी थारै पर, अर मैं थारी बीमे धुप-धुप निथरती तर-तर । बो मा रै तै सी बेटी ही हुणी चाईजै ही ।" अध मिट रह'र, बा भळे बोली, "और तो हुई सो ठीक है, मा-सा रो रथ कांई रैयो ?"

"बो आप मा नै ही पूछ लेवा, मिलणो ही हुजासी अर पूछणो ही ।"

इसै करमां ही आ पूगी । पढाई सुरु हुई, दोनू ही बोली, ' बैनजी, सस्कृत नी दोरी है, अनुवाद म्हारै तो सावँ ही नी आयो ।"

"नी आयो हुसी पण सस्कृत नै दोरी तो थे ही बनाई. इं जिसी सोरी, अर पूरी-स्सरी भासा तो धरती पर ही कोई नी । अंग्रेजी किसी सोरी लागै ?"

' संस्कृत जिसी तो को सोरो ही लागी !"

"उत्तर देणं मूं पैलां थे सोच्यो ही नी, अर ईरो अनुभव ही नी थानैं। कोई ही भासा हुवै, लिखीजै वैं आखर वोलीजणा चाईजै का नी ?"

'नी क्यो, वोलीजणा ही चाईजै वैं तो।"

"अैन ओ, 'नो' अरके, अैन, [illegible] डवलू ही 'नो' कठै गयो 'के' अर कठै अर कठै गया 'ओ डवलू' ? कठै ही कै, कटै ही पी, कठै ही टी, अर इया ही और घणा ही लिखीजै तो सरी पण वोलीजै नी। पी, आर, आई कठै 'प्राइ' अर कठै ही 'प्रि', सागी आखरा मे उच्चारण भेद किया ? पी-यू-टी 'पुट' अर सी यू टी 'कट', कठै ही यू नै उ गिण लियो अर कठै ही दूध री माखी-सो काढ'र अळगो फैंक्यो, ओ काई ?"

वैं दोनू, वात नैं पियं ही सुधा कानी देखती।

वा भळै बोली, "सस्कृत अनुवाद मे लिख'र लाई हो थे, "अयम् पुरुष अस्ति", यह आदमी है, क्यो ?"

"हा।"

"अंग्रेजी मे यह खातर दिस हुवै है, दिस मैन, दिस वूमैन अर दिस बुक, मिनख, लुगाई अर जड पोथी सगळा एक दिस सू ही हाकीजै ?"

"हा।"

"हा आपेही, भडार मे तोडो है, आगै-लारै 'दिस' विचारो एकलो ही उबाम्या सेवतो दीखै, दूसरी दिस ही नो दीखै बीनै। ई मू तो आपणी राजस्थानी ही भलेरी, आदमी-लुगाई रो काण-कायदो को समझै, 'ओ आदमी अर आ लुगाई, एक 'दिस' री जाग्यां ओ अर आ दो, पण सस्कृत रो तो ठाठ ही न्यारो, बीरी तो छटा ही दूसरी। समाज अर शास्त्र मिनख, लुगाई री जिया अलग-अलग गरिमा राखै विया ही संस्कृत, स्त्री, पुरुष अर अपुरुषवाची शब्दा री। अयम् पुरुषः, इयम् स्त्री, अर इदम् पुस्तकम्। एक दिस री जाग्या अयम्, इयम् अर इदम तीन, गुड़-खळ एकै भाव नही। सिराज सारू टीका ओरै, विशेष्य रै उणियारै सारू विशेषण।"

"क्रिया वैनजी, खुलासा की सावळ करो।"

"यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि"। (काम जिका निरदोस है, सेवना वारो ही करणी चाईजै, दूसरा री नही।) कर्माणि अपुरुष वाचक बहुवचन अर विशेष्य है, क नी ?"

"हा है।"

"अर वीरा विशेषण ?"

"बिल्कुल वीरै अनुरूप ही।"

'वीन जिसी ही फूठरी जान किसीक फबै ? शब्दां खातर आ योजना रिसि लोगा जाणू समाज री सुघड़ व्यवस्था सू प्रेरित हू'र ही आपरै सांचा में ढाळी हुवै। एक सोरापण सस्कृत में और है, औरा मे यो नही।"

"बो काई बैनजी ?"

"राम गोज टू स्कूल नै थे, गोज स्कूल टू राम लिख सको हो काई ?"

"इया किया लिखीजै, गळत है औ तो।"

"पण सस्कृत मे रामः पाठशालाम् गच्छति नै थे आगै-लारै जचै जिया लिखो, सही है। उपसर्ग-प्रत्यया री मैमा ही अलग है, हार शब्द है, वीनै थे आहार, विहार, सहार, परिहार काई जरूरत मुजब रच्या ही जावो, काई छेड़ो है ? ढाचो थोड़ो समझ मे आणो चाईजै पर्यायवाच्या री काई ठिकाणो है सस्कृत मे, और भासावा मे वीरो, रिपियै मे पावली ही नी मिलै, काल थे याद करै ही—

हरि गरज्यो, हरि ऊपज्यो, हरि आयो हरि पास।
जद हरि हरि मे मे मिल्यो, तो हरि भयो उदास॥

इया कोई भासा मे नी। अठै तो विष्णु अर गोपाळ रा हजार-हजार नाव है—पूर्ण-खचूर्ण नी जगत्-प्रसिद्ध, इया ही और-और।" वै सामनै देखै ही।

बा भळे बोली, "उसे पढ़ना चाहिए रो काई हुयो अग्रेजी अनुवाद ?"

वै दोनू ही बोली, "ही सुड रीड।"

"अर सस्कृत मे ?"

एक दूजी नै देखती वै बोली, "आप ही फरमावो बैनजी ?"

"सः पठेत्।"

"हा।"

"गुड, 'रीड' आं दो री जग्या एक पठेत् सू ही काम निकळै तो अभिव्यक्ति री गूधी माड पर इवस भार क्या खातर ? दो री जाग्या एक हुयो

मोराई'क दोराई? "

"सोराई, आंधै नै ही दीसै है आ तो।"

"तो सस्कृत सू उवास्या किया लेवो हो थे ? अठै तो एक जमानो इसो हो कै भारी वेचणिया ही संस्कृत जाणता।"

बांनै अचंभो हुयो, बै बोली, "किया, समझाओ वैनजी ?"

परिया बैठी, सिरदारी अर सान्तडो ही कनै आ सिरकी।

सुधा बोली, "एक बूढो अर जरजर लकडहारो सिर पर लकडया री भारी लिया धीरै-धीरै राजधानी कानी आवै हो। रस्तै मे घोड़ै पर चढयो, राजा मिलग्यो बीनै। डोकरै नै एकै कानी उवाणो अर अधनागो, दूजै कानी दूबळो अर दोरो चालतो देख, दुखी हुतै राजा पूछ लियो, "भो वृद्ध ! भारः त्वाम् बाधति" (डोकरा ! ओ भार तनै दुख देवतो लागै)। बोलण मे राजा की गळत बोलग्यो, बाधति नी बोल'र, बाधते बोलणो चाईजै हो, 'ति' री जग्या 'ते'—जिया भाप् सू भापते।

"हा समझगी।"

लकडहारै राजा कानी एकर अचंभै सू देख्यो, फेर एक गहरी उदासी ढकलियो बीनै। बडी करुणा सू बोल्यो बो, "राजन् भारः माम् न बाधते, यथा बाधति बाधते" (हे राजा, भार मनै बिल्कुल ही दुख नी दै जितो बाधति दुख देवै)।" बीरै कैवण रो मुतळब हो कै जद राजा ही अशुद्ध बोलै है—अजाण है भासा सू तो प्रजा रो काई हाल हुसी ? राजा री आख्यां खोलदी बण।"

बै सगळी ही संस्कृत खातर बडी आसावान हुई अर सागै बडी राजी।

बां सोच्यो, "आपां चोटी री पडिताई कानी नी बधां तो टाळ नही पण लकड़हारै री दिस-दसा देखतां जातरा की सुरु तो करा, थका साधन, साव-गोडीढाळ काई हुवां ?" अर संस्कृत रै विसाल मैदान कानी, मंद अर माठी चालतो, अन्तरधारा बारी अबै बीनै मतै ही मुडगी, लम्बाई आपरी पूरी ताकत सू तै करण नै।

स्कूल री छुट्टी कर'र बा, कंचन री मा कनै जा पूगी। कंचन री मां,

गाय रो कूडो त्यार व रै ही अर कचन रसोई-पाणी। रामा-सामा हुया, कूडो गाय आगै धरदियो अर फेर वै निरवाळी बैठगी—एक थाली बोरी पर।

मुधा बोली, "काल तो मा-सा, बडी तकलीफ पाया सुणी?"

"ठीक ही सुणी बेनजी, पण, रामजी करै सो ठीक, चोखो ही हुयो।"

"चोखो ही किया मा-सा?"

"कचन रै सासरै कानली हूर मिटगी अर म्हारै म्हाराजां कानसी।"

"खास रुख-रखाव काई देख्यो बठै?"

"देख्या बठै, गतां अर पडदा रै चेरा पर चमकता उपदेस अर मूर्ख काळजै री भीड घणारी। कचन नै मैं पूछ्यो, "है ए बाई, आ पडदो पर कठै ही मिलावट, तस्करी, काळाबजारी अर खोटी-तोलणी नै साव माडी धतावण रो उपदेस ही कोई चिलकै है काई? घर रै आगै कादो-कचबड़ो नी करण खातर ही सीख है कोई आं मे? आपरो मळ-मूत दूसरै रै सिर पर नी दुवावण खातर ही है आ मे की?" पांच-सात मिट, निजर आपरी दौडा'र बोली बा, 'नही मा, इसो तो की, नी आं मे।' बैनजी, सगळां नै मीठी रो ऊचसो पगोथियो ही दीखै है, आगण सागै जुडतो पैलो नहीं।"

पल भर रुकगी बा मतै ही, पनो नही क्यो? मुधा थी कानी, आपरा कान ही नही, आपरी समझ ही करदी सगळी। निजर आपरी बडी श्रद्धा सू जमा राखी ही बण थीरै चेरै पर।

भळै बोली बा, "साधुवा कानी देखनी हूं सोचै ही बैनजी, कै वै ही मूडा, अर वै ही मूछ, पण साधु बेस धरण किया पछै ऐ इसा किया हुवातै है कै वैकुंठ-ज्ञान री कूची रो टा, आणू आनै ही हुवै अर धरम पर तोपण री सगळी समझ ही आं कनै ही। एक वाँनि म्हारै पीरै रा ही हा तीमी पार करता। कावो है बारै। बानै कदेई बा गोदी रै जिपाए ही राघती—दिन भर। मूडै रा धया दे-दे बानै, बडी फूलीजती बा, देख-देख बानै मरी जोवनी. आज बा माव एकावी अर आमरहीण है न सावळ सूझै, अर न सरीर री गांटयो ही सावळ निषळै, बडी दुख पावै, करणा ही पसीजै थीरी दशा देख, पण उपाय काई? पण म्हारो मन इंया ही सोचै हो आपरी गुण दै कै ऐ, जे, दो दिन ही जा पूगै कावी गी की टैमचाकरी मे तो टोरदी है

सन्तोस रो कांई चाको ? अर इयां करतै अँ तो हाथ-पग आरा कांई घसीज उठै, का सागी नही रह'र फुरज्यावै ? का केवळ-ज्ञान रा किंवाड़ आ खातर फेर सदा खातर जडीजज्यावै ? बा करनै पूग, जिया मैं मथे-वदण कियो, बानै, बै मनै ओळखता-सा, एक हाथ आमीस री मुद्रा मे करता बोल्या, 'दया पाळो, अरे ! थानै तो आज ही देख्या सेवा में, कित्ता दिन हुग्या ज्ञान-सागर मथीजता अठै, अळगै-अळगै सू लोग आ-आ, दरसण लाभ लूटै अर थे हाथ पसरै जित्ती दूर बैठा, नी आसको ?'

हू बोली, "ठीक फरमायो आप, पण घर रै गोरख-धंधै मे, कांई बताऊ निकळनो ही नी हुवै ?'

"पण इसो अमोलो अवसर तो बरसा उडीकया ही, हाथ नही आवै। सता री सेवा अर धर्म-लाभ लूटीजै जिता ही थोडा। इसै मौकै, घर रै गोरख-धंधै कांनी सू तो आख्यां मीचो अर ईंनै आंवण नै खोलो, जीवण, खाली घर रै धंधै मे गाळन खातर ही नी मिल्यो।" सुणलियो बांरो कैयो, हाथ जोड़'र मै। म्हारै लारै, एक अमीर परवार और खड़ो हो दरसणां रो उंतावळो। हू टुर ही, पण कुण जाणै, मन रै कांई बापरी, म्हारै होठां पर मतै ही नाच उठ्यो, 'म्हाराज-सा, आपरी काकीमा, बडा भुगतै है अबार तो ?' आगै हू की बोलूं, बीसू पैलां ही, बा फरमायो, 'मनै सुणाणै सू मुतळब ? भुगतै है तो भुगतै।' बोली में बांरै लुखाम हो अर धैरै री सरलता मे की उभार। मनै की झटको-सो लाग्यो, हू एकदम सभळगी, टुरगी चुपचाप, मन नै सताड़ती कै, कुमाणस, इंमा कांई तू माव गूंगो ही मरै है ? तनै ठा नी, भांरो मार्ग ही और है, आंनै कांई तो काकी रै दुख-दरद सू अर कांई और कीरै सू ही ? पण साची बात मनै आ लागी वैनजी कै अै लोग खून-पसीनो एक कर'र खावता सू, अळगा, अछूता पडै, अर दुख-रचगी बात सू राजी दीसै। महाव्रता सू अणुव्रत निचोवै, सोगन-पचारा, जीव-अजीव पर महीन चर्चा करै अर सिनेमाई तर्ज पर ढाळा ही बणावै अर थारी-म्हारी ही, पण गेज रौ ई सागण घाणी घुम्या, मूळ-जातना कीरी ही ओछी पोडी ही हुवै है, कनर ओछी भलां ही हुवो।"

मुधा मोचै ही, 'कंचन री ईं जलमभूमि मे धरती रो सुगन्ध खूब है अर आदमी रो औसत समझ सू, समझ मोकळी ऊंची। वीरो श्रद्धा और

गैरोजगी बीं कानी, बीरो निच्छळ कथणी सू । बा बोली, "मा-सा, बह'र थे कोई पहाड़ पटकदियो वां पर, काकी है, गोदी किचरी है बां बीरों— दिना नही बरसा । अनाथ, असहाय है अबार बा । इंयासकी मरणामन्न री, सेबा नही, परमसेवा बजै है बा, अर परमसेवा रो लाभ ही परम हुवै है, पण कृतज्ञता रो बो तप, दीपै धरती री की विसेस बाल्ही आत्मा पर ही । अबार तो करीब सगळैं एकसो ही हाल ही है, मा-सा, सैं आप-आपरी उकाळी धर्म रै अनुपान सागैं समाज रै गळैं उतारी चावै । पंथ में बडग्यो कोई यो असलियत उघाडी चावै नही, नी बडग्यो बीनै चीणी रा धोरा दीखैं, बो बडनों चावै बी मे । जुग है अबार सुविधाभोगी । राग ई बिराग दूढै । सोचैं, सोरो-सो, गुर कोई हाथ-पल्लै पड़ै तो मौज ही करता अर मोक्ष रो पायो ही पकड़ला ।"

"पण इंया बो पकड़ीजै काईं, अंगतोड़ तप नै पीठ दिया ?"

"अग तोड़'र तपैं, (खूब खटैं) बी कनैं इंयासकी भीड़ नैं आपरो सम्बो समै सूपण री वेल्ह हुवै काईं ?"

"नी हूंती हुसी, म्हारै धर्म मे तो ढंग-बाळो हूं इसो ही देखूं बैनजी।"

"धर्म थारो अर म्हारो एक ही है मा-सा, बात कानी कान देसा थोड़ा ?"

"थोड़ा क्यो, पूरा लो, फरमावो ।"

"दया, छमा, पंचमहाव्रत अर अर सर्वभूत हिते रता: सू गीता, भागवत अर रामायण सैं कूट-कूट भरया है अर आं सू ही मैं जैनग्रंथ । मिनख री अै अणमोली आस्थावा संसार रैं किसैं धर्म नैं बाल्ही नी लागै ? सुखी संसार रो ढाचो टिक्यो ही आं पर है। आदि-तीर्थंकर रिसभदेव नैं थाली थे ही मानो हो, म्हे नही काईं ?"

"मानता ही हुस्यो, मनैं ठा नी ।"

"भागवत म्हारो लूठो, प्यारो अर पूजनीय ग्रंथ है बींमे रिसभदेव रो बडो पवित्र चरित्र दीपैं । धर्मनिष्ठ अर पूजा-पाठी सनातनी बडी भाव-भक्ति सूं रोज पाठ करै कै, 'द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा पातु माम्', इन्द्रियजीत भगवान रिसभदेव सुख-दुख रै भयवारी झाटां सू म्हारी रखाळी करैं' । है ईं में सीमा-रेखा कोई, आपणै बिचाळै बठै ही ?"

"नहीं तो।"

"आपां एक, आपणा सिद्धान्त एक, आपणी धरती एक, आपणों निकास-विकास एक, आपां असंख्य बूंदां रै विराट सागर-सा एक। फेर आपा मे क्यों थिर हुई दळगत आसण री इकलखोरणी ममता? एकता मे जिको आनन्द-उल्लास हुवै बो बिखराव मे मिलै कदेई?"

"बिल्कुल नही।"

"मा-सा अलगाव, आपणी एकता री कामधेनु नै कूट-कूट कमजोर कर दी। आपणी समझ रै पाणी पर ज्यूं-ज्यूं अज्ञान री काई बधती गई, मोह पसरतो गयो, आपणी एकता रो सरूप सांकडो हुंतो गयो अर ओजू किसो रुकग्यो? दुख री बात इत्ती ही है कै एकता रै ई अभाव नै आसण-लिप्सु तो आपरै होठां पर राखै नही, अर्थ-समर्था नै आपरी परिग्रही ऊंचाई बधावण सूं फुरसत नही, बुद्धिजीवी आपरै वादां मे उळझ्या है, अर लाई-खाई करणआळा विचारा है आपरी रोज री जरूरता रै घेरै में, काम फेर बणै किया?"

"वैनजी, बातां आपरी जचै है म्हारै, हालात अबार इसा ही है।"

"साधुवा रो फंटवाड़ खाली इत्तो ही तो है मा-सा कै, आपरा साधु गाभा धोळा राखै, अर म्हारा भगवां। आपरा राखै पाटी अर पातरा, म्हारा कमंडळ अर खप्पर। न भगवा पर परमानंद बरसै अर न धोळा पर केवळ-ज्ञान। सिद्धि-सफलता गाभां नै थोडी ही मिलै है? बारो सम्बन्ध तो मन री स्थिति सूं है। केस उपाड़ो, मूंडा बांधो, उघांणा फिरो, धूणा तपो, राख लगावो, बेस अर बस्तु रै बदळाव सूं न भूख-तिस बदळै, न चेतना री एकता अर न बींरी सैज आवश्यकता। एक ही इमारत पर न्यारी-न्यारी मंजिल बण्या, इमारत री नीव थोड़ी ही बदळगी? जिको साच सदा थर सगळै एकरस, जिको सगळा रै नैड़ो सगळां नै सुलभ, सगळां नै प्रिय अर सगळा रो हितू बीं सनातन तत्त्व नै मत-मतान्तरां रै घेरा मे घाल आप-आपरी छाप लगावै बी पर, कांई वो कारखानै री चीज है? का, वो एक देश, वो एक काळ अर एक समाज री निधि है कोई?"

"नही तो।"

"पण मा-सा, झूठी झिझक अबै इसी पैदा हुयी आपां श्रावकां मे तो हूं

इत्ती नही, जित्ती है कर्णधार साधुवा मे, न वारी आत्यां मिलै अर न बारी आवाजा। मिलै वै नहीं, अळगीजा-आतरीजा आपा। अणसमझी री ई आंधी फंटवाड सू उदास धरती, न साधुवा नै आसीस दै, अर न आपा श्रावका नै।"

"ईं हिसाब तो साधु वणनो ही गळत है फेर?"

"वणीजै वो साग हुवै मा-मा, साधु नही। साधपणों तो जलमै है काळजै मे कोरै ही। टाबर सू लें'र कीड़ी-कुजर ताईं सै जलमै है, वणै नही। भीड री भीड वणन लागगी साधु, ओ रोग है समाज मे। घर छोडणो एक बात है, राग-द्वेष छोडणो दूसरी। ईं वणती भीड नै, नागी-भूखी अर अज्ञान-अशिक्षा मे ऊपती-अमूजती कतारा रो वधतो नमार नी दीखै। वीनै दीखै, नी दीखै वो, सुणीजै, नी सुणीजै वो अर वीनै ही बा भागै अर सागै आपानै हेला और मारै कै म्हारी दिस ही थे पकड़ो पण आपा आ, नी पूछां वी साधुई-भीड़ नै कै पेट आपणा थोथा है बाबाजी, सगळा दौड़दा ठोकस्या काईं? अर ढोल किया लुकोस्या साज सू अर किया पाळै-उनाळै संसार रो रिण संसार सू भाग्या नी चूकै?"

"वैलजी, आज तो भला ही आया, म्हारी आधीगती दिस, यानी सूझती करदी थे।"

"दिस तो आपरी पैला ही सूझती ही, मैं की, नी कियो, विचारा री एकता मे, म्हारी बात आपनै जचती लागी अर आपरी मनै। कंचन री सुणावो अवै तो, बा किया रही वठै?"

"जठै ताईं, वीरी आपरी समझ रो सवाल है, बा मनै दायआई, आपरो संग वीनै फळसी।"

"अर मनै वीरो नी?"

"नी क्यो? रळाया हाथ सगरा धुपसी, सगळा सू मोटो धर्म ही ओ है।"

अवै बा घणी देर नी रुकी, आपरै आवास री दिस पकड़ली।

दियाळी गांव में धोबीजी जरूर पण पगमरै सूगी अर सूगी ही। कोई हुयो, आत्म-सन्तोष खातर वण ही जे डाळवा री कोई साख मारगो गी

कोर पर नाख'र मुगन कर लिया हुवै । लिछमी पूजा ही हुई पण लीलोती रै नाव, लोगां काणी टीडसी हो, बी आगै नी राखी, काई राखै हुया विना ?

बिरखा खातर लोगा, गांव रै वारकर काचै दूध री कार ही कढाई, गाव रा तळाव-तळाई ही दिखवाया, टीटोडी रो कोई ईंडो तो नी हुवै वां मे। भोमियैजी रै सवामीटर धोळी धजा ही बाधी, सवाकीलो पतासा अर बा‌ळ्ळा ही चढाया पण आभो नीं पावस्यो । दो-च्यार विरिया कळायण की जरूर उमडी पण वरमै यीं सू घडी-दो-घडी पैला धरती री जड सू आंधी उठी, अर देखता-देखता बादळ रो चूग्रो ही नी रैण दियो—आभै पर । अबार चाळीसू कोसा ताई जमानै रा कोई समचार नी ।

धनवाळ केई आप-आपरो धन ले-लै, कस्बां रै काठै जा लाग्या । हरि-जनां मे भंग्या नै छोड, आधै नैडे लोगा, ईनै-वींनै आपरो ठाइयो पकड लियो । बाणिया रा पाच-सात टीपता घर तो, जेठ-असाढ मे ही, मना गणेसजी नै विदा हुया; की घटै हा वै दियाळी धोकर'र चढग्या । हवेल्या में आप-आपरा विस्वासी बामण-स्यामी राखदिया । भणखरै कमरा रै ताळा अर ताळा पर टाट रा वटका सीड दिया, आवा जद छोड'र जावा जिसा ही लाधै, ई खातर । दो-एक नाई-बामण इसा भी है जिकांनै सेठ लोगा, वारै बेटी-बेटां रै ब्याव का कीरै ही ओसर-मोसर मे डोढ-दो हजार री रकम साजदी; सेठा रो ब्याज गयो अर सोवणिया री गई सुवाई पण अभाव रो सका मे मूळ अगद रै पग मो आपरी जाग्या है ज्यू ही रैसी । रुखाळीदार रात तो हवेल्या मे ही काढै पण दिन आपरै घरू धंधां में—हेल्या सूं बारै ।

गांव री धरती उदास, आदमी उदास, आदम्यां में भगी और ही जादा अर बा सू ही जादा बिचारा पसु । चेळकै जे कोई है तो जीसुख साध का सरपंच, पटवारी अर दो-च्यार वांरा चमचा । जीसुख साध रै आए मंगळ-वार भीड रो तातो टूटै ही नी । सरपंच अर वीरै साथ्या नै तळाब-तळाई री माटी निरुळवाणी, सडक रो कोई टुकड़ो वणवांणो, गरीबा नै केई रकम रा लोन पास करवाणा, गायां नै मन्नीं चूरी रो इंतजाम करवाणो, सो लेटा है । गांव-हित में आंगळी टिकाव कोई न कोई जाग्या दीखणी चाई-जै वांनै, फेर कोचरै रो रो बधारो हुना ताळ नी लागै । अकाळ मे इमै लोगा रै, पूछ अर पइसा दोनू बधै ।

मोटी समस्या अबार पसुवा री है, महीनै, दो-महीना में सस्ती चूरो अर तूड़ी री व्यवस्था करण खातर गांव रा केई स्याणां-समझदार वर्ठ विट्टूं खातर वारै जांवण री सोचै है ।

13

सुधा अर सिरदारी खेंडी देखण गई । एक ठिरड़ै पर जा खड़ी हुई ब । डेरी कानी देख्यो वां, बीरै तळ पर खिची, हळ री उदास लीकां दीपी यानै, एकदम खाली काळजै । निजर आगै गई, धरती दूर-दूर तांई उदास अर उघाड़ी दीखै ही । गाय-टोघाड़ियो धणी बान, भेड़-बकरी ही मोर्ई फिरती-घिरती नी, दीखी बानै । बुझती रोही में कांई लेवै कोई ? सुधा सोचै ही कै लारलै साल आ ही दिना, आ धरती सोनो उगळै ही अर ईरै सागै कितै-कितै लोगां रा सुख-सन्तोस ढुळ-ढुळ पड़ै हा ? आपरी सन्तान रै पळतै श्रम सूं मा किसी फूलै ? लेवै बीसूं सैंसगुणों देवै तो ही थोड़ो मानै बीनै । धरती अर आदमी रो सम्बन्ध कितो अटूट अर एक हुवै, ईं खातर ही तो 'पुत्रोऽहं पृथिव्याः', धरती म्हारी मा, अर हूं बीरो बेटो, रिसी-समाज घोषित करणी, उपामाता री सर्वोपरि ऊंचाई बैठ'र ।

खेंडी में पाच-सात झाड़्या ऊभा हा अर तीन लूठा कैलिया । सुधा बोली, "मा, अै झाड़्या कटा'र बोरो, पूण-बोरो पालो तो पर मेनायसा, एवड़ फिरत्यां कदेई तो, काटा ही सापैला, बां पर, पत्तो एक ही नही ।"

"तेरी अर पूछ-पूछ, तैं बह दियो तो आज ही सै ।"

"अर कैलियां रो सूख ?"

"सूख सारै क्यों राखस्यां ?"

बात करती-करती बै खेंडी री निवाण में उतरगी । कमरां री माटी रा दो-एक डगळिया हाथां सूं ममळती सिरदारी बोली, "देख बाई, पीळी माटी आ, चीकणी किसीक है ! एक बिरखा ही जे चोखी हुज्यांवती तो खेंडी ग्याली नीं जांवती ।"

'हां," अर बण ही माटी नै हाथा सू मसळ'र देखी, बीरै एक और ही विचार ध्यान में आयो, बा बोली, "माटी तो बडी बढिया है मा, हाथ-डोढ-हाथ ताईं खोद'र और देखा, रखो, ठेठ तांईं इसो ही है का छर्रो है आगै।"

"ईं खातर आपांनै किसा सस्त्र पाती सांभणां है, कसियो आपणै कनै है, अबार ही खोदलां।"

माटी कौ नीचै जांवता और ही चीकणी आई। सुधा बोली, "मा ईं माटी री जे, ईंटां काढी हुवै तो।"

"ईंटां तो एक ही लम्बर कढै बाई, पण पाणी नी पौसावै अठै ताईं लायो।"

"हां आ तो समस्या ही है, पण निवांण में कच्ची कूड तो एक खोद ही सका हां आपां, मांयलो-पासो राख अर सीमट सू खुद ही लेपला, और नहीं तो चौमासै-चौमासै पाणी री सुखदाई तो हुवै आपणै ?"

"हां, एक घडियो लावां बी में ही, काधो दो बिरियां बदळनो पडै आपानै, हुया तो ठीक ही है।" बातां करती-करती वै, दो घड़ी नै पाछी ही घरे आ पूगी।

सुधा री दिस मुताबिक भंग्यां री एक समिति बणगी। घरू उद्योग-धधै खातर रिण रूप में वानै आठ हजार रिपिया मिल्या सरकार सू, दो हजार बा में अनुदान रा माफ। डोका अर डोरी मगवा लिया, मरकी, खारिया अर मुड्ढा बणना सुरू हुग्या। लुगायां ही सूटर, आसण सुरू कर दिया, अर सागै की कताई ही।

सुधा कनै लुगाया रात री आवै तो है पण पैलां सू तीजी पांती ही। कंचन अर करमां रात री मोडै ताईं पढै। राम अर रमा रा रूप हो रटै वै। भाप् अर गम् रो लम्बो गोरख-धन्धो ही होठां माकर काढै पण अबै धड बैठगी, गाडी लैण पकड राखी है। गिरदारी रोज वानै वांरै घर ताईं पुगावै। कदे-कणास रात सुधा कनै ही काढणी पडै तो, बी दिन बा वांरै घरे कह'र आवै कै आज बाई नी आवैली। बठै सोवै बो दिन झाझरकै हेलो ही बा करै वानै, 'उठो बाया, टैम हुगी है।' जाणै वांरी पढाई री की चिंता सुधा नै है तो की बण ही ओढराखी हुवै।

अगूणी छितिज रै झरोखै, सूरजनारायण धरती नैं नमन कर आपरी जातरा पर जिया ही वैगा-वैगा टुरै, ठीक बियां ही सुधा अर सिरदारी ही आपरी खैडी कानी । सागै बारै कंचन अर करमां ही हुवै । मीठो-मीठो सो पडै पण खायी-खायीं, खैडो पुगै टुरै, बारै तन-मन मे नुई ताजगी व्यापरै । अै जिया ही पुगै, ईरै पाच-सात मिट आगै-लारै, सात-आठ छोरा, पाच-सात छोरया, अर छव-सात आदमी, इया पच्चीस-तीस रो एक काफलो रोज भेळो हुवै । आदमी माटी खोदै, बाकी सै नाखै । हरेक रै चैरै खुसी अर मन मे उत्साह । कुड खुदै।

सुधा सगळा सागै सलाह-मूत कर'र, हफतै भर रो श्रमदान-आयोजन राख्यो है अठै । घणो नी, मुवै-मुवै अध-घटा ही खाली । दस-बीस तगारी कचन, करमा ही नाखै सगळा सागै—सगळा सूं आगै । श्रीगणेस ई रो कंचन-करमा मू ही करवायो । आ दोना जद रेत री तगारी सिर पर ऊंची तो बूढी-बूढी मगणा ही नी, जवान बीनण्यां ही बोली, "बाईसा, म्हा थका, आप तगारी उठावो, आ कीकर हुवै ?"

"क्यों म्हारा हाथ फचकडै रा है, काई तगारी उठावना ही बिडक उठसी, अर फेर सघणां ओच्छा हुसी ?"

"बाई जी, मालिक आठ रो अर मजूर साठ रो हुवै तो ही, मालिक मोटो हुवै, थे मालिक हो म्हारा, अन्न थारो दियो ही खावां हां ।"

"म्हारो दियो ही खावो हो जद अबै क्यों नी खावो गाव मे टुकडा हो कोई दिखावै है तो बोलो ? देवणआळो सगळा नै एक ही है, पण देवै बो हाथ-पग हिलाया ही है ।"

सिरदारी बोली, "तो हाथ-पग हिलावण नै म्हे थोडा हा मारै ।"

करमा बोली, "डिकरिया, इसी दूर चला'र आ, म्हे थारा घेरा निर-खणनै नी आई, म्हे आई हां, एक अपणायत मे बध'र अर बा हुवै है मन री एकता मे, ऊंच-नीच री भीत नी हुवै बीमे ।"

सगनी ही कंचन बोली बानै, "बैनजी तो थारै सागै कूडा नाखै भाग-भाग, अर म्हे खडो-खडो, घमगूगी-सी देखा, खूड म्हारै तो बिना नाखी ही पडगी ।" सगळी ही हसण लागगी ।

सुधा बोली, "आ कुड, सिरदारी बा सर्प-मूढै री एक रै नी बणै,

वा है एक पूरै समूह खातर, समूह रो आधार हुवै है मेळ अर मेळ हुवै धरती री मनस्या। आपा तो धरती री मनस्या सारू काम करा हा, आ तो कुड है, सामिल श्रमदान सू तो बाघ रा बाघ खडा हुसकै है।"

'पाचा री लकडी, एकै रो भारो,' हफ्तै भर मेकुड त्यार हुग्यो, ऊपर एक छवणो राखीजग्यो, काई दूर मे, पायतण ही कुटीज'र त्यार हुग्यो।

माघ री जातरा पूरी हुवण मे पाच ही दिन बाकी हा, का अचाणचकी बिरखा हुई पच्चीस-पच्चीस आगळ। सारै की गडा ही पडग्या, पण लोगा री चेतना मे खुसी री एक लहर दौडगी कै अबै की चैतवाडो बापरसी, धन की जीवणै पडज्यासी। खूंटी री कूड भरीजगी, पाणी पायतण सू बारै ताई चिलकै हो। सिरदारी बोली, "बाई आ जरडो-पाणी आपणै काई काम रो? चौमासै भरीजतो इंया तो, बैठा राजस नी करता च्यार महीना?"

सुधा बोली, "आपणै तो सोनो बरसग्यो ओ, ईंटा नी निकळ सकै काई ईंसू?"

"निकळ तो सकै है बाई, पण हाथ तो ईरै लागता ही सूना हुवै है।"

"मा, पोह-माघ री ठारी मे, आधी-आधी रात खेता मे पाणी लगावै, कोई नी मरै वां मे, बारै प्रताप ही आपा चावळ अर चीणी जीमा। आपा दिन मे काम करता ही मरग्या तो फेर जीवण रा ही नी।"

सुरु हुगी ईंटा निकळनी। सुधा बोली, "सरकार राडाई रै दिना मे काम पूरा करै बियां ही आपानै करणो है ओ। छोरी-छोरा नै कहदियो, छाणा, मीगणा, आक, बुई, सिणिया, फोग, बोरी, झुरखम अर कोझा कागद-चीरडा मिलै ज्यूही खूंडी मे लेजा नाखो, फेर ही कम पडै तो बळीतो की सौ-पचास रो मोल ले-लेस्या, ईंटा पकावण नै चाईजसी।"

अट्ठारै-बीस आदमी-लुगाई, आठ-दस कामआळा छोरा-छोरी लागग्या नी ईंटा त्यार हुती ही दीसी। अस्सी हजार नैडी ईंटां निकाळली। मद्दी सू एक चिमनी किरायै ली, आग देवण नै गाव रो ही एक जाणकार मेघ-वाळ राख लियो। रिपिया पाच सै' क लागग्या।

दिनूगै रो आठ-सवा आठ वजी हुसी । सुधा आपरै ही की सेल्हा-छोर्डे में व्यस्त ही । बीसू, हाय दो-एक परिया कचन अर करमा गणित उदर्झ ही । डोढ घटो हुग्यो हुसो वानै सवाला सागै जूझता । मन की धावेनो करै हो । अचाणचकी सामली सेजडी पर एक कमेडी गीत छेड़ दियो कु-कू-कू । दो मिट बाद ही सामलै वाडै मे रह-रह, तरू-तरू करता तीतर सुणीज्या । आरा अै, फूटता-उभरता मीठा सुर-सुण, बारी मनः स्थिति ही सागण नी रही । बा किताबा आपरी बद करदी, पैसिला काप्या पर राख, कान अर मन आवती आवाजा कानी कर दिया । सुधा दो मिट देखती रही वां कानी, पण वां नी देख्यो वीं कानी । वा उठी, अर कनै आ'र बोली, "क्यो, बाया थकगी काई ?" अर एकदम, बारो ध्यान टूटयो । करमा बोली, "दो उदाहरणमाला तो कर ली बैनजी ।" लार-री-लार कंचन हीं कैयो, "उदाहरणमाला दो और रही है बैनजी, वै आज सिझ्या पूरी कर नांखस्या ।"

सुधा बोली "इंया आपानै घास थोडी ही काटणो है, सिझ्या कर-लेया, पण गणित, विज्ञान अर व्याकरण हुवै की सिरचाटू अर सूरा विसै ही है । एक ही दिमागी काम करता मन जे ऊबग्यो हुवै तो, बीनै एकर आसण बदळा देणो चाईजै, नुंई शक्ति व्यापरै बी में ।" वाक्य पूरो हुयो ही हो का 'गवर गिणगोर माता, खोल किवाडी, बारै ऊभी थारी पूजण-आळी···' हवा में विखरती गीत लहरी, वानै तरतर नैडी आवती सुणगी । करमा बोली, "गवरआळी छोरया आवै दिसै है ।"

कंचन समर्थन कियो, "हा वै ही तो है ।" गीत बधतो गयो: 'जल-हर जामी बायो माणा···कान कवर-सो वीरो मागां, राई-सी भोजाई ।'

सुधा बोली, "छोटी-छोटी छोरयां री कामना देखो थे—धरती पर स्वर्ग रचणआळी—ईं गवर माता आप हुवै पणपाणी सूं टप्पाटोळ माव्ह-सी बरसतां, भाई हुवै मावळगाह-सो अणगिन ऊंघावणियो । परिवार सगळो ही दातार हुवै, बेटी री सानगा तो अद ही भरीजै ।"

गिरदारी बोल्यी, 'कन्यावां नै बाई, गवर-पूजा रो चित्तो कोड हुवै है, कोई थाको नीं ।"

करमा बोली, "गवर तो बडिया तै हीं पूजी हुसी ?"

"मैं तो बाई बी पूजी न पुजाई गवर नै भाटो ही मारयो, गुण न पोरै

देख्यो, अर न मासरै ।"

मुधा बोली, "लारली कसर अवै ही काढ सकै है मा ।"

"किया वाई ?"

"आ निरदोस कन्यावा नै देख-देख एकर आपा ही बा जिसी ही हू उठा ।"

"तो फेर चालो बांरै सामनै, बारी अगवानी मे," सिरदारी उमगती बोली। दुरगी च्यारूं हो। आगै फळसै आगै देख, छोरघा आ करै आ'र, मतै ही रूकगी। मान्तड़ी ही बांरै सागै ही नेता-सी, एक पांवडो सगळा सू आगै। सै छोरघा बीरो माण राखै अर वा सै रो। बीरै पग नी हा, ई री उदासी बीमे कठै ही लुको हुवैली, ठा नी, पण अबार बीरै चैरै पर खुसी खेलै ही—इकाराही अर अणलुकी, आणै समूह रै पगा मे ही, बीरा पग है कठै ही, ई समूह रै हाथा मे हो बीरा हाथ है, अर ईरी चेतना मे ही, बीरो मन—समूह रै सागर मे डूबी समूह सागै एकाकार ही बा।

एक बडी छोरी रै हाथ मे गवर ही—समूह रै सगळै हाथां मू रची। कीरो ही कडियो, कीरी ही हंसली, खोटी साकळी कीरी ही, तो कीरा ही पीतळ रा मूर्त-मादळिया, चीढ-पोयो पूर रो बोरियो, अर खोटी बीटी, लोटो-कळसियो, फूल, पत्ता अर फोगा री कंवळो कूपळां सू गूथी, गवर ही मुळकै ही अर बारी मैनत मिली चतराई ही। सै री लगन, सै री सामग्री सो प्रकृति लारै क्यों, बा ही रळगी आ भेळी, गवर बणगी संसार-सक्ति सरूप रो प्रतीक। मैनत रो हिमाचळ ईरो पिता है, एकता ई री मा, मैना है, अर सगळां रो हित ईरो वर शिवजी है। अै च्यारूं गवर नै गौर मू देखती रही। गवर नै वा हाथ जोड़्या, छोरघा नै साबासी दी, बहो राजी हुई बै, दुरगी आपरी दिसा मे, 'गवर गिणगोर माता,' रसमय सुर, भळे तिरण लागग्या हवा पर।

मुधा बोली, "छोरघां रो ओ सँज मिल्यो-जुल्यो यज आंरै जीवण रै अगनै घरणा मे जियै, मजो जद ही है।"

सिरदारी बोली, "बाई कांई हुवै फेर ?"

"तो एक-एक हाथ मिल, किरोड़ हाथ देस री उदास अर रंगउडी तसवीर नै जीवती गवर मे बदळदै, एक-एक कंठ मिल, किरोड़ कंट, देस रै

सूतै जीवण में नुई जाग भरदै, आ री आ बाल-साधना जीवती रैणी चाईजै पण।"

कचन पूछ्यो? "पण काई बैनजी?"

"पण साधना आ थिर रैणी मुश्किल लागै, आंरा घर संस्कार अर आंरो अगलो वातावरण प्रबळ हू उठसी आं में तो, अगलै चरणा में मन आंरा हुसी छोटा, हाथ तीखा अर नैण बुझता, आंगणा में ही उठसी अै, कुड़छी चींपियां, अर बेलण आपस में ही बाजसी अर फेर घणखरा घर आंरा असान्ति अर ईसकै रै अंधेरै में डूबसी, आ री ओ बाल-पाठ भूल री परतां में बैठ, बेअर्थो हुसी, जियां आ घरां में अमूमन आपां देखां हां।"

करमा बोली "बात तो ठीक है बैनजी पण ईंरो उपाय काई?"

"आंरी लगन पढाई काली मूडै तो मानसिक धरती की त्यार हुवै आंमें। लडो अै भलां ही, पण लडै अज्ञान अर अभाव सागै, लड़न रो मजो ही अब है।"

कचन-करमा दोनूं ही बोली, "बैनजी, परीक्षा दियां पछै निरवाळी हां म्हे, थारै सागै जुतस्यां जी-खोल'र।"

गिणगोर रै आसै-पासै ईंटां त्यार हुगी। ईंटां पकी ही पड़िया अर बैठी ही बठिया। तीस हजार नीं धैडी में पड़ो ही बेचदी डोडसैं रिपियां हजार में, बाकी एक-एक कमरियो बणी इत्ती-इत्ती, सगळा ही आप-आपरै घरां आगै जियां-तियां कर'र नागली।

सुधा सगळां नैं बोली, "ईंटां तो भगवान भेजदी आपानै, पट्टी, सीमट अर चिणाई रा रिपिया च्यार हजार आया पड़या है, बाकी पचणै में, अंग-तोड़ काम आपानै खुद ही करणों है। आखातीज री अणै चौपड़ो, सतीमी-माता रै अर्पण कर, नुवैं कमरा में बैठ-बैठ जीमणों है—गाड बाधणों हैनैं।"

सगळां रै जचगी, अर खुसी एक अनूठी, सगळा रै चैरा पर दिख उठी।

गणगोर ही। गिरदारी, सुधा बर्न बैठी ही बरामदै में। अचाणचकी पेमू आवती दीख्यो। सुधा बोली, "मा, आज तो भाई आवै दीसै है।"

"आवै तो चोखी ही बात है बाई, आंवण दे।"

पेमू मा रै पगा लाग्यो, सुधा नै नमन कियो बण, बैठग्यो चुपचाप। सिरदारी पूछ्यो, "टाबर ही आया है काई ?"

"नही, हू एकलो ही।"

"रूकसी एक-दो दिन ?"

"आज सिंझ्या ही जास्यू, एक जरूरी काम आयो हू।"

"इसो जरूरी कांई हुग्यो मळे ?"

"महीनै डौढे'क बाद, म्हारै सा'ब री नौकरी पूरी हुवणआळी है, बगाल जावणआळा है बै। म्हारै पर बारो मैर की बिसेस है। परसू बोल्या मनै, 'पेमू तुम हमारा बडा सेवा किया, हम तुमारा क्या मददकरने सकता है, बोलो ?'' मैं कैयो,'' 'सा'ब आपका मैरबानी है।''

"अरे सूखा मैरबानी से आटा आएगा कि दाल ? नौकरी पूरा होने के बाद तुम क्या करेगा घर पर ?" बां पूछ्यो।

मैं कैयो, "कुछ नही सा'ब।"

"गाव मे जमीन नही है तुमरे पास ?"

"नही सा'ब।"

"थोडा बहुत भी नही ?"

"बिल्कुल नही सा'ब।"

"तो दिनभर मक्खी मारेगा, दिन कटाई कैसे होगा तुमरा ? छत्तरगढ, घाजूवाला की तरफ सरकार बिना जमीन वाला को जमीन खोल रखा है, ओ जमीन बाटने का बडा ऑफिसर हमारा दोस्त है, चाहो तो तुम्हे भी एक दू मुरबा दिलाने सकता है उधर, पानी लगता है, पैले तीन साल कुछ नही देना होगा, दस साल मे सारा किश्त पूरा हो जायगा, सब मिलाकर सोला-सतरा हजार के आस-पास बैठेगा, फिर खातेदारी का राईट तुमरा हो जायगा, लाख से कम का जमीन नही होगा तब, लखपति बन जायगा समझे ? हम मिलेगा कभी तो बात करेगा कि नही ?"

मैं बोल्यो, "सा'ब, यह आप क्या फरमाते है, पेमू तो आपसे, मरेगा तब तक नही बदलेगा। आपका अजल (अन्न, जल) बहुत खाया है, सरीर मे बहुत सारा खून आपका ही दौडता है।"

"अरे नही बाबा, ऐसा मत बोलो। खून सब लोग को धरती माता का

दिया हुआ है, लेलो जमीन, लास्ट जीवन धरती माता की सेवा मे कटेगा तो बडा सुख मिलेगा ।"

मैं कैयो, "सा'ब गाव जाकर मां से पूछ लू, इस बारे मे ?"

"अरे बुद्धू हो गया, मा इसमे कोई मना करेगी, फिर भी चलो मा का राय मागना बुरा नही ।"

पेमू री बात सुधा, मन दे'र सुणै ही, एक-एक आखर बीरो,बीरै काळजै में मडै हो । वा सोचै ही जाणू ओ समचार, बी सा'ब रै काळजै बैठ, दीनानाथ ही भेज्यो है अठै । ईं हिसाब प्रभु जरूर बीरी मनचीती करसी । बण देख्यो आ बात सुण'र, मा ही बडी राजी हुसी पण बीरी आ धारणा गलत निकळी । सिरदारी बोली, "इत्ती अळगी जमीन तो पेमू, आपणै सू सम्भ मे कद तावै आई ? आपणे तो अठै ही दुखम्-सुखम् कर'र पेट भरो ।"

सुधा बोली, "मा तू स्याणी'क गूगी ? अठै कठै तो है जमीन आपा कनै, अर कठै अठै आए साल जमानो ? दो साल सू एकर निपजै तो ही राजी, पण बो ही कठै ? जीवण खाली पेट भराई मे ही हारणों है तो बा रहू ?"

"बाई, पेट भराई हुया पछै, और आपानै काई चाईजै ?"

"मा कोरी पेट भराई सू, मायलो उदमर नी उतरै । आपरो पेट तो कुत्ता-कागला ही भरै है । आदमी बा सू ऊपर हुवै है—मोकळो ऊपर । पाठशाळा आपणी चालणी चाईजै का नी ?"

"जरूर चालणी चाईजै ?"

"हारी-बीमारी खातर छोटो-सो एक दवाखानो ही अठै हुणों चाईजै'क नी ?"

"बाई बीरी तो बडी जरूरत है ।"

"अर बाचनालै-पुस्तकालै ?"

"बां बिना तो अधेरो ही है, बै तो हुणा ही चाईजै ।"

"अर आवै-गयै नै ठैरण खातर विश्राम-घर कोई ?"

"बी बिना तो बडो फोड़ो है ।"

"ओ कोटो तो आपणो हुयो, मजदारी तो ईं सू आगै बधणै मे है ।"

"है तो बाई, बां आगै बधणै मे ही ।"

"तो मा, आप्पा पेट पर राख्या तो ऐ बां नी हुवै । खेत, मेनत रा हाथ

की लम्बा किया ही पार पड़सी ।"

"तो बाई, तूं जाणै, हूं तो भंगण [illegible], इसी लम्बी सूझ रो मनै काई ठा ? पेमू नै तू ही समझा सावळ ।"

बा बोली, "पेमू, तू ओ कोई मामूली समचार ले'र नी आयो है, आ तो भगवान रै भेज्योड़ै वरदान री इत्तला है कोई तू तो डाकियो है बीरो—तू ही नी आपा सगळा हो । ई हिसाब, 'सा'ब' थारो, धरती रो प्यारो अर बडो भलो आदमी लाग्यो मनै । हाथ जोड़'र, थारी बात बीरै कंठां सावळ उतार कै, 'सा'ब', एक ही बाप-दादै रा म्हे, छव घर हां, जमीन म्हा लोगा कनै आगळ ही नी, गाव री बिरत म्हे छोड राखी हैं, पेट भरण रा ही सासा है, सामलात में मैनत करणो चावा, पण जमीन बिना करा कठै ? म्हानै आप जे सौ-पचास बीघा रो कोई एकल चक दिरवा सको तो बडो माईतपणो हुवै आपरो । इं खातर जिको ही रस्तो आप सुझावो बी पर म्हे पावडा राखण त्यार हा मेघवाळा में समचार म्हे और करदेस्या, बिना खेत रो कोई, दौड़-धूप बीनै करै तो आछी ही बात है ।"

बात पेमू रै रू-रू में बैठगी । बो बोल्यो, "बाईसा, घरा आगै ईंटा पडी दीसै है, अकाल में के ?"

सुधा बात सगळी सामनै राखदी बीरै । बो बोल्यो, "बाईसा, पक्का कमरा म्हे, साचेली तो काई, सपनै में ही नी चिण्या, अबै बास करस्या बा मैं, आप हुवो न बै सुलभ हुवै म्हानै ।"

"आपा तो निमित्त हा, मैनत फळाणी हुवै बीनै तो सरजाम सै त्यार करदै बो ।"

बो बी दिन सिझ्या ही गयो—आपरै थान-मुकाम ।

14

टाबर दिनूगै सूणापाटी, खोद् अर खौड़ियो खेलै हा, सुधा अर सिरदारी बैठी रग लेवै ही । सहसा सुधा बोली, "कदे-कदेई मा, आपां नै हीं तो

खेतणों चाईजै टाबरा सागै ।"

सिरदारी बोली, "मा तो खेलसी अबै लकड़ां में, हां थारै मे चीव है तो तू खेल भला ही, हू पालू थोडी ही हूं तनै ?"

"खोह तो तू ही खेल सकै है ?"

"सास तो इंया ही नी मावै गळै मे, खोह भळै खिलवा, पासो बैंधी करै ।"

"खोह मे तनै दौडनो थोडो ही है ?"

"तो दळियो पीणों है का सोणों है तकिया लगा'र ?"

"तनै तो खाली खूटो बणनो है खोह रो न दौड़नो अर न होठ ही हिलाणा ।"

"हा फेर तो भळे ही तावै आमकै है की, पण बी सू मनै फायदो कांई वाई ?"

"टाबरा सागै खेल'र, थारो मन ही एकर बा जिसो हुज्यासी अर टाबर, तनै आपरै सागै खेलती देख, हस-हस दोलड़ा हुसी, बांरो उत्साह बधसी, मागै, बा सागै थारी अपणायत । फायदो तनै-मनै एकसो ही है, खेल आज तो ?"

"तो सलाम मटै, मियै नै क्यो नाराज ? थारो कैयो ही सही ।"

मुधा कनै खड़ै टाबरा नै बोली, "टाबरां ?"

"हा बैनजी ।"

"आज म्हे खेलस्या था सागै ।"

टाबर केई हस्या, केई मुळक्या अर केया अचभो कियो, बोल्या, "हा खेलो बैनजी ।"

"तो भीड़ एकै कानी सिरदारी बैनजी नै लेवो अर एकै कानी मनै ।"

"बैनजी म्हारै कानी, बैनजी म्हारै कानी", दोना पाळा मे आवाज हुई पण सिरदारी बैनजी रो कोई नाव ही नी लै । जाणबूझ'र धान री बोरी नै कुण हाथ घालै ? टाबर मे समझै । छेकड़ बै मतै ही बटगी एक-एक तरफ । सिरदारी जिया ही खूटो बण'र बैठी, टाबरा गळगळो हो, घटनाढ रो आंगो एकर सागै ही गूंजग्यो । खेल सुरू हुग्यो ।

एक छोरै भूल मे सिरदारी रै मगरां पर दोनां हाथा सू धक्को दे'र

कैयो, 'खो:' विरोधी टाबर हथाळया पर थू:-थू: करता बोल्या, 'खूटै नै 'खो.' करदी, ओ गळग्यो, गळग्यो, पण सिरदारी रै धक्को लाग्यो तो ही टस-सू-मस नी हुई, जवान धक्कै सू ही नी सिरकै वा, ओ तो टाबर हो। न बीरी उठण री पौंच अर न उठण री जो मे बीरै, पण बोलण री सरधा तो ही, बोली, "ओ गळग्यो किया रे, हू उठगी थोडो ही", 'खो:' करणियै छोरै नै मचकावती भळे बोली, "खूटै नै खोह किया दी रे हियै फूट ?"

टाबर ही हस्या अर सुधा ही हस पडी। केई टाबर बोल्या, "देखो-देखो खूटो ही बोलै है ?"

भूल मे कनलै छोरै रै धरती सिरदारी भळे बोली, "सिरकू नी तो बोलू ही नी ?"

सुधा बोली, "छोरां, सावळ खेलो, ओ खूटो बोलै ही नी, गड़बड़ किया कूटै और है ?"

टाबर हसै हा, इतै कंचन-करमां ही आ पूगी। परीक्षा दे'र काल ही आई है वै। पर्चा बै ठीक हुयोडा बतावै है। चैरां पर बारै मुस्कान खेलै ही अर रमण री रळी बारै मन पर। सिरदारी नै खूटो बणी देख, मुस्कान बारी हसी मे फूटपड़ी अर रळी उत्कठा मे। एक ही क्रिया में एक दीठ अर दूजी अदीठ।

सुधा बोली, "हसो काई हो, मिंदर रो खूटो, खोह रो खूटो ही बणसकै है कदेई ?"

"जद ही तो छोरा नाचै है बैनजी ?" कंचन बोली।

"अै तो छोरा है, खूटा लूठा हुवै तो टोपड़िया नी थमै नाचता", करमां कैयो।

"विचार अर विवेक रै खूटा पर तो दुनियां टिकी है बाई", सुधा बोली।

"हां बैनजी, अर थानै रमता देख, म्हानै ही रळी आवै है रमण री।"

"टाबरा सागै रमण री रळी आवै बांरा उमंग अर ऊमर दोनू वधै। नहीं क्यों, थे ही खेलो काल सू।"

पाच-सात मिट बाद, घंटी लागी, खेल पूरो हुयो, टाबर आप-आपरी जाग्यां जा बैठा।

सुधा, कंचन-करमा सूं बात करती बोली, "सा'व निरवाळी किया सो हो ?"

"निरवाळी कठै, घर रो धंधो तो कीं करां ही हा ।"

"वो तो करणो ही चाईजै, पण की और ही तो हुणो चाईजै ?"

"फरमावो ?"

"अपणायत रो दायरो की बधतो करो ।"

"किया ?"

"आप-आपरै बास मे, घरे का घर रै कनै ही, दो-च्यार, दस-बीस किनी ही हुवै चावै, 'एक घड़ी आधी घडी, आधी मे पुनि आध', पाच मिट ही बैठो थामे पण बैठो जरूर । दो आक सीखैं तो सोनै मे सुगन्ध, नी तो कार-ताळ वानै देस-दुनिया अर गाव री सुभचर्चा मे ही बिलमावो की । वारै दुख-दर्द मे की पाती ही बंटावो । देस अर गाव वणावण में वारो ही की योग है काई, का 'दळियै रा ठाव' ही है कोरी ? मेहा तो नी थै, टोरी जीनै ही टुरपडी । वा मे स्वाभिमान अर दायित्व री अै भावना ही जगावो की ।"

'ठीक है बैनजी ।"

"थानै हू, प्रेमचंदजी री दो-च्यार पोथ्या दू—उपन्यास अर कहाण्या री । 'बूढी काकी' अर 'पूस की रात' जिसी कहाण्या सुणायो वानै । 'मैला आंचल' 'धरती' जिसी पूरी पोथ्यां सुणावो वानै, थोडी-थोडी रोज, देस री जाणकारी जागसी वा मे, गरीब री पीड सागै स्नेह बापरसी वा मे अर थारै सागै वांरी आत्मीयता । हां एक बात ओर, आपानै आगै पढणो ही है अर बढणो ही । पास हुया पछै गणित रो आठ थारै थमम, अर सागै संस्कृत रुपा रो सेठो हो । कचन नै 'वैद्य विसारद' री परीक्षा तो जरूर ही देणी है । ठीक है अबार तो थे जावो एकर ।" अर वै आप-आपरै घरां कानी टुरगी ।

सुधा जीमली, टोपटियै नै धोवण रो पाणी पा, छाया में मांचलियो बण । हुमेस दाई या, दो-तीन मिट बांरी पीठ पर हाथ फेरतो रही । बी री बो

चाटतै टोघडियै नस ऊंची करदी अर बी कानी देखण लागग्यो —एकटक। वा बोली, 'हा समझगी, समझगी, नस नीचै हाथ नी फेरयो, ओ ही तो है मुतळब थारो ? लै फेरूं। पीठ छोड, हाथ वण कांबळ कानी करदियो। हाथ बीरो जिया ही, ठोडी सू नीचै सिरक्यो, झाडखै री कोई सूळ, बीरै हाथ रै रड़की। बा बोली, "ओ, अबै समझी रोग असली ओ है, आ कठै लगाई रे ? नस जमी पर टेकी है, जद चुभी दीसै है आ ?" इच नैंडी सूळ, आधी माय, आधी बारै, वण खींच'र बारै काढदी। कढता ही खून रा मुणमुणिया की सुरू हुग्या अर बारै सागै-सागै ही, आत्मीयता मे डूबता मालकण रा बोल। "ओ हो ! आ तो दोरी बैंठी रे, काल तो, नी ही, रात नै गडी है कठै ही ?" ठोडी सू ले'र कावळ रै तोरै ताईं, पाच-सात बार वण हाथ फेरयो। काछा सू दो-एक चीचड ही तोडया। पीठ पर थापी देंवती फेर बोली, "अबै तो हुवा, का भळै ही की कसर है ?" टोघडियै बी कानी आपरी धाई-धापी अर राजी आख्या करदी, खुली किताब-सी। बारी आख्या री भासा पढण रो अभ्यास है बीनै। आख्या रै ऊजळै पाणी पर तिरता बीरा अबोल आखर पढती वा बोली, 'तो लै, अबै तू ही आराम कर, आउ-डेढ अधघडो हू ही करलू', अर दूर पडी वा।

आ'र जिया ही बैंठी, एक जवान, 'अति आधुनिका' कोई, आ खडी हुई, बरस तीसेक री हुवैली। एक हाथ मे ऑफिस बैग, दूजै सू गोगल्स उतारती बोली, "नमस्ते बहन जी।"

सुधा हाथ जोड़, फेर मुड्डो बी कानी सिरकावती बोली, "नमस्ते जी, बिराजो।" बैठगी बा, अर रह-रह आपरी कळाई री घडी कानी इयां देखण लागगी जाणै, आपरै बध्योड़ै टैम सू मिंट ही बेसी रुकण री फुरसत नी हुवै अठै बीनै, पण बा करै ही इया, सुधा पर आपरो रौब जमावण खातर हो, जर सुधा अंदाज लियो ईनै। सुधा कानी देखती, वा धीरै-सै बोली, "आपत्ति न हो तो, थोडा समय दीजिए।"

"नही क्यो, फरमाइए, अहोभाग्य है मेरा, आपसे बात करने मे।"

"निरीक्षिका हूं मैं प्रौढ़ शिक्षा मे, उर्मिला गर्ग कहते हैं मुझे।"

"धन्यवाद, मेरा नाम सुधा है।"

"बाई कास्ट ?"

"शर्मा हू मैं।"

सुधा कानी बण की अचंभै सू देख्यो, सोचै ही बा, 'शर्मा, मणियाँ मैं कैसे जरूर गडबड है कही, पर अपने को इससे क्या?' बोली, "सुना है आप यहा रात्रि-पाठशाला भी चलाती है?"

"हा करती हू प्रयास कुछ।"

"औरते कित्तीक आजाती होंगी?"

"अभी तो पन्द्रह के आसपास ही समझें, पहले तीस से भी ऊपर हो जाती थी।"

'गरीब लोग अकाल मे कही चले गए होंगे?"

"हा जी।"

"क्या लेती हैं आप उनसे?"

"आशीर्वाद।"

वी कानी की अचंभै सू देखती बोली, "कोरे आशीर्वाद से तो पेट भरता नही?"

सुधा पल भर वी कानी, एक गडती निजर नांखी, आ देखण नै कै पालिस कियोडो कोरो पीतळ ही है का की सोनै रो भेळ ही है कई ही? कसौटी पर घिसू की, ठा तो जद ही लागै। बडी नरमाई सू बोली बा, "श्रीमतीजी, एकाकी हूं, और एक ही समय खाती हूं, रूखा-सूखा जैसा मिलजाय ठीक है। निर्वाह किसी तरह हो जाता है तो सोचती हू, पडी हू यही।"

निरीक्षिका बी कानी रोब सू देख्यो, अर सोच्यो, 'नितान्त गरीबिनी, दुखियारिन है कोई, घर से निकाली हुई।' इसी ताढ सा आप-आप सम्बोधन करै ही, अबै आपरी अफसरी सू जागगी बीमें, अर तुम-तुम करण लागगी। बोली, "सौ-पचास रुपल्ली से क्या पार पडती होगी आजकल? भरपेट आटा-दाल मे टोटा रहता होगा। मोटी-से-मोटी साडी भी पहनो तुम, तो साठ-सत्तर से कम मे नहीं मिलेगी।" फेर आपरी साडी कानी इशारो करती बोली, "और मास भर मे दो ऐसी खरीदनी हो, तुम जैसी को तो अन्न की जगह हवा खाकर ही रहना पडे।"

"सही है आपका सोचना, पर कपडों की पूर्ति मैं कुछ, काम-धुन कर

करलेती हूं; जल लाऊं थोड़ा ?"

"बस, पीकर ही आई हूं सीधी ।" एक पल रुक'र भळे बोली, "शिक्षा तुम्हारी ?"

"मैट्रिक और संस्कृत में प्रथमा ।"

"तो तुम्हें योजना बताऊं एक, बढ़िया खाओ, बढ़िया पहनो ऐसी ।"

"बड़ी कृपा होगी, अहसान नहीं भूलूंगी ।"

"बिजली तो तुम्हारे यहां है ही ?"

"हां जी ।"

"साठ रुपए मासिक हम दे देंगे तुम्हें ।"

"फिर चाहिए ही क्या ?"

"इतना ही नहीं, कुछ और भी ।"

"अधिकस्य अधिकम् फलम्, और ही अधिक कृपा होगी ।"

"दो पीपे किरासीन, चार डिब्बे चाक, चार पेटी बरते, झाड़ू-झाडन अलग । ये हर महीने खर्च होने वाले हैं ।"

"समझ गई जी ।"

"दो लालटेन, दो बाल्टियां, दो लोटे, श्यामपट्ट, पाटिया, चार्ट और कुछ टाट पट्टियां, ये स्थाई हैं, एक बार ही मिलेंगे ।"

"जी ।"

"किरासीन न तुम्हें लाना, और न जलाना । चाक और बरतों के दस-दस, बीस-बीस पीस रख लिए कभी, साल भर बहुत हैं ।"

"पर्याप्त हैं जी, झाड़ू तो रोज वैसे ही निकलता है, फिर झाड़ू लेकर क्या करना है जी ?"

"निकलता है तो ठीक है फिर, लेकिन भरपाई तो सबकी हर महीने करनी पड़ेगी, मंडी आओ कभी तो ठीक, नहीं तो बाबू या मैं कोई-न-कोई अपने-आप पहुंच जाएगा यहां । फिफ्टी परसेंट तुम्हें, अपने-आप मिलते रहेंगे, ठीक है न फिर तो ?"

"महोदया जी, ठीक क्या, ठीक से यह कितना ऊपर है मैं कल्पना ही नहीं कर सकती, गुजर-बसर मेरा चैन से होने लगेगा, आपका परिवार सुखमय हो, आपका जोड़ा दीर्घायु ।"

"अरे हमें मालूम है, सूखी साठ रुपल्ली में क्या होता है आजकल? इसमें सरकार का काम भी हम करेंगे, जन-कल्याण भी होगा और साथ में तुम्हारा-हमारा भी।"

"साप भी मरजाए और लाठी भी न टूटे, आपका सोचना, ठीक ही नहीं सामयिक भी है। मेरे जैसी कितनी-कितनी जरूरतमंद आपको हर माह आशिषती होंगी, ऐसी उदार हृदया और दूरदर्शी अफसर बिरली ही मिलती हैं किसीको, आपका अभ्युदय निश्चित है।"

बा फूलगी, अफसरी नशो ऊपरकर फिरण लागग्यो बीरै, बोली, "इस समय एकसौ दस स्कूल हैं मेरे अडर में, सब खुश हैं।"

"भगवान करे, इनसे दुगुने स्कूल और हों आपकी रेख-रेख में।"

इतै में गिरदारी आ पूगी, पण बा की टुरण मतै ही। गिरदारी पूछ्यो, "बाईसा, पधारणो आपरो कठै सू हुयो?"

"मंडी सें", निरीक्षिका बोली।

"अठै किया, हुकम करो?"

सुधा सोच्यो, "चुळू हुया पछै, राम-राम है, अबै आपा ही क्यो चूको?"

बा बोली, "मा, आप श्रीमतीजी अधेरो बेपण नै आया है, गाहक ढूढता फिरै है कोई?"

निरीक्षिका घमकी चूठियो बोदीजती ही। पण सुधा कानी आध्या रो मूढो एकर इसो फाड्यो जाणै बीनै सावती ही गिटलेसी। बीरै घेराई-थर्मामीटर रो पारो चढ़तो लाग्यो पण होठ बीरा बर्फ रै पगां नीचै दब हा।

गिरदारी बोली, "बाई हू नी समझी थारो मतलब?"

सुधा बोली, "मनै, गळी री संस्कृति समझा वै नो अठै नारायण री मैर करण आया"; अर कोई पेट-चुम्मटं धारी री आवाज आई, "उर्मिला जी?"

रोहीड़ै रो फूल थायो-गायो टूरयो, बिना मारीनै देख्या।

गिरदारी बोली, "पण बाई, ईनै आ ठा नहीं कै पूर अठै पाटदांरा है, पण घर दिल्ली है।"

"ठा-कू री तो चलो कोई बात नी, धोखो इत्तो ही आवै है कै कूडो-साचो बिचारी नै चाय रो न्यौरो ही नी काढसकी ।"

"आ कसर जवकै कदेई आवै जद, व्याज समेत काढ लिए ।"

"आ तो आ चुकी, फेर तो आ मूढो ही नी करै ईनै ।" अर बण सामनै देख्यो, बीनै फळसै निकळती निरीक्षिकाजी री पीठ ही दीखी थोडी-सी ।

15

सूरज हाथ-सवा हाथ चढ्यो हुसी । मधरी पून मिठास भरै ही जीवण मे । पेड अगलै दिना रै संघर्ष खातर सावठीजै हा । या पर तो सलाह करै हा पंखेरू अर मिंदर री चौकी पर करै हा गाव रा बूढा-वडेरा ।

एक समझदार बोल्यो, "हुती विधवा अर पड़तो काळ, सुरू-सुरू मे बडा दोरा । सुरू मे तो आपा ही आ ही सोची ही कै धन अैसकै इक्को-दुक्को ही भलां ही बचो पण सांवणियै सुणली, मावट आछी करदी तो धन ही आजातां ई मौज करली अर बीरै लारै की आपा ही । पण ऊकळती रा अगला दो-ढाई महीना धन नै ओखा लागै, पछै'स बीरै घर री कुण जाणै ? फेर ही आपणी स्याणप, पाणी आडी पाळ पैला बाधण मे ही है ।"

केई बोल्या, "बिल्कुल ठीक, कुवो तो आग लागण सू पैला ही खुदणो चाईजै पण बिध ईंरी किया वैठै, आ सोचो ?"

दाडी पर हाथ फेरतो एक जणो बोल्यो, "विध आ ही कै दो जणा दीपता कोई कळकतै जा'र, जे दस-बीस हजार रो चंदो टाच लावै तो, घणो ही सारो अर धन ही । जाया कुण नटै ? दस-बीस हजार तो एक गवाडो ही देसकै है, मन में धारै तो ? इत्तो ही करदै राज, बी गोसेवा-संघ-वाळा अर की पूण-पावलो भोगनै धणी तो चूरो सेवतो धन, न ढोल छीजै अर न दूध मे ही ।"

बात सगळा रै जचगी, भेजणा कीनै आ तै भी वठै ही

गोपाळ म्हाराज अर हरधनजी गया कलकतै। गया पछै चिट्ठी तो भरीजण री ही हो पण ईंरै मागै-सागै आं-दोना आप-आपरी पेटियां ही पूरी करलियो, गळै ताईं। गोपाल म्हाराज रै ब्याव हो छोरी रो छेकड़लो, अर हरधनजी रै पड़ै हो माहूंगो पैलड़ो। बहू-बेटयां अर बूढक्या नैं लदा-लदा'र दोना ही 32×20×10" इंची, एक-एक ट्रंक दाब-दाब भरली कपड़ै-लत्तै अर भेट-पूजा सू। आनैं नी देवणिया मे खाली दो ही जणा हा सेठ सिवदासजी अर जानकीलाल। सिवदासजी रो सभाव तो अमरीका दाईं परायै कांधै खड़को किया राजी अर जानकीलाल रो पकड़यां पइसै नैं नी छोडणा।

सिवदासजी, हरधनजी नैं आपरा ग्रह-गोचर ही पूछया अर की गाव रा समचार ही। गोपाल म्हाराज विचाळै ही बोल्या, "सेठा, जलमभूमि है छेकड़, साल मे महीनो-दो महीना, कदे-कणास गाव ही तो पधारणा करो?"

कदेल री भेली हुयोड़ी, सेठा री मालमा जाणै इसै नैं ही उडीकै ही। मोकै रो यार करता वै बोल्या, "गाव आवां, पण आवां कीं रै भरोसै?"

"आ किया कही सेठा", हरधनजी, आ कांनी देखता थकै अचरज सू बोल्या।

"आ कही, भीड़ तो पाती आया है था जिमा, ईं खातर।"

"क्यों सेठमा, काईं खोट है म्हारै मे, फरमावो?"

"खोट थामैं क्यों, खोट है सगळो म्हा लोगां मे।"

"बात रो तावळ दा, गांठ नैं की खोल्या सारै?"

"गांठ खोल्योड़ी ही है, गाव है म्हारो, म्हारै बाप-दादा रो, आवण री रुळी ही आवै अर प्रेम सू पांव पइसा लगावण री ही।"

"लगावो नी कांईं करो, लगावण जोग हो।"

"सगळा सू मोटी बात है, आपरो दिल है लगावण रो", पुजारी जी प्रशंसा रै पुळ नैं और ऊंचो दियो।

"नो दिल है जद, गाव मे आ'र कुंडी रो कादो ही म्हे काढां कांईं?"

सेठ की अणगाई सू बोल्या।

"नहीं तो", हरधनजी होठं-में जवाब दियो।

"पाखाना साफ हो, म्हे ही करा काई ?"

"थे क्यों ?"

"तो कुण करै ?"

"भंगी।"

"नहीं करै वै तो सोट मारां थारै का कुश्ती करा वा सागै ?"

"पण ईं में म्हे काई करसका हा सेठ साब ?"

"तो थे खाली म्हारै पर ही खसम हो काई ? सवा रिपियो अर नारेळ कळस में, इग्यारै-इक्कीस गणेस पूजा में अर इकावन-एक सौ एक दिखणा में, कदेई काति म्हातम, कदेई इग्यारस री कथा थर कदेई पूनम री, सराध, होम, अनुष्ठान, जप अर काई ठा कित्ता-कित्ता लाग-दापा लगा राख्या है म्हा पर, सिर ही सूंवों नी करण दो म्हानैं तो ? अर गाव री बेगार और बाकी, अस्पताल, स्कूल, मिंदर, लाइब्रेरी अर गौसाळ, हाथ सगळा आगै ही मांडै राखै । ओ सगळो भार म्हे ईं खातर ही ढोवा हां काई कै आवा जद, सुविधा इसी देवो थे कै भळै, गाव कानी आवण नैं मूढो ही नी करां।"

वै दोनूं सेठा कानी देखै तो हा, पण की कैंवता सकै हा । मोचै हा, "दुधारू धेन, पावसी धड़ी है सामनै, की कैंवता ही चमक पड़ी हुई तो, मैनत सगळी बेकार। आसागीर री आत्मा में स्वाभिमान रो उजास कठै ? ऊंदरी सिंघ नैं जीमगी । वै खाली इत्तो ही बोल्या, "काई बतावां सेठ साब?" अर पछै कूडी उबास्यां लेंवता, होठा पर जीभ फेरण लागग्या । सेठ पुजारी जी नैं जाणै है कै ओ आदमी हां-में-हां मिलावण रै सिवा, बाठो पर मूंगण-जोगो ही नहीं, अर जाणै पुजारीजी ही है कै सेठ गुड़ दिखा'र, अगलै रो गळो करवा नाखै, पण एक है दाता अर दूसरो है जाचक, धरती अर आकास रो फर्क ।

सेठ भळै बोल्या, "भंग्या रो नूळो बिया ही चलै है, का कम है को ?"

"वो मू ही तेज है सेठा।"

"मिंदर में आयोडो हो, वा लाय गईं'क है ?"

"है।"

"वा क्यों जावै, जावण नैं म्हे योडा हा काई ? साची पूछो तो या

लोगा सू वा, साख हाथ आठी । थे वामण, भजनानन्दी, अर कर्मकांडी हु'र, किसोक सुधारघो है गाव नै ? पण चोखो म्हारो काई लै, सुख थे ही पा लेया ? म्हानै सरीर तो सुधारणो हुसी तो, कनै ही म्हारै जसेडी पडै है, हवाखोरी च्यार दिन बठै ही करलेस्या—गाव सू आछी । पाच पइसा धर्म-पुन में लगाणा हुसी कठै ही तो, तीर्थ घणा ही है, बामण-स्यामी जिमावण री जी में आसी तो अठै ही एक नै हेलो मारघा दस आवै है । गाव में लगाया ही सिट्टो की घणो निकळै है काई ?" अर विदागरी में वा आनै, नुवो पइसो ही नी परखायो । इंया ही जानकीलाल करी । वो बोल्यो, "म्हाराज, सवाळ हुवै थारै तो म्हां पर, ब्याव-मावो अर माहेरो आ पडै कोई तो म्हां पर, इसो काई कुवेर वरसै है म्हारै ? ठीक है, मनै देणो हुसी की, तो थानै घर बैठानै ही भेजदेस्यू" अर एकदम ही घंरग टोरदिया वानै, पाच पइसा री टिकट ही नी लगाई कठै ही ?

बामण विचारा उदास तो हुवण रा, ही हा, पण करै काई, किसो फोर्स ही वा कनै ? आरै सारै तो इत्तो ही हो कै आ आपरी आसीस नै काढ़ रापी, आखर ही थारै नी फाळ्यो पण सेठा पर, इंरो थाई असर हुये हो ? थे तो डरै ही एक सैलटैक्स अर इनकम-टैक्सआळा सू है, बाकी तो परमात्मा सू ही नही, वो सागै तो थे, पाठ, प्रसाद अर अगरबत्ती रो मरोसार ही राखै है, आचरण रो नही ।

वा, दो जणा नी दियो तो ही, म्हाराजा रै एक-एक धोटी, डोरो गोनै रा, छिन्नी, प्यालो अर पायल तीन-तीन नग चादी रा अर हजार नैडी नगदी, थापरग्या । पाच-सात दिन फिर-फिर चोखी तो घरी रोटी, जाडा नीचै दिया पान-फिरचा अर चोखा चड्या मोटर-द्रामा पर । सैरा पर एकर तो थी चमको चाचरगी ।

गहणा अर एक छावड़ी पूडी-मीठै री में, मित्या रा एक दिन गाडी पकड़नी आ । वाना कल्ला-करना, गाव नै वारै बजी आवता थे मोदा हुगी । दिनूगै गाव पूगो गाव, 'मुगलसराय—मुगलसराय' रो रोळो सुण'र, आख्या गुली आगी । भिड़ना ही पैना तो आ, आप-आपरै हाथा रा दरगम फिदा, पछै निजर करी मोट नोचै संदूका वानी, पण सदूका निजर नी आई । गोसाळ म्हाराज आख्या नै मायळ ममळी एकर, फेर देखो वानै, पण नी

दीखी वैं। वैं वैल्या, "पडजी, म्हारी आख्या सागण नही, का सदूका लुकगी, सावळ देखो तो सरी, संदूका नी दीखैं ?"

"आ ही वात हूं पूछू हो थानैं, ईरो मुतलब है सदूका उतरगी कठै ही ?"

"उतरगी आपे ही ?"

"आपे ही तो काई, उतारी है कण ही ?"

"तो अबै ?"

"काई करा अबै थे ही बतावो ?"

'कूका डब्बै मे जोर-जोर सू, कोई सुणै तो', आ कह्य हा, पण होठ बद ही राख्या। सैंतरा-वैंतरा हुग्या दोनू ही पण गोपाळ म्हाराज रो हाल और ही माडो। गोडा आरा दीखण मे सावता, पण सरधा बारी एकदम टूटगी। जीभ ही सूकगी अर निवटण री सका ही। काळजो हो तो बारो सागण जाग्या ही हो, पण नाड रो ठा, वूकिया कनै आवता ही लागै हो। केया पूछ्यो बानैं, "क्या खो गया बाबा ?"

धीरै-सै कैयो बा, "काळजो।"

"इसका मतलब, कुछ नही बचा बावा ?"

"माथो बच्यो है, बो थे काटलो पिंड छूटै।"

हरधनजी बा लोगा नै समझावै हा, गोपाळ म्हाराज तो गूंगा-सा लोगा रैं सामान कानी देखै हा। दो मिंट बाद हरधनजी बोल्या, "पुजारीजी, छाबडकी ही उतारली दीसै है कण ही ?"

"पाप कट्यो, कोनैं सूझै है छाबड़की ? आपा नै ही उतारलैंतो कोई सो अधै मिटतो ?"

आरै कनै तो टिगटा अर पीतळ रो एक-एक लोटो, का नीचैं बिछायोडा गूदडा ममझो चावै बीटा, अँ बच्या। जेवा मे रिपियैं-पूण रिपियैं रो रेजगी अर जरदै-चूनै री एक-एक भूगळी, वैं ही भाग रो धणखरो खाली। पग घीसता, घर आ ले तो लियो कियां ही, पण बडो दोरो, कथा आ, लम्बी है, आगै पर छोडा ईंनैं।

ढाई-तीन महीना खातर, फैमिन-वर्क खोल्यो राज। सिरपंच, पटवारी अर ओवरसीयर, खैंच्या-खैंच्या फिरै है अर सागै पाच-सात बारा पिछलग्गू।

गाव रै दिखणादै गोरवै री जड सू एक फांटो सुरू हुवै है—कोई दो कोस लम्बो। वी सू तीन वास जुडै है—रामपुरै सागै। जलम ई फांटै रो आज सू बीस साल पैला हुयो हो—एक अकाळ मे। ऊमर देखतां आज ओ समतल मन, समतल सरीर, छक जवानी में हुणों चाईजै हो, पण है ईंरो उरटो।

उदास अर रोगलो, पग पागळा अर सरीर घणखरो घायल, तो ही सहनसील ओ, आपरी पीड आपरै मू नी प्रकासै। पण ईंरा सत-सत अबोल घाव, बिना जीभ ही बोलै अर सारकर निकळतै बटाऊ रो ध्यान आप कानी खीचै। कुण जाणै, सरकारी कागदां में ईंरो नाव, काई है पण फैमिन में जलम लेवण रै कारण, ईंरो नाव लोगा फैमिन-फाटो काढदियो, वो आज ही चालै है।

आ पछली बीस-बाईस साला मे ओ गाव छव बिरिया अकाळ री फेट में आयो, आ सातवी बिरिया है। छवू बिरिआं ही सदकइ लुगाई-आदमी ईंगो धैंगो चमकावण अर सरीर सुघड बणावण मे साग्या, दस-पाच दिन नही—महीना। राज कर्मचारया री बधती कतार अर अफसर-दफतरा री दौडती जीपा देख, ओ (फांटो) सोच्या करतो कै, "कूटीजतो-पीटीजतो एक दिन हू ही, धरती री मोटी सड़का सागै जा मिलस्यू अर वा सागै कांधै-सू-कांधो मिला राष्ट्र री प्रगति में पूरो सहयोग देस्यू। म्हारी फोलादी छाती पर, मुळकता गाडी-गाडा अर हंसती साइकला ही नही, ट्रक अर ट्रैक्टर ही दौड़सी। थारी गति अर दिस-दीठ में म्हारो सरीर टूटै तो ही हूं राजी ही नही, सार्थक भी, पण हर बार मनसूबा म्हारा धूड में मिलता गया, म्हारी चैनना धरती पर ऊगती हरियाली नै सरकारी टीडी चरगी, हाथ-पग गाभग जोगो ही नी राख्यो मनै। पण म्हारी छाती पर नाटक करणिया आवै मोरै तीन-च्यार महीना चोवणी सो गेटी थाई, घूब पियो अर घूब ही उगायो वो दुर्गन्ध बोरी गाव रै धूणडा में ही जा बटी। अफसर अर ओवरसियरा रै टी बी अर फिज फिट हुग्या, बंगला अर क्वाटर बणग्या अर देखता-देखता वै रंगीन ट्यूब-लाईटां रै प्रकाश मे जगमगा उठ्या।

विसेसता मा कै बां मे सू म्हारो कोई ही कृतज्ञ नी। हू भारत मा रो अभिन्न अग हू, म्हारा कृतज्ञ नहीं वे भारत मा रा काई हुसी ?

आ छव्र् विरिया मे हू हस्यो खाली एक ही बिरिया ही। जाटा री एक जवान पण गरीब छोरी नै एक मनचल्यै पटवारी बीस रो लोट दिखा यतळाई ही—बोरी गरीबी नाजायज फायदो उठावंण खातर पण बात उल्टी पडी। सिर पर खाली कूडो लिया, वा घर कानी जावै ही। कूडो बण परियां फैंक्यो; एक हाथ में बुग्गी पकडली, दूसरै मे आपरी एक फीडी जूती।

लाड करण लागगी बठै ही। सरीर री ही सतोल अर मन री ही। विचमें पड'र केई नी छुडावता तो पटवारी री टाट वा मा रै जलम्यै री सी काढ'र छोडती। पटवारी बो रात ही सहर मे बड़ग्यो, बो तो आज तांई जात-सड़्लै रै मिस ही ईनै नी आयो। आज ही, राष्ट्र री मूळ धारा सू मिलण री सोचू हूं पण पेस पड़नी मुस्किल लागै है मनै।"

काम चालू हुग्यो। भगी आ पूग्या। पाच-सात आदमी अर इत्ती ही लुगाया।

आवता ही दो-एक बूढा-बुढाकड़ बोल्या, "आज हाथी हळ किया जुतग्या रे, ये धूड ढोवण किया आयग्या ?"

"म्हे तो छोटा-मोटा ही धूड-फूस में हुया अन्नदाता, धूड़ ढोवंण रो किसो मैणो है ?" मधै कैयो।

"मैणो किया नी, घराणों लाजै है नी ?"

"आप दावै ज्यू कह सको हो अन्नदाता, म्हे तो चाकर हा आपरा।"

एक दूसरो बिचाळै ही बोल्यो, "चाकर पैला कदेई रैया हुस्यो, अबार तो थे ठाकर हो म्हारा।"

लगतै ही तीजै एक, और होठ खोल्या, "अबै तो बामणी आ बर्मा घरा मे, दुर्गंध ही मेटदी अर दळदर नै ही बिदा कियो। आगणा मे अबै होम री धुवौं मैकसी अर मत्रा रा सुर सुणीजसी; धूड़ सू मायो बाळन नै लगावो ? औपै है वा ढोणा ?"

भग्या री टोळी उदास-उदास सुणै ही। मधो सोचै हो 'आ बळघ, मार मनै', राड आनै तो घिणाणै मोल लेणी पण आपा नै अबै, पूछो बोलणो

ही क्यो है ?" वै सगळा ही, चुपचाप काम पर जा लाग्या।

पावडा बीसेक परिया, गाव री पचासू लुगाया त्यारं-त्यारं झूमका मे बंटी, कूडा मन बारा कदे-कणास नाखै ही। आदमी घणवरा सोचै हा कं घडी-दो घड़ी मे हाजरड़ी लिखलै तो लारो छूटै, मूढा घरा कानी करा। परिया, एक गैरं खेजडं नीचै, सरपच, पटवारी, अर एक मास्टर लोह री कुर्स्या पर बैठा हा। दो-एक माचा पर च्यार-पाचेक चापलूसिया ही अफसरी पूछ मे हालै हा—कुर्स्यां सागै। गप्पा उडै ही, बा सागै बीड़ी-सिगरेटा ही।

सरपच अर चौरी पूछा, काम सुरू हुवण सू पैला ही एक जाळ गूथ राख्यो हो कं भमीड़ा नै श्रीगणेस मे ही इसा ताचकावो कं, फेर वै तो ईनै बुलाया ही नी आवै।

मयलै रै छोरं नै ग्राम-सेवक हेलो कियो, "सुरजिया अठै आ तो ?"

वो जिया ही आया, ग्राम-सेवक बोल्यो, "आधो है बाल्टी ठुकरा नाखी ?"

छोरो भोचक्को-सो बोल्यो, "हू तो थीरं परिया कर आयो हू अन्नदाता, पल्लो ही नी लाग्यो म्हारो तो बीरं ?"

इतै मे मास्टर की रीस मे आवतो बोल्यो, "एक तो कसूर अर ऊपर गू कूड और। म्हा देखणिया री आख्या मे धूड नाखै है?" पण अणजचती ही, एक ओळाव री धरदी छोरं रं। छोरं बाको फाड दियो। ग्राम-सेवक बोल्यो, "गाव सुणावण नै ऊपर सू जलडा और ?"

एक पिट्टू यान नै सारी, "जलड़ा करणा सिखाणा थोडा ही पड़ै है ?"

पटवारी की बुजर्गी बाणी मे बोल्यो, "इत्तो बाको फाडै, काई तरवार निकळगी थारै ?"

पण छोरं आरी की नी सुणी, जोर सडक्यो। बीरो रोवती आवाज धून मे फैसती, कूडा नाखती भीड़ ताई जा पूगी। भीड रा कान अर आख्या आवाज कानी हुग्या। पण ही कहदियो—खडै ही, "ओ तो मघै रो सुरजियो दीगै है।"

इत्तो सुणता ही, भमी अर भमणा हा ज्यू ही टूट पड़पा—धापाधापा। मम्मा री टोळी-री-टोळी नै दोड़ती देख, आगै-पागै रो पलपगों और

भाग 2

लुगाया ही, आपरा पग खाथा करदिया। अै सगळा, पलक झपै जिती ताळ मे खेजड़े नीचै आ पूग्या।

मघै री बहू आवती ही बोली, "माईता रोंवण जिसो क्यों राख्यो ईंनै, कंठ टूंप'र, रोणै रो दुख हमेसा खातर ही मेट देवता? क्यो दी ईंरै, काई भैंस खोलली अण थारी?"

लगती ही रूपै री बहू और बोली, "ईं सागै काई वैर काढै हा? का खड़ो आदमी मुहावै नी थानै?"

लार-रो-लार रूपो बोल्यो, "ठोकी वा तो चोखी, माईतपणो है थारो, पण आ तो बतावो, थारो उजाड काई कियो अण?"

ग्राम-सेवक बोल्यो, "पाणी री बाल्टी ठुकरा नाखी अण।"

मास्टर बोल्यो लगतो ही, "ठुकरायो पाणी कुण पियै?"

रूपो बोल्यो, "पाणी अन्नदाता किसो घी रो घड़ो हो? जे लागग्यो भूल मे पग तो मत पियो ढोळदो, पण कूटण रो किसो कायदो है?"

केई भगणा सागै ही बोली, "कूटया ही को वडा आदमी वजो तो कसर क्यो राखो, कूट'र और काढलो मन री?"

पटवारी बोल्यो, "इसो काई घाव घालदियो ईंरै, सै ही कपडा सू इत्ता बारै क्यों आवो?"

रूपो बोल्यो, "घाव ही नी मालका, थे घालदियो डर ईंरै, ईंरै ही नी, म्हां सगळां रै कै म्हारो अठै आणों खतरै सू खाली नी।"

मघो बोल्यो, "आ तैंसीलदारी थे राखो अन्नदाता, हाथ-पग हिला'र रोटी खाणी है म्हानै तो! अठै नी मुहाया थानै तो दो कोस आगै घटस्या कठै ही।"

छोरो रोवतो-रोंवतो बिना पूछ्यां ही बोल्यो, "बावा, बाल्टी रै पग छोड तो म्हारी छाया ही नी पड़ी वीं पर।"

लुगाया आरा सवाल-जबाव सुणै ही। संकाळू केई काणै गूवटा सू देखै अर आकै ही बातैं।

आ सगळां री अगुवा रूपां अर करमा री काकी ही। 'चाला, आपा ही देखां, काईं तमासो है?' ओ सोचती, जवानी रो थळी पर खड़ी दम-बारै छोरयां परिया सू और आ पूगी। सास गळां में, हांफै ही।

रोलै नै की मोळो घालण नै, सरपच बोल्यो—मघै कानी देखतो, "थाँ उजाड कियो तो ठोकदी कण ही माड़ी-मी, तो काई मोती पिरग्यां ढूंरो ?"

मघै री जीभ उथळीजी नी बीमू पैला ही रूपां बोली, "पण ठोकीजणा तो थे चाईजो सगळा, ओ गरीब, विचारो क्यों ?"

"म्हे क्यों ?"

"थे अठै करो ही काई हो मिवा उजाड़ रै ? रैय्यत सू टळो न राज सू ?"

सरपच आपरी मायलो धरती पर सोधै हो कै, "जवाब मे पाछो काई कैवणो चाईजै ईनै ?"

सरपच नै अणमाग्यो योग देवनो ग्राम-सेवक बोल्यो, "भुवाजी, थोड़ो-सो डरायो ही हो, ठोकी ढूंरै कण ही ?"

रूपा डोळा की ऊपर पैंचती बोली, "बिचाळै सपर-चपर करण री जरूरत नी है, कोई पूछै न पूछै, हूं लाडै री भुवा, कण पूछ्यो हो थानै ?"

ग्राम-सेवक रै होठा रै ताळो लागग्यो अर चाबी जाणै गमगी हुवै। बीरी तो फेर हिम्मत ही नी हुई बोलण री।

रूपा सरपच कानी मू करती बोली, "सरपंचा, मैरबानी कर फरमायो देखा कै ढूंरै दी किसै मिरदार, दरसण तो साबळ म्हे ही करा बीरा ?"

थूक गिटतो सरपच बोल्यो, "पाणी री बाल्टी ढुकरा भाणी बतावै है अण।"

"चेतो तो आपरो घर मे ही है नी ? पूछ्यो आपनै कै ढूंरै दी कण ? आप फरमायो हो कै बाल्टी अण ढुकगाई। पूछा दियाळी री अर गायां होळी री, म्हारै पूछण रो जवाब दो कै ढूंरै टोकी कण ?"

सरपच रो थूक सूकग्यो अर गाले पैरो हो। सोच्यो 'नाव सू अर अै बीनै जिमावण लागगी तो नाव मे हाथ देवण बीनै सुहावै ही किणो ?' अर "अर पछै पाई टा, बाद री किम बीनै फुरे ?"

मनै गडी मटकोनी छप बोली, "भुवाजी, काई पूछो हो आनै, निरंतर मानो तो आंना साम्योडा है पडिन न हो ?"

परमा री राती बोली, "पाणी ढुकरा नाख्यो पन पाणी ? बटै, टेड पाखोई ठीकरा मे ?"

घेरो वधै हो, सेजडी रै स्टाफ री हवा उडै ही।

रूपा मुरजियै नै बोली, छोरा कण दी रे थारै, तू बता अै तो लुगायां है सै धणी रो नाव नी लै।" लुगाया सैं हंस पडी, पण अै पोरंदार सगळा, माय रा मायं भुसळीजग्या।

छोरो बोल्यो, "मास्टरजी।"

करमा री काकी बोली, "किमो मास्टरजी है, मनै बताए तू, छोरां नै कूट-कूट, हिल्यांडो दीसे है बो ?"

छोरो भळे बोल्यो, "म्हारो कूडो नांव लगायो गाव-सेवकजी।"

रूपा बोली, "लगावै तो सरी ही, अठै तो लूण ही आरो घाल्यो पड़ै है ?"

दस बजगी दिनूगै री। तावड़ो कान काढै हो अर हवा करै ही पग छाया। परिया मू सुधा, सिरदारी अर कचन-करमां आवै ही। करमां सुधा नै कैयो हो, "बैनजी, अकाळ-राहत काम सुरू हुयो है गाव मे—घास-बास तो की मे ही देखो।"

बा बोली, "मनै घोस'र काई करस्यो, मे ही ठीक हो।"

"तो थानै ईयां किसो कोई पकड़ै है। सागी पगा आपा पाछा टुर पडस्या।"

अर टुरपडी आ सागै।

जिया ही बै आई, कचन अर सुधा, ई घेरियै सू दो पावडा परियां ही घडो हुगी—एक फोग सारै। करमा अर सिरदारी भीड़ मे आ मिली। सरपंच मन-ही-मन जगदम्बा नै याद करै ही—'मा, कड़ाही करस्यू थारी, ग्रह नै टाळ', पण बीनै ओ ठा नी कै अठै भगवती घणी हैं अर है ही सगळी उबाणै पगा नी।

सिरदारी सरपंच कानी मुजरो करती बोली, "किया माईता, आज अगाऊ रुपनी चुरावो हो काई ? भीड किया घेरो दे राख्यो है ?"

केई बोली, "एकनै तो चुकादियो, तू और चूकलै सिरदारी।"

रूपा बोली, "सरपच कानी मू तो रुपनो चूरग्यो, हुयो हो जिकै दिन ही।"

बात री सीध बधी जद, सिरदारी बोली, "माईता, मुद्राकरी है आप

लोगा री तो नी आवा काल सू ?"

रूपां बोली, "आरी ठाकरी-कुठाकरी काईं ? अं आप ही चाकरी रै चिप्या फिरै है। अफसर आवै कोई तो बी सू बात करां की।"

कण हीं कैयो, "अफसर कोई आऊ तो बतावै है—घड़ी-दो घड़ी में।"

'तो आपणै घड़ी-दो घड़ी में किसी खाटी-मोळी हुवै है ? घरे नहीं अठै हीं सही ?"

करमा आगै आई, "रूपां नै बोली, "भुवा, ईं छोरै रै ठोकणआळै नै मनै बता तो ?"

"कीनै-कीनै बताऊं ?" कह'र वा एकर की चुप हुगी।

मास्टर सोचै हो, 'बेकसूर टाबरा नैं आज ताईं कुटया है, बीरै नावै री सैं कलमा अबार सागै ही चूकसी दीसैं है—"हे भैरूंनाथ बाबा, सिंदूर अर माळीपाना, बकरो अर बोतल सैं, ईं आईं बलाय नै टाळै।"

डरै तो पटवारी अर ग्राम-सेवक ही हा, पण सरपंच री काळजो जाग्या छोड'र की नीचै जावतो लाग्यो बीनै। कण हीं होळै-सैं करमा नै कैयो, "बाईसा, मास्टर हो देवणआळो।"

करमा नैं किमी मोल लाणी ही, जूती काली हाथ कियो ही हो बण, अचाणचको जीप रो हरड़ाट सुणीज्यो। सगळां ही सोच्यो, 'अफसर आवै दीसैं है।' काल सगळा रा खडा हुग्या अर निजर बीनै लागगी। सरपच सोचै हो, लै भई जीवड़ा, 'आज ओळभो ही मिलसी अर बदनामी ही।' होठ सूकै हा अर ब्लड-प्रसर बधै हो। दो ही मिंट हुया हुसी काकर ढोवण-आळो एक ट्रकड़ो हो, देखता-देखता सगळां रै सामनैकर निकलग्यो।

करमा जूती काढती बोली, "कठै है मास्टर बो ?" पण लोगा री आंख्या जद, ट्रकड़ै कानी लाग्योड़ी ही, बो चुपकै-सैं काईं ठा कद सिरक्यो, लोगा नैं ठा ही नी लाग्यो। करमा जूती तो पग में पाछी घालली पण रीस पाछी नी पड़ी बी री। जोस घणा नैं ही आयोड़ो हो, पण सगळी श्रीगणेस नैं उडीकै ही।

लोगा नैं पाणी छलावण नैं, परतू बामण आयोड़ो हो। बरस पचासेक रो है बो। करमा नैं बोल्यो, "तू स्याणी है बाई, धीरज राख थोडो, इंया जूती काढया गाव री बदनामी हुवै नी ?"

"गाव री बदनामी सू डरै बो चेतो ठिकाणै नी राखै ? बकालात करण लाग्या धणी ही—होस हैक नी, की ?"

म्हाराजियै देख्यो, 'कावळ पजग्या दीसा हा, अबै आ धिगाणै खेंच'र क्यों ली, काई कमीसन सोंपै हो अठै ? चालू करदी कोनै ही तो पछै मनवार झलणी ही ओखो हुवैली। सकपकायो एकर तो पण फेर दिस दीखगी की। बीनै ठा है कै आ मिदरआळी कनै पढण जाया करै है, बीनै मानै ही मोकळी है, अर बा भाग री अवार अठै आयोडी है, बो दो पावडा बीनै टुर'र, मुधा नै बोल्यो हाथ जोड़तो—"बाईसा थे थोडी मैंर करो नी ?"

"हू काई मैंर करू बावासा ?"

म्हाराजियै एकर बी कानी देख्यो अर सोच्यो, "आवै नी कुवै सू निकळ'र खाड मे पड़ बैठू। आ ही बीरै माथै बाधणजोगी ही नी हुवै ?"

मुधा बोली, "बात काई है बावोसा, सावळ फरमावो नी आप ?"

अबै की जी में जी आयो म्हाराजियै रो। बोल्यो,"करमा नै ठडी-मीठी घाल'र, ओ महाभारत खिडावो नी आप।"

"आप तो सगळा रै माईत समान हो, आपरो कैयो कुण टाळै है?" बण कचन नै सैन करी। कंचन-करमा नै बोली, "बैनजी नै देरी हुवै है, अर करमा एकदम सू टुर पडी। सागै, भीड़ ही छटणी सुरू हुगी। न्यारा-न्यारा झूमका आप-आपरी दिस कानी खिडग्या।

म्हाराज सगळा सू बात करतो सरपच नै बोल्यो, "ठाकरसा, [redacted] तो ईं मिदरआळी रो गुण मानू हूं, साथ अर लडाई रो काई, किसी दिस चालै ? लुगाया रो की नी बिगड़तो, रम्मत ही सही, पण केया रो माजनो माटी मेळो जा रळतो, फेर काई करता ?"

एक दूसरो बोल्यो, "ईं लुगाई कनै है तो कोई स्याळ-सींगी।"

"हा जचै है।" घणकरा बी री बात री हा भरी।

16

भग्या विचारां पच-पचा'र किया ही आप-आपरै घर आगै एक-एक कमरियो खडो करलियो। न बा पर, बारै टीप, न मायं, अर न किवाड-कूटा ही, खाली ढाचा-ढाचा ही खडा हुया पण ईसकैबाजा नै तो काणकी री काजळ ही नी सुहायो, वै अचभो ही करै अर ईसको ही। ईसकै री पुष्टि मे वै चर्चा करै कै आरा घरिया नथियै सुनार री जाग्यां पर है, वो आस-औलाद-बारो तो हो ही, सागै हाथ री मैल ही नी परखावतो कीनै ही। लारै बीरै. लप गूधरी ही नी खिडी, खुरचण बीरी ही वा जमी मे ही रही। नीव खुदाई मे अबार, बीरी कांई हाडकी भंगीडा रै हाथ लागगी दीसै है अर का, फेर ईं लुगावडी (मुधा) कनै मोवनी-विद्या है कोई। अबार मायं-माय लोगा रै इसी घाटा-फार्सा लाग्योडी है कै, टक टाळन मे ही फेफी आवै है अर आरै कमरा चिणीजै है इसो काई आभो दूसै है आरै ? पण मन रै होठा पर आ राखण री तकलीफ कोई नी करै कै आ, दारू-मास तो घणी बात है, छोड-छिटकाई बीडी-चिलम नै ही, व्यसन है आरै रोटी रो अर हेत है काम रो। रोटी न्यारी-न्यारी सेकै तो काई ? दिस सगळा री एक, पग सगळां रा सागै, अर हाथ सगळा रा जुड़वा, चावै तो अै दिना नै भींच'र भेळा करदै घटा में अर घटा नै चुटक्या मे, कमरिया किसी चकारी मे है ?

अकाळ-राहत काम री फायदो ही आं उठायो, तावै आयो जिसो। पाखरिया री पार पड़ती तो. वै थानै, काम कानी मू हीं नी करण देवता, पण भलो हुवै बिचारी करमा रो वण आं कानी टेढी आंख ही नी उठावण दी कीनै ही। बांरा मैला मनसूबा बारै ही छीलरां में डूब'र पूरा हुया। भंग्यां मे ईं मू बारी आस्था अर अभयता री ऊमर वधी।

जून रो पछलो हफ्तो हो, नौ बजी ही रात री। हवा में अमूजणी ही, तिस अर पसीनै रो जोर हो। सिरदारी रै काळजै दाह उठै ही। बा खजूर री पखी भिगो-भिगो हिलावै ही मू आगै। मुधा बोली, "मा, खामो ताळ हुगी तनै, हाथ हिलावता, हाथ थकग्यो हुसी, ला मनै झला पखी, हवा हूं घालू काई देर।"

"हूं तो दुख पाऊं हूं, म्हारी आई, तनै फोडा ओर घालूं—सूधी बैठी

नै, इया अधघड़ी मे पिघळू तो पिघळन दै", सिरदारी पाछी बोली। अर ईं सागै ही कंचन अर करमा आ खडी हुई सामनै। सुधा बोली, "बायां ये अबार किया ?"

करमा बोली, "भाई, पालै री झाल ले'र मडी गया हा, आवता अखबार लै'र आया है।"

सुधा सैज मे ही समझगी, बोली, "रिजल्ट आयग्यो काईं ?"

"हां।"

"सुणा फेर किया रैयो ?"

"आप ही देखो, म्हारै तो समझ मे को बैठो नी ?"

अखबार ले लियो सुधा, नम्बर देखती बा ज्यू-ज्यू आगै बधै ही, बिया-बिया कचन-करमां रै चैरा पर कित्ती ही तरै रा भाव डूबै अर तिरै हा। बै सुधा कानी एकटक देखती सोचै ही, सावरिया, सुरसती सुभ बोलै ईं रै मूढै। आख्या, सिरदारी ही सुधा कानी तेडै ही। बा पखी चलाणी ही भूलगी अर दाह नै ही। अखबार आख्या आगै सू अळगो करती, सुधा अचाणचकी बोली, "बायां, अबै तो, मिठाई त्यार करो बेगी सी ?"

"आप हुकम करो जद ही", दोनू ही मुळकती बोली।

सिरदारी बोली, "आरी मिठाई नै तो, एकर छोड बाई, पैला हू करू मिठाई त्यार, सावळ सुणा तो सरी मनै, काईं समचार छप्यो है छापै मे ?"

"दोनू ही सैकिड डिवीजन पास हुई है मा।"

दोनू ही सुधा रै पगा पर निवण लागी पण, वण बानै पल भर पैला ही रोकदी, बोली, "आपा तो ऊमर री एकसी धरती पर हा, निवो, थारै मेज कल्याण मे लागी ईं मा रै पगा पर', अर कैवता ही दो मुळकतै कमला री पसरती नाळ दो काळे-बूडे अर धूड़ भरयै पगा पर झुकगी। "अरे बायां ओ काई करो हो ?" सिरदारी चमक'र बोली पण कुण गुणै, जिकै पगां पर बारी बैनजी (गुरु) झुकै रोज, चेल्यां बा पर आज ही नही तो फेर कद ? मन रै बेग नै कुण रोकै ?

बै केई बिरिया पूछ्यो, "बडिया, अग्रेजी री किताब रात, बैनजी री कोटडी मे छोडी का थरे, म्हे तो, समळै सोध धापी, मिली ही नही ?"

सिरदारी कँवती, "वाया किताबा ही नही, सागै काम करण री दो काप्या और ही, सामलै आळै मे राखी पडी है, छोडगी थे वरामदै मे अर सोधो घरे अर कोटडी मे, कठै मू लाधै वै ?"

झाझरकै बा कह्दियो कदेई, "वैनजी आज तो बिजळी ही, नी, किया पढा, सूती हा, अर सिरदारी फट उठती, रजाई परिया फैंकती, कँवती सूत्या रै पाडा जणै, सूतै सासा रो काई बटसी बायां ? गयो वखत पाछो बावडसी काई ? की तो दोघडी आख्या माकर काढो पोथ्या नै, लालटैण माज्यो-पूछयो त्यार है।" अर बा बी बेळा ही चास लालटैण, तिपाई पर ला मेलती। अबार बीरो निस्वार्थ सेवा-भाव बा दोना रै मना पर बधतो गैरीजै हो। खुस ही वै पण सिरदारी री खुसी अबार दूण मे दौडै ही। बा बोली, "मिठाई थानै, हू जिमाऊ धपा'र, थानै भावै जिकी ?"

सुधा बोली, "तू बयारी जिमावै मा, पास तू थोडी ही हुई है ?"

"की फौड़ा आरा सफळ हुया है तो की म्हारा ही, मिठाई फेर किया नही ?"

वै बोली, "धडिया, म्हानै तो म्हारा फौडा नही, थारी आसीस ही फळी है, मिठाई म्हे खुवास्या, धपा-धपा'र।" अर मुळकती वै टुरगी आपरै घरा कानी।

सुधा बोली, "मा दिनूगै आपा ही चालस्या, वारै घरा कानी, ईं मिस बधाई अर मिलणो दोनू हुय्यासी।"

"जरूर बाई, इसै मौकै ही नही तो फेर कद ?"

पण बारी मावा अर वै, सूरजनारायण छितिज पर सावळ खडा ही नी हुया, बी मू पैला ही, आ पूगी सुधा कनै। बा बानै आसण देवती बोली, "मा सा, ओ आप काई कियो, आप दोनां, इत्ती दूर आवण रा फौडा क्यो देख्या ? म्हे आवै ही।"

करमा री मा बोली, "फौडा म्हे तो खाली जणन रा ही देख्या हा, वै जिनावर किसा नी देखै ? फोडा असल मे देख्या है थे, बिना लोभ, बिना लगाव। फोड़ा थे छोरया रा ही मेट दिया अर म्हारा ही। जाट री बेटी सहरसर हुती तो वात और ही, ईं गोभू गांव मे अै दसवी पास हुगी, सुणै बो ही दाता मे आगळी घालै है—अर मजो ओ, पइसो लाग्यो न टक्को। लख-

पति बाणिया री बेट्या तो अठै और ही वस है, कुण हुई है दसवी पास देया। बेट्यां नै बेटा करदिया थे। म्हे तो थानै मूको धनवाद देवण नै आई हां, और म्हारै कनै कीं आणी-जाणी नी, लूखो लाड, घणी खम्मा है।"

कंचन री मा बोली हाथ जोडती, "बैनजी, म्हारो धाको ही दोरो धिकै है, हूं ही जे पढावंणजोगी हुंती तो, दसवी पढा'र ही फेरा करती नी ? काईं तो दू आपनै, अर काईं देवणजोगी हू ? आ तो नांव री कचन है, आप ईं में विद्या री सुगन्ध भरदी—कंचन में सुगन्ध, कचन सू ऊची हुगी आ, ईं सागै ही दोना, दो ऊनी गाभा सुधा आगै राखदिया अर रिपिया की, जेबा सू काढण लागगी।

सुधा बोली, "मा-सा, ओ काईं करो हो आप ?"

"कर'र काईं करां हा, आवा जद खाली हाथ थोडी ही आवा ? फूल-पाखड़ी की तो देवा ही ?"

"अै फूल पांखडी मत दो, मनै तो देवो आसीस अर स्नेह, हू नी लू अै।"

"म्हारो जीसोरो तो की लियां ही हुवै।"

"अर म्हारो जीसोरो की नी लिया हुवै, बोलो किया करां ?"

"मैर करो, हाथ पाछा मत मोडो म्हारा।"

"आपरो कैणों ठीक है, पण की ऊडी सोचो आप।"

"काईं ?"

"अबार ताईं म्हे तीनू, सागण बैना सूं ही बेसी, हेत री जिवी इकसार हरियाळी पर खेलती रही, ओ अड़ंगो न बी हरियाळी नै रुचै अर न बीरी सैज सुगन्ध नै। आ तो पीसणै री पीसाई हुगी अर हू हुगी पीमारी।"

"थे इसी बात रो सकोच बिल्कुल ही मत करो बैनजी।"

"संकोच तो मा-सा अस्वाभाविक है, हू तो सैज स्वाभाविक बात करूं हूं। दुनिया जाणै है कै लेण-देण री कतरणी सू हेत रो चादर नै की-न-की खतरो ही हुवै।"

यै दोनू ही बी सामों निरुत्तर-सी देखण लागगी।

वा भळै बोली, "इत्तो ही थारो मन, नीं मानै की दिया बिना तो, सिरदारी मा नै देसको हो की।"

"सिरदारी मा नैं ही देख्यां, नी क्यों पण थारी जाम्यां तो थे ही हो।"

"हू तो वी आगैं की नही, बताऊ किया ?"

"जरूर बतावो।"

"एक दिन मोडी रात गया, आ पुगा'र आई आ दोना नें, आ'र, की हरू-फरू-सी बोली, 'बाई, आज तो रामजी राखी, जमारो नी तो नुवैसर ही लेणों पडतो', काईं हुयो मैं कैयो। बोली, 'कुत्ता फफेड'र पूरी कर नाखता, देख लँगलियँ रैं तीन-च्यार जाम्या बचरका दे' नाख्या, मरण-जोगा, हाथ मे भाग रो घोचो ही नी, कछु ही काईं, बिचारो रूपो नायक हुवैं न लारो छुडावे, आगैं साख़ तो बाई, हाथ मे लकड़ी बिना पावडो ही बारैं नी निकळू।' ईं मा दाई, बाया खातर, मैं इया, प्राण संकट में कदेईं नी नाख्या, मोटी आ हुईं'क हू ?" वैं सुधा कानी देखती सुणैं ही।

बा भळे बोली, "मूढै आगैं बडाई करणों मा-सा ठीक नी, और बताऊ थानैं, सियाळै री ठाठरती रात मे अँ नीद रा गुटका लेवती जद, आ उठ'र हेलो मारती बाया उठो, टैम हुगी, अे कैंवती, बडिया तू हेलो मारै जद म्हारै डाग-री-सी लागैं, पण काईं करा उठणों पडै।"

कचन-करमा बोली, "बिचारी नैं मचकावती म्हे तो, पण बडिया होठ पाछा नी खोलती।"

"पण अबै बडिया किसीक लागैं साची बताया ?" सुधा बोली।

"म्हारी मा-सी मीठी", दोनू ही बोली।

"मा-सी मीठी" सुण'र सिरदारी री आख्या मतैं ही छळछळा उठी।

बा दोना, दोनू गाभा सिरदारी रैं आगैं करदिया, बोली, "लै बाईं सिरदारी तनैं देवा---बडै ओसोरैं मू।"

सिरदारी सोच्यो, "मा-सी मीठी मनैं बताई, अँ गाभा ले'र मोल कराऊ की कियोडै रो ? ऊपरलै पगोथियैं पुग'र, पाछी ही आगणैं मे आ ठैरू, इसो काईं पाळै मरू हूं का ऊमर निकळसी आं मू म्हारी ? लेणा तो अळगा, वण वा कानी आख्यां हो नी उठाई। वा हो, नी, कंचन-करमा ही न्यौरा काढ़पा वीरा पण एक 'नन्नो', मी दुख हरैं, बण साफ कहदियों, "ठाकुरजी म्हाराज, थे धिरियाण्यां देवणभाग अर हू लेंवण जोग, पण बैना री बधाई बैंनजी नी लैं तो बेटया री बधाई मा किया चूकैं ? देया और घणा

ही मौका आसी, पण अँ नी लू", अर नहीं लिया वण।

वा नैं सुधा रो इत्तो अचंभो नी हुयो, जित्तो सिरदारी रो, पण कोई नी नैं तो किसो धिगाणो है? वैं रामा-सामा कर'र टुरगी। चालती बात करै ही। कचन री मा बोली, "चौधरणजी, पाच-सात वरस ही पूरा नी हुया, आ ही मागण सिरदारी, केई विरिया, गळी-गळी री रेत फटकती. झाड़ू अर छालो लिया, म्हारी गळी मे ही आवती। घटा, छाल्नो फटक'र म्हारै कनै आवती। डोळा अर भाफणा ताईं खख री परत चढयोडी, पूरा मे पसीनो चूवतो, कैंवती, 'बाई री मा, आज तो काईं ठा, किसै कुमाणस रो मूं देख्यो हो उठते ही, छालै मे काणी कोडी रा ही दरसण नी हुया, मरती री आता तो हुवै है भेळी अर कंठ मूकै, भलै भाग, की चावो-भूवो करावो, दो गुटका पाणी तो ऊपर नाखू, नी जद, घर लेणो ही ओखो हुग्यो। आज बा ही सिरदारी दो गरम गाभा, माठ-माठ रो एक, आपा धामा हा, न्यौरा कर-कर, लेणा तो अळगा, सामनै ही नी देखै आ, इसो काईं घर फाटै है ईंरो, गाभा मू?"

चौधरण बोली, "सेठाणी, लोह रो काईं माजनो है कै पाणी पर मिट ही तिरै बो, पण लकडी रो सागो किया, समदर पर नाचतो चालै तळै छोडदो भला ही, काठ डूबै तो वो डूबै?"

"हा साची है बाई, संगत सू सभाव तो बदळै ही।"

असाढ सूको गयो। आंधी हफ्तैभर एक-सी चाली। सिझ्या की मोळी
पडती फेर बेग चढती, पाछी ही आपरी मागण चाल पकडती भाग छूटती।
कित्ती ही जाग्या सडका पर रेत चढगी, रोडवेजा री टैम कक-चूरू
चूरू, रत्तनगढ अर महाजन कानी, रेल री लैणां जाग्यां-जाग्यां रेत
जगी बारैमासियां रा टोळा दिन-रात एक करता, खमता मुणीजता

सावण रो पैलो पख वीतण मतै हो, न होड रा दरसण अर
मे हरख रा। उतराधी जदां कांनी देखता लोग, रात नै आभै
फाडता, नैंडी अळगी बीजळी पळको मारै कोनै ही तो?
चाद वागरर जळेरी। गोपाळ म्हाराज टीपणो

किसान अर धर्म-प्राण लोगा नैं समझावै हा कै, पाणी रो कोटो तो अंस और साला मू दूणों मजूर हुयो है पण घणखरो बंगाल-बिहार एकला ही खैंच लियो, ई खातर आपा जिसा केई ठोवयं भाग ही रंवता लागै है।"

एक कण ही कैयो, "तो दादा, ऊपर ही मळे, आपां दाईं भाई-भतीजा-याद अर अंधेरगर्दी ही है काईं ?"

"व्यवस्था अवार, ऊपर-नीचै सगळै एकसी ही है।"

"तो आ सिकायत ही कीनै करा अर कुण सुणै ?"

"सुणै क्यों नी ? रोया बिना तो बोबो, मा ही नी दै, होम अर हरि-कीर्तन करावो", अर केई खास आदमी ई व्यवस्था मे जुटग्या। कीर्तन खातर मिंदर मे मडप बंधणो सुरू हुग्यो।

सुधा, बरामदै मे बैठी सान्तड़ो नैं समझावै ही की। सिरदारी पढती-पढती चश्मो उतार, धीरा काच पूछण लागगी। करमा आ पूगी, ताजो अखबार लिया। आवती ही बोली, "बहन जी, आपा तो, आभै कांनी ताटक (त्राटक) साधता-साधता, थकग्या, टोपा आस्यां सू भला ही पड़ो, आभो तो नी नाखै एक ही, पण बगाल-बिहार मे देखो थे, बिरखा रो बिकराळ रूप, बादळ फाटै है। केई जिलां मे, सइकड् गावा बारकर, पाणी घेरो देराख्यो है। पसु मरै है, अर बेघरबार लोग आसरै खातर, तरसता फिरै, बडी दुर्दसा है बठलै देहाता री तो ? केई जाग्यां तो हैलीकॉप्टरा सू पैकेट नाखीज्या हा, फौजी नावा, बचाव मे व्यस्त है—फोटू देखो थे।"

अखबार लेवती सुधा बोली, "बाई, केई अति सू मरै अर केई अभाव सू। प्रकृति जड है, बा कांईं समझै कीरो ही दुख-दर्द ? आदमी जूझ सकै जितो ही जूझै, पण ऊपरकर फिरयां पछै, हाथ ऊपर नै ही करै। प्रकृति नी सुणै तो दूर-दूर रा आदमी सुणै-समझै की, बा मे हुवै है विवेक, ई खातर ही मिनख नै मोटो मान्यो है।"

सिरदारी बोली, "बाई ? बाढ, भूकम्प, अर काळ-कुसमों लारै लाग्या पछै कांईं छोडै ?"

"आज हमा तो काल तुमा, आफत तो इसी कोे पर ही आ सकै है, बिना सूचना, बिना सदेसै।"

"आयोडी ही पडी है बाई, लारलो साल तो टसक-टसक'र काढ्यो हो

किया ही, अर अंसकै री किसी ठा पड़ै है ?"

करमां बोली, "बडिया, बंगाल-विहार रो हाल देखता, आपा तो किता ही सोरा हा ?"

सुधा बोली, "सोरा हा तो की अर्थजोगा हा का बेअर्था ही ?"

"बेअर्था कियां बैनजो ?"

"आप सू आगै नी देखसकै बो बेअर्थो ।"

"तो आपा ही की अर्था बणा ?"

"अर्था बणां तो कोरै ही अर्थ आओ—बाढ़ पीडित है अबार ।"

"ई खातर अखबार में ही की लिख तो राख्यो है—देखो थे ।"

सुधा देखण लागगी अखबार। दो मिंट देख'र बोली, "हा, है, बाढ़-पीडित-कोस में कोई आर्थिक मदद भेजै तो मनियाडर अर ड्रापट फीस नी लागै सरकार आ अपील कर राखी है देसवास्यां सू । तो करमा, आपा फेर लारै क्यों ?"

"लारै रैणों तो नी चावा, पण पटडो किया बैठावा, सीध करां की ?"

"देखो, ई खातर न तो की पर ही जोर न कीरी ही निंदा, समझ है आ तो, की में ही जादा, की में ही कम। आपा तो समझा ही सका कीनै ही, हाथ ढीलो तो अगलो ही करै। आखो देस गुरुद्वारै री एक लंगर है, बी में न भेद न भीत ।"

"आपणों काई लियो, पूण-पावलो हुसी बो ही चोखो ।"

सिञ्या लुगाया आई रोज सू दूणी नैड़ी। कंचन बांनै बाढ़ री खबर पढ़'र सुणाई। सुधा बोली, "दिन हुय्या पाणी घेरो दियां, आभै सूं पाणी पड़ै बो न्यारो। चूल्हा, धाय सैं पाणी भेळा। एक सैंधलियो पैरण नै है कोरै ही, दिन हुय्या बीनै, बदळै तो दो मोटर सूको पूर तो कोई चाईजै का नी ?"

"हा बाईसा, चाईजै नी कांई करै ?" घणी ही आवाजां एक सागै निकळी।

"न चूल्हो जग सकै, जे जगै ही किया ...तो चढावै कांई बी पर ? नान्हां अर अबोध बाळक मावा री चामडी चूसै पण मावा रै पेट ... हुवै जद नी ?"

"ईं मू बेसी तकलीफ कीं पर ही और काईं हुसी बाईसा ?" केई जणी बोली।

"पण आपणे, खाली इया सोच्यां तो, वानै कीनैं ही सोरो सास आवण सू रैयो ? की आपा ही जुडा वा सागै, काम तो की, जद वर्णे।"

"जरूर जुडो, त्यार हा।"

बण सगळी वात वानै समझाई, वै वडी राजी हुई। दो-दो, च्यार-च्यार, रिपिया आपरै पेटा रै गाठाँ दे' दे'र ही, दिया वा। एक वूढी मेघ-वाळी आपरो गुप्त खजानों सूर्पदियो सुधा नै—पाच रिपिया अस्सी पइसा रो। रिपियो एक ही नी, सगळी रेजगी। सुधा बोली, "मा-सा, दो रिपिया घणा, वाकी ले जावो थे।"

डोकरी की उदास हुती बोली, "तो पाछा कोथळियै मे ?"

"काईं हर्ज है ?"

"कोथळियो फेर नी खुल्यो, अर हू पैला ही विदा हुगी तो ? भळे कद आम्यू पाछो खोलण वीनै ?"

"बहू-बेटो है नी, आपे ही खोलसी वै।"

"पण इत्तै सू किसो काळ निकलसी वारो ? टक ही नी टळै। आं मे तो थे बोलो ही मत बाईसा। न अै चोरी कर'र लायोडा अर न ठग'र। छाणै-बलीतै मे दस-पाच पइसा की वचग्या तो कोथळियै मे नांख दिया। अडी मे च्याराना-आठाना कदेई काढ ही लिया, तो ही इत्ता तो वंचहीग्या।"

"वचग्या तो, राखो कोथलियै मे ?"

बा पूरै नैचै सू बोली, "कोथळियै मे राखस्यू राम-राम अवै, मेटो कोथळियै री ममता एकर तो।"

सुधा बी सळ पडी, निमधी देखती, मानवी देवळी कानी देखती रही, गदगद हुगी वा। जावती-जावती डोकरी वोली, "थे तो दे'र राजी हुवो अर हू ईं नैं लुको'र, इसी हू गूगी नी, धान खाऊं हू", गई वा।

एक डोकरी उठ-बैठ राखै है सुधा कनै की। एकली है बा। हाथ बसू अबार पइसो ही नी हो। सोच्यो, 'सगळी देवै सरधा सारू, खाली हू ही नी, बाईसा, कद-कद कहसी, मौको है निकळचा पछै काईं ?" एक कीलो सागरी ही, बी कनै, बेच'र पाच रिपिया बट लाई। 'टुकड़ो पाच-सात

दिन, बिना लगावण ही कुडक लेस्यू ।'

सुधा नैं ठा लाग्यो तो वा बोली, "मा सा, मुट्ठी सागरी रोज उथाळता तो पन्द्रै दिन गुजर चालतो सागीडो, इया देणो कोई जरूरी थोडो ही हो ?"

"बाईसा, एक साव बूढी खेजडी ही जद देसकै है मैं जिसी नैं अर हू बी कनै सू ले'र ही की देवणजोगी नी, तो दिरकार है मनैं ।"

सुधा, सिरदारी अर कचन-करमा, काईताल देखती रही वी कानी टकटकी लगायां ।

आ दोना लुगाया री चर्चा, खासा दिन चाली लुगाया रै समाज मे, सरीर बारो नही पण मरी बै ओजू ही नी ।

आपरी साईंनी छोरया मे सगळा सू घणा सान्तडी दिया । ईंरै बचत-खातै मे सताईस रिपिया पचास पइसा हा, सात-पचास राख्या, बाकी-सैं दे दिया । पइसा तो खासा हा, पण टैम-बेटैम मा-बाप नैं देदिया बण । देवण लागी जद सुधा अर सिरदारी बोली "इत्ता नी, लेवा बाई, थारा दो रिपिया ही घणा मोकळा ।" पण वा नी मानी । और कैयो बीनैं, तो सायत बीरै आत्मसम्मान नैं ठेस पूगी हुवै, उदासी सू ढकीजती बण आख्या भरली । सरल बा जरूरत सू जादा है, अपग-अनाथ बाळका मे आपरी दोराई देवै बा ईं खातर बा मार्ग वीरो सैज हेत है; बो किसी मीमा समझै, किसी जात ?

सुधा बोली, "सान्ति, बीस रिपिया एकै सागै ही देवै, किसो एक ही दिन रो काम है बाई ? इसी ही जरूरत काल ही जे भळे पड़गी तो ?"

"अर काल ही जे हूं नी रही तो ?"

सुधा अर सिरदारी बी कानी खोई-सी देखण लागगी । "देखो, छोरी नै दिन पड़ग्यो है ?"

वा भळे बोली, "बैनजी, काम पड़सी अर हूगी तो और दे देस्यू, हूया पीरै थारा देस्यूं ?"

सुधा बोली, "बाई तूं साची, जगात तो माल पर है, माल ही नी कुन मागसी ?"

सिरदारी बोली, "बाई, पग पागळा है ईंरा, पण मन

ईरो, सग रो रग, चेली थारी है नी ?"

छोरी रै चैरै पर एक आत्मगौरव बिखरग्यो अणमावतो।

हजार रिपिया हुग्या सगळा । ब्यारसै नैड़ा, हरिजन बास मे, बाकी कचन-करमा फिर-फिर कर लाई आपरै घरा सू। ड्राफ्ट बारै ही हाथा भिजवा दियो । सुधा रै चैरै पर खुसी अर चेतना मे सन्तोष हो खाली ई खातर कै अछूत हाथा री लम्बाई राजस्थान री थळी मू बगाल-बिहार ताई बधगी अर विसेसता आ, कै बै आत्मगौरव समझै है ईं मे । अै बधता हाथ, कुण जाणै और कित्ता आगै वधसी कदेई, धरती रै बी पार ताई।

17

आठ-सवा आठ हुई हुसी दिनूगै री । सिरदारी जियां ही आपरो बस्तो ले'र बरामदै मे आई, बीनै बरामदै रै एक खूंणै मे बैठै बालियै री पीठ दीखी, किताब बण आख्या आगै कर राखी ही, की गुणगुणावै हो बो, पण काई, आ सोध बीनै सावळ नी बधी । बा, होळै-होळै पग राखती, बीरै लारै जा ऊभी पण छोरै न लारै देख्यो अर न पोथी सू लो ही डिगाई आपरी । बोलै तो हकडा-हकडा'र हो पण बोलै साफ हो, न आखर कोई चावै हो अर न कोई अधूरो ही काढै हो । भ-भ भारत माता, स-स सबकी माता; भ-भ-भारत से है सबका नाता । मिंट भर सुण'र बण, पाछी हा आपरी जाग्या आ संभाळी । बैठी-बैठी सोचण लागगी, "रामजी, ई लुगाई सागै, म्हा भंग्या रै सीर-सस्कार री गाठ किती काठी लगाई है तै, तू ही जाणै ? म्हानै तो, न लारली ठा अर न ईं भौ री । मैं जिसै साव बळीतै नैं अकूरडी मू उठा'र, पोथी रै उजास पर लेजा ढुकोई, ओ अचभो कम नी, पागळती गळी-गळी मे सिर पर सिलोर रो वाटको ओढे पून घीसती फिरती, अबार वा उडता कागद बांचै, म्हा खातर तो ओ अचंभो ही कम नी पण ईं गूगै टीगर री जीभ उथळा'र, पोथी रै ढव धाल दियो ईं नै अचभो माना का जादू ? आ तो खैर मानणी ही पडसी कै खेयट करण मे पाछ अण नी

राखी, पण गूँगैं पर मेवट ही तो की समझ नी आवै । पीपळामोळ री पीठी कर-कर केई दिन ईंरी जीभ रै थेवड़ी, केई दिन चूटियै री मालिस करी, जीभ पर कदेई थोरीर्स पर विदाम घिस-घिस चटाया ईंनै । वोलण रै नातै तो फेर ही भेड जिसो हाल ही हो ईंरो, पण आ, ईं भेड सागै ही काईताळ भेड़ वण'र रोज बोलती—बा—ऽऽ.. ऽऽ...वा वा, आ...ऽऽ आ ऽऽ .. आ वावा, वावा आ, ईंया ग्रपत किया, गूगो स्याणो हुवै'क नी हुवै कोनै ठा ? पण, स्याणै नै गूगो हुवण रो खतरो तो जरूर है ।" इत्तै मे, सुधा, कोटड़ी सू निकळ'र वारै आई तो, सिरदारी बोली, "वाई, क्षिखत दिया, किस्त लेती ।"

"किया मा, हूं नी समझी ?" सुधा वोली ।

"वालियै री जीभ इसी उथळीजण लागगी, मनै तो अवार लाग्यो सावळ ठा । पण थाई खेचळ करणआळी ही सो तैं जिसी सोधी ही लाधली कोई, भाठै मे जीभ घालदी तैं तो ।"

"जीभ तो मा, रामजी री घाल्योड़ी ही, चेतना अर शक्ति ही वीं मे, आपा को नी घाल्यो वीं मे, धार बीरी मांडी अर चेप्टा साव माठी ही, आपा तो अभ्यास रै भाठै पर घिसदी वीनै, डोरी-सोरी की लैण पकड़ली वण तो वो ही राजी भर आपा हो । पण ईंरै वोलण री असली चावी मा, ईंरी मा री जीभ मे ही, था जे टावर-थका बीरै दो पड़ी प्यार सू लागती रोज, तो जीभ बीरी खुल पड़ती बोलण नै, आज न ई छोरै नै इत्ती तकलीफ उठाणी पड़ती अर न आपानै ही उळझणो पडतो इत्ती मायापच्ची मे ।"

"मा-वाप तो टेरो नाखण रा आडो हा, नाम दियो । कुत्तो नै ही रह्यो आमा करै है आपरा कुकरिया चाटण री पण वा बंदा तो छोरै कानी मूं हीं कदेई नी कियो पण आज 'वालू-वासू' करता वां ही मार्इना गे जीभ सूकै है, समार रो उणियारो तो देख तू, काम प्यारो है, चाम नीं, वाई ।"

"उणियारो नी, ओर ससार रो सभाव है मा ।" अर इत्तै, पेमू आवतो दीस्यो । लारै कुत्तो, साकळ बीरी वण एक हाथ मे पकड़ राखी ही । पण मू लचकावै ही । तमाखू-रंगी, अलमेमियन, सरीर मे ... मे कीं पाखी पड़ै ही । पेमू रामां-सामा करतो आ बैठो एक ...

सिरदारी बोली, "पेमू, ओ नुवो घन, कद पछै धारलियो

"हू थयानैं धारै हो मा ? " वण पडूत्तर दियो।

"तो ?"

"सा'ब री नौकरी तो पूरी हुई, गया वै तो। कुत्ती आ, वो पाकी, कौ कजायल पग सू, बोल्या, 'इसको तुम रखो पेमू, रखवाली करेगी तुम्हारे घर की।' एकर तो हू नटू हो पण फेर सोच्यो, मीठा खावै बीरा, घारा ही खाणा चाईजै कदेई, कह दियो तो सामैं मूंडै कियां नटू ? हा भरली।"

सिरदारी रै चैरै पर की रुखाई बापरगी, उदास भाव सू बोली, "चोखो भरली तो, लायो है तो ठंडै-बासी सू पेट भराई तो की कराणी ही पडसी ईनैं।"

"बडी स्याणी है मा ?"

"स्याणी है, पण है तो कुत्ती ही, स्याणी बीनणी तो कोई हुती तो दौड-दौड दो काम करती म्हारै आगै ? पण ही दबावती की ?"

"रुखाळी रा'खसी थारी ?"

"रुखाळीआळै दिना ही रुखाळी नी राखी कण ही, तो अबै कुण भूत खावै है मनैं ?" कुत्ती टुकर-टुकर सामनैं देखै ही—बात करता मा-बेटै नैं। वा की समझी का, नी, वा जाणै पण मा रो ओ लूखापण सुधा नै जरूर की कम जच्यो, तो ही अबार वा की नी बोली—कुत्तीआळै दाई वा ही देखती रही वा कानी।

सिरदारी भळै बोली, "पेमू, सा'ब री कुत्ती है आ, सोरी रैंयोडी, रजसी अठै ?"

वो बोल्यो, "अधपाव दूध का चाय मे एक फलकियो भोरदिए, घणो ईनैं तो।

सुधा बोली, "मां, 'आ रजसी का नही', आ जे सा'ब सोचतो तो वो आपरो घर ईनैं थोड़ो ही छोडावतो ? जाय्या छूटया पछै, रंजणै अर नी रजणै रो कोई मोल नी। हूं, अठै रंजी'क नी ?"

"तो चोखो वाई, गाय गई तो, अबै कुत्ती ही सही, बाघ ईनैं", सिरदारी बोली।

सुधा कुत्ती रै सिर पर हाथ फेर्यो, पूछ हिलावती वा, सुधा सामो देखण लागगी एकटक। वण बुचकारी बीनैं, चू-चू करती कुत्ती नरम जमीं पर

टेकदी । सुधा आपरो हाथ बी आगै कियो—पजो बण आपरो सुधा रै हाथ पर धर दियो, जाणै दोस्ती रा हाथ मिलाया हुवै बा दोनां ।

सुधा पेमू नै बोली, "जमीन रो काईं हुयो भाई ?"

"तै हुगी बाईसा, हु ईं खातर ही आयो हू या दोनां कनै ।"

"किया कांईं हुई ?"

"म्हारै भरोसै तो बाईसा, काईं नव चूल्हां री राख हुवण मैं ही ? जमीन रा दरखण ही नी हुता । भाड़ेआळा पइसा जुळै हा जेब में, नाख'र निरवाळो हुयो, एकर ही नही दो दफै ।"

"इया कियां ?"

"बिना पइसै बठै कोई बात नी करै बाईसा ! अलग-अलग कमरा, हर कमरै मे अलग-अलग मेज, हर मेज पर अलग-अलग हाथ अर हर हाथ री अलग-अलग मांग, कीनै-कीनै देऊं अर कित्ताक देऊं ? और ही घणा ही घूमै हा बठै, हाथ जिकां रा की पोला हा बारा काम तो फटाफट हुवै हा, बाक्या री अवस्या म्हारै जिसी ही । तंग आ सा'ब नै अर्ज करी मैं 'सा'ब, जमीन हम लोग के कर्म मे ही नही लिखा है तो कैसे मिलेगा ?' 'क्यों,' सा'ब बोल्या । मैं सगळो इतिहास उथळदियो बा आगै, 'अच्छा हम जाएगे तुम्हारे लिए,' बा कैयो । वै गया विचारा, भागा-दौड़ी कर-करा'र दो दिन मे काम पार घाल दियो कियां ही । जमीन अबै दाय-आवण नी आवण री बात तो पछै चाल'र आंख्या मांकर तो काढो एकर ?

"जरूर चालो ।"

"जमीन है, पाणी है बाईसा, खटण री आमना हुवै सगळां री, तो है रेत मे सोनो घणो ही, अर नी जद रेत पडी है आपरी जाग्या, अर आपणी पगत, आपरी जाग्या ।"

"एक रेत तो बा ही जिकी मणांबध निकळती आपणै छाजला मांकर, हाय उत्तर देवता तो ही चावळ रो चौथाई सोनो ही, नी दीखतो बीमे कठै ही अर एक रेत आ, जिको मे रेत कम अर सोनो जादा, बीरी उपासना ? छोडा गूगा हां काईं ?"

"सो बीघा रो एकल चक है, च्यार जणां रै नाव ।"

"घणो मोकळो इत्तो तो ?"

सिरदारी बोली, "पण, देखणो अबै काई है, मिलग्यो वो ठीक है।"

"देख्या विना ठा काईं लागै, बैठी ही सटको सारै ?" सुधा कैयो।

"तो चाल बाई, कद चाला ?"

पेमू बोल्यो, "थानैं सुविधा हुवै जद ही।"

"तो काल भोर मे रही ?" सुधा बोली।

"बिल्कुल ठीक,।"

कुत्ती नैं बठै ही छोड, पेमू गयो अर बोनैं लारै-लारै सिरदारी ही टुरगी आपरै घर कानी।

कुत्ती नैं कोटडी मे लेजा'र, सुधा बीनै, बारी रै एक छड़ सू बाधदी। बा अर सुधा, अवार दोवा-बो ही हा खाली। सुधा बीनैं सम्बोधती बोली, "बाई, थारी अर म्हारी अवस्था एकसी है अठै, खोळियै री दिस्टी सू नी, चेतना अर परिस्थिति देखता। तै मे ही की कसर समझ, मालिक बिदा करदी तनै, अर की कसर समझ'र ही मनै कण ही। तू कठै ही रजसी'क नी, आ क्यो मोचै हो मालिक, अर आ ही म्हारै सागै हुई समझ, मलिका री टैल चाकरी कम तै ही नी बजाई हुसी कम मैं ही नही। जाग्या आ, थारै ही ओपरी अर म्हारै ही, बिखै रा दिन तनै ही ओछा करणा अर मनै ही, आई है तो स्वागत है थारो, एक सू दो हुई आपा, बिस्कुट अर डबल-रोटी तो म्हारै कनै नी, पण बस पडता दोरी तनै नी राखू, मैनत थारै खातर दो घडी जादा करणी पडसी तो करस्यू।"

कुत्ती पूछ हिलावैं ही कदे-कणास, आट्या अर कान बण बी कानी कर राख्या हा बडी एकाग्रता सू। सुधा री बात कुत्ती रै पल्लै की नी पडी पण बीरी बोली री बारीकी, ओळखाण बीरी, कुत्ती री चेतना पर टाईप हुती गई बीरी समझ रै टाइपिस्ट सू। अबै सुधा री बोली रो वायुयान जिया ही कदेई बीरी जीभ री धरती छोडतो बारै निकळसी, कुत्ती रै काना मे फिट हुयोड़ा रैडार, बीरी आवाज नै पकडता ओळखलेसी कै आवाज कीरी है आ। कुत्तै रा अै रैडार आदमी सू किस्ता ही तेज अर सजग हुवै है।

आज तो पैलो दिन है, इंनैं आयां, सुधा मीठा चावळ करलिया सिझ्या। प्लेट मे चावळ घाल'र, कुत्ती आगै धरती बोली, "लै बाई आज तो सुगना रा मीठा चावळ जीम", चावळां रै हाथ लगा'र बण देख्यो, बै खासा गरम

हा। दो मिंट ठैरगी वा, इत्तै सिरदारी आ पुगी, बोली, "कांईं नांखै है ईंनै आज ?"

"नाखू नी, जिमाऊं ईंनै—मीठा चावळ।"

"आवतीं रो ही क्यो सभाव बिगाडै है ईंरो, पछै ठडा टुकडा खांवती नाक सळ घालैली, कुमाणस जात है नी, लाड किया ईंतरै।"

"आज पैलै दिन तो सुगन मनावा ईंरा ?"

"तो जिमा, आज क्यों रोज ही।"

कुत्ती री भुळावण सान्ति नैं दे अगलै दिन भोर में रवाना हु'र, बजी दो-एक बै खाजूआळै पूगग्या, अर वठै सू तीन-च्यार किलोमीटर 'टकसठ हैड'। पटवारखानै गया पटवारी कनैं—निसाणवंदी रो पूछण नै। ट्रांजीस्टर बाजै हो, तास खेलै हो पटवारी, आपरै कोई मनमेळू साथै। पेमू रामरमी करतैं, निसाणवंदी री पर्ची दिखाई पटवारी नैं। पेमू कानी हळकी-सी निजर नांखतै, पर्ची बण पकडली पण पर्ची कानी गौर नी कर'र, अध मिंट ताईं पैला बण सुधा रै चैरै कानी देख्यो; फेर बोल्यो, "आज तो हूं नी चाल सकू—बतावण नै थारै साथै, सरकारी काम खातर मंडी जाणों जरूरी है, काल आओ थे।"

पेमू बोल्यो, "काल दिनूगै तो म्हे जाणो चावै हा, आंटो आज ही निकाळो तो बडी मैर हुवै आपरी।"

"नहीं भा, आज खातर तो हूं माफी चाऊ हू", कह'र पाछो ही आपरी जाग्या जा बैठो। अै मा-बेटी बारै खडी रही, पेमू मांयं जा'र बोल्यो, "माईनपणों करो, आपरी पण बेगार नी राखू", कह'र बण बीस रिपिया सामनैं कर दिया। वो बोल्यो, "थारो तो की नी बिगडै, पण म्हारै ओळभै नैं जाग्या कर देस्यो।"

"मा'ब मैर करो किंयां ही, गुण मानस्यू।"

"नं चालां फेर", अर बो टुरग्यो।

बीस-बाईस मिंट रो रस्तो हुसी, निसाणवदी बता'र गयो यो तो। अै गडा-खडा देखता रैया बी जमीन नैं। बारा रा जुग्य मिल्योड़ा, कठै-कठै

ही तो इत्ता गैरा अर ऊंचा कै ऊमो ऊट नी दीखै वा मे। बूई अर खीपा जादा, अर खार मे कोई-कोई लाणो ही खड़ो हो। पाच-सात बीघा जमीन खासी-भली इकसार, फेर कोई ठिरडो, आगै छोटा-मोटा दो एक धोरिया ही, ऊपर सू साफ; ऊजळी रेत छोड और की नी वा पर, पण वारी ढाळा, आक-बूया अर बाठा सू ढकी। जाग्या-जाग्या ऊदरा रा बिल, कांई ठा किसा अैरू-कांटा दास करै। सिरदारी नै एक पाटडा गोह, एक बिल सू निकळ'र एक बोझै मे वडती दीसी, बीरा तो सै-रू खडा हुग्या एकै सागै ही। बा बोली, "पेमू मनै तो अठै दिन मे ही डर लागै लाडेसर, कोई धोळै दिन रो ही जे मिणियो मोसदै तो हाड गीध-कागला ही भला ही समाळो। रात तो निकळै ही की मू ?"

सुधा बोली, "जमी त्यार करै बीनै खसणों तो पड़ै ही मा, इंया सीधी आंगळी घी थोडो ही हाथ आवै ?"

"ना बाई, आपा तो सूकी-पाकी आपणी गाव मे ही कर लेम्या, पोता नै धन नी करणो आपा नै तो। अठै तो गोहा, परडा, पैणा अर सखचूडा दिन मे ही लूणाघाटो खेलै है, रात नै तो मेळो मडतो हुसी वारो ? पैणों पियां पछै, पाणी ही नी मागै अगलो तो ?"

"तो इया जी हिलाया तो आ धरती फेर कदई हूंसै ही नी ?"

"हूंसै नी हूंसै आपणो कोई ठेको थोडो ही है ? अणमीतो धन भावै कीनै ही, बो आओ अठै, आपा नै तो नी चाईजै ओ नागो धन।"

पेमू उदास हुग्यो, बोल्यो, "नी चाईजै ओ धन तो टाळ मही मा, नी राखा आपा।"

सुधा बोली, "ना भाई, आयोडी लिछमी नै धक्को देवा, गूगा हा काई ?"

"राख बाई, तो ई अळसीडै कानी मू ही नी करू", सिरदारी बोली।

"टाळ सही, मत आए तू, जमी आपा नै राखणी है", सुधा कैयो।

"राख तो भला ही पण अठै रात काढण रो कोड किमै सिरदार नै आसी, आ तो बता पैलां ?"

"पेमू आसी, सागै आठ-दस जणा और, ऊखळी मे सिर दे ही दियो तो बिना धम्मीड खाया, माथो पैला ही काई काढां ? दिन अठै अर रात हैड

पर ही सही, दस-पन्दरै बीघा जमी तो त्यार करा एकर, आगै तत की दीखसी तो माथो भळे माड्स्या, नी तो अल्ला-अल्ला, खैरसल्ला, आपा भला अर आपणो घर।"

खाजूआळै मे रामपुरै रै एक वाणियै री दूकान है धान-चून अर किराणै री। वठै आ टिक्या अै। जीमणो तो हो नही, रात काटणी ही आनै सो, घर रै एक छोटै सै बरामदै मे मा-बेटी आपरा विछावणा लम्बा कर लिया। ओपरी जाग्या, निधड़क नीद क्यारी आवै, गुरवत करण लागगी वै। 'इकसठ हैड' रो जिकर करती सिरदारी बोली, "हूँ ए बाई पाणी रो ओ दौड़तो दरियाव कठै सू आवै है, अर कठै तांई जावै है ?"

"मा, संसार री आ सगळा सू लम्बो नहर है, जिको जीवण-जळ गगा-जमना नै हिमालै रै अन्तस मू मिलै, वो ही मिलै सतलज-व्यास नै, सतलज-व्यास रो पाणी है ओ ठेठ जेसळमेर तांई जासी ओ, तिस्सा नै पोखतो उदास धोरा नै हँसावतो।"

"काम जद तो तकड़बंद है बाई।"

"तकड़बद काई मा, सवा दोय सै कोस मे तो ईंरो पेडू (तणो) अर सवा दो हजार कोस मे ईंरा डाळा है।"

"हैं।" अध मिट वीरा होठ भेळा ही भी हुया।

"हैं, नी हकीगत है आ। ईं में काम आवणआळी ईंटां सू, सगळी दुनिया रै च्यारमेर च्यार गज चौड़ी सड़क बणाया पछै, बीस किरोड ईंटा ऊबरती रैसी। आदमी री मैनत रो अचभो नी ओ ? अरबू रिपिया लाग्या है ईं मे।"

"बाई !" दातां में आगळी घालै काईताळ बा डूबी रही अचभै मे। फेर बोली, "फेर तो आ आपणी गंगा ही ही हुई। धोरा-मगा ?"

"हुई तो आपा नै ईं रो आदर करणो चाईजै अर ईं री मनस्या पूरी करण मे मदद।"

"काई मनस्या है ईं री, बाई ?"

"आदमी री मैनत सूं मिल, हर बूद हंमै ईं री—किरोड-किरोड प्राणा सागै जुडै बा।"

"किया बाई, हूं नी समझी ?"

"जादा सू जादा पाणी ईंरो, सिचाई मे बरतीजै।"

"समझी बाई।"

"अर किया तू जाणै ही है कै पाणी अर पइसो चालता ही चोखा, रुक्या राष्ट्र री विसाल चेतना मे बीमारी पैदा करै वै, का विनास। फेर हर आदमी नै भोगणा पडै।"

"सावळ समझा बाई।"

"ओ पाणी मा, एक बडै बांध सू एक प्रधान नहर मे पडै, आगै चाल बा ही नहर कित्ती ही उपनहरा मे बंटै, बा मू फटै कित्ती ही छोटी-छोटी नहरा, बासू और-और नाळा अर वा मू भळै अनेकू खाळा। हर खाळो हर क्यारी ताईं, हर बूद हर दाणै ताईं। फेर बो ही धान हर खळै सू निकळ, छोटी सू छोटी बस्ती नै पोखतो महानगरा रै होठा ताईं पूगै, हर खळो आखै राष्ट्र री सम्पत्ति हुई'क नी ?

"जरूर हुई बाई।"

"ओ ही पाणी एक जाग्या रुक्या ?"

"सिडै का ले डूबै कित्ता नै ही।"

"आ ही बात, धन रुक्या हुवै मा।"

"कियां ?"

"धन आपा बूरदां, बद करदा, का लुकोयो-लुकोयो राखा बीनै, बो अमूजतो धन काईं काम रो ? चिंता अर बीमारी है बो, असान्ति बीमें सूती जियै। खुलै आभै नीचै निरभै सास लेवती अकूरड़ी आछी बी सू। बो-तो मा, गगाजी सो चालतो ही रैणो चाईजै महल सू ले'र झूपडी ताईं, सिद्धि बीरी ईं मे ही है।

"इत्ती बडी नहर, धन है बाई आपणी ईं धरती नै।"

"ईं धरती नै वरदान ही इसो ही मिल्योडो है मा।"

"वरदान कीरो बाई ?"

"रामजी रो।"

"कियां ?"

"रामजी लका पर चढाई करी तनै ठा ही है ?"

"हा है बाई।"

"वा लका जावण खातर, समन्दर कनै मू रस्तो माग्यो हाथ जोड'र,

बडी नरमाई मू । म्यौरा काढता तीन दिन निकळग्या, पण अरगीज्योड़ै समन्दर आव ही नी खोली ।"

सुधा जद, 'तीन दिन निकळग्या' रो कैयो तो सिरदारी री याद की सचेष्ट हुगी, आपरी परतां मे दव्योडी याद वीरी, सहसा वीरै होठा पर आ बैठी, बा बोली, 'भए तीन दिन बीत', अर फेर, 'भय बिन होत न प्रीत', पूरो तो भी वाई पण इत्तो-सो तो याद आयग्यो मनै ही ।"

बीरी ईं जीवन्त याद रैं आं मूर्तिमंत पगा पर सुधा रा मुख-सरोम पलभर खातर समर्पण हुग्या । आसावान हुती बा बोली, "मा, रामजी फेर अग्निबाण चढायो, समन्दर नै सुकोवण खातर । पाणी बीरो उकळन री ऊंचाई पकडन मतै हुवण लागग्यो, वीरै काळजै ऊमस वधणी सुरू हुगी, न तह मे ठंड अर न हवा मे । आकळ-बाकळ जळजंतु सै अमूजण लागग्या । सागर रो मालकी जीव बामण रो रूप धर, पुजा रो थाळ लिया, रामजी रै आगै आ खड़ो हुयो, अर बडी भीगी वाणी बोल्यो बो, "प्रभु, सुकोवो मत मनै. जड करणी है म्हारी, हू म्हारै ही बडापण में, म्हारी आंख्यां गमा बैठो पण आप मरजादा पुरसोत्तम हो, मरजाद म्हारी इंया मत मिटावो, आपरी ही बाण्योडी है बा ।" मानग्या दयालु रामजी, पण बारो चढायो बाण खाली किया जावै, अमोघ हुवै है बो । बाण बा आपणी ईं धरती कानी छोड दियो, समन्दर हुया करतो बी टैम अठै । नरभक्षी जीव घूम्या करता बीरै किनारै । जियां ही समुन्द्री गाभो बीरो हटग्यो, चेतना बीरी प्रभु मू बडी कातर अर कापती वाणी मे बोली, "दीनदयु, राउरी मैनें ही, अर पडी मठै ही आ किया ? मै तो आपरी असुविधा रो कल्पना ही भी करी कदेई, रोस फेर ही म्हारै पर, हू ओजूं ही बी नी समझी, मरजादा-पुरसोत्तम ? ढकी पड़ी ही, नीन तरस आवरण सूं उघाड दी मनै, सिया सननी म्हारै मू ओग सो सकरो अठलो तावड़ो, झळ-सी बळती पून, अर बरफ-सी सर्दी, ओढस्यू ही कांई ? च्यारां कानी म्हारै सूनी रेत हो रेत रैगी बा म्हारै ही पेट रा नान्हा-मोटा अणगिण कंकाळ । म्हारी उदासी रो साथ भरणआळो ही तो कोई नी अठै, आप सैदे म्हारै सामा, फेर हीं म्हारै तन मे मंत ?"

सिरदारी रा होठ मतै ही खुलग्या "साची थट्टो विचारो ' . .

करण रै सिवा बी लाचार कनै और ही ही कांई ?"

पण, मा, रामजी बडा ही विनीत हु'र बोल्या धरती नै, "माता, इत्ती उदास क्यो हुवै, अर क्यो करै मन नै इत्तो छोटो ? इत्ता दिन थारै तळ पर सख-सीप, अर कच्छ-मच्छ-मछली जिसैं असंख्य जळजीवां री मृष्टि किल-बिलती। अधकार ओढ'र ही आवती वा, अर अंधकार ओढै-ओढै ही पूरी हुती। न बीमे थारो कर्ज चुकावण री समझ ही हुती, अर न आपरो फर्ज समझण री हो, न बी कर्म भासा री दिस अर न भोग री। प्रेम, दया अर श्रम री सूझ, ई भोग-जूणी मे कठै ? तपसण, अबै मानवी चेतना पग पखार थारा, आचमन लेसी, थारै विपुळ-स्नेह रो सखनाद करती बा, टोकी री समृद्धि भोगसी। थारै प्राणदाई वक्ष पर गोकुळ घूमसी। बीरै खुरा सू उडती खंध नै लिलाड़ पर धारण कर, दिसावा धनवती हुसी। वक्ष पर थारै दूध-दही री नद्या दौड़सी—आदम्या री प्राण बेल अर बारी ऊमर-जड सीचती। यज्ञ-री सुगन्ध, थारै आगण सू जातरा करसी ठेठ स्वर्ग ताई। थारै सैंज-सिणगार खातर, साधारण-सी एक बिरखा ही मोत्या रो काम करसी।" बा गद्‌गद् हुगी अर आख्यां मतै ही बह उठी बीरी रामजी री ई देव-दुर्लभ आत्मीयता सू। सोचै ही बा, "म्हारी गोदी मे मानखो रमसी, गोकुळ विचरसी वक्ष पर, यज्ञ रो धुवो आभै री ऊंचाई नापतो, बधसी ऊपर।" अध मिट रुक'र बा बोली, "म्हारी करणी तो इसी नी ही प्रभु, आप अनायास ही, अधकार सू बारै काढ मनै, मोटी करदी, आप तो आप ही हो दीनबधु, सार्थक करदी मनै—अमूजणी सू बारै काढ'र।" बा धरती आ है मा।

"बात आ, साची है बाई ?"

"ओजू ही भळै वैम ही लाग्यो तनै ? वैम री ओखद मौत है फेर। भोळी मावडी, आपरै अस्तित्व रा अैनाण, बण गमा थोडा ही दिया, ओजूं लिया बैठी है बा।"

"किया बाई, हू नी समझी।"

"ई धरती पर आज ही दूर-दूर ताई, जब जिता-जिता संखिया, सीप्या रा खाडा-खोरा टुकड़ा, घोघा रा नान्हां-नान्हा खोळ, बजरीनुमा समुन्दरी रेत, खारापण सू ढकया लम्बा-चौड़ा लूणिया ताल, लूणकरणसर

ताई मौजूद है, आपरै आदि-आवास री कथा वत्तावत्ता !"

"तू साची वाई, अँ बातां तो मिलै है थारी।"

"इत्तो ठा, तो तनै ही हुवैलो कै ईं धरती रो घी नामी हुया करतो, कालताईं हजारूं मण घी, रियासत सू बारै जाया करतो, आए साल ठेठ आसाम-बगाल ताई। अठै री राठ अर सिंधण गाया, थोजू ही आपरी साख नी गमाई। ऊन अठैरी दूर-दूर ताईं जावती। फोग अर लाणै रो अठै कोई घाको नहीं हो। चौमासै में इंच-डोढ इंच बिरखा हुया पछै, मुस्कान ईं री बारै महीना ही नी बुझती।"

"बाई, पूगळ-छत्तरगढ, गोडू-वज्जू, खाजूआळा-अनूपगढ अर महाजन-मळकीसर रो घी जोर रो हुया करतो, खायोडो है म्हारो कदेई। घास री चरणोई, बी घी री सुगन्ध ही न्यारी अर स्वाद ही अलबेलो।"

"रामजी रो दियोडो वरदान झूठो हुया करै है कदेई? अबै तो बो और ही घणों फळसी। धरती था हरियाळी सू ढकी रैसी बारूमास। जीवन्त सोनो अर जीवन्त मोती उगळसी आ। ससार रो सगळा सू मोटो भन्न भंडार आ धरती हुसी, गिण्यै बरसा में।"

"जद तो आ, रामजी री प्यारी धरती हुई ?"

"रामजी नै तो आ ही क्यों, आखी धरती ही प्यारी है, पण आ इकाई रामजी सू सैदे मिली है कदेई, तो पुन-प्रभाव निश्चै ही चमकसी ईंरा तर-तर।"

"फेर तो बाई, ईं धरती नै जरूर जोतम्यां, पैणा हुवै चार्वे पाटडा, मिनख सू लड़ै बारी काईं औकात ?"

सिरदारी री आ बात सुण, सुधा रै मुरझावतै मनोरथी बूटै नै जाणै, जी भर पाणी मिलग्यो हुवै, सोचै ही बा कै, खेत जोतण री ममता अबै ईंरी चेतना में गहरी रूगी, न्याल हुगी हूं। बोली बा, "मा, आज तो घामो उपाळो चाली तू ?"

"काम पडघा चालणों ही पडै बाई।"

"थकगी है नी ?"

"थक कांईं गई, पोडघा कीर्तन करती थमै ही नी।"

"तो दायडू थोड़ो ?"

"ना बाई, ओ सभाव मन घाल आनै, भोगण दै आनै, ई भाग री ही है अै।" अर नहीं-नहीं करता दस-बारै मिट वण, दाबी पीठ अर पीडचां दोनू। एक-दो विरिया तो वोली वा, "भौए-भौए-भलो हुया थारो, जी तो निकळचो नही, पण बाकी की रही नही, पण पछै काईं टा कद अचाणचकी नींद फिरी वीनै, की टा नी लाग्यो। सुधा हो आपरो बिछावणो जा संभाळचो अर नींद भेळै हुई।

ऊगतै सूरज इग्यारस ही। वैंगी थकी दोना एक पुळियै सारै स्नान कियो। डोल पर पाणी नाखती सिरदारी बोलै ही, "हे गंगा, मैर करे, घर रै खेत में जळदी सू जळदी, थारै मे तन-मन ऊजळा करू", अर फेर पाव-पाव दूध पेटा मे नांख, आपरी वस पकड ली वा दोना।

18

मैंतरा री गाडी कदेई धोरा-धरती पर हांफती-टसकती अर कदेई, सूई जमीन पर सोरै-सास चालै ही। काळ-कुसमो हुवो चावै जमानो बारी मैंनत-प्रिय माटी सू आस्था अर आत्मविश्वास रा बूटा ऊचा आवै हा। जजमान रै पैरधोडै रेसम अर टेरालीणी कपडा नै पा, कोड मे नी मावता कदेई वै, बानै पहर'र मामरो साजता अर रबाव मैसूसता आज वै ही कपडा बारी चेतना रै चुभै, मागण मे हीणता री बदबू आवै बांरी समझदार नास्या नै। कारी लाग्यो लट्ठो अर गाव रै मेघवाळ री बणी गाढी दोवटी ही रुचै बानै। बांनै आत्मीयता लागै बीमे।

अयार छोटा-मोटा आठजणा ग्वाजूआळै कानी गयोडा है। कस्सी अर कवाडा अै शस्त्र है वा कनै; आक, खीप, बाठ अर लाणं सागै जुद्ध है बांरो अर का ऊबड-खाबड अर उदास जमीन सागै। खीप अर आक ऊपर नाख, एक छपरियो खडो कर राख्यो है वा। बीं नीचै, आटै रा पीपा, टीण री एक मोटी मन्दूक अर लोह गो एक डोमटो धर राख्या है, बारै तवो, चूल्हो अर दो घडिया। बठै ही रामरोट बणावै अर भेळा बैठ'र जीमै, सुस्तावै दो

घडी अर फेर रणभूमि मे। धर्म जुद्ध है ओ, आप अर लोक खातर। एकर एक बाडी मारी, एकर एक गोहू। पैंणा बतावै है, ईं धरती पर केई। मन मे की डर बैठ्यो बारै, रात ई खातर हैड पर जा'र काटै।

आठ-दस बीघा जमीन त्यार हुता ही ट्रैक्टर चालसी, गोहू अर चिणा बीजणरो विचार पक्को कर राख्यो है वा। न घर दीसै, अर न लुगाई-टाबर, आख्या मे हरियाळी सपना लेवै—मैंदे हमण खातर। कदे-कदेई मन की पाछो ही पडै, सोचै 'भूख-तिस की हुवो, बारली सावती अर घर री आधी', गाव ही ठीक है पण फेर आसै-पासै जमीन रा हसता टुकडा दीसै, मिनख जुद्ध मे रसीजता दीसै तो एक अणविस-ईसको उठै वा मे, अर वी सागै नुई आसा अर नुवीं बळ जलमै वांमे।

कंचन ई साल आयुर्वेद विशारद री त्यारी करै। एक साल ठैर'र बै तीनू इटर रो इम्तियान देसी, मध्य प्रदेश रतलाम मे जा'र। करमा री मासी है बठै।

ईं साल विधानसभा रै चुनाव है—कुण जाणै कद तारीख री घोषणा हुज्यावै। लोग मायं-बारै आप-आपरी लह-डव रा खूटा सोधता फिरै है आगूच ही। सत्ता पार्टी रो टिकट बजरग प्रभाकर रो पक्को है। अबार ताईं अैम अैल ए हो। लारै एकर स्वास्थ्य मत्री भी रैयोडो है। ट्रामफरा मे बडा पइसा कूट्या बण, जोड़-तोड़ मे उस्ताद, कोठी है जैपुर मे। तीन कोस परिया फार्म है। सामनै बराबर री टक्कर रो गोपाळराम गोदारो है—निर्दळी। केई जणां और ही है—अबार सगळा ही मेत्रा रै मुरा मे इया बोलै है जाणू सेवा खातर बारो जी अमूजतो हुवै।

'प्रभाकर' जी नै गाव मे केई जणा कैयो, 'हरिजना रा वोट तो सा, जे इकधारा नखाणा हुवै तो मिदरआळी मास्टरणी सू बात करो आप। बीरै कैया पछै अधघडी खातर तो तावला ही मतदान री पेटी पर जा ऊभसी।''

कैवण री ही देर ही, जीप जा ठैरी मिंदर आगै। सुघा अर सिरदारी, पौधां नै पाणी सींचै ही। जीप रो हरडाट सुण, सिरदारी बारै आई। अैम अैल ए अर बारै साथला कानी हाथ जोड़ती बोली, "हुकम करो अन्नदाता जी?"

अैम अैल ए साव बोल्या, "हुकम कांई आसीस लेवण आयो हूं। है तो

खैरियत सब ?"

"आपरा दिया ही दिन है, मैर है माईतां री।"

केई जणा बोल्या, "अैम अैल ए साब है सिरदारो बडिया।"

"धन-घड़ी धन-भाग, अठै ताईं कृपा करी।"

अैम अैल ए साव बोल्या, "जाग्या तो देखा, बडी रमणीक बताईजै है ?"

"पधारो, आपरी ही जाग्या।"

मुधा आपरो काम किया ही करै ही।

सिरदारी कानी देखता अैम अैल ए साब बोल्या, "पेड़ ही सीचीजै है भळे ?"

"कळाप तो की करा हा अन्नदाताजी, कोई लागै तो ?"

"स्कूल ही चलै है अठै ?"

"हां चलै है थोड़ी-घणी।"

"फेर तो आश्रम ही है औ ?"

"काईं है आप ही जाणो।"

"पौधा अर बाळका री अवस्था एक ही है, दोनू ही सेवा चावै, बडो महातम है आंरी सेवा रो। ओ मामूली काम नीं, ऋषि-मार्ग है ओ अर सागै राष्ट्र री बडी भारी सेवा। खूणै मे आयग्या थे, ओ ही आश्रम जे सहरसर हुतो तो हजारूं रिपिया अनुदान रा मिलता आए साल।"

"आपरा ही रिपिया है अन्नदाताजी, उदरपूरणा हुवै बा घणी।"

हाथ रो सकेत करता बोल्या वे, "बाईसा अठै वै ही है काईं ?"

"हां।"

"माफ किया बाईसा, काम मे हरजो तो पड़सी की, दो मिंट आपसू बात करणी चाऊं।"

मुधा बाल्टी राखदी, नमस्कार री मुद्रा मे आ खड़ी हुई कनै।

"आपरी तो वडी प्रशसा सुणी है, कमर छोटी, प्रशसा बडी, सैंज बात नीं।"

बडी नम्रता सू बोली वा, "इसी तो कोई बात नी सा, आम आदमी है जिया ही, मनै समझो।"

"आ आपरी और ही जादा लायकी है, बडो बडाई ना करै, बडो न बोलै वोल, हीरैआळी सी बात है आ तो।"

सागला सगळा ही बोल्या, "आप बिल्कुल ठीक फरमाई सा।"

"हरिजन तो सुणी है, आपरै आदेस पर मरणैं नैं मगळ गिणै है, आ मामूली बात है कांई ?"

"सा'ब ई सू ऊंची सिद्धि और काई हुसी ?" सगळा चमचा सागै ही ही बाज उठ्या एक ही सुर मे।

सिरदारी हाथ जोडती बोली, "कुर्सी लाऊ सा, अध घडी बिराजो तो ?"

"अरे नही नही, ई आश्रम मे तो खडो रैणै मे ही पुन है।" बात रो रुख सागण सीध मे करता बै भळे बोल्या, "बाईसा, थे जिकै टाबरा नै हियो दे-दे मिनख बणावो अर लेवो बा सू राती पाई ही नही, बारा माईत थारै हुकम सागै हाजर हुवै तो ई मे अचभो क्यारो ?"

"हुकम नी, हू तो बानै अर्ज ही कर सकू हू सा", सुधा बोली।

"तो एक अर्ज फेर म्हारी ही करो बांनै मैर कर'र।"

"फरमावो ?"

"आपनै मालूम ही है कै वोट पडन री तारीख दौडती आवै है नैडी, कान खाली सरकारी हेलै नै उडीकै है।"

"हां सुणी तो है सा।"

"सुणी है तो आंगळियो पुन, म्हारै खातर ही लूटो, अबार सू ही ?

लिफाफो देखता ही वैम तो बीनै पैला ही हुग्यो हो, होठ खुलता ही बो चौडै हुग्यो।

बा बोली, "आपरो आसय हूं समझगी सा, पण आ तो बारै खुद रै सोचण-समझण री चीज है, बांरो जलम-जात अधिकार बै खुद समझै ? वोट तो आज ताई दै, एकर नी केई विरियां देचुक्या, हित-अहित बै आपरो अब ही नी जाणै ?"

"हित बारो जितो आप जाणसको हो बितो बै थोडो ही जाणनकै है ?"

"किया सा ?"

"वा वास्तै अठै आछी स्कूल खडी हुसकै है, घरू उद्योग-धधा नै ले'र और भी केई रकम री आर्थिक सुविधावा जुट सकै है वा खातर. ई बारीकी नै, बै इत्तो नी समझ सकै जित्तो आप । ध्यार आख्या है आपरै ।"

"इसी वात तो नी सा, इसा मामला मे अवार तो अै लोग पढचै-लिख्या रा ही कान काटै है । ई सू पैला ही तो आपरी दिराई सुविधावा भोगी है वां ?"

"भोगी है पण मैं सोची जित्ती नी, वा लारली कसर हू अबकी वार काढणी चाऊ, ब्याज समेत", अर झेंप री एक हळक-सी काई प्रभाकरजी रै दर्पण पर फैलगी ।

"फेर तो आपरो विचार बडो सुभ है सा ।"

"अस्सी परसैंट ताई एड आपनै भी दिराणी चाऊं, एक अर्जी लिख'र मनै दे दिया आप ।"

"बाबो डोला सू माथो फोडै सा ? हू जद मुफ्त पढा'र ही राजी [illegible] तो कुण तो म्हारै हिसाब राखै, कुण कागद साभै अर कुण दफ्तरा रा चक्कर काटै ?"

एक पल वा बी कानी देख्यो, पण वीरै चैरै पर निश्चै री लीक कोई डिगती नी लागी अर न बानै आपरै आश्वासना री नसीली सूयां सू बीरी स्वाभिमानी चेतना की प्रभावित हुती, फेर ही वै आपरी झेंप मिटावता बोल्या, "ई बाबत म्हारै सू पैला, और कोई ही आयो आप कनै ?"

"नी सा ।"

"तो पैला युवै, गोरी गाय बीरी ? म्हारै आयै रो अधिकारो की तो रैणो चाईजै ।"

"की क्यो, पूरो अधिकारो आपरो ही रैणो चाईजै, विश्वास दे'र विश्वास लेणो है ओ तो ?"

पारो वीरो चढाव पर हो, पण मौके री ठण्डक पा, होठा सू नीचो ही रैयो ।

"अच्छा", अर गया वै आपरै चमचा नै सागै लिया । चमचा केई रस्तै मे बोल्या, "लुगाई बडी चालू है सा, कड़ियो आधै सू धणै गाव पर फेर राख्यो है ।"

"की नगदी रो लोभ देवां तो ?"

"हाथ माडणों ओखो है सा ।"

"अर लडाया ?"

"मानणी मुश्किल है ।"

"तो फेर दूजो टूणों करणों ही आवै है मनै, फेर आ भागती दीखसी का म्हारो जिंदाबाद बोल, डडोत करती ।"

"इसो ही कोई टूणो आप कनै हुवै तो कील सको हो वीनै की ।"

"एक-दो विरिया बजा'र और देखलू, फेर म्हारा वख म्है जाणां ।"

आ चापलूसी प्लास्टिक रै रंगीन चमचिया, अेम एल ए रै उम्मीदवार नै एडी सू चोटी ताई काठो भरदियो । गई जीप ।

चमचिया बात करै हा, " 'प्रभाकर' है तो पट्टै रो रमार कूटणों ही जाणै है अर बुवकारणो ही। लारलै चुनाव मे दो-च्यार भला आदम्या इं री विरोध कियो, घणखरो गाव तणखड़ो हुयो, अण दो-एक नागा कनै सू, बारी पागड़्या उछळवा नांखी, ऊपर सू धमकी और दी नागा कै 'सोच लेया चद्रमा थारो ।' डरग्या विचारा । अण दूसरै ही दिन गाव मे एक मीटिंग करी—लूठी, बडै जोर मे आ'र बोल्यो गांवआळा नै कै, चुनाव हूं जीतू या नी, इं री मनै जू जित्ती ही चिंता नी, मनै एकही चिंता है खाली—गावा मे पनपती गुडागर्दी री । मनै जे ऊमर भर ही तपणों पड़ै वीनै मिटावण खातर तो हूं तपस्यू, मिटणों पडै तो मिटस्यू । मिनिस्टरी नै ठोकर मार सकू हू, पण तप नै नी ।" वा दोनू नागा नै बुलवा लिया वण, मीटिंग मे खूब सडकाया । दोना हाथ जोड'र माफी मागली भरी सभा मे—सम्बन्धित मनै आदम्या सू । पासो ही पलटग्यो एकदम सू, जणै-जणै री जीभ पर वाह-वाह । चक्रव्यूह आप ही रच्यो अर आप ही खिडा दियो ।"

केई बोल्या, "नाटकियो तो जोर रो है ?"

इं रै मू आगै सगळा जीकारो अर पूठ पाछै अबार मै ही तूंकारो, दुनियां ही अजब है ?

प्रभाकरजी गयां पछै, सुधा सिरदारी नै बोली, "मा, अबै तो चौथो आश्रम नैड़ो आवै है, सभाव री चादर की ऊजळी कर ।"

"कियां बाई, हू नी समझी ।"

"अैम अेल ए हुवै चावै वडो अफसर, वात करण रो काम पडै कदेई तो 'आप', कैणो वांनै, अन्नदाता कोनै ही नी ।"

"क्यो बाई, वडी वोली है आ तो ?"

"अन्नदाताजी, दासता अर दागीजतै सभाव रो वोधक है, ईं सू ठाकरी-जुग री गंध आवै, वोलणियै रो सभाव दवै, हीणता हावी हुवै बी पर ।"

"समझी वाई, पण इत्ती मैंरी पुग म्हारी कठे ?"

"अन्नदाता मागै वो हुवै का देवै बो ?"

"हुवै तो देवै वो ही ।"

"तो ओ तो मागै है थारै कनै सू, देवै कांई है ?"

"देवै/है झासा ।"

"अर वणावै है मोद्‌ ।"

"साची कही तैं ।"

"तो तैं वोट खातर नाटक करणआळै बहुरूपियै नै अन्नदाताजी किया कैयो ?"

"सभाव है बाई, आज रो नी खून सागै आमोडो ।"

"ठीक है, पण अबै तो पैलड़ी व्यवस्था ही बदळगी, देस रो ढाचो ही बदळग्यो तो सभाव ही वी सागै बदळनो चाईजै ।"

"जरूर बदळनो चाईजे ।'

"अैम अेले ए अर अैम पी खातर तो आज तूं ही खडी हुसकै है, जीत भी सकै है, पण अन्नदाता नू फेर भी नी—का हुसकै है ?"

"नही ।"

"मैंदे अन्नदाता तो धरती माता है, कित्ती विसाल, कित्ती उदार ! बीरो दर्जो आदमी नैं देणो सोभै कांई ?"

"नी सोभै, अबै हू ध्यान राखस्यू, म्हारो ही नी, आपणै सगळै साथ रो ।"

प्रभाकरजी री तरफ सू दो-एक पढी-लिखी अर चलती लुगायां सुधा कनै आई, अपणायत में वाथती बीनै वोली, "वाईसा, बांनै वोट नखावण में थे दिलचस्पी लेवो की थानै तो थोडी-सी जीभ ही हिलाणी पड़सी, अर हरि-जन विचारा न्याल हुज्यासी, ऊमर याद राखसी थानै, ईं आदमी री पुग है

ठेठ ऊपर ताईं, म्हारो तो कैणो है थानै कै, मौकै रो फायदो थे ही उठावो—पद सू, पइसै सू, दावै जिया।"

वा सुधा री काळी कांबळी नैं लोभ री लाली मे घणी ही डुबाई, पण आसक्ति हुवै तो रग पकडै कोई ? वा आपरी आस्था पर अडिग रही। न नर्क री आस पर झुकी अर न घाटै री आसका पर भेळी हुई। वोट पडन मे अबै हफ्तो ही बाकी हो।

सिझ्या पड़ै ही। अधेरो गाव री धरती पर उतरण री उतावळ करै हो। कोठडी रै आळै मे सेस हुंतो दियो, टिम-टिमावै हो निमधो-निमधो, अर धूपबत्ती चौथाई सू ही कम बची ही पण बा आपरै घूवटै सास सागै अगर री मैंक ओजू छोडै ही। मिरदारी घरे गयोड़ी ही। सान्तड़ी जीम'र किताब खोलू ही पण बीजळी गयोड़ी ही, अठै सू ही नी, सगळै गाव सू ही। रोसनीघर रो मेनस्विच ही वद हो—अध घंटै खातर अबार, हो नी, करवा दियो कण ही। बीजळीआळो मांय रो ही है—दरोगा रो एक छोरो।

कुती, कोठडी रै एक खूंणं मे बैठी ही, वोदी बोरी रै एक आसण पर। मर्दी (जुकाम) लाग्योडी है बीनै। मुधा वी कनै जा'र बोली, "क्यों रुखाळीदारणी, आज तो रंजो नी हुवैली, खाली खीचड़ी, बा ही को कम ?" कुत्ती अगलै पगा पर खडी हू, लटवा करण लागगी, उदासी नी दिखाई। सुधा फेर बोली; 'पण मूडो मत उतार, मा नै कैयोड़ो है, पावेक दूध मामी बा आवती, गर्म-गर्म लिक लिए, का चाय री पत्ती नाखू मायं ?' बण मुधा मामी देख्यो, कीं समझण री कोसीस करती, पूछ फेर पटकण लागगी पर्ग पर।

अचानक वीनै मुळीज्यो, "बाईमा इंनै देख्या तो ?" बीनै लाग्यो, आवाज कण ही बाड रै बारलै पासै खडी हु'र दी दीसै है। वा मांय बैठी ही बोली, "कुण हुसी ?" पण उत्तर पाछो नी आयो। वण सोच्यो, कोई लुगाई हुवैली, हारी थाकी, बा वारै आई चौकन्नी-सी। ... आगीनै चाल'र वा बोली, "कुण है ए, कण दियो हेलो ?" एव ... लुकयोड़ो खडो हो बाडकनै वारै ही हुवैलो कोई। चैरो की ढक ... काईटा लागै अंधेरै मे अचाणचकै ही एक पमवाडै सू निकळ, सुधा री पेरी एक आवै जिसो, गिट्टै पर इसी दोरी लागी, ...

एकर तो ! वीरा होठ फूट पड़्या, ओय···मा ए। बा बठै ही पडगी अर देवणियो कूदग्यो वाड रै ऊपर कर, पण कुत्ती री सू ही जादा फुर्ती करी, खोडी ही, जुकाम न्यारो, अर रज्योडी ही कम पण आवाज रै सागै ही, ताकत सगळी भेळी कर गोळी-सो गई वाड़ रै ऊपरकर, दात पूरा बैठा दिया पीडी मे। 'ओय कुत्ती खावै रे', किरळी फूटी, बोदै पूर नै फाडै ज्यू फाड नाखती, पण सागलो एक-दो कनै हा कोई; एक जणै कण ही कुत्ती रै जचा'र खेपी कान कनली, कुत्ती एक मे ही गुड़दापेच अर देवणियां पार। दात लाग्या बो खडो तो हुग्यो कियां हो पण पीडी रै तूरकी छूटगी। पीडी रो पायजामो ही रगीजै हो, अर रेत रो काळजो ही।

पाच-सात आदमी भेळा हुग्या, वो बोल्यो, "अरे, हू तो म्हारै घर काली जावै हो, काईं ठा की लारै दौडी आ, बैं तो भागग्या, पीडी म्हारी पकड़ली अण।"

केई बीरै वळू हुता, बिना देखे ही थूक उछाळन लागग्या, "बिचारै निरदोस रो नुकसाण कर दियो, पाळी है कुत्ती तो आपरी बाधी राखणी चाईजै सिकायत हुणी चाईजै सिरदारी री।

"सिकायत ही नी, दवाई पाणी रो सगळो खर्चो लागणो चाईजै बीनै।"

"ईंरी जागमां हूं हुतो तो ठा घालतो कुत्ती अर कुत्ती री धिरियाणी नै।"

इतै एक जणो बोल्यो कोई, "कुत्ती नै तो मारदी दीसै है कण ही ?"

लोग निकळग्या, खाईज्यो बो जावै हो खोडावतो—होळै-होळै। एक कोई बूढो-बडेरो समझावै हो बीनै, "बडी अस्पताळ में सूयां चवधै ले लिए लाडेसर कुत्तै रै जहर रो अवार को भरोसो नी है, उठाव करलियो तो फेर कारी ही नी है।"

कनकर निकळती एक डोकरी बोली, "सूयां तावै नी आवै तो थूर जा'र झाड़ो तो घलवा लिए।"

सिरदारी आयगी, देखता ही जीमे को बाकी नी। सान्तड़ी कनै बैठी, आसू नाखै ही। कंचन अर करमां ही आ पूगी, दौड़ी-दौडी। भंगी-भगणां घरो देखियो सुधा रै बारकर।

बीजळी आयगी। सगळां पग देख्यो, 'कितीक लागी है देखा ?' खून

तो नी आयो, पण गिट्टी अर बीरैं आसपास री जाग्या मूज'र रोटियो हुता मूगा हुवै हा। पीड इसी कै हाथ लगाया ही जी निकळै। कचन बोली, "वैनजी थे आगळी ही सावळ नी राखणदो गिट्टै पर, इया कियां ठा पड़ै कै हाडी थोडो-पणी विड़कगी हुवै कठै ही तो ?"

करमा बोली, "वैम री बात बाळन नै राखो, आपणै तो अस्पताळ ही चालो सीधा।"

कचन अर करमा रै कांधा पर हाथ दिया वा उठ खड़ी हुई बोली, "मा कुत्तो कठै ?"

कण ही कैयो, "बीनै तो मारदी बतावै है कण ही।"

"मारदी तो ही, दिखावो तो सरी।"

हाले-हाले बा, लेजा खडी करी बीनै—कुत्ती कनै। मूढै सू निकळ-पोडो खून, पडी ही बा, रणभूमि मे काम आयै, जी खोल जूझजै की जवान-मी। मुधा री आख्यां गीली हुगी अर मोली मतै ही बीरी काया समाधि पर चढग्या। सोचै ही बा, इत्तादिन कांई आ खाली ईं अवसर नै ही उडीकै ही ?"

कण ही कैयो, "देखो कनै हो ओ खून पडघो, खाईग्यो बीरो।"

कचन बीनै देखती बोली, "आदमी रो खून कित्तो कीमती हुवै है—बो सोचणों जाणै है ईं खातर, पण ओ मानवी खून मोखी रै पाणी सो घूड रै पेट मे विगाणै ही गयो—वेकार अर वेअर्थो, माढ्या रै ही काम नी आयो।"

गिरदारो बोली, "कुत्ती मरी नी, कुण जाणै कित्ता बरस ओजूं और जी सी ? याड कूदणियो मरै जितै नी भूलै बीनै, अर भूलूं हूं ही नी मरू जितै बीनै, काकरै सर्ट पसेरी चुकाई है वण।"

गिरदारो रा बोल सुण, सुधा री उभरती पीड मे कृतज्ञता रो एक विनराम खिचग्यो जिकै मे कुत्ती स्थापितही। बीरा होठ मतै ही फूटपड़या "मा तू नी भूलै बीनै तो हू किया भूलस्यू बीनै ?"

चुनावा रा दिन हा ही गाव मे जीप आयोडी ही . उम्मीदवार ईसे आयै मौकै नै सूनो किया जावण दे ? इमारो . मार्ग गिरदारो अर कंचन-करमा बैठगी, जीप

डाक्टर देख'र बोल्यो, "घबरावण री कोई बात नी, अबार तो मेक अर पट्टो हुसी अर दिनूगै निदान। जाणा हा दो दिन सू बेसी अठै नी रुकणो पड़ै आपनै।"

सिरदारी रुकगी। कचन अर करमा गई पण दोरी। जावतां नै सुधा बोली, "तावँ आवँ तो स्कूल नै हो दो घडी देख्या।"

"चिता ही मत करो थे, काल भोर मे म्हे और आवां हा एकर।"

करमा सिरदारी नै सौ रिपिया दिया, जरूरी खर्च-पाणी खातर, फेर गई वै।

आठ बॅड और हा कमरै मे। टैम इग्यारै सू ऊचो हुगी हो। कमरै रो ससार धीरै-धीरै थबै नोद री गोदी मे उतरै हो, खाली एक बॅड सू, रह रह की रिणकण री आवाज आवै ही होळै-होळै। एक अधेड कोई बळगी सुणी, सरीर फलफलीज'र गिन्दोल निकळगी ही केई जाग्यां। थादी चिर-मिरावै तो नींद बिचारी नै किया आवै ?

अै मा-बेटी दोनू जागै हो। सिरदारी होळै-सी पूछ्यो, "बाई! कोई दोराई तो नी ?"

"है जिसी पडी है, मा, रोया किसी मिटसी ?"

"गिट्टो चस-चस तो नी करै ?

"दूखै तो बेजा है मा।"

"बाई फूक-फूक'र पग रावता,देखलै, म्हारो तो मू काळो हुग्योनी छेकड़?"

सुधा सैज भाव मे धीरै सै बोली, "मा भोळापण ओजू नी गयो थारो ऊंडो नी सोचै तू ?"

"किया बाई ?"

"ओ ही काळो मू है तो ऊजळो मू फेर किसो हुसी ?"

"हूं नी समझी थारी बात।"

"आ तो सजगी, पग रै ही लागी, समझलै कनपटी पर पडती हंयाल-की अर सरीर बठै ही पूरो हूलो तो हू आ ही समझती कै इसी ऊजळो मौत हुवण नै कठै पड़ी है ?"

"किया ?"

"मा, हू न हाथ-पग अर न कनपटी। सरीर रै खोट लागै चावै तेल-

सावण, म्हारो सरूप अछूतो है वा सू । काळो मू थारो-म्हारो ही नी हुंतो, म्हारी जिकै पर आस्था है साथै बीरो और हुतो ।"

सिरदरी बी सामो देखण लागगी एकटक । वा फेर बोली, "काळो मू थारो किया, म्हारै पाप रो हाथ लागतो जद नी ?

"हा ।"

"पाप रो हाथ म्हारै लागणों तो दूर, बीरी छाया ही नी पडी म्हारै पर ।

"आ किया बाई ?"

"खाली लकडी ही तो लागी म्हारै ?"

"हा ।"

"लकडी मे तो बीजळी रो करट ही काम नही करै ।"

"हां, इत्तो तो ठा है ।"

"तो म्हारै ताईं पाप तो दूर, बीरा पुदगल ही नी पूग्या ।"

"हां ।"

"आ तो म्हारै सभाव नै परखण खातर प्रभु री भेजी कसौटी ही एक, पण, हूं बी पर खोटी उतरी दुख इत्तो ही है ।

"किया ?"

"सगळा सू दर्दनाक बेळा में, सगळा सू प्यारी चीज याद आणी चाईजै का नी ?"

"नी क्यो ?"

"तो म्हारै मू सूं तो बी बेळा निकळ्यो, 'ओय मा ए', ओ दीनबन्धु, भो, इंया की नी काई ठा जीभ रै काई चूची लागी बी वेळा, मा नै ही रोई । आफत आणी ही बा तो ओय मा में ही आई, हुसकै है, ओ दीनबन्धु कैयां ही वित्तो ही आवती पण ओय मा मे म्हारी आस्था री भीत मे तेड़ चालगी, अभ्यास अधूरो साबित हुग्यो, आदत सागै जुड्यो कठै बो ? बीनै ओळभो ही अबै किया देऊ ? हेलो की और नै दू अर ओळमो की ओर नै किया ?"

"बात तो साची है बाई ।"

"गोळी मारो चावै साठी, मारणियो तो मारसी, सामनो कियां ही सरीर जासी तो जासी तो फेर, डिग'र विश्वास रा विस्वा क्यो खोऊं ?"

"ठीक है बाई, इत्ती में ही ठ्ळो हू लाख री।"

"बिल्कुल लाख री, धिगाणैं ओढ्यैं भार नैं उतार।"

भिरदारी नैं इत्तीताळ मायली उथळ-पुथळ अधावै ही, सान्त हुगी वा। भार मुक्त हुती, धीरैं-धीरैं बा नीद री अदीठ पोखरी में डूबगी।

नीद तो सुधा नैं ही आणी चाईजैं ही पण बीरी मानसिक स्थिति को और ही बीं बेळा। कुत्ती रो चितराम बीरी चेतना पर ताजो ही हो अबार, आख्या आगै अणसोच्यो ही एकदम मू नाच उठचो। सोचैं ही, "जुकाम हो बिचारी नैं, न धपा'र जिमाई न दूध ही दे सकी, मगायो हो, देख्यू गर्म-गर्म पण मनैं काई ठा पीसी बीनैं और हो कोई? म्हारै कनैं सू लियो तो बण काईं, अर दियो म्हारै खातर काईं? स्थूल टुकडां सट्टै प्राण अर प्राणा सू बेसी कीमती और काईं हुवै है की कनैं ही? दीनबन्धु; इंनैं तैं, म्हारै निमित्त ही भेजी ही काईं? का तू प्रगटयो बीमें? थारै खातर नही, म्हारै खातर। आदमी नी समझ सकै थारै लीला-बिस्तार नैं।

प्रभु, दीन-दुखी अर बाळका री सेवा खातर बीरी सी लगन अर तत्परता म्हारै मार्ग री दिम बणै, कृतज्ञ हूं बीरी, चिरशान्ति मिलै बीनैं। उभार निकळग्यो, अर नीद धीरैं-धीरैं बीरी आख्या पर ही उतरगी।

19

सोंजां तो बित्तो ही हो पण पीड़ की कम सधाई। अँवसरे हुग्यो, रपोट, सिझ्या वजी पाचे'क ताईं मिलण री वात है।

आठ बजी है दिनूगँ री। पाटा-पोळी करती एक नर्स आपरो काम ही करैं ही अर रह-रह सुधा कांनी ही देखैं ही। वांधदी पाटी तो की नैंचै मू बोली वा—"बैनजी, की सैधा-सैंधा लाग्या, ओळखो मनैं?"

इत्ती ताळ सुधा, आख्या आपरी अकारण ही, क्यो उळझावैं ही बो पर, जद वा, बीनैं जाणं ही नही तो? इतो कैंयां पछै, बण उत्सुक आख्या आपरी, बीरै चेरैं पर रोपदी, मन बीरो अतीत री रेत पर पछ्ली पिछाण

रा पग खोजण लागग्यो। एक मिंट रुक'र वा बोली, "ई बेस-भूसा अर ई दोलडै डील-डौल मे, आपसू पैला कदेई मिली हू, मनै तो याद नी।"

"अर, 'मेरे नगपति, मेरे विशाल', सागै-सागै कंठस्थ करण रा दिन ?" अर वीरा होठ मतै ही फूट पड्या, "अरे रतना ?"

"एश तो सागण।"

वीरो हाथ पकड़'र आपरी आख्यां पर राखती वा बोली, "आख्यां तो गूगी वळै है, देखै है तो ही नी पिछाणै, आछी विचारी जीभ गम्योड़ा खोज उघाड़ दिया। थारी ई बेस-भूसा री मैं कल्पना ही नी करी कदेई, डील मे तू पैला सू खासी भारी है। मिलणो कित्तै वरसां सू हुयो है ? अठै कद सू है ?"

"दो साल हुसी।"

"मैंड़ी ई गोरवै बसू हूं—रामपुरै वडै मे पण ठा विना एकल आगणो ही मळणो।"

"सुजानगढ़ ही पैलां तो, घरआळा अठै दूकान खोल राखी है कोई ?"

"आ कथा लम्बी है बहन, फुरसत मे सुणास्यू कदेई।"

"सुणादिए, पण रोटी अर चाय-पाणी री व्यवस्था हू अपणै आप ही करदेस्यू।"

"इलाज ही थारो अर चाय-पाणी ही थारा, आ लागणी तो फेर वरदान हुई म्हारै ?"

"कियां ?"

"आ लागै न तूं मिलै ?" अध मिंट रुक'र बा मळे बोली, "बहन, आह अर पीड़ रै होठां पर सन्तोष विखेरण रो काम सूप्यो है भगवान तनै, जात-पात सू ऊपर न होठा री कोई जात हुवै अर न पीड री ही, भागण है तू, 'मेरे नगपति, मेरे विशाल' री संचै कियोड़ी मानसिकता कुण जाणै कित्ती ऊंचाई पर लेजासी तनै ?"

"है तो ठीक है बहन, सूप्यो है बी, नू असंतोष नही, अर अणसूप्यै नू ईसको नो, गाडी आपणों होळै-गुरतै, ठीक गुडकै है।" इत्तै पाच-सात बीमार और आ पूग्या। बा, बोली, "थोटी माफी चाऊं बैन, बयू को लम्बो हुवै दीसै है ?" अर वा आयै बीमारा री सेवा मे लागगी। सुधा री बेनना

मे एक नुईं खुसी दौडगी ।

सिरदारी सुधा नैं पूछ्यो, "बाई, थारैं आ कदरी सैंधी ?"

"म्हे दसवी री परीक्षा सागैं ही दी, गाव कनैं 'री है आ ।"

"कुवैं नैं कुवो नी मिलैं बाई, देख मौकैसर किसीक मिली है आपा नैं आ ?"

दिन री दो बजी ही । सुधा री मुख-साता पूछण नैं गाव सू अब ताईं बीस-बाईस लुगाया आयगी हुसी—न्यारैं-न्यारैं झूमकां मे । मान्तडी ही आ बैठी उदास-उदास बोली, "आप कनैं ही रैस्यू ।"

सुधा बोली, "रह तो भला ही बाई, पण दळियो एक नैं ही दोरो है अठै, दोना नैं कुण घालसी ?" समझा-बुझा'र, पाछी बडी दोरी भेजी बीनैं ।

सुधा सूती ही, सिर भारी हो, दर्पण अळसायो अर जी उकतायो । सोचै ही रपोट बैगीसी मिलै तो आज सिस्या ही हाथ जोड् अठै सू । पडे-पडे न जी लागैं अर न सरीर रैं जचैं, अस्पताळ भगवान कीनैं ही दिखावैं ही नही ।"

लुगाया मे मोडियै अर मघलै री मावा ही, अर बिसेसता आ कै, बा सागैं मोडियो, मघलो और । बा दोनू टाबरा धोक खाई बैनजी रैं । सुधा बानैं देख'र बडी राजी हुई बोली, "भाएला-भाएला दोनू ही आयग्या रे ?" बारी मावां कानी देखती बा भळे बोली । "आ टाबरा नैं बिचारा नैं क्यो फोडा घाल्या ए ?"

"अैं मान्या नी बाईसा, घणा ही समझाया म्हे तो", बैं बोली ।

सुधा टाबरा नैं पूछ्यो, "आज पढण गया हा'क नी रे ?"

"हा ।"

"कुण पढाया ?"

हाथ सू सीध करता वैं बोल्या, "कंचन-करमा बैनजी ।"

"लडो तो नी रे की टाबर सागैं ?"

"नी, बैनजी ।"

"जद तो थे स्याणा हुग्या रे ? मा, आनैं दे की, और नही तो एक-एक मेळो ही दिरा ।" छोरां कानी देखती फेर बोली, "केळां रा छूतका सडक पर मत फैंक्या भलां ? कोई गाय-गोधैं रैं मू मे दे देया ।"

कंचन, करमा अर लुगाया केई खड़ी ही सुधा कनै, जावण मतै ही वै; भाग सू प्रभाकरजी क्यों नी आवै? नमस्कार करता स्टूल पर आ बैठा वै। लुगाया कानी देख'र, जी मे बडा राजी हुया वै, सोच्यो, दिन सावळ है, मौको ठीक मारयो, भीड़ पर रो ओ असर पाच-सात दिन तो बिल्कुल नी अळसावै। मगरमच्छी आसू नाखता बोल्या वै, "अरे बाईसा, लागगी सुणी, सुणतां ही म्हारा तो एकर होस ही गुम हुग्या था किया हुई? थाय तो कुअै मे पडी, पाणी रो घुटको लेणों ही नी सूझ्यो, जोपडी ले'र मूढा मै तो ईनै करलियो। चुनाव रो रोळो, मौळो पडन दो की, फेर नाथ नी घलाऊ बदमासा रै तो म्हारो ही नाव प्रभाकर नी?"

थारी अध-बंद आख्या ही चवै, अर दुख नाखतो चैरो ही बारो। चुप हुग्या अध मिंट वै। दरोगा रै छोरै नै भाई वीरो कर'र, सुधा रै लागण रा खोज, करमा इत्ती ताळ पैलां ही काढलिया हा। पूरो भेद या दिनूगै ही खोलगी ही सुधा अर सिरदारी आगै। अध मिंट बाद, प्रभाकरजी आख्या ही खोलदी अर जीभ ही। बोल्या, "किया, जादा तो नी लागी बाई।"

सुधा धीरै-सै बोली, "पुरमी जिती मनै तो घणी मोकळो, आपनै कैसर लागै की तो कृपा और करादेया।"

"बाईसा, आ आप किया फरमाई?" की झेपता-सा वै बोल्या।

"आ कही, अंधेरै मे, तो आख्या लाल, अर चांनणै मे आसू, गळ-गळ पड़ै हमदर्दी री पूतळो, ई खातर?"

करमा बोली, "इया चक्रव्यू रच्या, बोटा रो द्रोणाचरज नी जीतै।"

फक् पड़तै चैरै वै बोल्या, "बाई, थारो मतलब हूं नी समझ्यो?"

"थे तो क्यों नी समझ्या, समझ्यो तो इत्ता दिन गांव नही?"

"थांनै कण ही गळत भर दिया", थूक गिटता वै बोल्या।

"प्रभाकर-सा, सीट रै सवाल पर आ तो जू जितो घटना ही नहीं, चुनाव री आधी घुड़दौड़ मे, कोरा प्राण ही क्देई, ठोकर री दर्दा बण'र उछळ सकै है पण अै दावपेच आम आदमी नी जाणै जित्तै ही है।"

हाथ जोडती सिरदारी ही बोली, "मार्ईसा ई गऊ नै किचरा'र आप कांई बाड़पो? इसी ही कोई घोडी बिल मे बड़ै ही आपरै तो मनै ग्र देवता तोरा आवै, आपरै तो हुंतो मनचीतो अर म्हारै छूटतो सारो, च्यान

हुती।"

आ चुभतै बोला सूं, प्रभाकर जी रो पारो ऊंचो चढै हो, त्रिसूळ विचै ही डोळा विचाळै अर आख्यां री सफेदी मे उठै हा आगून रा डोरा। ज्वालामुखी वांरो फूट पड़तो पण वै समझै हा कै अस्पताळ रो कमरो बोली री गर्मी छाटण नै नी हुवै। भीड घेर लेसी अबार ही, मुश्किल हुसी फेर। वै उठ खड़ा हुया, अर टुरग्या खाथा-खाथा। लुगायां बोली, "हाथी रा दांत देखो, खावण रा किसा अर दिखावण रा किसा।" निकळता, ऐ बोल बारै काना मे पड़ग्या, पण वांरी नस मे लारीनै देखण री आगळ ताकत ही नी बापरी। एक लुगाई बोली, "ऐ ही जे, की पूछण जोगा हुंता तो दरोगा रै छोरै नै नी पूछता नी को?" करमा बोली, "आं नै तो काग्रा चाईजै हा बहूक राखणनै, वै गया मिल।"

गिरदारी बोली, "बाई, रीसा बळतो ओ कोई और कुबमाद पड़ी नी करदै?"

सुधा बोली, "करण री काई, ना है मा आपरो बस लाग्या तो बो, कीरा ही प्राण ही ले सकै है अर फेर बीरी चिता कनै पूग'र, उदासी मे डबीज्यो दो आमू ही नाख सकै है।"

गिरदारी एकर चिंतित हुगी—मन-ही-मन डरगी खासी। एक पल सोच्यो पण, 'कांईं भरोसो', ईं कुमाणस रो? छोरी (सुधा) री जीवण-लीला ही पूरी करवा नाखै ओ कठै ही तो, कांईं पूछ वळै ईंरो? फेर बोली, बा, "बाई, काम माडो हुयो।"

"किया?"

"गरम खीरै रै हाथ लगायो, हाथ नै बाळदै बो अर ठंडै रै हाथ लगायो हाथ नै काळो करदै बो, दुष्ट मागै तो ऊजळै राम-राम मे ही फायदो है, न हेत आछो अर न बैर, पैला नी मोच्यो, खारा तूथा क्यों तोडती?"

"आपणै जन-बळ मे ओ जे फटवाड री भीता खड़ी नी कर सकै तो ओ एड़ी सू चोटी रो जोर लगावो भला हो, की नी हुवै।"

लुगायां सगळी गई, करमा ही रई खाली। रपोट बण देखगी मिस्या। न तो हड्डी टूटी अर न बा आपरी जाग्या सूं अळगी ही हुई। पीड़ अर सोजो सो चोट अर मोच सू हा। डॉक्टर कह दियो सेक अर झारो घरे ही

हुसकै है, तीन दिना बाद चैक एकर और करवा लेया।

करमा बोली, "बैनजी, हू भोरा-भोर ही आऊं हू—ऊट-गाडो ले'र। त्यार रैया दोनू, ठढै-ठढै घरे जा वडस्या।" अर गई वा।

सुधा अर सिरदारी सूरज निकळन सू पैला ही त्यार हु'र, अस्पताळ रै एक नीम नीचै आ बैठी—खुली हवा में। बानै बैठा दो मिट ही नी हुया, एक कागलै ऊपर सू बीठ करदी, सिरदारी रै सिर रै सुवै बिचाळै। बीठ ही की सूठी ही, अर ही पतळी की जादा ही। वा चमकी अचाणचकी अर जीवणै हाथ री आगणधा सिर पर अधर-अधर फेरी, भरीजगी वै। सुधा बोली, "कागलै बीठ करदी मा ?" सिरदारी ऊंचो देख्यो, बोली "अरे कुमाणस रोऊ तनै ?" कनै ही एक काकरो पड़यो हो, उठा'र फैंक्यो कागलै री सीध में, कागलो उडग्यो पण सिरदारी री रीस भळे ही नी उडी। बोली, "देख बाई, कुजात नैं, जाम्या ईनै किसीक लाधी है निवटण नै ? म्हारै सिर नै तो बाळनजोगै अकूरड़ी समझ राखी है अण ?" एक ठीकरडी सू बीठ सूत'र घण परिया नाखी।

सुधा मुळकी, चावै तो हसणों ही, पण काम वण की संयम सू लियो, बोली—"मा, थूकण अर मूतण री विवेक अबार, अणपढ नै छोड, पढयै-लिख्यै में ही कम है, तो ओ विचारो तो जिनावर है, समझै ही काई ?"

"नी समझै तो उडादियो बाई, पण आ लखणा घर कानी पग राग्रता नै सुगन सुहावणा नी हुया। कठै ही भळे तो की फद में फसणो नी पड़ै ? कमरै में एकर पाछी चालां, कुसुगन रो जहर की धुपै तो ?"

"भळे कमरै मे, कांई कोई कोथळियो छूटग्यो चठै ? वै ही वैड, वै ही रोगी अर वो ही कमरो, कांई देखसी बारो ? सुगन ही है आपणै तो, अबार जा पूगस्यां गांव, गाडो आवणआळो है।"

आया नै आनै पन्दरै मिट नेड़ा ही नी हुया हुसी, अस्पताळ कानी सू मूळी मैतराणी पग उतावळा मेलती आवती दीखी। सुधा बोली सिरदारी नै, 'मा, मूळी बाई आवै दीसै है।"

"मिलण नै आवती हुसी बिचारी", सिरदारी बोली।

"देराणी-जेठाणी रात तो बैठी ही मौड़ै तांई आपणै कनै ?"

"अबार आपा दीखी हा, अठै तो, मू फेर कर लियो है ईनै—विदाई रा राम-राम करण नै", अर इत्तै वा आ पुगी, की हाफीजती।

सुधा बोली, "आओ मूळी बाई, पधारो, जबरा आया दरसण देवण नै।"

सिरदारी बोली, "लगन देखो ये, ऐन टैम आ'र किसाक बापरचा है ?"

मूळी हाथ जोडती होळै-सै बोली, "माईता, न हूं मिलण आई अर न दरसण करण", सुधा अर सिरदारी दोनूं ही एक पल अचभै मे डूबगी बी कानी देखती।।

सुधा बोली, "तो कियां पधारघा फेर ?"

"हू तो आई हूं, आपनै होळै-सै की अर्ज करण नै।"

"फरमावो ?"

"फरमाऊं कांई, आप हो पूगता अर नखतरी।"

"कियां ?"

"किया काईं, छुट्टी री ताकीदी रात नी कर'र अबार दिनूगै करता तो काई हुतो ठा है ? आपनै की ?"

"काई हुतो, म्हानै काई ठा, थे ही बतावो ?"

"वांट पड़ता बी दिन तांई बी सागी बैड पर ही पसवाड़ा फोरणा पड़ता, बिना बीमारी ही। आपरो की बडै आदमी सागै बैर-विरोध तो नी चालै ?"

"नही तो, किया सक हुयो थानै ?"

"पाच-सात मिट पैला ही अबार डाक्ट-साब कनै एक फोन आयो हो अठै सू ही। बां सामो कैयो, 'साब, अबार-अबार ही निकळी है बा अठै सू फोन आपरो थोडो-सो-ही पैला आ पुगतो तो काम हुयो ही पड्यो हो, चुनाव तांई कांई, हू बीनै महीनों ही नी खिसकण देवतो अठै सू।" अगलै की भळै कैयो, डाक्ट-साब भळै बोल्या, "फेर हो देखो, पारपडी तो, कोसीस को करू हू"। "अबै म्हारी अर्ज आपनै आ है कै कोई बुलावण आवै आपनै तो बीनै टुर मत पडचा," कह'र वा ईनै-बीनै देखती, बडै नाटकी ढंग सू मागो पगा ही निकळगी—म्हायी-म्हायी।

वैं दोनू ही समझगी कै फोन रैं मूळ मे कुण हुसकै है ?

सिरदारो बोली, "इसा आदमी तो बाई, कोई मौकै मिनख मार'र ही हाथ नी धोवै ?"

"नी धोवै तो नी धौवै, कुण ओळभो देवै है बानै ?"

"पण डाकधर ही इसो हुसकै है बाई, आ हू तो सपनै मे ही नी सोच सकै ही।"

"आधै राज मे मा, सुविधा रो चिकणास येथडनो कुण नी चावै ?" एक पल रूक'र की मुळकती-सी भळे बोली बा, "पण मा, थारै कुसुगन रो जहर की हळको करण नै जे पाछा कमरै मे जा बडता एकर तो ?"

"तो बाई, काई बताऊं, कांई ठा ग्वाड मू निकळ'र कुवै मे जा पडता पाछा। आ तो भली हुई, तनै की सूई मूझगी; पण अबै अठै काई आखा देखावा हा कीनै ही, सिरको वेगा-मा।"

"इयां किसा वम पड़ै है अठै, सिरकणो ही है आपानै तो," अर वैं दुरपड़ी दो ही पावडा धरती पार करी हुसी, अस्पताळ रैं चौकीदार भागतै-भागतै, बांरै कनै आ'र आवाज दी, ? "बाईसा" बा दोनां ही लारीनै देख्यो।

"रूक्या थोडा," चौकीदार कैयो।

रूकगी वैं, वो बोल्यो, "आपनै डाक्ट-साब याद करै है—दो मिंट खातर।"

सिरदारी बोली, "याद म्हानै क्यो, याद करो ठाकुरजी नै, जिकै बानै ओ धौळियो अर आ कुर्सी दिया है मानखै री सेवा करण खातर, म्हानै याद कर'र काई ठोकसी वै ?"

सुधा की धीरज अर मिठास मू बोली, 'आप कहदेया बानै कै अबार तो एक जरूरी काम है वांरै, फेर केदई मिललेसी मतै ही," अर वैं दोनू अस्पताळ रैं हातै सू बारै हुंती, एक भीत री छाया मे जा खडी हुई। पाच सात मिंट तो वै खड़ी रही, माडो आंवण री दिस देखती, फेर बैठगी। बैठा-बैठा साढीनव वजगी, पण बाबो आयै न वाटियो लावै। कमर ही बलगी अर सारी आरता ही। पेट ग्वानी, सिर भारी। मूंडा बेस्वादा अर होंठा पर फेपी। चैरां पर उदासी उतरै ही।

सिरदारी बोली, "बाई, काई बात हुई, करमा तो मेह-आधी मे ही, न चूकणआळी अर न रुकणआळी, की दूखण-पाचण तो नीं लागग्यो विचारी रो ?"

"आ ही हू सोचू हू, आणी तो चाईजै ही बा । अध-घटा और उडीकां हा, देखा, चान्दण खातर फेर, वंदोबस्त तो की कारणों हो पड़सी । वैठा इया कितीक ताळ रैस्यां ?"

बीस-बाईस मिंट हुय्या हुसी, वैं बजार कांनी जावण मतैं हीं, का करमा आवती दीखी । सिरदारी रा होठ मतैं ही खुल पड़या, "अबकैं तो चिलकी दीसै ?"

करमा जियां ही बो कनैं आई, सिरदारी बोली, "थाई मौड़ी घणी वापरी नी ? उडीकता-उडीकता आख्या हो मूगी हुगी म्हारी तो ?"

करमा की उदासी सू बोली, 'मौड़ो तो की हुय्यो बडिया—अणचायो-सो ही ।"

"है तो सगळा राजी नी ?"

"राजी नै राजी ही है," बा की ढीली बोली ।

ईं होळैं अर ढीलैं उत्तर मू सिरदारी रै अन्तस में की गिरगिराट उठ-वैठ करण लागग्यो । करमा, सुधा कानी की सैन करी, बा उठ खडी हुई । वैं दोनू की अळगी जा'र होळै-होळै बात करण लागगी । सिरदारी ज्यूं-ज्यूं यां कानी देखै, वीरो गिरगिराट सम्बो अर भारी हुवै, पण की प्रकास्या बिना पल्लै भी तो नी पड़ै विचारी रै की । रह-रह सोचै ही बा कै, 'बात म्हारै सू इयां लुकोवै है जठै, जरूर दाळ मे काळो की गहरो ही है ?"

करमा बोली, "बैनजी, तातै घाव बताया, बडिया आधी ही नी रैसी तो ?"

"पण लुकोया कितीक ताळ राखसो, अध घटै बाद तो बा मतै ही चोड़ै हुसी, फेर ?"

"तो ठीक है फेर, आप ही प्रकासदो है जिसी ।"

वैं दोनू आ ऊभी सिरदारी कनै । सुधा बोली, "मा, थारै सू छानै राखण री कोई बात नही, हुंवण मतैं ही बा हु चूकी । बो मू उदासी तो म्हा सगळां नै ही है, सुण्या तनैं सायत सगळां सू वेसी हुवैं, पण हुयां बटसी

काई ? समझलै लाल कोई टूटगी तो रोयां वा पाछी सधै काई ?"

"संधै तो वा क्यांरी बाई ?" सिरदारी वी कांनी देखती धीरै-मै बोली ।

"बात नै तै सू लुकोई राखां तो राखा कितीक ताळ? करमा विचारी रै मोड़ो ही वी कारण हुयो ।"

सिरदारी रै पल्लै ओजू ही की नी पडघो । एक अणजाण्यै-अणचोत्यै भार काळजो बीरो रूध लियो । बा सोचै ही, "कठै ही पेपू रै की हुयो है तो हुवा'र हुवा, कठै लुकोस्यूं जी नै फेर ? बुढापो मत विगाडै प्रभु ।"

अधीर हुती वा बोली, "बाई, साची बताए, म्हारी सौगन है तनै, मिनखां तो कुसळ है नी ? बात नै लुकोए मत, है जिसी भाखदिए ।"

"एक दम कुसळ, रू ही कीरो ही खाडो नी हुयो," सुधा सजोरी हु'र बोली। सिरदारी रो हालतो पंखो थिर हुग्यो, एक नुवो उजास चमक चढगो वीरी आख्यां में। उत्साह सू बोली वा, "फेर थाप'र कह भला ही, टापरो धुखग्यो है तो ही नी धारू ।"

"पक्की है, नी ?"

"पक्की''पक्की एकदम लोह-लीक, कहदियो बीमे फर्क पड़ै तो समझलिए म्हारी मा मनै फिरती ही लाई ।"

"रात नै मिंदर मे बड़घो है कोई, सन्तोसी-माता री मूर्ति लेजावण नै, सीमट में जरू हुई मूर्ति है ज्यू ही है, पण एक हाथ बीरो खंडित हुयो परियां पडघो है । ठा लाग्या लोग-बाग भेळा हुया दिनूगै, ई भागा-दौड मे करमां नै ही मोरा सास फठै, मोडो हुग्यो ई रै ।"

"रोवणजोगो, मा सू ही नी टळघो, इसो कुण हो ए ?" वा उत्तेजित हुती बोली ।"

"ठा विना, कीनै बताऊ ?"

"बाई, हुई वा सिर पर पण मा नै खंडित करी, बो बदळै जे म्हारा टुकड़ा कर नाखतो कोई, तो ही धोखो नी हो; अबै हूं धणो नीं जोऊ ।"

"क्यो, ऊपर सू कोई हुकम आयो है थारै कनै का भावी, आगूच तनै, ह्याळी रै बोरियै-सी सांमी दीसै है ?"

"आमार छाना मावै है बाई ?"

"पण ईं मे थारो कसूर काई, आ बता ? हाथ खंडित नै कियो ?"

"नही तो।"

"थारी रिछपाळ वा करै है का तू बी री ?"

"रिछपाळ तो वा ही करै है सगळा री, म्हारो कांई डोळ है, हू बीरी करू ?"

"पण अबै बो आपरो ही हाथ टूटग्यो तो रिछपाळ वा किया करसी आपां सगळा री ?"

"वा तो मूर्ति ही बाई।"

"हा, इया कह, अबै आई रस्तै पर तू, हाथ खडित मा रो नही, मूर्ति रो हुयो है अर मूर्ति माटै री है। वा एक टूटै, दूसरी घडीजै, का नही ?"

"नही क्यों घडीजै ही है।"

"पण तू जे बी आधी ममता मे, वैसके पड पूरी हुवै कठै ही तो तूं ही दूसरी घड़ीज सकै है काई बोलती-चालती ?"

"आगोतर मैं ही भलां ही घडीजो कठै ही ?"

"तो बीरै लारै मरण जिसी अणूती बात मूढै सूं निकाळै ही क्यो ?"

"नी निकाळू, बस अबै तो ?"

"नी निकाळै तो चढ गाडै, काई करणो अबै ओ घरे चाल'र सोचस्या, ठडै माथै।

गाडै चढती-चढती बा ऊकगी एकर, आफरो ओजू हळको नी हुयो बीरो, बोली, "बाई मैं तनै पैलां ही कहदियो हो कै बीरो ठडो हुवै चावै तातो, बीसू आतरो ही आछो, हाथ ई मे प्रभाकरियै रो नही काई ?"

"आधै नै ही दीसै है ओ तो, पण हुयो वो लोक नै दाय आवतो है कांई ?"

"लोक नै दाय आवतो करै, इसो दूध बण कद चूग्यो ?"

"नी चूग्यो तो बीनै सगळा आगै उघाडन मे ओछ आपां ही नी राखा, रात रै अधकार मे मूता री पीठ मे चक्कू अर दिन रै उजास मे हाथ जोड़-जोड गिडगिडासी वोटा खातर, ओ बहुरूपियो घैरो अबै नी चलै, जनता-जनार्दन आगै।"

करमा बोली, "थे रस्तो ही मत मंको बैनजो आपणी जाण मे तो नाव ईरो ऊंधी करण मे आपां ओछ नी राखा, ओ ही याद राखसी जीवण-भर,

कै ताती खीर में हाथ दियां इंयां हुवै है ?"

चालणों ऊट अर वैगा पूगण री चिंता, वैं बैठ गाडै, कूकड़िया आप-आपरा उघेडती-सांवटती अर आ-पूगी, आप-आपरै थान-मुकाम-पूणघटै रै मांय-मांय ।

20

भंगी-भगणां दिनूगै भेळा हुवण लाग्या हा, ओजू विया ही लारै-आगै हुवै हा । टावरां नै छोड, अन्न रै ओजू कण ही मूं ही नी लगायो । सै उदास, सै चिंतित । लोग इक्का-दुक्का ओजू ही आवै-जावै हा, लुगायां जादा, आदमी कम । मूर्ति नै देख-देख, सै आप-आपरो हिसाब अटकळै है पण साच री पकड़ सू सै ही अळगा हा ।

सुधा अर सिरदारी आ पूगी । सै भळे जमग्या नुवै सिरै सू । केयां थैक भाई आर दर्ज करावण रो कैयो पण आ सुधा रै नी जची । वा बोली, "मूर्ति कद टूटी, किया टूटी, कुण हो अठै, खड़को ही सुण्यो हुसी को, वैम की पर है थारो ? सवाला रै लबै आंधळघोटै मे, आपणै पल्लै, सिवा परेसानी रै और की नी पड़ै, छोडो ईनै ।"

सिरदारी बोली, "और तो छोडो, नुई मूर्ति तो लाणी ही पड़सी, हजार नैडा तो पैसा लाग्या हा, अबै तो बी मूं पाचमें-सातमें और बेसी समझो, किसै कुवै में सू काढस्या रकम इत्ती ?"

सुधा बोली, "लावो तो भलां ही, पण ईं लावण रो छेड़ो है काईं, आ बतावो ?"

"छेड़ो कियां, म्हे नी समझ्या ?" सगळा ही बोल्या ।

"लारै ही लाग्गोडो हुवै कोई तो फाड़तै नै सीड़तो नावड़ै कांईं ?"

"नी नावडै ।"

"तो भळै कण ही, खंडित करदी का समळी ही लै संभ्यो तो ?"

"इंया पछै करता ही रैसी ?" सागी सुर भळै ऊपर आया ।

"अरे, जिकै मिंदरां रै लोह रा संगीन किवाड़, अर दो-दो कीला रा डब्बल-ताळा ठोक्योड़ा, हुवै, चोर वानै ही नी बख्सै तो आपणो मिंदरियो विचारो है ही किसी चकारी मे ? मिंदरां सू मूरत्यां पार करणो, लूठो अर काळो बौपार है अबार रो। सरकार रै ही नाक मे दम है वी सू।"

"तो फेर नी लावा काई ?" मू ढीलो करती सिरदारी बोली।

"बात लावण-नी-लावण री नही, सोचण री है कै घटना घटी या भळे नी घट सकै काई ?"

"घट क्योंनी सकै ?"

"घट सकै है तो आपानै ई रो ऊजळो पासो देखणों चाईजे, आंधो नही।"

"म्हे नी समझ्या।"

"मा री मूळ इच्छा मैं पैलां ही भाखदी ही था आगै कै बा आपणै घरा में पगलिया करणा चावै है।"

"हां," सैं ही बोल्या।

"तो बा, बण कर दिखाई ?"

"किया ?"

"किया काई, बीरा हाथ आपणै हाथां मे आ मिल्या, पग, पगा मे अर आकार सू हूट'र बीरो अर्थ मिलग्यो आपणी चेतना मे। अबै फेर याद राख्या, म्हारी कही कै, हाथ आपणा ओर खाधा चालसी सागै मिल-मिल, भूख अर गरीबी तोड़न नै, पग आपणा ओर खाधा दौड़सी कोई सुभ जातरा पूरी करण नै, अर चेतना री चावणगत आपणी ओर पसरसी दूर-दूर ताई-नुवै हेत सागै जुड़न नै।"

सिरदारी मिंदर री सम्थापक ही है अर कर्त्ता-धर्ता ही। खंडित मूर्ति तो उतार'र अळगी करी अर नुई लावण रो मतो ढा दियो। मिंदर हुग्यो एकदम सूनो अर अडोळो। सिरदारी एकर घिर आख्यां अर अधीर मोळ नैं मिंदर कानी देख्यो, बीरी उदासी अर सूनापण बीरो, सिरदारी री चेतना मे खांडै री धार-सा उतरग्या, चेतना बीरो कोसीजगी जाण मे कम अजाण

मे जादा। जड़ सागै जुडाव बीरो घणीभूत, हुग्यो। वा उदास अर अधीर हुती बोली, "तो ईं हिमाव मिंदर अवै सूनो ही रैसी बाई ?"

"मूनो क्यो, बीमे विराजसी छोटो-सो एक-एक पुस्तकालै, बीरै सागै डावै कानी, अलमारी मे सोभा देसी रोजीनै काम आवणआळी दवाया अर पाटी-पोळी रो समान। एक ज्ञान रो रूप अर दूसरो सेवा रो, नारायण अर लिछमी-मो, कीनै आछो नी लागसी रूप ओ ? एक ऊँचो उठासी आदमी नै जडता सू, दूसरो मुक्ति देसी बीनै पीड सू। मनम्या आ, मा री है। ईं रूप छवि रै प्रताप, आवणआळा दिन आपणा, और चमकै तो, बात म्हारी मान्या नी तो नी।"

"नी क्यो बाईसा, म्हानै तो नैचो पूरो है आपरी बात पर" सै ही बोल्या पण, सिरदारीबदी, एकर मुधा कांनी अर एकर मिंदर कांनी देख्यो जरुर, पण होठ नी हिलायो।

खडित मूर्ति, पुष्कर जावतै एक आदमी सागै भेजदी, झील मे विसर्जन करण खातर। थाणैआळा उडीकै हा कै मूर्ति रै नाव वांरी जेवा रा पेट ऊचा आसी को, लिछमी जलमसी वांसू पण जलमी वांरै निरासा अर उदासी ही।

सुधा, कचन, करमा अर और औरजागतै लोगां प्रभाकरजी रो असली चैरो उघाडन मे आप कांनी सू कोई पाछ नी राखी। हरिजना रो तो रुख ही बदळग्यो, गाव मे ही नही गाव सू बारै ही। हवा पूगता काई ताळ लागै। प्रभाकरजी जरूर जियै हा, पण जमानत बारी पूरी हुई।

हार, गोपाळ गोदारो ही गयो। बीरै केई रूढीवादी पखधरां जाटां मे प्रचार कियो कै, जाट री बेटी जद जाट नै तो, जाट रो वोट जाट नै क्यो नी ? ईं सूं और जाता चमक खड़ी हुई, थोडै कम, पछै लारै जादा। सुधा करमां नै समझाई कै, "वोट बाई, न जात सागै जुडनो चाईजै अर न पइसां सागै। बो जुड़नो चाईजै समझ अर योग्यता सागै। आपणै देस रो तत्र न एक जात पर अर न एक वर्ग पर। देस ही सगळो विविधता मे बस्योडो है, प्राण एक, माटी री मैर एक अर लक्ष्य सगळा रो एक।"

गाव मे जाटां री गवाड्या मोकळी है पण करमां जात-पांत रै डोलरै सू निवळ'र, गाव रै मांवडै सरोवर तांई जा पूगी। सगळा नै बण एक ही दिस दी, नीरोग अर नैचै री।

दस-बीस पाखरियां नै छोड, घणखरो गाव सुधा रो पखधर हुग्यो। आत्मीयता रा हाथ बीरा और फैलग्या, गाव रै काधा पर। घणखरा सोचै हा, कै, घाव तो बैरी रा ही मराणा चाईजै, लुगाई तो लुगाई ही है, टाळवी अर सोळवों सोनो।

सिरदारी केई दिनां सू अबार उदास अर अस्वस्थ चालै। अस्वस्थ कम उदास जादा। मोटो कारण ईं मे बीनै, सन्तोसी-माता री नाराजगी ही दीसै। बा आपरी हर प्रतिकूलता सन्तोसी-माता री नाराजगी सागै जोड, आपरै वैम रो डील भारी करलै अर मागै आपरो ही। न निधड़क नींद आवै बीनै, अर न स्वाद अर रुचि सागै रोटी ही भावै। खालियो तो खा लियो, पडगी तो पड़गी, बतळाई तो बोलली। जीवण बीनै घीसीजतो लागै मतै चालतो नही।

दो दिन पैला बटै तो फलको ही, देखै खीरां पर राखी दूध री बाटकी नै ही अर मन मे खयावळ ही सुधा कनै पूगण री। काधै सू लटकतै ओढणियै रै पल्लै, बेवणी कनै पडी कोई चिणख नै पकडली, पल्लो आगळ ब्यारेक दाझग्यो, जद ठा लाग्यो। हडवडा'र बीनै बुझायो जितै दूध निवळग्यो, खीरा बुझग्या अर धुवो हुग्यो पण सन्तोसी-माता री नाराजगी सू ईंरो काईं लेण-देण ? पण बीरै आ जच्योडी है कै मा नाराज है, नी, जद इत्ता बरस लेलिया मैं, ओढणियो तो अळगो, डोरो ही म्हारो नी दाझ्यो कदेई।

ओग चूल्है मे घणों हो एक दिन चीपियो देवै ही छाणों बारै काढण नै, हटडी हटाई, बेताण परिया कियो, कठोती सिरकाई, कनै ही घिलोडी पडी ही, घी हो टीपली ब्यारेक बोमे, टिल्लो लाग्यो हाथ रो, घिलोडती गुडगी, छांटो ढुळग्यो, खीरो तो नाखदियो वी पर पण सोचै हो, "घी ढुळया कष्ट आवै, कष्ट काईं मा री नाराजगी रा लखण है अै अर सागै आगीनै जावण रा ही।" बीरा होठ मतै ही फूट [illegible]या, 'ईं ढाळै तो आय लागो दीगै है।'

तीन दिन लगोलग, दो-दो फलका जादा खालिया भूख मू—अचार रै स्वाद में अजीर्ण हुग्यो पण सन्तोसी-माता काईं करै ईं मे, हाथ पकड़लै

का मूढै मे कोई पूर दाबै वीरै ? माथो ही दूखै कदेई, तो गोडा अर कमर ही। सरीर री गड़बड है आ तो। कठै-न-कठै की गळती हुई, सन्तोसी-माता कांई करै ई मे ? गोडा दावदै का टेबलेट रो प्रबन्ध करैं वा ? पण वीरै की इसीही बैठगी माथै मे कै आ सगळा रै मूळमे माता री नाराजगी ही है। ईंरो प्राश्चित हुणो ओखो हुग्यो।

एक वजी ही दिन रो। सिरदारी घर कांनी सूं आई अर सुधा कनै आ-बैठी, लम्बै साम—सटकतै मू। अध मिंट ही नी हुई, बैठी-बैठी बठै ही आडी हुगी। आख्यां खुली तो ही नी, पण नीद ही तो नही ही वामे। सुधा बी कानी, एक तीखी-तुलती निजर सू देखती रही फेर बोली, "मा ?"

"हां," उत्तर दियो बण, पण अळसायो-सो।

"वेल आज मुरझाईजती किया ?"

"आगीनै जासी।"

"जासी वा रोकी थोड़ी ही रुकसी पण इसो मूझतो समचार तनै दियो कण ?"

"समचार छांनों मावै है ? चालूं जद सोचू बैठ ज्याऊं, बैठमां सोचूं आडी हुज्याऊं, अर आडी हुयां सोचू उठू ही नही।"

"राम-राम सत हुवै जितै ताईं ?"

"और नही तो ?"

"फेर जीणी मुस्किल है पण मिंदर आगै बैठ'र, मा नै की अरदास तो कर।"

एक लम्बी सास छोडती बा बोली, "मिंदर मे अबै कांई है बाई ? काळजो ही बीमें नही तो ?"

सुधा मूळ नै समझगी कै कर्त्तापण रै मोह ही ईंनै, की कम नी दाब राखी है जाड़ा नीचै।

बा बोली, "तो जीवण रा आसार ठीक नी लाग्या तनै ?"

"परसूं सपनो आयो बाई, जाणू लाय लागगी, पूर बळै है, ओय बळू रे, ईसो कैंवतां ही आंख्या खुलगी। काल पाणी मे डूबगी सपनै मे, फेर पाडो दीस्यो, जम री सवारी। जंजाळ अै, आया ही झांझरकै, सूठा नी, जावै।"

"सपनां तो सुणालिया और ही की घटयो है तो सुणो मत।"

"तीन दिन हुय्या, जीवणी आख और फुरकै वळै है।"

अबकै वा मुळकी की, बोली, "पी'रै आ'र पग रोप्या नै, बरस साठ सू ऊपर निकळग्या, पावणो (काळ) विचारो किताक दिन उडीकै, कदेई तो लेजावै'क नी ?' 'फरूकै थारी आखडली,' सुगन थोडा ही है ? आख्या तो फुरकसी पण, गोडा फुरकता ही तैं सुण्या है कीरा ही ?"

"गोडा तो बाई नर्यारा फुरकै, वै तो कुळो भला ही।"

"आख फुरकै, सपना खोटा आवै, अर माताजी तनै नाराज लखावै, एकर आ सगळानै छोड तू, हू पूछू बीरो जवाब सावळ दै।"

"पूछ बाई।"

"एक बात तो आ बता कै तू जे भूखी सोवै कदेई, अर सपनै मे लाडू-जळेबी जीमै गळै ताई, फेर आचाणचकी ही आंख्या खुलै थारी तो, तू पेट पर हाथ फेरती अर डिकारा लेवती ही उठै काई ?"

"पेट खाली, अर डिकारा धाप री, आ किया बाई ?"

"आ किया तो, पूर बळना अर पाणी मे डूबणो अै साचा किया ? पूर बळता चरडको थारै धीनो ही चिप्पो कठै ही ? अर डूबता, टोपो ही पाणी रो नाक मे गयो थारै ?"

"अै तो सपना है बाई, सैदे साचा किया हुवै ?"

"भा ! न तो कठै ही सन्तोसी-माता ही नाराज, न सपना ही साचा अर न आख-ओठ फुरकै वै ही। वैम रो अणमीतो भार ऊंचाए मत फिर। डूबण रो सपनों आयो है तो पेडू मे खराबी है की, पाणी सोंवता कम पियो है का पीस्यू-पीस्यू करती सफा ही भूलगी है, पूर बळता दीस्या है तो पेट अर आतां मे दाह है, आव वर्णे है, तेल, लूण, खटाई अर मिर्च-मसाला जादा खाईज्या है, टक-दो टंक ही नही, लगोलग केई टंक, हाजमो ढीलो है, खून री चाल ही ढीली है अर ढीली है मन री अवस्था ही। मन ढीलो, बीरो तन ही ढीलो। ढीलापण मे मीत ही सूझै।"

सिरदारी वो कानी देखै ही ही अचंभै सू पण ही चुप, सोचै ही की। सुधा बोली, "पैलां तो बैठी हू, अर फेर दै जबाब।"

बैठी हुगी वा, बोली, "ई लेखै तो बाई, तू मनै रामजी री बेटी मार्गी।"

"किया ?"

"किया कांई, तैं जाणू म्हारै हाल-हकीगत रो कागद-सो पढदियो हुवै. वारै सै पेमू आयो जद, कीलै'क रो एक टैंणियो छोडग्यो हो, अचार हो वी में कैरी रो, बोल्यो, 'मा, खाटो मू कर लिये कदेई, बाई छव दिन हुग्या हुसी माग रै नाव मैं तो पापड़ हो नी, छमक्यो। च्यार-च्यार आगळ ऊचो तेल तिरै हो वीं पर, मिर्च-मसाला खूब, स्वाद इसो लागतो तू पूछ ही मत, रोटी रोज सू डोढी जीमती, सगळो मैं एकली ही सूत लियो, कनैं कोडी नै ही नी आवण दी वीरै।"

"पाच-सात दिन, रोटी अबै म्हारै कनैं ही खा, एक-दो उपवास कर हू बताऊं ज्यू। आंधो अर अणचाईजतो ऊर-ऊर, मादगी नै धिगाणै तेडो मत दै। खराबी आतां मे ओळभो आष्या नैं, अणभावती खावैं, खोस सपना नैं देवैं, आखडै असावधानीं सू, जोडै बीनैं मतोसी-माता सागैं?"

"बाई, रोटी अबै पांच-सात दिन ही नही, जीस्यू जितै थारै कनैं ही जीमस्यू, सुख वस तू।"

सुधा सोचैं ही कै मिर्च-ममालैं रै ईं प्रसग नैं, अठै आंवणआळी सगळी लुगाया रै गळै उतार, बीनैं वारै जीवण सागै जोडनो है, अर वैम रे भून ही बामो लै राख्यो है कीमें ही तो बीनैं ही बिदा करणो है।

21

प्रभाकरजी तो खैर हार ही ग्या, हारया ही मामूली नहो सागीडा, पण, पडया वै, आखड्या जिसा नही, कारण सरकार सत्तापक्ष रो बणगी, वारै हक री। सत्तापक्ष रै हारयै उम्मीदवार खातर इत्तो नमो थोड़ो है? वैं तो करता-सा की करसी, पण वारा अनुयायी तो पैला ही सीधैं अर ड़र_ पोक आदम्यां मे सांप पांवता नी चूकै कै 'अबै देखस्या विरोध्यां रो .. देवणिया नैं, खाट वारो खडी नी करदा तो, म्हानैं कैया।" सुधा रै .. तो, मी-चडग्यो अर नाणां रै गर्मी चड़गी।

सरकार सोचलियो कै जन-हवा रो फायदो उठावण खातर, ..

चुनावा री रोटचा तातै तवै, लगतै हाथ ही सेक लेणी चाईजै । बण छोटा-मोटा चुनाव करावण री तेवडली अर देखतां-देखता तीन-च्यार महीना बाद पचायता रा चुनाव, आख्यां आगै आ खडा हुया ।

सरपच रै पद खातर, सुधा करमा नै कैयो खड़ी हूवण नै पण बा तो अैन टैम खीली खोल छेडै जा खडी हुई । बोली, "बैनजी, बैंठी-सुती डूमणी, घर मे घाल्यो घोडो, हूं गूगी हू काई, हू तो ई पचडै मे नी पडू ।"

सुधा एक पल बीरै चैरै कानी देख्यो, नैंकारो अर ना-पसदगी रूपायित हा वी पर । हथियार ही नाख दिया वण तो रथ रो मूढो मैदान कानी कीरै भरोसै मोडीजै ? सुधा रै चैरै नै ही, उदासी रुधलियो एकर । करमा नै बोली बा, "ओ, काई करे है बाई, म्हारै मनै-जाने मैं तो तनै, कदेन री-ही सरपच थरप दी, चवरी री टैम अबै, चमक्या पार कियां पडसी ?"

"ओ बळध व्यावणो गाव है बैनजी, काई-कांई बातां गोडां पर घड़-घड़ हवा मे उछाळदै लोग अठै रा ?"

"पण इया जुवां रै भार सू गाभा नाख्या धरती पर हेत री सड़क नी बणै । गाव सगळा ही बळध-व्यावणा ही हुवै है, ढाळ कानी बै जादा दौडै, पण खोड मेटण नै, खटणो पडै हिम्मत राख'र ।"

"ठीक है अ.परो कैणो, फेर ही मनै तो माफ ही करो आप ।"

"माफ हूं करदेस्यू तो काई हुसी, गांव री सरल सूधी अर उडीकती चेतना नी करै तनै, अर नी करै तनै थारी खुद री प्रकृति ही । म्हारी समझ मे नी आवै कै तू इत्ती सकै क्यो है ? सरपचाई मे न तो आपणी अणूंतां आसक्ति अर न बीमू ईमको । हार-जीत कानी भी नी-देखणो आपानै ।"

"तो ?"

"देखणो इत्तो ही है कै गाव जागतो है' क सूतो ? सूतो है तो ओळभो गाव नै नही, आपानै जगांवण री कोसीस करणी है बीनै, अर जागतो है तो बीनै ऊपर उठावण री । टाबै जुड़ो चावै जीवणै काम आपानै करणो ही पडसी । थारी-म्हारी अर जागतै गाव री मूळ मनस्या एक ही है । आम आदमी रोटी आपरी कमा'र खावै पण खावै बा सोसण अर भय नीचै रह'र नही, अभयता बीमे बापरणी चाईजै का नही ?"

"बा तो बापरणी ही चाईजै ।

"पग बीरा हुवैं, चाल बीरी हुवै पण सही दिस तो पगा नै मिलणी चाईजै का नी ?"

"बा तो मिलणी ही चाईजै ।"

"गुडाई रुकै, अर भाईचारो वधै'क नी ? हर आदमी गाव सागै अर गाव आखै देस सागै जुडै का नही ?"

"जरूर जुडै ।"

"तो जुडै किया, कोरा सपना लिया ही ? पैलडो कर्णधार तो निकमों निकलग्यो अर दूसरो कोई भलो आगै आणों चावै नी तो गाव री उडीकती चेतना डूबै अर आपा ? बीरो सिनेमा देखा—विना टिकट ?"

"ईंया तो किया देखा ?"

"तो पैलै सू ही पोचै नै सूपीजै गांव-नौका री पतवार ? गरीब फेर सोरो सास कद लेवै ?"

"हूं समझगी बैनजी आपरी मूळ मनस्या, पण मा रै की कम जचै है, आ ।"

"हा, असली रोग ओ है, श्रीगणेस मे ही क्यों बतायो नी ? तू तो मान मा नै हूं आपै ही मनास्यू । थारो तो नांव है, काम तो थारी टीम करसी अर टीम सागै कुण जाणै कित्ता-कित्ता हाथ, थारै हाथा सागै मतै ही आ-जुड़सी ?"

काम दोरो-सोरो वणग्यो कियां ही । करमा री मा, मानगी अर मानग्या बीरा भाई ही ।

सुगाई सरपच, गाँव मे अचभो ही एकर तो कम नी हुयो । बात ही उड्ळी धासी-भली । बात विना पगा ही दौड़े ही खायो, एक दिन मे नी च्यारां कानी अर चौईसू घंटा । बंगाल-आसाम, गयोड़ै सेठ-साहूकारा रै काना ही जा चढी खवर तो । आपणी पंचायत रो चुनाव अर आपा लारै आ कियां ? ई मौकै वै ही पणखरा, गाव आ लिया । आप-आपरी हवेली सभाळी । छव हवेल्यां मे चोरी हुई लाधी । आधा'क तो यामे, अणचींनी धाड मे डूबग्या अर आधा नै विना पाळै ही धूजणी छूटगी । एक दूजै कानी देखता सराह करै हा कै ओ बसेपो गाव मे किया हुसी ? चोर कोई बारला थोड़ा ही आया है ?"

सेठ सिवदासजी रै ऊपरलै कमरै मे भारी-भरकम गोडरेज (तिजूरी) रो काळजो हो ज्यूही काढलियो कण ही । डौढ-दो लाख रो घाव, धोचै रो घाव नी हुवै, डिटोल अर गाज सू नी भरीजै वो । सेठ-सेठाणी आया तो वी सरीर सुधारण अर गांव री की वास-वास देखण नै हा पण तिजूरी देख्या पछै ब्लड-प्रैसर हाई अर आख्या आक्षा तिरवाळा सुरू हुग्या । घणखरो गैणो दो छोरया रो है, गयो वीरो सोच तो सिर पर है ही, बां नै विस्तो रो विस्तो करवा'र और देणो पड़सी, ओ सोच वारो काळजो चूटै है दोना हाथा सू । दो हजार रिपिया भरी रो ओ आमो छूवतो भाव, घर रो जावतो तो रो-कूक'र ध्यावस करता किया ही पण अवै ओ दूसर डड किया भरीजसी, हे हडमान बावा ! अर मन-मन मे कुण जाणै या कित्ता हडमान-चाळीसा अर कित्ता वजरगवाण वोल्या, प्रसाद तो सागै हो ही पण वायो इया कठै-कठै पावसी ? गाव मे एक ही सिवदास थोडो ही है ?

सोवा-उठो घर मे, सिवदत्त म्हाराज करै है । ऊमर तो साठ री ही है पण लारलै साल सू ऊंचो सुणन लागग्या की । सेठ ऊपर सू नीचै आया हाफता अर उदासी मे तिरता-डूवता । म्हाराज नै थोरया, "म्हाराज, डुवो दियानी, म्हानै तो ?

"की जोर सू बोलो सेठां कान वैरी हुग्या आजकालै की ?" म्हाराज वोल्या ।

सेठ की तण'र भळे बोल्या, "कान तो थारा वैरी हुग्या अर थे म्हारा ?"

"वैरी हू किया हुग्यो सेठां ?"

"ऊपर तो काई कवाडो हुग्यो ? '

"ऊपरलां ही जाणै सेठां, काई हुग्यो ऊपर, बात नै खोलो तो सरी सायळ ?"

सेठ होळै-सै लिलाड मे लैंवता बोल्या, "करमड़ा उदै हुग्या थारा तो, सागै म्हारा ही कर दिया, बात करै है ओजू ही बेचेतै ।"

कनै सेठां रो बेटो खडो हो श्रीगोपाळ बीनै झाळ ही आई अर झुंझळ ही । म्हाराज रो गूकियो झाल'र ऊपर गयो लिया-लिया, तिजूरी री छाती दिखाई बिना काळजै री, वोल्यो, "डाकोन री तामळी मे धालण नै, तुम हां भळे नी छोडो कणही अर आ एक दिन मे थोडी ही हुई है, अै सिगरेटा रा

टोटा पड़्या, अर अै पडचा घरकै अर मीठै रा भोरा, थे काईं करैं हा ?"

म्हाराज अर्धामिट ताई अवाक, फेर बोल्या, "बावू दो माल सू गोडा मेकी हार है, सधीणै रो चैरो ही नी देख्यो, ईं खातर ऊपर तो हू छठै-छमास ही आयो कदेई, पण नीचै मे ओपरी माखी नै ही नी बडन दो, आ हुई किया समझ नी आई।"

सेठ बडबड़ायो, कान कनै मू व्गा'र रीसा वळतै कैयो, "किया हुई आ बताऊ काईं—हियै-फूट बात करो हो।"

उदास म्हाराज आस्या कदेई तिजोरी कानी अर कदेई सेठ कानी करतै मळे पूछ्यो, "उजाड़ कितोक-काई हुयो बावू ?"

"थे चुकास्यो काई ?"

"ऊंचा बोलो की ?"

"ऊचो बोल'र, कूकू गाव रै ऊपरकर, हियै फूटी बात करो हो", आ तो धीरै ही कही, की ऊंचो बोल'र कैयो, "नीचै ऊखड़ो, मायो मत खावो।"

बां तो थाणै मे रपोट छोड, बीनै मू ही नी कियो। और बाणिया ईं इया ही कियो। सिकतै काळजा पर हाथ राख-राख, पाछा ही बानै जाग्या-सर कर लिया। बांनै ठा है कै रपोट लिखाया, पइसो एक तो आवै नी, फौडा अर पूछताछ मे टुकडो की खावा वो थौर छूटसी। इनकम-टैक्स-आळा हारी-बीमारी मे कीरै ही नी आवै पण खोट रो ठा लाग्या जान-जीमण रो-सो काम समझ'र वै बिना बुलाया ही आ पूगसी अठै। धन सारै धूड़ फैरो, काळजै भाठो मेल लियो किया ही। इसू सेठ-साहूकारा रो मन तो घटग्यो, अर गाव रै उच्चकां रो बधग्यो, बधै ही। चोरी हुवै अर लिखाई-जै नी जद। पण करमा नै ईंसू पडधो लाभ लाधग्यो मतै ही। आम बाणियै रै आ जचगी कै ईं गोळमाळ री जड मे मोटो कीड़ो सरपंच नै ही समझो। आयो मौको क्यों चूको, ईं कुमाणस रो किन्नों तो काटो, दूसरो करमा रै लारै मिंदरआळी है, बी लुगाई नै उछाळो चावै किया ही, पण मूळ मे या काली नी, करतूतआळी है। गाव रो अहित बा नी सोच सकै बी हालत मे ही।

करमा खातर मेळ-जोळ री पगडाडी तो सुआ महीनां पैला ही सुरू करदी ही। गाव री मोकळी-मोकळी लुगायां सागै बीरी उठ-बैठ है। कंचन अर करमा कियां नै ही पढावै-लिखावै अर आपरै बूतै सारू बारो सहयोग

ही करै—खटै ही नी, कटै ही है की। बा मे सू कोई ही, पच-सरपंच बणै तो वांरो रूं-रूं राजी।

दो-एक बूढै ठाकरा अर पाकै बामणां सलाह करी कै गांव मे इत्तै मिनखां थका सरपंच लुगाई हुवै तो गाव री श्री खतम ही समझो, बारलो कोई सुणै तो, गांव री कित्ती हेठी लागै ? इया कांई तोडो थोडो ही आयग्यो गाव मे मिनखा रो ? एक जणै कैयो, "ई छोरी नै धणी तो छोड राखी है, रत्ती ही की हुती तो थापरो घर नी साभती ? करम फूटयै नै भाग फूटयो अवलाई खा'र ही आ मिलै, ईनै आ मिंदरआळी मिली, वीरी पकड़ाई पूछ सू ईनै हो घाटो अर गाव नै ही।"

गोपाळ म्हाराज बोल्या, "हुसी तो हुणी है ज्यू, पण धर्म अर नीति ईंरी मजूरी नी दै।"

ठाकरा नै न आप पर विश्वास अर न आपरां पर। हरधनजी नै बीन थणायो किया ही। हा तो वा भरली, पण घर री बिना मजूरी लियां ही। भिडते मोरचै ही, लुगाई बदळ बैठी। बोली, "स्याणा हो का गिट्टा ताईं सून बापरगी ?"

"क्यो, आ किया कही तै ?"

"कही ईं खातर कै धान अबै बाड़ो लागण लागग्यो अर मन नै बूंबी आवण लागगी।"

"काईं देख्यो तैं ?"

"पेरवा पर अंगूठो राख-राख, ग्रह-गोचर बतादिया, फायदो-कुफायदो अभाग अगलै रो, हीग लागी न फिटकड़ी थे तो पइसा टाच लिया। कोई टेवै-कुडळी री दो लीकां खीचदी का सेठ-साहूकारां रै की पूजा-पाठ कर-दिया, जाणै हडमानजी, माताजी कनै थारी ही चलै है, हाथ दो घडी गोमुखी मे घालदियो, सरपच-पंच हुयां, बै सगळा खूटी टागणां पड़ैला, रोटी ही छूटैली अर नीद ही।"

गोडा देराग्यो है जवाब, छोरा सैं न्यारा, मैं नाराज, पचायत मे सात पानी तडभड़नों, है इत्ती हिम्मत ? उठता-बैठता गोडा बोलै, मैं हू रोज गुणू ही नही दो घड़ी बानै हाथा माकर किया काढू हूं, म्हारो जी जाणै है। गोडा नवा मिलै है कठै ही तो पड़ग्या, ईं पचड़ै मे ? थे तो ग्रह-गोचर देखो हो

मुल्क रा टीपणो देख'र अर मनै थारा दीखै है बिना टीपणै ही । जाण'र कादै मे पड्या तो, चतराई चीखलै मे हुवैली ?"

वामणी रै मूढै सामी देखता वै की दवता-सा वोल्या, "तो गाव रो कैयो, नीं करू ?"

वडोड़ो वेटो आलियो, वो बोल्यो, "गाव थारै कानी कितोक है थानै ठा नी, बो सू जादा मनै है । वोट आपानै न हरिजन दै, न जाट अर न घण-खरा याणियां । घणी में तो काईं है, चौथाई सू जादा म्याल, आपानै बामण ही नीं करै । गवाड़ी री तस्वीर जाणता-बूझता क्यो बिगाड़ो ? जमानत जब्त और हुवैली ? गाव री पगेलामणी में घाटो, अर घाटो आमदनी में और । सरपच, करमा हुवै तो थारै दौराई कठै ? ओ तो गाव है, बाटकी रै पीदै जितो, आखै देस रो सासन लुगाई ही तो साभ राख्यो है, आभो फाट्यो तो नहीं ? धरती धसी है तो वतावो कठै ही ?"

मूछ ऊंची नी, नीची ही सही, घर री पचायत रो फैसलो मान'र हरधनजी लारै सिरकग्या । करमा नै बीरै घरै जा'र, आसीरबाद देदियो बा, "बेटी केन्द्र मे थारै गुरु, अर सनि है, ऊंचै घर मे है थिरता, मान-सम्मान अर राजजोग सै, थारै हुक्म नै उडीकै है, वाळ ही थारो वाको भी हुवै, "अर्जुन रथ नै हांकदै, भली करै भगवान, जा फतै है थारी ।"

वुझतै भोमिया दो-एक सेठा नै सिल्ली और चढाया, पण वै अगम बुद्धि, भूड रै खंदेड़ै नीचै माथो मांडै ही क्यों हा ?

पड़ो हुवण नै मू तो पछलै सरपच रो ही बळै हो पण आखर बीरै काळै इतियास रा ओजूं गीला ही हा, खड़ो कांई सिर हुवै ? 'हाथ आपणै नी आवै तो कांई, अगलै री तो दूळावो', केई ईं कारवाई मे ही लाग्योडा हा, पण कारी की लागी नहीं । सरपच रो चुनाव छेकड, करमा जीतगी निर्विरोध । गाव नै हजार रिपिया राज मू सम्मान रा और मिल्या । गाव मे ही नहीं आसै-पासै वाहवाही री हवा ही फूटगी अर अचभै री ही, कै लुगाई जीतगी ? कॉपसन मे कंचन अर सिरदारी ही आ मिली । सिरदारी बोली, "थारै, म्हारो अणूतो भार क्यो घीमो ?"

करमा आतमीयता मू समझाई. "तू बडिया, म्हानै पैला ही उजास करती—टैम पर, अधेरो हुगो तो लालटैण करती, यो ही काम

अबै है थारो, जाग टैम पर नी आवै तो चोटी खीच दिए म्हारी, अंधेरो हुवै तो दिस दिखा दिए म्हा सगळा नै, पावर है तनै, साच मे न सरपच सू सकण री जरूरत अर न की और सू, तनै न की आगै ही थाळी माडणी अर न की आगै ही हाथ पसारणो, बाजै जिंत करतब नै वजाए राख, ओ गाव अर आ पंचायत अगले खोळियै मे, भळे नी मिलैला।"

सिरदारी वडी राजी हुई अर की करण खातर वडी उंतावळी।

झुकतो पालणै रो सीरी हुणो, सभाव है दुनिया रो। करमा रा पख-धर तो बधाई देवण आया पछै, पुराणै सरपच सागै पूछ-सा चिप्या फिर-णिया आया सगळा सू पैला। करमा नै बधाई देंवता बोल्या, "बाई, म्हे ही नही, आखो गाव ही सुख री नीद सोसी थारै आणै सू। अण सरपच तो एक ही काम कियो, 'नागा नचाया अर गाव निचोयो। गरीवा तो दिन काढ्या गिण-गिण, अर समझदारा समै नै उडीक-उडीक। लूठै रो डोको डाग नै फाडै, सामनो कुण करै बाई, अर जे माथो मांड ही लै कोई तो घर रो काम खोटी कर'र कद पोसायो बो ?'

केया मौकै-रखी बात कर-कर, आगै-सू-आगै टोरदो बात नै, "कै सिरै-पच अर बीरै पाधरिया नै ठा, अबै ही पडसी। अगली तो थोड़-चौगान हेलो मारै है कै, डाकीपण मे खामोड़ा, पाछा नी कढाऊं तो जाट री बेटी मत समझ्या मनै। खाल रा कस्सा बा कढा'र छोडसी।"

ठाकर तो आ जीती, बी दिन सू ही, बाबुवा रै चक्कर मे टाइयैसर जा पूग्यो, गड़्या मुर्दा पाछा नी निकळै किया ही—ई खातर।

किती ही लुगायां माय-माय ई खातर घणी राजी है कै, "लुगाई अबै लुगाई री सावळ सुणमी अर वै बीनै खुल'र कह सकसी। मिनखा मे इत्ता दिन कैणो तो दूर वठीनै टुरता ही पग पाछा पडता थारा। मूत पी-पी अबै नाच्या देखा, गवाड-गळी मे, काई भाव री बीतै, अर ठोक्या लुगाया नै गाळा, अकल ठिकाणै आवै'क नो ?" आसा अर आस्या, वारी हिम्मत सागै जुडगी।

लुगाया दो-च्यार नही, जत्था-रा-जत्था वारा सुधा कनै ही पूग्या। बोली वै, "बाईसा जीत आ, लुगाया री नो, आपरी है ?"

सुधा को मुळक'र बोली, "बाईसा, लुगाया मे नी, डागरा मे है

मे है कांई ? जीत आ आखै गांव री है। गाव हुवै चावै देस-दुनिया की, दीपै सै दोनां सू ही है। आदमी-लुगाई री एकता मे, भेद री भीत खड़ी, न कदेई हुई अर न हुवै। संसार रो निर्माण चक्र, दोनू हुया ही पूरो हुवै।"

कचन करमा ही आ पूगी, सिरदारी बठै पैला सू ही जमी बैठी ही। मुधा करमां कानी संकेत करती बोली, "बाई, इत्ता दिन तो, 'दो पोई. दो काच मे, थारै सिर पर थारो आपरो भार ही हो, पण अबै है आखै गाव रो। बडमाई री धूड थारै धोबा-धोबां पडो तो मुट्ठी-खंड, म्हारै ही पाती आसी पण वा, जे थारै-म्हारै ताईं ही हुई तो के निकळस्या किया ही। सगळा सू मोटी चिंता तो तद हुसी जद वा गाव री आखी लुगाया पर पडसी।"

"आखी लुगाया पर किया बाईसा ?" केई की अचभीजती-सी बोली।

"किया काईं, रूडा अर रुळा-खुळा बात करता थोड़ा ही चूकसी कै लुगाई री डौळ है गाव री सरपंची माभलै, गोडै सू गोडो जोड'र गीत थोडा ही गाणा है ? तू अर थारी सागवाळना ही नही, आखै गाव री लुगायां ऊपणीजैली अर गांव मे लुगाई-जात भळे वरसा ताईं सरपचाई सामो सू ही नी करैली। बांरै राजनीतिक उत्साह नै केई बरस लकवो हुयो ही समझो। आगै सू पीछा भला, लोग पैलडै रा गुण गावता नी थकैला ?"

सगळी बोली एक सुर मे, "बाईसा, बात बिलकुल ठीक कही थे, म्हारा तो फेर बोल ही नी फूटै मिनखां आगै, ताळा समझो म्हारै होठा रै तो ?"

करमा बोली, "बैनजी, दिस थारी, अर चाल म्हारी, रुका तो म्हानै कैया।"

"आपणी नीयत ही आपणी दिस है, आपांनै न तो गळन अर न पख रखतो करणो कोरो ही अर न कीरी ही धमकी आगै झुकणो। छोटा आपणै भाई-भतीजा, अर वडा काका-बाबा। न घमंड बयारो ही, अर न आट को सागै ही। साधना-काळ है ओ तो, आखड़्या आपणै ही लागसी अर काळा छाटा साधना रै ही। मन अर जीभ लगाम, परिग्रह न पदरै रो अर न कीरति रो। मोटी बात आ है कै आम आदमी नै ओ मैसूस हूणों चाईजै कै गाव रो ढग-ढाबो पैसां विचाळै बदळन मतै है अर बो मे बीरो ही को भाग है। चादर आ, गांव ओडाई है, टैम आया बा है जिसी-री-जिसी पाछी गाव नै ही सूप देणी है।"

22

रात री साढी'क सात हुई हुसी । सुधा अर करमां कोठड़ी मे बैठी, आपस मे की विचारणा करै ही । सुधा बोली, "सरपचां, गांव मे केई छोरा-छोरी है आधा अर पागळा, पांच-सात तो हुवै ही ला ?"

"गाव रो पेट है, इता तो समझो ही बैनजी ।"

"वै माईतां रै ही भार, अर खुद रै तो है ही ?"

"कठै जावै विचारा ?"

"पण पचायत गाव री का और कठै री ?"

"गाव री ही है बा तो ।"

"अर वै गाव री चेतना रा ही अंश ?"

"ईं मे काईं गोळ है ?"

"बा नै की हुनर जोग करण रो बंदोबस्त पचायत आपरै हस्तूकै करै तो ?"

"तो सोनै मे सुगंध, पचामत री सार्थकता बधै ।"

"बीरी आ जिम्मैदारी नी ?"

"समझै जद तो, बीरी सबसू पैलां ।"

बात की आगै बधै, ईं सू पैलां ही, एक लुगाई, सागै बीरै एक डावडी, बरस दसेक री बारणै आगै आ खड़ी हुई । लुगाई रै ओढणै पर जाडो-सो एक लुकार और । देखता ही बा दोना ही सोच लियो, 'लुगाई आ, कोई रावळै री हुणी चाईजै ।'

करमां बोली, "ओलख्या नही, माय पधारो ।"

माय बडती-वड़ती बा बोली, "थारै तो हू नी निवळो अर मिळण नै कदेई, आप नी पधारया, कसर दोनां कानी, ओळखां किया ?"

कुर्सी पर बैठगी बा, तो सुधा बोली, "पड़दो है आपरै ?"

"भूख-तिस तो म्हारै सागै-सागै उघाडी फिरै है, पण म्हारै पडदो है काई करा, कूटीजां हां तो ही पड़दै नै तो थीमै ही फिरा हा ओजूं ?"

सुधा बडी प्रभावित हुई बीरी साफ कथणी सू, स्याणी लागी बीनै बा । 'आप कीरै घर सू हो ?' ओ पूछणों सुधा ठीक नी समझ्यां, बण

डावडी नैं ही पूछ्यो, "बाई, काईं नांव है थारो ?"

"चंद्रावळ", छोरी बोली ।

"अर बापूजी रो ?"

"बापूजी नैं नी जाणो आप, सरपंच सा'ब री बेटी हूं ।"

"जाणग्या बाई, अर अै थारा, मा-सा ?"

"हा ।"

सुधा हाथ जोडती बोली, "धन-घड़ी, धन-भाग बड़ी मैंर करी आज तो, फरमावो किया हुयो पधारणों ?"

निवति-निवति, करमा ही बोली, "माफी देया सा, आंधो अर अजाण बराबर हुवै है, हूं गांव री सरपच तो झट बणगी, अर ओळखू नी पचास पावडा परिया बसतै सरपंच सा'व रैं परिवार नैं ही, आ-म्हारी कमी-नी तो काईं ? दरसण आप किया दिया आ फरमावो ?"

"दरसण काईं, आप दोना नैं बधाई देवण नैं ही आई हूं अर की म्हारी गर्ज ही ।"

करमा बोली, "बधाई ईंमें क्यारी ? आप सगळां जिताई तो जीतगी, म्हारो ईंमें काईं ? हां, आप लोगा रै दियै विश्वास नैं जे है जिसो रो जिसो कळो राख सकूं ठेठ तांईं, बधाई री बात फेर तो की बण सकै है, पण बा भोजू भळगी है, घणों खाया आसी । आप तो सेवा फरमावो पैलां ।"

"आप जीतग्या म्हारो बडो जीसोरो हुयो, आप पूछ्यो क्यो ? क्यों क्यारी, म्हे अबै जीर्ण पडग्या समझो ।"

सुधा बोली, "आ कियां, जियै तो आप पैलां ही हा ?"

"पैला बैनजी-सा, जियै नहीं भोगै हा ।"

"किया ?"

"किया काईं, पूछण ही लागग्या तो सारै क्यों राखू, सुण ही लो । फाटक मे रुळै-झुळै टोपड़ियै-माडियै सू ले'र ऊट तांईं कोई लिलाम(नीलाम) हुयो तो, वारी जेब मे तो की न की आ ही पड़तो । चोरी ही गवाही दी तो बा तो बोतलआळा पइसा पैलां पटका लिया अगलै वनै सू, तोन पास हुयो की रो ही तो वारै वापरत पैला हुई, फैमिन रो काम खुल्यो मदेई तो वां एक हाथ सू लियो अर दूसरै सू पायो, चोरो ही एकट झलग्यो फाटक में तो

बारी सेवा मे तो घेटियो-बकरियो की-न-की त्यार । कीरो ही खेत मिणायो, बाडो छपवायो तो बा आपरी भूर पैला ही चूकली, किताक बताऊ आपनै ? ई न कास करण मे पाछ राखती, अर न कँवण मे, पण वै न कान माडता अर न आंख्या ही उघाड़ता, बताओ, हूं कांईं करती ईं सू जादा ? अबै न-बांनै बिया मिलै, अर न अबै बियां नाचै वै । तो बताओ, जीवणै पडया'क नी ?"

"फर्क तो जरूर पडसी ।"

"पण आप जाणो हो, चोर रा पग काचा हुवै है, सरपच हुवो, चावै प्रधानमंत्री । बांनै कह दियो कण ही, कै ठाकरा, सैंठा रैया अबै, पोत लारला सै उघडैला, अर खायोडा सै पाछा घिरैला, जाटणी है आ, चढती ही ढाण घालसी आ तो । हालत बांरी खरता हुगी । काल रात लटकतै मू मनै बोल्या, "अबै तो थारी टूमड़ी दियां ही पाणी वचै ।" 'टूमडी क्यों', मैं कैयो, बोल्या, "बाबुआ री जेबा में की दाब'र, जाळ सू निकळ् किया हो ?" मैं कैयो, 'म्हारै कनै किसी तो टूमा अर किसी मनै करवा'र दी ब्याव पछै, आपरै घर री दो ही तो टूमा ही, आप ठडै-ठंडै कदेई छेडै सगाई बांनै, म्हारै माईता रै घर री दो टूमा है, बांनै काळजै नीचै देराखी है किया ही, आपनै वै ही नी सुहावै, पण बेच्या वारा पूणा ही पल्लै नी पडै आपरै । दो महीना छेड़ं, छोरी नै धोरियै चाढणी, हू तो खैर अहोळी ही सही, पण वै कनै हुसी तो आपतो पाच मिनया मे फूठरा ही लागस्यो । मू लटकाया बात तो बां सुणली पण मुण्यां काईं हुवै समझण रो मन ही नी हुवै जद ?"

सुधा बीरी बात सुण'र पसीज उठी, एक तैज सहानूभूति बीरी चेतना मे उतरगी बीरै प्रति । बा बोली, "बायां किती ?"

"एक आ, अर दो और है ईं सू बडी ।"

"अर कंवर ?"

"एक है सगळा सू छोटो ।"

"अर फेर हीं वै घर कानी नो देखै ?"

"नी देखै जद ही रोणो है बाईसा, बोतल दीखै, बीनै घर थोड़ो ही दीखै ? लुगाई, लुगाई रै दुख-दर्द नै जादा समझै, अठै आवण रो मोटो कारण तो ओ ही समझो, लुकोऊं क्यों बात नै ?"

करमा बोली, "आप आया, म्हारै सिर पर, म्हारी तरफ सूं आप बेफिकर रहो, आप सागै न म्हारो जातगत ईंसको अर न मनै बारा गड़घा मुर्दा काढ-काढ, पंचायत में प्रदरसणी लगावंण रो कोड। न बीसूं गाव रै सिट्टा उपजै अर न म्हारै ही कोई सिद्धि। पण एक अर्ज है म्हारी, गाव हित में इत्तो समझादेया बांनै कै अबै बै लत पर कब्जो राखै को, गवाड़गळी न आप नाचै अर न औरां नै दिस देवै विसी। हूं बंधी हूं गाव रै विश्वास सू, बो टूटयो तो आख्या हूं बंद नी राखूली।"

"वाजिब है आपरो कैणो, म्हारी कोसीस आ ही रैसी", ठकराणी बोली।

सुधा बोली, "आप आया, म्हे बडी राजी, दुख इत्तो ही है कै इत्ता दिन आपसू भेटा नी हुया। आपरी डावडी म्हारी डावडी, आपरै दुख-दर्द नै ओछो करण मे म्हे ही को पांती बंटा सकी तो म्हारो भाग मोटो समझी। आप जिमी जीवत दिस बारै सागै, फेर ही बै भटकै, दुख ही है अर अचभो ही पण मेकीसेकाई मिलै तो ओम रै नैडो कुण जावै ? मैनत कानी मोडो बानै। खेत-खळै सैं सागै खाटो फेर लूखी-सूखी सगळा जीमो कर्नै बैठ'र फेर दाल नी, मीठी लागसी रोटी, अर मीठी लागसी नीद। त्याग अर मैनत री नींव पर उठतै घर री मैंक छांनी ही नी मावै।"

ठकराणी भंग्या रै घर कांनी संकती-संकती अर काठै मन टूरी ही। सोचै ही, 'आज ताईं जाणों तो दूर मूं ही नी कियो बीनै, पण आपरी गर्ज गधै नै बाप, आणों पड़यो। पण बातचीत कर'र पाछी बिदा हुई जद, सगै मूं मोकडोजती भीतां बींरी मतै ही टूटगी, आसा अर आत्मीयता मे डूबी पर सन्तोस रमै हो—नीरोग अर निरवाळो।

बुनी खाई बी छोरै नै पंचायत में बुलायो एक दिन। करमां बोली बीनै "थारै सागै और कुण हो-रे बी दिन ?" बो सामनै देखण लागग्यो। वा बो आंख्या बदळती बोली, "देखै काई है, बात अबार तो अठै तांई ही है, हाथ मू निकळै पछै, न हू की करसकूं अर न थारा हेमायती ही कीं ? जेठ हुवै नी हुवै, पण चामड़ी नुई आंवतां, महीनां लागैला ?"

सहमतो-सो बोल्यो, "सिसपाल निष हो।"

"बींरो है बो ?"

"हुकम सिंघ हवालदार रो।"

"हवलदार जी है का आगीनैं गया ?"

"दो बरस हुग्या, गया नै।"

"दारू खूब पीवता वैं ही तो ?"

"हा।"

"और भळे ?"

"दीपलो सुनार हो।"

"मिल'र थे, बैनजी रो पापो ही काटू हा काईं ?"

"नहीं।"

"तो धोक देवण नैं गया हा बठै ? चोरी री तो बा टैम ही नी ही अर चोरी करण नैं बठै हो ही काईं ? बात तो की और है।"

कदेई बो सामों देखैं अर कदेई आपरैं पगा कानी।

बा भळे बोली, "ईंरो मुतळब, भूत थानैं, की दूसरैं ही बणाया है। बात नै लुकोई तो चंद्रमा सोच लिए थारो, थारैं जोगो थाणैदार तो म्हारैं पग में ही है, गवाही ही नी लागैली।"

"सरपच कैयो हो," होळैं-सै बोल्यो बो।

"अर सरपच नै ?"

"प्रभाकरजी।"

"अठै ताईं तो ठीक है, हू राजी हू थारी बात सू, काईं कैयो सरपच थानैं ?"

"चोट-फेट तो घणी देया मत, डर पैदा करणो है आपानैं तो बीं लुगावडी मे।"

"बलि रा बकरा सूका ही बण्या का मिल्यो ही की ?"

"दो-दो बोतल दारू।"

"नसो अबै तो उतरग्यो है लो का है ओजू की ?" बो नी बोल्यो।

"आतंक अर दबदबो पैदा कर'र, छाप जमाणो चावो हो गांव री गरीब अर सूधी चेतना पर, थे बसणदो वैं ही बसैं, बाकी नहो, बात आ-ही है नी ?"

वो सामों देखतो रैयो, पण होठ बण नी खोल्या।

सिसपाल अर दीपलै नैं ही बुलवा लिया वण। होळै अर वडै मिठास सूं बोली बा, "भाईड़ां, मिनखा दांई वसो गांव में तो थारो ही फुठरापो है अर गाव रो ही।"

दीपलो, आपनै दूध धोयो-सो दिखावतो बोल्यो, "आ किया कही थाईसा, म्हे तो फुठरापै सूं ही वसा हां गांव में ?"

करमां फट तौर बदळघो ही। भवा विचाळै सळघालती बोली, "आ कियां, कह'र बताऊं का कर'र ? गुडाई ये नी करो, करवावैं है थारै कनैं सूं तो कोई। हाथ-पग थारा पण माथो परायो है, देखस्यूं देखा, माथो कितोक बचावैं थानै ?"

वैं सामां देखण लागग्या ? सोचैं हा, आ जे अठै ही इलजाम लगा'र दो-च्यार मेलदै फैं-फा तो आपां कांई पूछ चाढा ईंरो ? "आ पटवारी रै सामनै ही जूत ले'र खड़ी हुगी एकर।"

वा बोली, "मनै ठा है, गाव रै वद घरां रै गैणै-गांठै कानी ही निजर है थारी अर गांव री सीधी-संकती इज्जत कानी ही, पण ध्यान राख्या गाव में बांदरा नी वसै, राया रा भाव राते गया। कमाई कर'र खावो तो थमो गांव में, गाव है थारो, हारी-बीमारी मदद हुसी थारी। दिस उल्टी झालणी है तो जाग्या और कठै ही सोध लेया थारी, हया गाव री साथ नी देली।"

पांच-सात जणां रो एक गिरोह हो, चोरी-बदमासी री रपोट वण खुद करदी। थाणैआळा तो इसै नैं ही उडीकै हा अर की वै जाणै हा कै इं लुगाई रा हाथ लम्बा है। मंजाई करो जी खोल'र, गांव में एकर ठंड वापरगी।

दो मास्टरां पर आग ही, लारळै केई महीनां सूं। बानैं ही बुलवाया। लेडै मार्ग ही समझ तो वैं गया कै सेखै नैं भातो आमी कीं न को। आवता ही बुरम्या दी बांनैं, बोली, "गुरुदेवां, नियुक्ति आपरी गाव री चोधर करण खातर हुयोड़ी है का टाबर पढावण नैं ?"

"क्यो सा, टाबर ही तो पढावां हा ?" वै धीरे-सी बोल्या।

"किनाक पढावो हो अर किसाक पढावो हो, आप ही सोचलो। सुणी है कै वैनजी नैं धमकी रा कागद आपरी ही मेर है ?"

चैरा फक्, होळै-सै बोल्या, "आ झूठी कण कही सा ?"

"कही है वो आगै बतासी, कागद दोनू ठाया पड्या है म्हारै कनै, हू तो वानै भेजस्यू इटेलीजेंस नै, आपरो हाथ नी है बामे कोई तरै रो तो आप चुनौती कर देया वांन। गांव मे आप और गोळमाळ ही खासी करी है, वो सगळो कच्चो चिट्ठो मनै ठा है। अै काम ही करणा है आप नै तो छोरा पढावण जिसी जिम्मैदारी नी ओटणी ही, ट्रक-ड्राइवरी करणी ही कठै ही का दारू री ठेकैदारी।"

वा सोचलियो, 'लुगाई बड है, अबै अठै सू रस्तो नापण मे ही फायदो है। बदळी करवा'र वै बीस-बीस कोस आगीनै गया। महीनो हुग्यो गया नै, पण सी, बारो ओज नी गयो, कारण अगलै महीनै वा तैसील री उपप्रधान और बणगी। बणता ही वा रावळा री बूढी ठकराण्या, हेल्या री सेठाण्यां, फूटी साळ अर टूटी टापल्या ताई ही नही गाव रै बूढै-बडेरा सू ही मिली। गाव वीरो अर वा गाव री।

बूढी ठकराण्यां केई अपणायत पसारती वीनै बोली, "वाह् ए करमां तू सरपच कई बणी, जियाळ दिया म्हानै बाई, केयां नै। सुणी है, गुटको लेले गवाड मे नाच्या करता वै, खासा कम पडग्या अबै। केया रा की टूणा ही करवाया है तैं। चोखो बाई, केया रा आधी भूख काढता टीगर थिचारा, दळियो तो की धाप'र खासी, आसीस लागसी तनै। दूजै-चौथै, मांयं-मांयं केई जरकाईजती किसी नी ही, वै बिचारी ही की जीणं पटसी। बाई, घर री बात थारै आगै प्रकासा, म्हारी आख्या आगै छोटी सू मोटी हुई है तू ई खातर, बारै ठाकर, मूछ्यां रै वट, मायं धणखरी भूख, काम करण नै जी नी करै, उधार तोलतो बांणियो सकै, बता काम किया चलै ? ऊन-चूरी रो काम की चालु करा, मैनत हुवै, माया बापरै।"

वाणिया ही कम राजी नी हुया। साफ नीयत अर बधती अपणायत कीनै आछा नी लागै ?

23

स्कूल री छुट्टी हुयां, अघ घंटो ही हुयो हुसी। बरस चाळीसे'क री थाकल-सी एक विधवा आई। आख्यां रै चौक पर चिंता री मटमैली-सी चादर बिछयोड़ी अर चैरै पर उदासी री। होठा पर हळकी फेफी, जाणै थी नीचै वण आपरी कोई दर्दभरी लंवी कथा ढक राखी हुवै। बा बोली, "अठै एक बाईसा बिराजै बतावै, नाव सुधा है बांरो?"

सुधा बोली, "फरमावो मा-सा, सुधा तो अठै हू ही बजू हू।"

"रतना बैनजी नै जाणता हुस्यो आप, नर्स है मंडी री अस्पताळ मे?"

"हा जाणूं हूं आछी तरै सू, हुकम करो आप?"

जैब मूं एक कागद निकाळ'र, सुधा रै हाथ मे थमादियो वण। पढण लागी, सुधा लिख्यो हो, "बहिन, मैं यहा आई जभी से इस औरत के पड़ोस मे रह रही हूं, आचरण मे बड़ी भली, पर आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय है इसकी। जान-अजान कुछ ही समझो, यह तुम्हारे गांव मे ठगी गई बुरी तरह। सुना है सरपंच तुम्हारी ही शिष्या है कोई; अस्तु इस सम्बन्ध मे मदद करना इसकी—भर शक्ति। अगले सप्ताह, मिलने आऊंगी किसी दिन। योग्य सेवा, शेष शुभ।

तुम्हारी ही अपनी
रतना

सुधा बोली, "सुणावो मा-सा, काई बात है, थण ठग लिया थानै?"

"ओसवाळी हूं बाईसा, जात बोथरा है। बड़ी-पापड बेच'र गुजारो किया ही चलाऊं हूं। एक बेटी है परणायोड़ी। तीन साल हुया है, परण्दा। सारैं सै नान्हियां हुयो हो बाई रै पण करम पतळा हा, मायो नही करमा मैं—इक्यो दिन बीसे'क पैला ऊमर री ढाळी मू।" बा बोली।

"और टाबर ही आपरै हुवैला?"

"दो छोरा हैं, पढै है तीजी अर पाचवी मे।"

"ठीक है आगै फरमावो?"

"छोरी रै चिमपिणाट सुरु हुग्यो, गोद कम आवै ही अर भूख ही कम

लागती । दवाई-पाणी मोकळा दिरवाया, रतना बैनजी बडी मदत करी, पण करम साथ नी दै तो बै विचारा काई करै ? केया सू झाड़ा ही घलवाया पण फायदो की नी हुयो । आखा दिखाया, पाच-सात रिपिया वानै ही चटाया , जो री उकळी । एक नागोरी मियँ नै दिया तीस रिपिया, काई हुवण नैं हो ? कण ही चेडो बतायो अर कण ही चकारै मे पग । उतारा ही किया । सासरैआळा कैवायो, सगीसा, सौ-पचास कानी मत देख्या, चेडं-चाडं रो जादतो करा'र ही बोनणी नैं भेज्या । बाईसा, सगा कनै सू तो मागती सक, अर खुद कनै टका रो सरतर ही दोरो, फेर ही सोचँ ही सौ-पचास माथै कर'र ही, ईनै जे राजी सू रवाना करदू आपरै घरे तो हूं लाख री हू । एक दिन कण ही कैयो कै, 'रामपुरै मे एक बैरागी है बडो पूगनो । रिपिया तो मू माग्या लेसी वो, पण रोग री रात काटदेसी ।' जी री उकळी काई करती बाईसा, आपरै ई गाव में, हफ्तै भर पैला ह्र आई छोरी नै ले'र । इग्यारै रिपिया कळस मे घात्या, फेर हड़मानजी आगै जोत कर'र, बोल्यो बो, 'ई मे तो नायण है कोई, आ बाई हाय ऊजळा करण गई है, त्रिकाळ सिझ्या री, यॉ वेळा वा, ई मे वड बैठी । बा बालगोपाळ हुयै नै पूरो करदै, अर आगै लगण नी दै । ईनै विदाम खुवावो चावै गूद रा लाडू, रस तो बा चूसलै, अर आ, तर-तर छीजै । बा ईनै न पूरी नीद ही लेवण दै, अर न की सागै सावळ बात ही करण दै, जघी तो जवाब देदियो, नी तो उदासी में ढकोजती गुमसुम ।" आ बात, म्हारै बाईसा फिटोफिट बैठगी । मै कैयो, 'म्हाराज, हूं तो माव गरीबणी हू, थे समझ लेया आ थारी ही बेटी है—धर्म री, म्हारी अर ईंरी आसीस सू थे फळग्यो-फूलस्यो ।'

बो बोल्यो, "वाई, रिपिया पांचसौ लागसी, मैंनत ई यानर पूरी करणी पड़सी ।"

मैं कैयो, "वडा आदम्या, इत्ता तो म्हारै सू हेला ही नी हुवै ।" बो बोल्यो, "थे इत्तो ही कैवण लागग्या तो सौ रिपिया कम दे देवा ।" बाईसा, छोरी री एक टूम अहाणं घर'र, रिपिया च्यारसै मैं पकड़ा दिया बॉनै, पाच-सात दिनां बाद बण लाल डोरे मे पोयोड़ो, ओ तावै रो मादळियो मनै दे दियो । धूप गेर'र बांध दियो मैं छोरी रै, छव दिन हुग्या, पानरो

तो बीरै अळगो रैयो, व्याधि की ओर बधगी। छोरी नै अबै लेंवण आसी तो टूम तो बा आपरी मागसी का नहीं ?"

"मांगसी क्यों नी, बा नी तो बीरै सासरैआळा मांगलेसी। म्हारै मे लेलिया वण थानै।"

"लेलिया नी, हूं आयगी समझो, पण फायदो हुतो की तो सहलेवती आ मार दोरी-सोरी। ब्यारसै दे दिया, ब्यारसै ओर हुये जद या टूम पल्लै पड़ै। कादै मे फसगी हूं तो, कादसको किया हो तो गुण आपरो जोऊ जितै नी भूलू।" चिंता अर उदासी बीरै चैरै पर ओर घणी हुगी।

सुधा समझाई, "चिंता थे छोडो एकर, या करणं में घाटो ही घाटो अर छोडणं मे लाभ-ही-लाभ तो छोडो ही नी ?"

"जाणू हूं बाईसा, पण जो सारै नी।"

"घबरावण री जरूरत नी, आपणी तरफ सू आपां, पूरी कोसीस करस्यां अर जाणा हा, साव सूका नी आवां—बी कर्ज सू, पण रिपिया सू ही जादा कीमती, म्हारी एक बात सुणो।"

बीरै चैरै पर एक आसा बिखरगी, जाणू जावती बेल नै पाणी मिलग्यो हुवै की। बोली, "हा फरमावो बाईसा ?"

"थारी बाई रै केडो-केड़ो की नी। बाळक सयाऊ मे कोरो ही जावै, खासकर पैली सयाऊ मे तो बी सवाळती मा रै मन री लगाम बीरै बस री नी हुवै। हियो उल्ट पड़ै, मोह री मार अर बीरो उल्टो वेग, इसा तपडा हुवै है कै एकर तो बै ग्यान अर समझ नै भूत रै कानै सातण-सा तोड़-मरोड़ नांखै। दूध सू भरया बोवा सुहातां मा रै कित्ती बडी समस्या हुवै या जाण सकै है ? म्हारै मे बीत्योडी है आ। बीनै न धन भावै, न नै अर न बीरो मन लागै। खुद मे खोयोडी बीनै निकळन नै पोर्ट र दीखै। आदम्या मे ही नी, मोह रो ओ वेग जिनावरा मे भी पण आदम्या जित्तो लम्बो नी। गाय रो वाछडियो-वाछड़नी दो-पांच दिन रो हु'र पूरा हुवै तो आदमी देखता गाय बीनै भागै सू उठावण नी दै। एक दो दिन घास्यो-पीणो छोडदै ! भाळो हुवै है, सो परायै नै दुखी देख'र ही आमू नी रोक पोरयां बीरै दुध पाको ? जवान बेटो मरयां

आधा हुयोडा ही नी, प्राण गमाया भी सुण्या है।"

सुधा री कही, बीरी चेतना मे उतरगी सीधी। बा बोली, "बाईसा थारा बचिया जियो—लम्बी ऊमर, बिल्कुल ठीक कही थे, पण अबै काई करू, कोई रस्तो बतावो मनै?"

"ओजू की मोडो नी हुयो, बीरो मन बी ममता सू हटा'र और कीनै ही मोडो।"

"किया?"

"सगळां सू बढिया तो आ है कै पास-पडोस मे इसो ही कोई टाबर हुवै बोबा चूषतो तो बीनै बा चुघावै—पुन ही हुसी बीनै, तुष्ट अर पुष्ट ही हुसी बा। की बूढी-बडेरी कनै सू ज्ञान अर वैराग री मन लागती बाता सुणवावो बीनै। पढी-लिखी ही, की है काई बा?"

"हां है चौथी ताई।"

"बीनै कथा-कहाणी री सोरी पोथ्यां देवो, रामायण पढणदो बीनै अर्थ देख-देख'र, बास रै दो-च्यार नान्हे टाबरा नै घड़ी-दो घडी की सिखावै बा—नैम सू। गावण रो की कोड हुवै तो कबीर, सूर अर मीरा रा दो-च्यार भजन कंठा करलै, गावै मस्त हुर। मुतळब, मन बीरो की न की काम में उळझ्यो रैणो चाईजै केई दिन।"

"पैलां थारै कनै आंवती तो बयांनै? पण दिनमान म्हारा ऊंधा हुवै जद कियां आईजै?"

"कोई बात नी, रामजी आपा पर अबै ही राजी है।"

"घणों ही आछो, आपरी जबान फळै।"

"पण रात-रात रुकणो तो पडसी थानै।"

"राजी-राजी रुकस्यू बाईसा, इंया कोई हेलै सागै रिपिया थोडा ही आया करै है, आमों-सामों तो की हूंणो ही पडै।"

बात रो ठा मिरदारी नै ही लागग्यो, बा आप ही तो पंच है। इसी पागळी पचायती तो बा मोधती फिरै है, आ घर बैठे ही हाथ लागगी, की हको-नकी हुयां बिना बीनै तो रोटी ही स्वाद नी लागै।

दिनूगै भाग री कंचन-करमा ही आयगी। बात सगळी समझाई सुधा बानै, अर अर्जी एक और धरदी करमा रै हाथ पर। माजी ही बोलां हाथ

जोड़ती, "हूं तो मैरवानां आ ही समझस्यूं कै सिंध री जाडा नीचै गयोड़ो हाथ म्हारो, थे निकाळ दियो, नींद अर रोटी ही छूटग्या म्हारा तो ।"

पचायत में बुलवायो जीसुख साध नै । कुर्सी दी बैठण नै ।

वो बोल्यो, "फरमावो बाईसा, कियां याद कियो आज ?"

"आपनै तो रोगआळो ही कोई याद करसी ।"

"हुकम करो, मिटणआळो हुसी रोग कोई तो जरूर मेटस्यूं", चैरै पर एक खुमी बिखरती धीरै ।

"दस-पन्द्रै दिनां पैलां, ग्यारसै रिपियां में डोरो बणा'र दियो हो आप कीनै ही ?"

"बाईसा ध्यान नी, बणावतो ही रहूं हूं ।"

माजी परिया बैठी ही, बीनै उरिया बुला'र करमां बोली, "आनै ओळखो हो आप ?"

वो कांनी देखण रो नाटक-सो करतो बोल्यो, "पूरो ध्यान नी ।"

बा की आंख बदळती बोली, "अबार आप कठै बैठा हो, ओ ध्यान है'क नी ?"

"आ किया बाईसा, ओ ध्यान तो है ही ।"

"अठै बाईसा अर भाईसा रो नातो नी है, पंचायत है आ । आ कीरी तो बाईसा अर कीरी माजीसा ? आ तो दूध रो दूध अर पाणी रो पाणी करण नै बैठी है । आपनै तो सगळा ओळखै है अर आप कोनै हो नी, इसा काई प्रधानमंत्री लाग्योड़ा हो आप ?"

आसा रै विपरीत, एक अणचीती गर्म हवा बीरै चैरै री आल पूछती निस्ळगी । वो सामो देखतो सोचै हो, "आ तो अणतेड़ी तूमत आंवती लागै ।"

माजी नै देखतां ही जाण तो बो गयो, पण बो सोच्यो एक नन्ना सौ दुख हरै, आसां बयाना रै लम्बै उळझाड़ में पड़ां ही क्यों ? पण अबै निकळन रो और कोई पगडांडी नी दीखी, बो थूक गिटतो बोल्यो, "हा ओळखली, अबै ध्यान में आई म्हारै ।"

"रिपिया ग्यारसै लिया हा आंसूं ?"

"लिया ।"

"बदळै में काई दियो आनै ?"

"मादळियो कर'र ।"

"पण वो बांधै पछै, बीमारी तो और वधणी चोरै ।"

"वैद तो दवाई देवण रो आडो है सा ।"

"पण मादळियो तो दवाई नी, ठगी है आ तो, अर ठगी करै तो माफी वैद-डाक्टर नै ही नी ।"

वो सामो देखै हो भीत अर लाठो विचाळै आयो-सो ।

बा बोली, "डोरै मादळियै में खर्च कितोक हुयो आपरो ?"

"मोल चीज रो थोड़ो ही है मा ।"

"तो ?"

"हूं दो रात आठ-आठ घंटा जोत करतो रह्यो हूं ।"

"तो दो रात आप ही नी सोया अर हड़मानजी नै ही अधघड़ी आराम नी लेवण दी । पण आ बतावो कै आपरी जोत सागै, अगली रै रोग रो काई सबन्ध है ? थारै जोत कियां, म्हारै पेट रो कातरो मरै तो हूं ही करवाऊं जोत आप कनै सूं । बिना चीर-फाड़, खाली डोरै सूं ही, कोरै ही पेट री पथरी काढ सको हो आप ?"

आपरै ही जाळ में फस्यो निकळन रो रस्तो देखै हो वो बोर्द ।

बा बोली, "साधां, हड़मानजी सूं ही नी टळो ?"

कंचन बोली, "हड़मान बावै नै रित्ता परसैद देवै है, आ तो पूछो आनै ?"

सिरदारी बोली, "डाकण बैठा लेवै'क देवै ? हड़मानजी नै देवै है अगरबत्ती रो धुवो ।"

करमा बोली, "दस-बीस पइसा रो डोरो मादळियो हुवैला, बारै पइसा में घाट भिजोई है नीं, च्यार भोरा धूप रा साथ दिया हुवैला घोरै पर, इतै रा रिपिया च्यारसौ धरा लिया, इणो भांदो तो आयर-पीयर में ही नीं उरै ।"

कंचन बोली, "अर इण्यारै रिपिया बळम में पलयाया वै ?"

करमा बोली, "बो परमैदज बावै रो । बोलो क्यो नी साधां ?"

बोनै होठ की सुनै तो ?

करमा बोली, "जात साध, काम असाध, थांमू न थारै जी नै सुध (जी सुध) अर न की गरीब-गुरबै नै, तो फेर आवण री उतावळ क्यों करी मानखा देह में ? आप पर ब्यारसै-बीस रो केस चालसी, आ भाजी सागे जा हू आपरै खिलाफ अैफ० आई० आर० दर्ज करवास्यू । सगळै पचा नै बुला'र पचायत जोडस्यू, बो जुर्मानो और लागसी आपरै । एक बात ओर, म्हारै कानी देखो ।"

माधा, लिलाड़ सूं आठ आगळ ऊंचै ताईं साफ टाट पर हाथ फेरता, अणचाया-सो देख्यो—करमा रै सामनै एकर ।

वा बोली, "साधां, साल में आपरै पचास हजार सू बेसी आमदनी हुवै बनावै है, ईं धधै मे ?"

"नही सा ।"

नही किया, आपरै अठै मालासर, मेंदीपुर अर पूनरासर आ सगळा रा दफ्तर लागै है । पर्ष खाली च्यार टोपा तेल अर चिवटी धूप रोज रो, न कागद-कलम अर न बाबू, दफ्तर दौड़तो चालै । चाळीस पइसा रा च्यारसौ लेवो तो कमाई रो काई पाको ? "मालाना इनकम-टैक्स ही देवता हुग्यो की ?"

होठा पर जीभ फेरतो बोल्यो बो, "इत्ती आमदनी कठै पड़ी है सा, गुजारो हुवै है किया ही ।"

"गुजारै री तो आप फरमावो हो, पण पंचायत तो सिकायत करसी कै आरी आमदनी देखता अै सरकारी इनकम-टैक्स चोरी करै है, इनकम-टैक्स-आळा फेर आपरो बारणो बिना इतना ही खड़खड़ा देसी ।"

"हा सा, फोडो घाल सकै है वे ।"

"हडमानजी रै दिव्य जीवण री पवित्र झांकी रो अग आप गाव रै जीवण में उतारता कठै ही तो आप गाव रो ही नी, घरणी रा गनम्हा रो सम्मान करता । 'कुमति निवारहि, सुमति के सगी', हडमान-चाळीसै मे ही है सा पढी ही'क नी बदेई ?"

"पढू ही हू सा ।"

"इसो ही पढो हो कांई ? देव-सुसंद-पाठ तुलसीदासजी तो दस-दस पइसा में बांटग्या, आगै समार नै अर सुजबानो बगसै कोई तो पढणो ही

नी लागै अर काम पक्को, पण आप वाबै सागै सीधी लेण मिला'र, की दूजै नै बीनै मू ही नी करणदो, वात तो कठै हो वानै ब्लैक मे और उळझा लिया। वा आपनै नियुक्ति-पत्र देराख्यो है का आपे ही नियुक्त हुय्या आप ?"

बीरा होठ चिपग्या। वा भळे बोली, "पचायत की नी करै, वी कनै तो सिकायत आई है आपरी, जबानी नी लिख्योड़ी, आप फरमावो तो कारवाई आगै चलाऊ ?"

वो मन ही मन सोचै हो, तू ही जे कारवाई चलावती तो इत्ता बरस अठै ही, ही नी, चलावणआळी और ही है कोई, बोलो थे नी, बोलै मिंदर-आळी है। वो बोल्यो, "राज मे तो सा, आला अर सूका सै बळै है, कारवाई आगै चलाया, मनै तो तकलीफ ही है।"

"तो एकर आ भूल सुधारण रो मोको देवा आपनै ?"

"आपरै इसी ही जचगी तो माजी रा पइसा सूप देस्यू—है जिता।"

"तो देवो ग्यारसै इग्यारै रिपिया अर दस रिपिया आरै दो बिरिया आवण-जावण रा, भाडो विचारी नै घर सू क्यो लागै ? अर ओ साभो आपरो डोरो-मादळियो।"

"आरो ▪ कांई करू सा ?"

"ग्यारसै री चीज है, फिफ्टी परसैंट बटसी तो ही, आधा तो ले पडस्यो, बजार इत्तो थोडो ही गिरग्यो हुसी ?"

एक पल बण सोच्यो, "म्हारो बस तो चालै की तो हू ग्यार चूडाथण घाल दू सरपचणी मे, अर आ अबार ही नाचै सीदा खिडा'र अठै ही।" बण उदास-उदास मादळियो लेलियो। करमा बोली, "बास मे कोई कुतियै रै बाध देया, भूत नी लागै विचारै मे—और तो ई पात रो काई हुमी ?"

यो करमा आगै रिपिया राखण लाग्यो तो माजी बोली, "बाईमा, मनै तो म्हारा ग्यारसै ही घणा-मोकळा, जावण दो बाकी रा।"

करमा आवाज की जोर री करती बोली, "चुप रहो माजी, विचाळै बोलण री दरकार बिल्कुल नी है, पचायत है आ, ओ घर नी है थांरो-म्हारो। फैसलो थानै ही करणो हो तो अठै क्यो आया ?"

बण तो टुरी जितै, जीभ नै ताळुवै मू छेटै ही नी करी भळे।

करमा साधा नै बोली, "सन्ता ओ गाव जितो म्हारो है बितो ही

आपरो है अर वित्तो ही है औरा री। दिस ठीक देवो लोगा, नै घट'र खास्यो तो बरकत करसी। इयालको संचै, राजी हुवो तो मरजी थारी, है कोढ ही, परवार रै मूळ मे बैठग्यो वो तो बिना ओग ही उफण पड़ैलो वधेई अर परवार रै हित नै सावट लै लो।"

जीसुख म्हाराज विदा हुया उदास-उदास पण घणी उदासी बानै इं बात री ही कै पचायोडा रिपिया पाछा कढग्या। माजी रिपिया आपरा पल्लै बांधलिया, चैरै पर खुसी बापरगी पण सिरदारी रै सगळा सूं जादा। माजी करमा आगै हाथ जोड'र मनै-मनै मौन धन्यवाद तो दे दियो पण जीभ नै ओजू ताळवै रै चिपी ही रैण दी। धन्यवाद दिया काइं ठा भळे चिड़ वैठै कै पंचायत रै काम मे थारो धन्यवाद काइं मागै तो फेर किसीक हुवै ?"

माजी सुधा सूं मिलती गई, बोली 'बाईसा, आ सगळी मैरबानी आपरी ही है।"

बा बोली, "मैरबानी, आ न म्हारी अर न और कोरी ही. ओ तो पचायत रो फैसलो है, पइसो ही थारै हाथ नी आवतो तो काइं थे करता अर काइं करती हूं ?"

"बाईसा, लुगाई लूखी अर करडी जरूर है पण है बिना खाद री सोनो, आ नी हुवै तो रिपियो म्हारो आवै नी एक ही। मनै तो भाडै रा पइसा ही घर सूं नी लागण दिया, दिरा दिया आज ताईं रा।"

"दिराणा ही चाईजै, लाग्योडा आपरा।"

"पण हूं आपरो वदळो किया चुकाऊ, मनै डूबी नै काढी है आप।"

"उबारणआळो वो एक ही है. आप तो एक ही चेष्टा राखो, बेटी वास्तै कोई जरूरतबन्द बाळक देखो—बास मे, पास-पड़ोस मे का परू अपणायत रो। की रोगलो, गरीबणी मा रो बाळक पळग्यो तो जितो आसीस-मी या मा अर जितो आसीससी बो बाळक। आपणी बाई रो रोग खतम अर मारणो बीरो पाछो सरस।"

गई बा आसीसती, सुधा अर सुधा रै सारै साथ नै।

24

पुस्तकालै रो निरणै हो जद लेलियो तो 'चट-रोटी, पट-दाळ' सुधा रै खटाव करै ? दो दिना बाद ही, पोथ्या दोयसै नैड़ी खरीदली। नन्दन, चन्दामामा अर बाल-भारती सुरू कर दिया। एक मेज अर दो बैंचा बरामदै में राखदी। पोथ्या मे पाच-सात धार्मिक नै छोड़, बाकी सै ही बाळ पोथ्या। मोटी-मोटी मै लिखा बामें, ऊपर सू फूठरी-ओपती, मार्य रोचक अर मीठी। रिपिया तीनसै नैड़ा, पोथ्या रा तो दे दिया सिरदारी, कैयां नही, राजी हु'र आपरै मतै अर मेज, बैंचा रा पाचसै नैडा दे दिया करमा। पुस्तकालै रो नाव राख दियो, 'मां सन्तोषी पुस्तकालय।' करमां री अध्यक्षता मे उद्‌घाटण लाडे-कोडै करवा दियो सिरदारी कनै सू। आ नुंई दिस पकडती, ममता वीं री और स्वस्थ हुगी अर आकांक्षा और ऊंची।

सुधा तो हाथ जोड़'र खाली इत्तो ही कैयो सगळा नै कै,' देखो, मा सागी, मिंदर सागी, प्रार्थना सागी, अर आपां सै सागी, पूजा रो तरीको खाली बदळदियो, मा अर मानखै नै जादा नैड़ाई सूं समझण खातर, हेत रा हाथ आपणा जादा लम्बा करण खातर।

पोथ्या देवण-लेवण रो काम सूंप दियो सान्ति नै अर व्यवस्था सगळी रही कांचन रै हाथां मे। कण ही कैयो, "अर थे बैनजी ?"

"हू बिना कैयां नाचणआळी, था पढतां नै देख'र मुळकणआळी" बा सैज भाव सू बोली।

पोथी की पढणी जाणै बारै तो हुयो बडो कोड अर नी पढणी जाणै बारै पढणो सीखण री लागगी लगन। नांव लिखा'र, पोथी घरे लेजावण री सुरवात हुई पैला सिरदारी सू ही, पोथ्यां घरे पढण मै अबार तो दो-च्यार लुगाया ही ले जावै है, रंग चढणो सुर ही हुयो है पण आसार देखतां गैराई बीरी बध ही सी। पाटसाळा रै ही जीवण मे नही, बास सगळै रै जीवण मे, नुंई हलचल सुरु हुई है आ एक। लुगाया अर टाबर दोनूं ही राजी, दोनूं ही उत्सुक।

अदीतवार है आज, दो-ढाई बजी हुसी। वाचनालै री बैंच पर तीन टाबर बैठा पत्र-पत्रिका देखै हा। सुधा वांनै देख्यो, मोहियो ही हो बां मे।

वा मेज कनै पूग'र बोली, "आज थे तीन ही किया रे? थारो भाएलो मघलो कठै रे?"

"बीनै तो ताव चढग्यो बैनजी", मोडियो बोल्यो पण बैरो बीरो ही की उदास हो। सुधा हाथ लगायो बीरै डील रै, होठा पर बीरै पापडी अर डील की न्यायो।

एक जणों और बोल्यो, "बैनजी, म्हारै वास मे ही, बीमार है केई।"

"जद ही कम आया हो थे", वा बोली। "पण छोरा पढती बेळा एक चौपनियों अर पैसल राख्या करो, पढतां-पढतां कोई घणों सुहावणो वाक्य लागै थानै तो झट लिख लिया करो, बो कण्ठस्थ हुयां, आगै काम आसी थारै।"

सहसा निजर बीरी ऊपर उठी, कोई मानवी पगचाप सुण'र। पेमू अर गिरदारी आवता दीस्या बीनै। कनै आवता ही वा बोली, "आ, भा! आज तो भाई नै सागै ओर?"

गिरदारी बोली, "भा तो रोज ही आवै है, भाई नै पूछ ओ कियां आयो है?"

पेमू मतै ही बोल्यो, "बाईमा, खेत लावग्यो, छोला अर कणक पकान पर है, आपणो टुकड़ो ही, देखो तो सरी चाल'र? लूण-मखण की लागै है का कोरा फोडा ही देख्या? आप दोनू ही पधारो, आपरै जचसी तो दो दिन बठै रुकलेस्या, नी ढूकै ध्यान मे तो थोड़ा घूम-फिर, बसाही थो दिन ही पाछी ही पकड़ लेस्या।"

सुधा बोली, "क्यो भा, रियां जची थारै?"

"मा तो थारै लारै है, तू कैसी तो कुवै मे ही टुरपड़सी।"

"आपा बानै भेज्या है बठै तो, सम्भाळणो बानै आपणों फर्ज है।"

"फर्ज है तो फर्ज पूरो करो बाई।"

"तो भाई, चालणो फेर आज ही बाई?"

पेमू बोल्यो, "टुरणो तो बाईमा, घडी-दो-घड़ी मे अबार ही चाईजै।"

"अबार ही चाईजै तो, अबार ही सही, आपणै काई मामलो है मा? तू जा, घंतिये मे कोट, बाबळियो की घानता, ओढण बिछावण [illegible] ही गांभू।"

वै गया मा बेटो दोनू । सुधा आपरो झोळो त्यार कर लियो । बत्ती, बैटरी, अर फस्ट-अेड री छोटी पेवटी, घाल लिया वीमें । सान्ति नै टाबरा री भुळावण दे'र, की घर विध री समझावै ही । कंचन अणचीती ही आ पूगी । सुधा बोली, "आव बाई, ठीक आई मौकैसर, सुणा नवी-जूनी कोई ?"

बा बोली, "गाव मे बैनजी, टाबरा री आख्या ही आवै है छड़ी-बी-छड़ी । खाज, खुजली अर पचिया तो मोकळै टाबरा रै दीख्या, रामू मेघवाळ री मा रै लकवै री खबर सुणी, पण प्रकोप मतै खून रो विकार ही जाणै लाग्यो । हरिजना रै बास मे की बेसी ।"

अध मिंट रुक'र बा, कचन सामी देखती बोली, "खून मे विकार मतै ही नी उपजै बहन, पणपरो विकार जीमण री जिनसां सागै ही रळै खून सागै । म्हारो वहम है कै खासो भलो गोळमाळ तेल मे हुणो चाईजै ?"

"किया ?"

दिन दो एक पैला, मैं एक डोकरी नै तेल लावता देखी, देख्यो तेल मैं, लाळाबधै ही बीमें, हो ही की जाडो, सुगन्ध ही की बाडी-वाडी अर रळम-टाउ-सी, न सरसू न सोयावीन, वेचणियो जाणै बयांरो हो ?"

"मूघो तो पोसावै नही, अर सस्तो आछो नही, तो गरीब काई करै बैनजी ?"

"ई सू आछो है नी खावै तेल, बीमारी सगाणै सू तो मूघो खाणो आछो ।"

"छोडो सगळी, अबै काई करणो ?"

"सरपच नै ही की ठा है'क नी, रोम-दोष रो ?"

"केई घरा मे तो म्हे दोनूं ही देख-देख आई हां ।"

"दवाई-पाणी रो जावतो ही की सोच्यो हुगी ?"

"पैला तो म्हे दोनू 'जिला स्वास्थ्य अधिकारी' सू मिलण री सोचां हा, आगै फेर की ।"

"बिल्कुल ठीक विचारी थे । तेल रा नमूना ही भराणा है सुगनै-गै, अर दवाया रो इन्तजाम ही करणो है आछै सू आछो ।"

"आप अबार ?"

"थारै जचै तो, हू इत्तै, दो दिन खाजूआळै रो चक्कर काट आऊ ?"

"जरूर काटो पण, आया वैगा ही ।"

"मनै किसो घर माडणो है बठै ?"

अगलै दिन पेमू सागै, दस बजी दिनूगै, खेत जा पूगी मा-बेटी । जुताई खाली आठ ही बीघा मे हुयोडी ही । चिणा अर गोहू, खडा हा । चिणा मे फाळ अैस की फोरो ही रैयो पण वा कसर कणक काढली, लडालूम ही वा । कमर री ऊचाई-मान कणक, हवा सागै झुकती-झूमती आम्या नै तृप्ति अर मन नै अणमीती खुसी बाटती नी थकै ही । नही-नही करता सगळो धान पचास साठ मण सू कम तो काई हुवैलो ? पाडोस्या री कूत तो ईं सू वी ऊची है । अध बीधै मे गाजर, कादा, अर सकरकद ही लगा राख्या है । एक क्यारी पोदीणै री है, रोज चूटीजै, रोज वधै, अमृत पुत्र है ओ । गाजरा मे लकड़ी पड़न लागगी अबै, लोह ओजू ही भरपूर है आमे अर मिठास ही । आठ दस डाख, मिर्चा रा ही ऊडा है, लगाई पकडती छीदी-माडी मिर्चा अचार ही सरसै वा पर ।

सुधा अर सिरदारी नै देखता ही रूपो, मघो अर बहूवा बडा राजी हुया । "अरे, सोनै रो सूरज अगग्यो आज तो ?" टापर सू दौडता सामा आवै हा, अर दो बीनण्या काणै गूघटा, बडी नेह-निजर निरखै ही आ पानी । सुधा बा सगळा नै, फूल्या, सिणा अर डकोळी-भुजिया रो प्रसाद बाटयो ।

रूपै, मघै री बहूवा बोली, "बाईसा, फदरा उडीका हा, आज बापरया हो ?"

मघो बोल्यो, "माईता, म्हानै अठै बाई ला बैठाया, न्याल कर दिया, जगळ मे मगळ, इसी ही तो भूख लागै है सुन'र, इसी ही आवै है नीद अर इसो ही जोसोरो भोगा हा खुन'र मन पूछो । धपटवी रोटी, धपटवो काम, बडा मोरा पण सम्भाळ्या म्हानै इत्ता मोडा किया ?"

सुधा बोली, "या सगळा रो ओळभो सिर माथै, नी सम्भाळ्या बो पाटो थानै नी, म्हानै ही है । थानै सम्भाळन रै मिस जे दस-बीस दिन रैयना थारै सागै तो आनन्द अर ऊमर नी वधता म्हारा ? थानै देख-देख'र ही सुग हरजतो, ओ लाभ ही म्हारै कम नी हो ?"

"पण बाईसा, आपरी सीध अर समझ बिना म्हे अठै काई ठोकै हा ? जमी तो आ, पैला ही अठै ही हुती, नैर आया तो बरस हुग्या केई, म्हे तो आ'र कदेई होठ ही ईला नी किया बीरै पाणी सू ?"

"पण अेस आपा नै मरपच'र, कम सू कमपन्दरै बीघा जमी और त्यार करणी है। दो टोळघा वणसी आपणी, वादोवाद काम करणो है, घणो धुण कर देग्या ? हूं खुद सागै रैस्यू थारै।"

"आप सागै रैया तो पन्दरै काई, बीस नै हाथ घातस्यां म्हे।"

सिरदारी बोली, "छोटा-मोटा तीमू आपा, हाथ-हाथ त्यार करा हा ही, तीस हाथ जमी त्यार करनाखा रोज ?"

सुधा बोली, "रोज बडो हुवै, रोज चालती कीड़ी महीनां मे शहदड़, भीत पार करदै, अर थिर बैठो गरूड़ ही, तिळभर नी चाल सकै।"

सिरदारी चैती हवा सू मैक अर नय जीवण खीचती, हरियाळी में मस्त हुई धीरै-धीरै की आगै निकळै ही। कदेई कणक री बाल्या काती देवै अर कदेई चिणा पर लटूमी गेपरघा कानी। बीन घाल चालती, पाच-सात गेपरघा तोडी, चिणा काढ्या, दिया जाद नीचै अर सिरकी आगै। सोचै, "वाह प्रभु, काई मैर करी है तै ? गोहू ही खाया अर चिणा ही, पण माय्नै पी सू किसा चूरमा हुया ? खी-दाग्रल, ध्याराना रा सेवयोड़ा चिणा कदेई लेलिया मुट्ठी-भर तो चोथाई थामें अणसिक्या, कांकरा-सा करड़ा अर चौथाई फोरड़, आधा रो एक गुवाळो ही भसा। खायां जी मे घिता गड़ी भळै हुंती कै देव ध्याराना रा चिणा एक फाकै मे ही, नाख लिया थावै मे, न सावळदांता रै ही लाग्या अर न आंतां रै ही। आज तै थारो हंसतो गजानों खोल दियो, भावै जिता खावो, थारै स्वाद, काई जीवण ?"

सुधा हेलो दियो, "मा ?"

"हा बाई," जाड़ां चलावती वा बोली।

"हेरै नी चालणो ?"

"बाई अठै तो वैठो जठै ही डेरो, ठेरां जठै ही बिसाई अर गोदा जठै ही बगीचो। बी दिन तो मनै दिन में ही डरलागै हो अठै, जो परै हो, अध घडी ही नी रूकू अठै, पण आज बाई ठाठ लगा राख्या है रामजी, फिर-फिर घरू, रह-रह निरखू, कोई नी पाले। अबै तो आ, बजर [illegible]री धरती,

वैंगी त्यार हुवै जद ही भरीजै जी अर निजर ।"

"लागे रैस्या, तो समै आयां सैं थोक हुसी । पाकसी तो पाणी पण पसीनो सागै ले'र । अगलै साला मे आपणी ईं खेत मे गन्ना, नीबू, अर माल्टा सैं निपजसी, पाच-सात साल हाथ-पग आपणा नीरोग राख्या रामजी तो अठै आम फळसी, रोटी आपां कड्ढी सागै नी, आमरस सागै खास्या ।"

"थारी बात म्हारै मनै है बाई, काईं-काईं रस है धरती-माता रै जीवण भडार मे, आ ही जाणै ?"

"अै अनन्त रस ही अनन्त प्राण है बीरा, तप बोरी, आत्मा अर आखै ससार रो हित सोचणों सभाव है बीरो ।"

पेमू बोल्यो, "बाईसा पेट मे अबै तो कूकरिया लड़ता हुसी ?"

"मैं तो आधार खासो करलियो चिणा खा-खा, थारी थे सोचो," सिरदारी बोली ।

"तै आधार करलियो जद सगळा रै ही हुग्यो काईं ?"

"पैलां बी क्यारी पर चाल'र, मू अठो की, दूजी बात पछै सोच्स्यां। " क्यारी कानी आगळी सीध करती मर्घ री वहू बोली ।

हाथ-पग धोया सगळां फेर धो-धो, साफ कर-कर काळी गाजरा रो प्रसाद पायो, बडी स्वाद, बड़ी मीठी ।

मुधा बड़ी खुस है अबार, रह-रह किता ही विचार उठै है बीरै मानस मे, गाजरा रो प्रसाद पाया पछै सगळा नै बोली, "धरती-माता रो सभाव है देणो ही देणो, क्यों ?

"हां," मैं ही बोल्या ।

"बा, जे, थोडो सो ही हाथ खीचलै तो किमीरु बीतै आपा मे ?"

"घडी माडी ।"

"पण आपा ईंरा बेटा-बेटी हा नी ? देणो बद किया करै आ ?"

"हा, सही है ।"

"मा रो सभाव घणों-थोडो आपा मे हीं आणो चाईजै की नी ?"

"जरूर ।"

"तो आपा ही को देवा कोनै हो, घणी जरूरत हुवै जठै ?"

"जरूर देवां ।"

"धरती-माता ईं सू नाराज तो नी हुवै ?"

"नाराज क्यों हुवै, राजी हुसी बा तो ।"

"आपणै वठै अकाळ है अैस ?"

"हा ।"

"मनै अबार बैठी-बैठी नै याद आयो, कै आपणै वास मे केई मेघवाळा रा गाया, टोघडिया भूख सू भुवाळी खावता डोलै, सावण धानै कद आवै, वैसाख-जेठ री झळ मे पाधरा हुसी वै, धण्या री हालत ही आपा सू छांनी नी ?"

"धण्या कनै काईं है, आपरो टक ही मसा टळै वासू ।"

सिरदारी बोली, "बाई पाच-सात टोघडिया टोगड्या, रोज आगीनै कर-कर आऊ हूं, धक्का दिया ही नी सिरकै वै। धेरण नै जावती सोचू, एक दो रै टटा मे इसी टेकू ठुळी री, भळे वै मू ही नी करै ईंनै अधारिया, पण वनै जा'र वां हालता पीजरां नै देखू जद, हाथ थिर, जीभ ही थुलै घाली ।"

"तो बा दस-पाच डागंरां नै आपां ही घटायां की ?"

"किया ?"

"कणक चिणा सू आपा आपणी उदरपूरणा करा, चिणा रो धार, अर कणक री तूडी ओ बा जीवा रै निमित्त करदां, हरसाल तो अकाळ पडै नी आपानै दिया है धरती-माता राजी हु'र ।"

"दिया है बण राजी हु'र तो देवता आपां दोरा क्यों ?" सगळा ही चोरया । मधै री बहू बोली, "और तो काईं है, ट्रक रै भाडियै री विध भळै बैठाणी पडसी कियां ही ?"

सिरदारी बोली, "भाडै रो कोई विचार मत करो । भाडो हूं काईं दा किनै बरसां सू गळै रै बाधे फिरू हूं, कैवती वण, आपरै गळै मे बध्यो फलावून रो डोरो, दे झटको, तोड नांख्यो । डोरै मे मासा तीनेक रो एक फूल हो भैरूजी रो ।

गुधा बोली, "मा, इंयां कांई करै है ?"

बा बोली, "बाई, ईं सू न म्हारो गळो जाडो पडै, अर न ईं सू रोटी ही मोरी गिटीजै, चुभै है तो ही सटरा राग्यी है ईं अळबत मैं, आज जिसो

मौको भळे कद आसी तोड़न रो, मरयां पछै लोग ही तो तोड़सी ई नै ? हु किसी आडी फिरस्य कीरै ही ?"

"तू पंच है, भाड़े रो इंतजाम तो पंचायत सू ही करा सकै है ?"

"ओ भाडो सो, ई पच रै घर सू ही सुरु हुवण दै।" सगळा वीरै मूं कांनी देखण लागग्या।

फेर प्याज अर पोदीणै री चटणी सागै गोहू-चिणां री अकरी अर चवसती रोटयां जीमण रो आनन्द लियो, छप्पन-भोग ही काई करै वा आगै।

निपतो ही कुभारां री मुरवो हो। मा-बेटी वठै गई। वडा कोड किया— दो बीनण्या अर वारी सासु। काई दूर मे गन्ना ही गडा हा वठै। मुधा तो घई चाय सू चूस्या पांच-सात टुकडा पण सिरदारी रै बस री बात नीं ही। डोकरी वोली, "ये बाई, महीनै पैला रो निकाळयो, गुड खानो।" सिरदारी पाव-नैडो चेपगी। मुधा नै तो गन्ना चूसता-चूसता ही डिकारा आवण लागगी।

कच्चा कोठा हा दो। छपरै में एक गाय बंधी ही। कोठै मे दो टाबर सूता हा। पूछ्यो जद ठा लाग्यो कै आंनै ताव आवै है, पचिया ही है पी। मुधा टाबरां नै देख्या, उकाळो दो बांनै, बोली, "आ नांख'र पाव भर पाणी उकाळो, छटाक-नैड़ो पाणी हुतां ही उतार लेया, सू-न्यायो हुवै जद आधो-आधो पिटा देया।" पच-पच करतै पचियां नै बण सुद धोया, फूटरा वै, गाढ दाव-दाव पाटो बांधदी। लुगायां घडी राजी हुई, घडी आव-भगत करी वा री। दूध तो एक-एक गिलास नी-नी करता ही पीनो पड्यो बांनै।

"म्हे तो पाड़ोसी हां थारा।" सुधा बतायो।

डोकरी बोली, "धन घड़ी, धन भाग, थे जिसा पाड़ोसी म्हारा, वेगा पधारो अठै, सेवा करस्यां थारी।"

"घेर है थारी। अठै थोर टाबरा ही है म्हारै आपरी ?"

"हां है, एक गवाडी म्हारै ही वैन [illegible] ग्या टाबर।" [illegible]

"और ?"

"एक मुरधै नै एक बामण है, एक [illegible] दो

ही है, वानै म्हे नी जाणा । केई मुरवा विचाळै सूना ही पड़्या है ओजू तो, धणी कोई नी जाग्यो दीसै है ।"

"पाडोस बढिया है, टाबरां नै दूध-दही खवावो, काम करावो खेत मे, पढणआळो है कोई तो पढण नै भेजो वीनै ।"

"पढण नै नैड़े-नैडास तो ईं रोही मे, सपना ही लेवो भला ही ।"

"सपना लेस्यो तो वै ही साचा ही हुसी—मोड़ा नी, गिण्यै दिना मे ही, अर बी सू पैलां म्हे बैठो मा-बेटी दोनू, पइसो ही नी लां, थे कहो तो काल ही आ बैठा पण दस-बीस टाबर हुया ।"

"ग्याल करस्यो, पग पूजस्या थारा, वस्ती बधै है तो टाबर तो हुसी ही ।"

रात नै रुकगी वै । लालटैण का चिमन्या रा निमधा चानणां दीखै हा कठै-कठै ही । मिनखा रो बोसारो तो नी सुणीजै हो, पण कदे-कणास की ट्रैक्टर री आवती-जावती आवाज रात री सूनवाड तोड़ै ही । सिरदारी बोली, "वजड़ अर अळसीडो ऊगी जमी कांनी देखतां तो ओजू ही डर लागै थाई ।"

"अळसीडै मे तो डर ही लागै मा, पण ओ डर मिटतां अबै घणो समै नी लागै, पक्का मकान ही खिलकसी अठै, विजळी, टकी, दूकानां, स्कूल, अस्पताळ अर छोटा-मोटा कळ-कारखाना सै हुसी । हजारां बरसा बाद ईं धरती रो उदै आयो है, आदमी री मैनत अर बीरी सूझ-बूझ नै उडीकतो । हिमाळै सागै जुड़ग्या आपा, अर हिमाळै हिंद महासागर सागै, एक हवा, एक आकास, एक धरती, एक चेतना, भारत-माता री मैर है आपां पर मोकळी-मोकळी ।"

अगलै दिन कुभारां रै बाळका नै भळे देख्या सुधा । फायदो हो बांरै, दवा-दारू बारी ओर करी बण । राजी हुती डोकरी बोली, एक दिन तो म्हारै ही रुको, म्हारी झूपडी मे ही चुळू करो मा-बेटी ।"

सुधा बोली, "आज री तो माफी दो मा-सा, अबकै कदेई, वेगा ही हाजर हुस्या आपरी सेवा मे ।"

डोकरी पाच रिपिया देवण लागी सुधा ने, बा बोली, "अै क्यांरा मा-मा ?"

"दवायां थारै किसी घर ने नीपजै है बाईसा ?" डोकरी बोली।

"अै टाबर थारै ही लागै है की, म्हारै नी ?"

"थारा ही है बाईसा, म्हे तो स्वार्थ रा हा।"

"म्हारा है जद, देवण रो विचार ही मत करो।"

वीं दिन बजी पाचेक, रवाना हुगी वै पेमू सागै उपाळी ही। ढाई-तीन कोस आई जितै अंधेरो पड़ग्यो। दो घंटा बस नै और उडीकी बठै। बारै-साढी बारै, जांवतां, बीकानेर पूग्या वै। रात बस अड्डै पर ही काढणी पड़ी छव घटां ताईं।

लारै वांरै जूनागढ री खाई, आगै कादो-कूटळो अर रोळा सूं मचीजती सड़क। गोडा छाती में दिया विचाळै ही वै पडी ही—बीटलिया रै सारै। मारकर बारै कुत्ता-कूकरिया ही निकळै हा। केई वामें पावसा अर धूम्योड़ा ही हा। चालता ही केया रा गूदड़ा ही सूघलै अर की असावधान री पीठ ही सभावबस पीठ अर पूरा पर न मूत री हाजत मेटता ही संकै, अर न बारै मूं लगावता ही। सुधा सोवै ही, आदमी रै पल्लो लाग्यां भोट ही नी, मायो लगावना ही नी संकै लोग अर लाचारी में कुत्ता री लपुसका सूं तरीजता ही होठ नी खोलै।

कनै ही दो खोखा चाय रा हा, भुजिया कचोळ्या रा गाडा ही हा दो-एक। वांरै अैंठै पत्ता पर कुत्ता लड़ै हा रह-रह। बिच-बिच में बसां रा हॉर्न ही आपरी पूरी ऊंचाई पर बाज उठता। मुसाफिरां रो हो-हाको तो मिट ही नी थमै हो। कंडक्टर न्यारा ही गळा फाड़ै हा, रतनगढ-रतन-गढ! सरदारसहर-सरदारसहर! अर काईं अन्त हो आ हारा रो। आं हालां गरीब भाल्यां नै अध घड़ी ही लागण नै जाग्या कठे ? इणां सूं सस्तो मीं ही कोई बात नी ? माछरा री जान उपवाड़ां नै ही, छेड़ै बैठायै ही। कांबळियां री ऊपर नांखलै तो जी अमूजै, हटायां रागै तो माछरां रा बटका अर मून री बास, डील चूटीजै अर माथो भूनो पण, केई आं हालां मे ही नीद लूखावै हा था अचभो करै ही वां कानी देख-देख।

सुधा एकर खड़ी हुगी। गढ री खाई कनै जा ऊभी। उडाग आठ-चोसा घड़ा हा बीनै, ऊंडी इत्ती, नीचै देख्यां ही डर लागै हो। बीरी भीत नै तोड़-तोड़ जाग्यां-जाग्यां लोगां गळना कर राख्या है। अंधारै रो पालड़ो उटावतो

फूट पड़्या । सान्तड़ो लारै क्यों रैवती ही, बोली, "वैनजी काल नी आया, रात नैं मोडै ताईं उडीकत्ती रही हूं तो ?"

सुधा की मुळकती बोली, "नहो आई तो कांईं हुयो बाई, तू है नी अठै, सेवा में सगळा सू आगै ?"

छोरी की नी बोली, पण हळको-सो एक भीतरी राग बीरैं चैरैं पर नाच उठ्यो बिना आवाज किया ।

कंचन बोली होळै-सी, "विराजो वैनजी !"

"बिराजण नैं तो बाई, दिन घणो ही मोटो है, आई हूं तो की सायरो लगाऊं तनै !" केई टाबर बांमे, बीरी पौसाळ रा ही हा, मू लाग्या ।

मोडिये री मा दीसी बीनैं, ब्यार आव्या हुता ही, उदास-उदास बोली बा, 'वाईसा' ! होठ बस, इत्ता ही खुल्या बीरा ।

"तू किंया ?" कैवती सुधा बीरैं कनै जा पूगी ।

बा बोली, "कांईं बताऊं, ऊंधा है दिन-ग्रह, ताव सिरै है छोरै नैं, रोटी उतारतो थावै, कांईं करूं ?" अर फीस पड़ी मतै ही बा, धीरज छोडती । एक पल रुक'र होठ बीरा, भळे फूट पड़्या, "एक ही लट अर बा ही··· अर ?" आमूंओर खाथा हुग्या बीरा ।

"पूगी है तू ? बीमारी आसुवां सू मिटसी का गिडगिड़ाया । शरीर में मैंको हुयोड़ो दोस है वो तो, दवाई सू मिटसी । बाळक सै ही मोडिया है आपरी माआ नैं वाल्हा, लोह् रो आ में कोई नहो, सै ही माटी रा, आधी ममता आछी नहो, उतार बीनैं ।"

सुधा कावळियो बीरो छेडै कियो, सारा बळता आवै हा बीनैं, हाथ लगायो बण, डील सिकै हो बीरो । "मोडू" ? आख्या खोलदी बण, एक पल मानो देख्यो बण सुधा रैं, पतळा-पतळा हाथ जोड़ दिया बण । सुधा बीरैं निलाड पर आपरो ठंडो कंवळो हाथ राख दियो । बीरो मा बोली, "अै कुण है रे मोडिया ?" हाथ बीरा, पैला हा जठै ही, आ ठैरग्या, पापड़ो आयोड़ा पतळा-पतळा होठ बीरा धीमें सैं गुन्या, "वैनजी ।"

सुधा बोली, "कांईं दूखै है मोडू ?"

"माथो ।"

"हाथ-पग ही फाटता हुसी बी ?"

गै, साधना री दिस्टी सू सरूप बांरो एक ही है, घर सफल, बीरो संसार ही सफल। आछी-माडी जिसी भी हू, म्हारो साथो कियो आप तो म्हारै आंसुवां सागै कठै ही को सजळ ही हुणों पड्यो है आपनै, म्हारै संघर्ष अर मुक्ति में, सुखी-दुखी अर कठोर-कवळा ही हुया हो आप अर कठै ही म्हारी मोटी अर जिद्दी बुद्धि पर रीस-तरस ही उपज्या है आप में, फेर ही आप लोगां न पीठ ही दी मनैं, न कठै ही अनादर ही कियो म्हारो अर न उत्साह भंग ही। ईं खातर ही तो हू निभगी जातरा रै एक मोटै पडाव ताईं। आपसा आस्थावान साथी और कुण मिलसी मनै ? सुख-दुख हाणि-लाभ अर राग-रोस सैं बदळग्या पण ये अर थारो सहयोग नीं बदळ्यो, म्हारै सन्तोस री ऊंचाई अर म्हारी आस्था री जीवन्तता इसैं में ही है। म्हारी सार्थकता, साची पूछो तो आप लोगां रै सागै रैणै में ही है, एकली भटकण में नी। एकली भटक्यां न म्हारो कोई अर्थ, न उद्देश्य अर न म्हारै मन री सोराई। हू जीऊं ही थांमें हू।

हा तो, आप लोगां आपरो इत्तो अमोलो समै, मेंज उदारता सू मनैं दियो, ठीक, पण म्हारी जन्मदाता, म्हारी मा-भूमिका आपरी आस्था रै हाथां सू थपाछूई, आप लोगां आगै आपरा होठ खोलण नै कदरी खडी है एक पग रै तांण आपरी आंख्यां रै उजास-पथ सू बीनै ही गुजरणदो पांच मिंट। आ मैर नी किया न आपरी सगळी ऊहापोह ही पूरी हुवै अर न इत्ती लम्बी-जातरा री सार्थकता ही। आप सोचता हुस्यो कै किताब रै तोरै आ पूग्या, भूमिका ओजू भळै बाकी ही रही, चूळू बरण री टैम, पुरस-गारी भळै, की अचैरी लागै। इसैं भूमिका खुद ही बोल पडी धीरै पण बडी मीठी, "मैरबानां, सोचणों आपरो बेजा नी पण बो निजर म्हारो बेयसी बांनो ही तो फैंको, मनैं इसो ताळ होठ खोलण रो मोको हो नी मिल्यो तो म्हारो ईं में काई दोस ? आप लोगां रै मैंज चलतै प्रवाह नै रोकर पिणासैं म्हारै कानी मोड़ती तो म्हारो बो दुस्साहस न आपरै जचतो अर न मनैं सोभतो। बगत सू पैलां बोल्या, गवार बजतो अर बगत पर अबै नी बोलू तो गूंगी। म्हारै बोलण रो सही मर्म अबै ही आवो है, सुणो आर।"

भूमिका

उपन्यास पूरो हुयो, इच्छा प्रभु री, म्हारो ईं में की नीं, सिवा निमित्तता रै। कृतज्ञता मान्या-नीं-मान्या, बीं रै तो की फर्क नीं पड़ै, कारण, ओळखै-मावासी री पकड़ सूं ऊंचो-अछूतो है बो। पण, नीं मान्यां म्हारै घाटो है, अर्थ रो नहीं, अन्तःकरण रो। कृतघ्न रो पैलां अन्तःकरण ही डूबै, फेर जा भैंस पाणी में, मगळो की। अन्तःकरण रै मैंयाऊ डूबा खातर, कृतघ्नता, गडा सूं ही जादा घातक हुवै।

कथा आ, न आकासी, न अणदीठी अर न अणभोगी। है हकीकत पण है घन धण्यां रो, ग्वाळियै रै हाथ में है खाली गेडियो। पाठकां री कचेड़ी में कूड़ क्यों बोलूं? आधार ईं रो साधोड़ो नहीं, लियोड़ो है अणमोल्यो अर अहैतुकी हेत में की कनै सूं हीं। म्हारी नीयत तो खाली इत्ती ही रही है कै बी लियोड़ै धन रो, आधापण अर असावधानी में दुरुपयोग नीं हुवै कठै ही? बीरै लाभ सूं अपेक्षित तो छूटै नहीं, अर उपेक्षित बीनैं पूड़ रै साथ परोटै नहीं। पाठकां नैं बी धन सूं स्वाद बिगाड़-भोजन री सृष्टि नीं हुवै। थारी दिस-दीठ अर बारै परिणाम रै मूळ में कोई, कुरुचि रो कोड़ो नीं लागै। पाठकां रै स्वाद नैं अबार चटोरड़ो अर अधोगामी बणायण में, पट्टगा-वटीम बनबा, आधी हू'र लाग्योड़ी है, मासलेटी साहित्य भिसा-भिसा। ईं खातर ही, इमरत में दूधिया साहित्य रो बदर है सळै बैठ्यो अर उत्तेजक साहित्य री है उफणती।

हूं म्हारै पाठकां नैं समझ री ऊंचाई पर मालदार देखणो चाऊं, पीढ़ो-उपाड़ नहीं। चाऊं हूं कै म्हारी आ मनख्या बारी रुचि नै ऊपर उठावण में जुड़ै अर बै धरती री गध पहूण करै। स्वाद-बिगाड़ साहित्य सैं पनां।

म्हारै कानी सूं तो चौकसी मैं पूरी वरती है, जिसी मनैं वरतणी आई पण अपूर्ण, अपूर्ण ही हुवै है; तो ही कमजोरी रो ठा, लाग्यां वीनैं मानणो चाईजै, आगै वा कौ कम हुवै ईं खातर भी अर अन्तःकरण री उरळाई वधै ईं खातर भी। लिलाड मे सळ घालयां का डोळा दिपायां न आपरी कमजोरी मिटै अर न किताब री कूत वधै। दिस देवै वींरो गुण मानणोदेह मे ही, नी मानै कोई तो फेर किसी ऊण मे ?

वरस च्यारेक पैलां, दोए-च्यारै एक बूढी भंगण आया करती म्हारै घरे। वींरो परवार ही सावठो अर गाव री विरत ही वींरी मूठी-सावठी। विरत वींरै वेटां मे वंटपोडी ही, आप-आपरै हलकै री हाजरी, आपरी समर्थ साल सैं ही भरता। वी खुद रो अवै न डील ही घणो कैयो करती अर न मन ही। वेटा मा री मनस्या सगळी। वा वस्ती रो काम वी कनैं सू छुड़या दियो पण, यण वस्ती मे दो घटी फिरणो-घिरणो नी छोड्यो। ईं मिस या, जजमानां सागै रामा-सामा ही करलेवती अर आपरा मन मोकळा ही। पीठो पड़ै बो, रेत की, ले'र ही उठै। ईं घर-मोकळाई मे कदेई वीनैं, दस-पांच रेयडी, अर कदेई मोठै-चूठै री कोई हाती-पाती की न मिलता ही अर अैं सैं ससम्मान अर अणमाग्या ही। आनैं वा आपरै पोती-पोतां मे बाट देंवती, वैं राजी, दादी नैं देखतां ही मामा दौड़ता, कैयो करता वींरो एक-एक सू पैलां। पोतां नै ही लाभ अर दादी नैं हीं।

म्हारी मा री घर्म-वैन ही वा। वा नी वणी, मा वणाई वीनैं। साफ-सुथरा कपडा, गळै मे तुळछी री माळा, पाय-सात खोटा मुनिया हीं चिलकता बीमे, अर हाथ मे बोरटी री पतळी-पुराणी एक डांगडी। डांगडी हुवै कनैं, बिलामेक चौरीज्योडी, वडै वण, फाडी-फाटी सूतळी वळेट राखी ही। मा एक-दो विरिया वीनैं दूगरो डांगडो सेंवण रा न्यौरा ही किया पण नी ली वण, बोली, "वाई, जूनी ही आ अर जूनी ही हूं, ईं नै हाथ ही नीं म्हारा ओळगूं अर भाल्यां ही म्हारी। बीऊ जिते न पुंजै स्याग् अर न इं नैं अनादरू।"

गाभर ही वा। कवीर, मीरां अर रैदास रा दजंनू भजन वीनैं जवानी रा। मा नैं सुणावती केई विरियां, वी कदेई म्हारै कानां सैं ही पुगता। गड, खवार जाणै जिसा ऊंचा तो नी गिरया वी सू पण, सोच अर

डगळिया देखता लागै हो, राग री इमारत बोरी, बुलन्द ही कदेई। आंवती जद, कळची बारसाळी मे आ बैठती वा। दो मिट सुस्ता'र हेलो मारती, 'बाई ?' अर फेर दो-च्यार छिण रुक, 'काईं घणो हुवै है बाई ?' काम मे लागी मा, पढूनर देखती, "आई, बैठो दो मिट," अर बा मा नै उडीकती चश्मै रा काच पूछती। हू कैवतो, "मामी सोझी किया है ?"

"धुधळो दीसै है भाणजा, काचड़ा लगाया पछै, कनै खड़ै रो चैरो सायळ ओळखलू।"

"काच की लीसा पड़ग्या हुवै तो म्हा नुवा चढ़वा लाऊं ?"

"भाणजा, काच नुवा काईं अबै तो आख्या ही नुई लागसी कई ही, काईं ठा किसीक अर किते दिना खातर, अगलो ही जाणै।"

"कर्रै नू जाणै अगलो ?"

"मनै काईं ठा, म्हारी जातरा रो अगलो पड़ाव अबकै कठै सू सुरु हूसी अर किया ?"

"की तो जाणती ही हुसी ?"

"जाणू हू दो टैम दालियो खाणों का पड़नो।"

"बरस कितायक आ लिया मामी ?"

"आ लिया, पिचतर नैड़ा, पण बरसां सारू देखणो नी आयो।"

"ओ किया मामी ? जिता बरस लिया, बिती ही तो देख्यो।"

"बित्तो कठै पढ्यो हो, चाळीस री हुई जितै न देखण री सिम ही सूझी अर न सावळ अटकळ ही आई देखण री।"

"किया ?"

"पैला देख्यो मैं म्हारै ही पगा ताईं, पछै घर स आगै की नी दीखतो, फेर को चेतो हुयो कै ओ देखणो आधो देखणो है, देखणो को ओर हो हुवै है, पण अबै करामान सरीर री थम पड़ै तो सही दीखणों ओर हो ओयो। काच पूछ-पूछ'र काम किताक दिन काढस्यू ? पाणी तो सीप्यां रो पूगै, अर कादो (गोंद) किनारा पर बधै।" बोरै मूढ आमन मै गमगमा मैं कैयो, "ई हिसाब नो मामी, असली देखणों तो घणां नै ऊमरभर ही नी आवतो हुसी ?"

"नी आवै तो नी आवै, रावण रै आख्यां दो नहीं बीस ही पण मरपो

जितै देखणों आयो तो कह ?"

हूं बीरै सळभरयै चौखटै कानी अचभै सू देखतो बोल्यो "बात थारी जचै है मासी।"

"पण दूजा री कांई बताऊं लाडेसर, म्हारी बताई है मैं तो। हा इत्ती सगळा ही जाणै है कै, अगली जातरा रो आधार आ जातरा ही हुवै है। ई जातरा मे पग जे कोई, देख-देख राखै तो अगली जातरा मे बीनै आछो नी हुणों पडै।"

"जीवण सार्थक कियां बणै मासी ?"

"सभाव सुधारयां," अर इत्तै मा आ बैठी, फेर म्हारी वाता बद अर बा दोनां री गुरु, घर-विध सू लै'र सत्सग तांई री।

एक दिन पूछलियो मैं, "मासी, पोथी पढणी कठै सीखगी सू ?"

बोली, "म्हारै एक मासी हुया करती, सागणनी, सागनी में, सरीर री सैंठी अर लम्बी। चैरो चौडो रोबीलो, अर रग गाळो। साच ग्यातर सहती नी सकती। हूं एकर रही बो कनै दो ढाई महीना। म्हारी मावरा साधी हर्जण नैडा घर है बठै। घरा कनै ही सतोसी-माता रो एक मिंदर है, बी में एक बाईसा आयोडी ही। बण बिचारी बडै धीरज अर हेत प्यार सू दो आंक मनै ही सिखा दिया, भाणजा।"

"साधणी ही कोई का थारै ही साग री ?"

"म्हारै साग री क्यों, सागणी ही बा, लाडणू-सुजानगढ कांनली। धोरी अर रूप रुड़ती पढी-लिखी, जवान अर बोली मे मिसरी नै ही मात करै, रामजी री प्यारी, पडती बेळा बेमाता ग्यासी रैम लगाई ही बी पर, माटी ग्यायळ मे नी मेथडी बीरै।"

"विधवा ही ?"

"विधवा क्यों सुहागण ही।"

"पढी-लिखी, फूटरी जवान अर मागै सुहागण, मन्दां रै पाटै मे आ बैठण रो, कांई कोड आयो बीनै ?"

"बीरै घरवाळां नै देखणो नी आयो ई ग्यातर, बैन रो आंग्ला गे काई उलाज बता ? अंधेरै मे हालतां गुलाब री डाळी ही भूतणी रो हाथ मागै।" पल भर रुक'र बा भळै बोली, "बा मूंघे घर री बहो, धारनै-

फाटतै घर री ही—वीरै लजवन्ति घर री पण सोनै री थाळी मे लोह री मेख लागगी ही कोई नागगी।"

"तो घरआळा खुर-खोज नीं करी वीरी ?"

"करी क्यों नीं ? सुमगे एकर लेवण नै आयो बतायो वीनै, पण वा गई नहीं।"

"क्यों ?"

"क्यों री तो वा जाणै।"

"मिंदर री सेवा ही करनी ग्याली ?"

"सेवा रो तो नाम हो रे दिन मे पढ़ावती हरिजना रै टाबरां नै अर रात नै बारै घरा री बीसू लुगाया नै और। लेवण रै नाव राती पाई ही भलो किमीक हुवै है ? कातणो, बुणनो मै सिखावती बानै। हारी-बीमारी या पर पूगी रहती, आपरी चुगो-पाणी बिसार'र। म्हारै साथ नै वण गाव री मद-मून ढांणा छुड़ा दिया, खेती-पाती अर दूजी कारमजूरी मे लगादिया बानै।"

"गाव रै सवर्णां की ऐतराज नीं कियो ?"

"की काई, डरावण-धमकावण मे पाछ नी राखी वा, वीरी भद्‌उडाई मांडी मू माडो, बठै सू वीरा पग छोडावण री पूरी चेष्टा करी, पण वा जिया-लिया आपरी ठोड जमी रही। वीरै लारै भंग्या नै ही मोकळो तंग हुणों पड़यो, पण वै ही ये निकटपा दिणना पड़ता विश्वास वा रो आपरो धारम गाढ़ो। म्हारो मामो नै बण, मा धरपली, मामी रै भाग री बेटी नी ही, एक नै स्याणी गुनगणी अर पाळी-पोसी बेटी मिलगी अर दूसरी नै तन-मन सू आगरो देवणआळी मा। बेटै गू बेगो राखती बा वीनै।"

"तू भळै फेरूं नीं गई बठै ?"

"वीनै तो फुरसत अर कुण भूज री गाड नै बुलावै, ईं सूघाई मे ? आधो घार तो या घर रो रैवणो नैर वानो, बठीनै वीं जमी मिलगी ही बानै। मै आप-आपरी सेकन मे लाग्योडा तो कुण वीनै ही चेतै करै, अर बिना चेनै लियो जाणो बठीनै कियां हुवै ? न कद ही बुलाई अर न हू गई।"

मै सोच्यो, इसी लुगाई निश्चै ही कंचन अर काम री मैली भूख सू